राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला इत्यादि

ग्रन्थाङ्क ४८

मुंहता नैणसी कृत

मुंहता नैणसीरी ख्यात

भाग २

प्रकाशक
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

मुंहता नैणसी कृत

मुंहता नैणसीरी ख्यात

भाग २

सम्पादक

श्री बदरीप्रसाद साकरिया

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३ | ख्रिस्ताब्द १९६२
प्रथमावृत्ति ७५० | | मूल्य ९.५०

मुद्रक– श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apa bhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

*

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JIN VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur
Honorary Member of the German Oriental Society, Germany;
Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay;
General Editor, Singhi Jain Series etc. etc.

* *

NO. 49

MUNHATA NAINSIRI KHYAT

of Munhata Nainsi

Part-Second

* * *

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

The Hon. Director, Rajasthan Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Reseaṛch Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

V. S. 2018] [*1962 A.D.*

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

General Editor - **Padmashree Jin Vijaya Muni, Puratattvacharya**
[Honorary Director, Rajasthan Prachyavidya Pratisthan, Jodhpur]

MUNHATA NAINSI-RI KHYAT

[Rajasthani]

Second Part

Published by
Rajasthan Prachyavidya Pratisthana
[The Rajasthan Oriental Research Institute]
Government of Rajasthan
JODHPUR

V.S. 2018] [*1962. A.D.*

सञ्चालकीय वक्तव्य

मुंहता नैणसी विरचित ख्यातके प्रथम भागका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके ४८ वें ग्रन्थाङ्कके रूपमें किया जा चुका है। अब उक्त ख्यात का यह द्वितीय भाग प्रस्तुत किया जा रहा है।

'मुंहता नैणसीरी ख्यात' राजस्थानी भाषामें लिखित गद्यकी एक महत्त्वपूर्ण रचना है और इसके पूर्ण रूपेण प्रकाशित होने पर अनेक वर्षोंसे अनुभव किये जाने वाले एक अभावकी पूर्ति हो जावेगी। ऐतिहासिक दृष्टिसे भी यह रचना कम महत्त्वकी नहीं है। प्रस्तुत रचनामें मुख्यतः राजस्थानका प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास निगुम्फित है किन्तु प्रासङ्गिक रूपमें राजस्थानसे संलग्न प्रदेशों, जैसे गुजरात और मध्यभारत आदिकी इतिहास-विषयक पर्याप्त सामग्री भी उपलब्ध होती है। मुंहता नैणसीकी इतिहास-विषयक व्यापक जानकारीका परिचय भी इस रचनासे प्राप्त होता है।

राजस्थानी भाषाके इस महत्वपूर्ण ग्रन्थका प्रकाशन भारत सरकारके वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मंत्रालयके सहयोगसे आधुनिक भारतीय भाषा-विकास-योजनाके अन्तर्गत किया जा रहा है, जिसके लिए हम भारत सरकारके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

मुंहता नैणसीरी ख्यातकी शेष सामग्री तृतीय भागके रूपमें शीघ्र ही प्रकाशित करनेका प्रयत्न चालू है। ग्रन्थगत नामानुक्रमणिका और सम्पादकीय प्रस्तावना आदि भी ग्रंथके तृतीय भागमें ही प्रकाशित किये जावेंगे।

जोधपुर.
ता० ३ अप्रेल, १९६२ ई.

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर.

॥ ॐ शिव ॥

विषयानुक्रमणिका

मुंहता नैणसीरी ख्यात

भाग २

अथ ख्यात भाटियांरी लिख्यते

अै जदुवंशी कहीजै[1]। बज्रनाभ प्रदुमनरो बेटो, श्रीकृष्णदेवरो पोतरो[2]—

१ खीर।
२ खडेर।
१ जादव वाघोर करोली वाळा।
१ जादव गिरनाररा धणी।
१ सांम श्री कृष्णदेवरो बेटो। जाड़ेचा सांमा कहावै। हाल रायधण[3]।

सरवहिया अरधबिंबरा[4]—

१ वोटी।
१ खीटवाळ।

रावळ वछु। १ पाहु बापै रावळरो। बापो रावळ वछुरो—

१ सिंघराव वछुरो।
१ रावळ विजैराव चूडाळो।

चूड़ा समारो उतन[5] भड़ियाद, कांप, धोळहरा। अै तीनूं चूड़ा समारै बैसणा गांम छै, परगनै धांधूकै लागै[6]। भड़ियाद हमार[7] भोज भींव। चूड़ा समारो बेटो सबळसिंघ देवीदास धवळहरै वसै छै।

रांणा राजपाळरा पोतरा—रांणो राजपाळ सांगारो। सांगो मंझमरावरो—

१ बुध।
१ लहुवा।
१ छेना।
१ छीकण।
१ पाहोड़।
१ अटेरण।
१ लपोड़।
१ हईया।
१ भईया[8]।
१ जैतुंग तणुंरो। तणुं वडा केहररो। विंकूंपुर, जैसळमेर, बीकानेर विचै।
१ अभोहरिया रावळ दुसाझरा[9]। पीरोजशाह

---

1 ये यदुवंशी कहे जाते हैं। 2 पोता। 3 श्री कृष्णदेवका पुत्र साम्ब, जिसके वंशज सामा-जाड़ेचा कहलाते हैं। वर्तमानमें रायधण इस शाखाका है। 4 अर्द्धविम्बके वंशज सरवहिया कहलाते हैं। 5 निवास स्थान। 6 ये तीनों गांव चूड़ा समाकी बैठकके हैं, जिनका परगना धंधुका लगता है। 7 अभी। 8 दूसरी कई प्रतियोंमें यह नाम नहीं है। 9 रावल दुसाझके वंशज अभोहरिया भाटी।

पातसाहरो मांमो भाटी
दोलतखांन खंधारवाळो
किलेदार ।

लांजो विजैरावरा[1]–

१ राहड़ जैसळमेर ।
१ मंगरिया, इणरा थळ
गांव ४० मुसलमांन
हुवा[2] ।
१ गाहड़रो गांव बीकानेर
कनै गाहिड़वाळो[3] ।

रावळ सालवाहनरा–

१ वानर, इणांरै जैसळमेररै
देस गांव डाभलो[4] ।
१ कड़वांरै जैसळमेररो
गांव भैंसड़ो । रावळ
काल्हणरा पोतरा[5] ।
१ सीहड़, साल, वीकमसी,
लखमसी, अै काल्हणरा ।
जैसळमेर वड़ा रजपूत ।
परधांन गांव ब्रह्मसर[6]।
१ जैचंद लखमसी काल्हण।
१ भुणकमल झांझण
काल्हण जैसळमेर
विकूंपुर ।
१ जसहड़, पाल्हण, काल्हण,
इणांरो वडो धड़ो[7] ।
रावळ लखमणरा
पोतरा ।
१ रूपसी, जैसळमेर गांवका
छै[8] ।
१ राजधर ।
१ उरगो वैरसीरो सावड़ा-
वाळो ।
१ सतो वैरसीरो । रावळ
लखणसेनरा पोतरा ।
१ मूळपसाव ।
१ लूंणराव ।

रावळ केहररा पोतरा–

१ सांवतसी केहररो ।
१ मेहाजळ केहररो ।
१ जैसो कलकरणरो ।
कलकरण केहररो ।

रावळ केलणरा–

१ विकूंपुररा ।

---

1 लांजा विजयरावके वंशज । 2 मंगरिया (मंगलिया), इसके थलके (थरके) ४० गांव एक साथ मुसलमान हो गये । 3 गाहड़के नामसे बीकानेरके पास गाहिड़वाला गांव है । 4 वानर, इनका जैसलमेरमें डाभला गांव। 5 रावल काल्हणके पोते कड़वा भाटियोंके जैललमेरका गांव भैंसड़ा । दूसरी प्रतियोंमें कड़वोंका उल्लेख नहीं है । उनमें भैंसड़ा गांव वानरोंका तथा वानर राव काल्हणके पोते बताये गये हैं । 6 सीहड़, साल, बीकमसी और लखमसी ये काल्हणके वंशज । जैसलमेरमें वडे राजपूत । इनका प्रधान गांव ब्रह्मसर । 7 इनका समूह वड़ा । 8 रूपसी जैसलमेरके काछा गांवमें ।

१ पुंगळिया ।
१ वैरसल पुरिया ।
१ किसनावत ।
१ खींवा ।
१ नेतावत रिणमलरा पोतरा ।
१ खरड़वाळा केलण ।
१ अकै केलणोतरा पोतरा सेखासर[1] ।

रावळ राजरा पोतरा–
१ उरजनोत ।
१ हमीर ।

रांणा रतनसीरा पोतरा–
१ ऊंनड़ ।
१ कीता गोगली ।
सोमसीरा पोतरा ।

वात भाटियांरी

अै सोमवंसी, एकादसमें तीसमें अध्यायमें जादवस्थलमें इतरा जादवांरा वंस कह्या[2] । प्रभासखेत्र श्रीकृष्णजी नावै बैस पधारिया समुद्र मांहै[3] । सरस्वती नदी प्रभासखेत्र छै, तिणरो महातम कह्यो छै[4] ।

विगत–
१ दसार्क । १ विष्ण । १ अंधक । १ भोज । १ सत्वात ।
१ मधु । १ अर्बुद । १ माथुर । १ सूरसेन । १ कुंत ।
१ विसरजन । १ कुकर ।

अथ जैसळमेररै देसरी हकीकत वीठळदास लिखाई[5]–

जैसळमेरथी खडाळरो छेह[6] कोस १० कणवण देवड़ावाळो । नै[7] पैलो[8] छेह तांणुकोट जैसळमेरथी[9] कोस ४०, कोर डूंगरसूं कोस ५०, तिणमें[10] अतरा[11] गांव खडाळमें छै ।

---

1 केलणका बेटा अकाके पोते शेखासरमें । 2 ये भाटी सोमवंशी कहलाते हैं । महाभारतके एकादश और तीसवें अध्यायमें यादवस्थलीके वर्णनमें यादवोंके इतने वंश कहे हैं । 3,4 उसमें प्रभासक्षेत्र, श्रीकृष्णजी नावमें बैठ कर समुद्रमें पधारे और सरस्वती नदी जो प्रभासक्षेत्रमें है—उन सबका महात्म्य उसमें कहा गया है । 5 जैसलमेर देशका वृत्तान्त जो विट्ठलदासने लिखाया । 6 किनारा, सीमा । 7 और । 8 दूसरा, आगेका । 9 से । 10 जिसमें । 11 इतने ।

विगत खडाळरा गांवांरी—

१ खीरड़ खालनांरी। १ खींवलसर बांभणांरो खालसो रु० ४०००)रो।

१ टेहियो। १ डांवर। १ नेहड़ाई। १ हावुर। १ मुंगाह। १ सपहर। १ देवो। १ सीतहळ। १ लवीह। १ झरो। १ दुजासी। १ मायथी। १ आकुवाई। १ तणोट। १ वांधड़ो। १ सापली। १ माडाऊ। १ सजडाऊ। १ खारी। १ घंटियाली। १ दुजासर। १ आसो। १ कोळू। १ घोड़ाहड़ो। १ हडेल। १ फलीड़ी। १ देरासर। १ तणूंसर।

इतरा जैसळमेररैं उगवणनूं गांव[1]—

१ वासणोपी। १ जेराइत। १ डाभळो। १ आकळ। १ पछवाळो। १ तई अईतरो। १ मोकळाइत। १ जेसु रांणारो। १ जगिया। १ चाहड़। १ आहप। १ छोड़ो। १ आसणी कोट[2]। १ बोळो। १ वांहाळो। १ कोटड़ी। १ भंभारो। १ आसलोई। १ वींझोतो। १ वसाड़। १ गोयंद। १ सांवतसीरो गांव ईकड़। १ खुहड़ी। १ मालगाडो। १ कांणाऊ। १ कुछाऊ। १ खत्रियाळो। १ आहाळो। १ टीवरियाळो। १ खड़ोरांरो गांव। १ बालांरो गांव। १ भांवरी। १ रावतसर। १ लांगेलो। १ गोही। १ काछो। १ ब्रह्मसर। १ कांणावद। १ कीलो डूंगर। १ खवासरो। १ जींजियाकी। १ भादासर। १ रबीरो। १ गजिया गांव। १ हेकल। १ तेजसीरो गांव। १ चांपासर। १ सोझेवो। १ अरजणियारो। १ थहीयायत। बुजेरो। खडीण। उनावा।

जैसलमेरथा[3] कोस ५ आथूणनूं[4] काक नदीरो पांणी आवै।

---

1 इतने गांव जैसलमेरकी पूर्व दिशामें। 2 अन्य दो प्रतियोंमें 'आसणीको नीट' लिखा है। 3 से। 4 पश्चिम दिशाको।

कोटड़ो, छहोटणरा भाखरांरो[1] पांणी आवै तिणसूं[2] भरीजै, पाखती[3] च्यांरू तरफ भाखर छै, नै बीच ऊंडाळ छै[4]। कोस ३ बीच पांणीसूं भरीजै, तद दस पनरै वांस पांणी चढै[5]। पांणी निकलणरी ठोड़ को नहीं[6]। सवळो भरीजै तद हासल इजाफा हुवै[7]। काठा गोहूँ मण १५००० बीज बावै तिकै साठा नीपजै[8]। बीज बावै तितरो भोग आवै[9]। बीजी लागत घणी छै[10]। पांणी घटै तद मांहै बेरी दोय सौ, च्यारसौ आखारी सी हुवै छै[11]। ऊपर छोंतरा, गोंहू, तरकारी हुवै। पांणी मीठो। विणां,[12] फागुणिया मूंग, जवार, सेलड़ी सोह[13] हुवै। तिण ऊपर गांव १२ बांभणांरा[14] छै। हैंसा ५, दोढवाड़ कूंतो[15]।

गांवांरी विगत–

१ खींवो। १ थुळाया। १ बोधरी। १ दमोदर। १ नीभिया। १ गलापड़ी। १ सेलावट। १ कूंभाररो कोट। १ जिगिया। १ नीनरिया। १ जाळिया। १ घांमट।–१२

मुहारारै खड़ीणरो उनाव[16] जैसळमेरसूं कोस ६ तथा ७ दिखणनूं वड़ी ठोड़ कोस ५ मांहै उनाव भरीजै। पाखतीरा भाखरांरो पांणी आवै। मांहै गोहूं मण ५००० बीज वहै तितरो भोग अखै[17]। पांणी निठै[18] जदी वेरा[19] मांहै २० तथा २५ बंधायोड़ा, पांणी घणो मीठो। तिणां कोसीटां[20] गोहूँ, छोंतरा, तरकारी, सेलड़ी[21] हुवै। वड़ी हासलरी ठोड़। तिण ऊपर गांव ३ बांभणांरा–

---

1 पहाड़ोंका। 2 जिससे। 3 पासमें। 4 और बीचकी भूमि गहरी (ऊंडी) है। 5 बीचकी उस भूमिका भाग ३ कोस तक भर जाता है तब उसकी गहराई दससे १५ बांस तक हो जाती है। 6 पानी निकलनेकी जगह कहीं नहीं है। 7 खूब भर जाता है तब हासिल अधिक आता है। 8 १५००० मन काठे-गेहूओंका बीज बोया जाता है जो साठा (साठ गुना) उत्पन्न होता है। 9 जितना बीज बोया जाता है उतने ही भोगके (एक करके) रूपमें गेहूँ प्राप्त होते हैं। 10 दूसरे करोंकी आमदनी भी बहुत है। 11 जब पानी घट जाता है तब उसमें दोसौ-चारसौ कुंइयोंसे सिंचाई होती है। 12 कपास। 13 सब। 14 ब्राह्मणोंके। 15 ड्योढा कूंता (अनुमानित उपज) किया जाकर उसका पांचवां भाग लिया जाता है। 16 एक जल-स्थानका नाम। 17 उसमें ५००० मन गेहूँ बोये जाते हैं और इतना ही भोग आता है। 18 खतम हो जाता है। 19 कुए। 20 चरसे द्वारा सिंचाई किये जाने वाले कुए। 21 गन्ना।

१ गोरहरो बांभणांरो ।
१ जांभोरो बांभणांरो ।
१ सीयळांरो ।

सीयळ पंवार लुद्रवारी रैत ज्यों भोग दै[1] । मुहार रावळ भीमरी वार मांहे खेतसी मालदेग्रोतनूं थो[2] । पछै रावळ मनोहरदासरा मांन खींमावतनूं पटै दियो थो ।

अतरा[3] गांव कोटड़ारा जैसळमेर वांसै[4] रांणा चांपा पछै जको[5] रावळ टीकै बैठो तिकै[6] लिया–

१ मांडाही । १ वींजोराही । १ कौडीवास । १ रिड़ी ।
१ पेथोड़ाई । १ सीतहड़ाई । १ भूवो । १ धनवो । १ ओळो ।
१ वापणसर । १ जालेळी । १ डांगरी । १ सांगण ।
१ सोळियाई । १ पीपळवो । १ नेगरड़ो । १ भागीनड़ो ।
१ ओड़ो । १ आरम । १ चोचरो । १ जांनरो । १ कांनासर ।

जैसळमेरथी[7] कोस ७० सोढांरो ऊमरकोट छै । तिण मांहे कोस ३५ आधोफरै[8] दागजाळ छै, तठै[9] ऊमरकोट जैसळमेर सींव[10] छै । तठै नजीक[11] गांव १ भांभेरो कोस १८ ।

भूण कांमळांरो उतन[12] । १ दहोसतोय भाटी सतांरो जैसळमेरथा[13] कोस २२ । १ फूलियो भाटी मेहाजळरो जैसळमेरथा कोस ३० तिण[14] आगै कोस ५ दागजाळ छै ।

जैसळमेररा देसरी हकीकत मुं॥ लखै मंडाई,[15] संमत १७००रा माह वदी ९ मुकांम मेड़तै ।

---

1 सीयल पँवार भी लुद्रवाकी प्रजाकी भांति भोग (नाजके रूपमें दिया जाने वाला एक कृषि-कर) देते हैं । 2 मुहार गांव रावल भीमके समय खेतसी मालदेग्रोतको मिला हुआ था । 3 इतने । 4 वादमें, पीछे । 5 जो । 6 उसने । 7 से । 8 आधी दूरीमें, ठीक बीचमें । 9 जहां । 10 सीमा । 11 पास । 12 भूण गांव कामलोंका निवास-स्थान । 13 से । 14 उसके । 15 लिखवाई ।

मालरो बाब[1]—

कसबामें महाजनांरै घर १ दीठ दुगांणी[2] ८।

महाजनांरा घर हजार २५००—रु० ५००)री ठोड़[3]।

५००...............।

१५०० ओसवाळांरा।

५०० महेसरीयांरा।

दीवाळी होळीरै मिलणारा रु० ५००) गुळरा पेसकसी मंगळीकरी[4]। इण भांत रु० १५०००) रजपूत मुसलमांन ख़ालसैरा सिगळै[5] देसरा आवै। देसवाळी लोगांरै जेजियो[6] नै बाबरा करी रु० ४०००)री ठोड़ २००००)।

दांण तुलावट[7]—

दांणरो ऊंठ १ तोल २०रो मण बारै वहतीवांण[8]—

रेसम	रु० ३५)।	रुई	रु० ५)।
मजीठ	रु० ५)।	मैंण[11]	रु० ६)।
घ्रत	रु० ५)।	फीटकड़ी	रु० ४)।
खारक[9]	रु० ५)।	लाख लोवड़ी[12]	रु० ६)।
नाळेर[10]	रु० ५)।	किरांणारै[13] ऊंठ	रु० ३)।

बीकानेररै देसथा वहै तिणनूं रु० ।।।) देसमें वहतीवांणनूं लागै[14]।

घोड़ै १ दीठ रु० ४) वहतीवांण कारवांन नै लागै[15] सरब रु० १५०००)री ठोड़ वरस १री तुलावट विकरी। कसबै वस्तु विकै

---

1 माल पर लगने वाला कर। 2 कस्बेमें महाजनोंके प्रति घर ८ दुगानी लगती है। (दुगानी=एक प्राचीन सिक्का)। 3 महाजनोंके घर २५०० जिनसे रु० ५००) निश्चित कर। 4 दिवाली और होली आदि मांगलिक त्यौहारों पर गुड़के नामसे लिखी जाने वाली भेंट। 5 सब। 6 जजिया। 7 तुलाई पर सायर महसूल। 8 सीमामें होकर चलनेका महसूल। 9 छुहारा। 10 नारियल। 11 मोम। 12 लाखसे रंगा हुआ (लाखी रंगका) लोवड़ी वस्त्र, अथवा लाख और लोवड़ी वस्त्र। 13 किराना। 14 बीकानेरके देशसे सीमामें चलने वालोंसे वहतीवान कर बारह आने लगते हैं। 15 कारवांके साथ प्रति घोड़ेके रु. ४) वहतीवान लगता है।

तिणरो मण १ सेर १ नै रु० ४०) पीरोजी १ रु० ५०००)री ठोड़ ।

टंकसाळ व्याजमें हैंसो[1] ४, मुदत उप्रंत[2] हुवां हैंसो ८ तिणरा रु० २०००)री ठोड़ ।

परचूंण पाट १ खतरी, कसाई तंबाखु और ही बाव रु० १०००)।

खारो, गूगळ, लूंण इण भांतरी रकम ४ तथा ५ छै। रु० ८०००)री ठोड़ रु० ३०००), १०००), ४०००)।

रु० ३१००) गांवांरो हासल। वांभणीके[3] गांवै लागै—गांव ६० तथा ७० छै। भोग दे, हैंसो ५मो, मणरो दोढ़ मण लीजै। सांवणु हैंसो ४ तोल २०रो भोग म० २०००) ऊनाळी[4] हैंसो ५मो, मणरो दोढ़ मण लीजै। भोग म० १०००) देसवाळिया लोगांरै गांव छै तिणांमें बीजो[5] रजपूतांनूं पटै चाकरी करै[6]।

जोड़ नाचणो जैसळमेरथा[7] कोस २ ऊगवणनूं[8] कोस १, घास करड़, अैहखरो। जैसळमेरथा दिखणनूं कोस २ घास सेवण, कोस २रै फेर[9]।

खरगो, लुद्रवा कनै[10]। घोड़ां, ध्राव, वडी वांकी ठोड़,[11] मुंहारा दिसी,[12] जैसळमेरथा कोस १६, खडाळामें।

आसणीकोट गांवथा कोस २ घास सेवण। वांभणीका गांव कोटड़ा दिसै नै आथूंणनूं[13] जैसळमेररै परै।

१ वीझोळाई। १ सोतहळाई। १ कौडियावास। १ मांहिड़िहाई।
१ पेथेड़ाई। १ उनो। १ रिड़ियो। १ वाझनाइयो। १ धनुवो।
१ बुचकठो। १ लोलापुड़ी। १ लांणेलो।

खांड़ररी तरफ जैसळमेरथा आथूंण दिसी—

१ जेसुरांणो। १ गुलियो। १ कुळधर। १ चंदेरियांरो गांव।

---

1 हिस्सा। 2 उपरान्त। 3 ब्राह्मणोंके। 4 चैती फसल। 5 दूसरा। 6 राजपूतोंके जिम्मे चाकरी करना। 7 से। 8 पूर्व दिशाको। 9 दो कोसके फैलावमें। 10 पास। 11 घोड़ों और पशुओंके लिये बहुत अच्छी जगह। 12 मुहार गांवकी ओर। 13 पश्चिम दिशाकी ओर।

१ खेतपाळियांरो गांव । १ टीबो । १ देवो । १ नेहड़ाई ।
१ टेईयो । १ भांनियो । १ जांनड़ । १ पोटळियो ।

जैसळमेरथी पोकरणरी तरफ ऊगवणनूं–

१ वासणपी । १ आसणीकोट कोस १२ ।

वात

भाटियांरी पीढ़ी चारण रतनूं गोकळै इण भांत मंडाई[1]–

१ आद श्रीनारायण ।
२ कमळ ।
३ ब्रह्मा ।
४ अत्रि ।
५ सोम ।
६ बुध ।
७ पुरूरवा ।
८ प्राग ।
९ परीआइत ।
१० निरघोस ।
११ राजा जजात[2] ।
१२ राजा जदु ।
१३ जादम[3] ।
१४ सहस्रार्जुन ।
१५ सूरसेन ।
१६ वसुदेव ।
१७ श्री कृष्णदेव ।
१८ प्रद्युम्न । १८ साम्ब ।
१९ अनिरुद्ध ।
२० वज्रनाभ ।
२१ प्रेतारथ ।
२२ रुचिरा ।
२३ पदमरिष[4] ।
२४ गोतम ।
२५ सहजसेन ।
२६ जैतसेन ।
२७ अरधबिंब ।
२८ राजा सालवाहन । बोटी नै खोटीवाल डीडवांणै कनै[5] ।
२९ भाटी नै राजा रीसाळू भाई ।
३० वछराव ।
३१ विजैराव ।
३२ मंझमराव ।
३३ मंगळराव ।

---

1 गोकुल रतनू चारणने भाटियोंकी पीढ़ियां इस प्रकार लिखवाई । 2 ययाति । 3 यादव । 4 पद्म ऋषि । 5 राजा शालिवाहन जिसके वंशमेंसे वोटी और खोटीवाल शाखाएँ चलीं जो डीडवानाके पास रहते हैं ।

३४ केहर वडो, जिण केहरोर वसायो[1] ।
३५ तणु, जिण तणोट वसायो ।
३५ विजैराव चूडाळो, केहर वडारो[2] ।
३६ देवराव, तिण देरावर वसायो ।
३७ मुंध ।
३८ वछु । अणघा, पाहू, वापैरावरो सिंघराव[3]।
३९ दुसाझ ।
४० रावळ जेसळ दुसाझरो।
४० देसळ, जिणरा अभाहरिया भाटी, अभोहर वींठाडा कनै । औ पीरोसाह पातसाहरो मांमो । भाटी दोलतखांन[4] ।
४१ रावळ सालवाहन ।
४१ रावळ कालण जेसळरो। वानर भाटी डाभला वाळा । भेसड़ेवा वासणपी वाळा ।
४२ रावळ चाचगदे ।
४२ तेजो रावळ कालणरो।
४३ रावळ करण ।
४४ रावळ जैतसी वडो ।
४५ रावळ मूळराज ।
४५ रांणो रतनसी जैतसीरो।
४६ रावळ घड़सी रतनसीरो।
४७ रावळ केहर देवराजरो।
४८ रावळ लखमण केहररो।

भाटियांरै नव गढ कहीजै, तिणांरा नांव[5]–

१ जैसळमेर । १ पूंगळ । १ विकूंपुर । १ वरसळपुर ।
१ ममणवाहण । १ मारोट । १ देरावर । १ आसणीकोट ।
१ केहरोर ।

रावळ वछु मुंधरो, आंक, ३८–

३९ वापो रावळ तिणरो वेटो पाहू । इणरा इतरा गांव जैसळमेररै देस,[6] गांव ३–

---

1 केहर वड़ा जिसने कहरोर वसाया । 2 विजयराव चूड़ाला वड़े केहरका वेटा । 3 राव वापाके वेटे अणघा, पाहू और सिहराव । 4 देसलके वंशज अभाहरिया भाटी जो अभोहर वींहाड़ाके (भटिंडाके) पास रहते हैं । यह वादशाह फिरोजशाहका मामा था । भाटी दौलतखां इसी शाखाका था । 5 भाटियोंके नौ गढ़ कहे जाते हैं, उनके नाम ये हैं । 6 इसके इतने गांव जैसलमेरके देशमें हैं ।

१ चीभोतो । १ कोटहड़ो । १ सेतोराई जैसळमेरथा कोस ८ ।

किसनावत भाटियांरा गांव आगै तो पूंगळ वांसै हुता,[1] हमैं तो वीकानेर वांसै छै[2] । अै गांव ४० तथा ५० पाहुवैरो कहावै[3]–

१ खीरबारो । १ रांणेहर । १ रायमलवाळी । १ हापासर ।
१ मोटासर ।

४६ रावळ वैरसी लखमणरो ।
५० रावळ चाचगदे वैरसीरो। ऊमरकोटरै सोढै मारियो[4] ।
५१ रावळ देवीदास चाचारो।
५२ रावळ जैतसी ।
रावळ लूंणकरण ।
रावळ मालदे ।
हरराज । भांनीदास । सिंघ ।
रावळ हरराज ।
रावळ भीम ।
रावळ कल्यांणमल ।
अरजन । भाखरसी । सुरतांण ।
रावळ मनोहरदास कलाउत ।

इतरी साखरा रांणा राजपाळरा बेटा-पोतरा[5]–

१ बुध । १ पोहड़ । १ छेना । १ छीकण । १ लहुवा ।
१ अटेरण । १ लपोड़ । १ हईया । १ भईया ।

रांणो राजपाळ सांगो, मंझमराव, मंगळराव, विजैराव, तिको मुथरा राजथांन हुतो[6] । राजपाळनूं मुगलां मथुरा मारियो तरै राजपाळरो बेटो बुध उठाथी[7] छाड़नै खरड़ आय बसियो। तिका खरड़बुधेरो अजेस कहावै[8] । तिण वांसै गांव १४० कहीजता । आ ठौड़ पोकरण-फळोधी नजीक ।

बुध राजपाळरो बेटो बाप कनै[9] आय वसियो । तिणरो बेटो

---

1 पूगलके पीछे थे । 2 अब वीकानेरके पीछे (अधिकारमें) हैं । 3 इन ४० व ५० गांवोंका समूह 'पाहुवेरो' कहलाता है । 4रावल चाचगदेव वैरसीका बेटा । इसको उमरकोटके सोढोंने मारा । 5 राणा राजपालके इन वेटे-पोतोंसे इन्हीं नामोंकी शाखाएं चलीं । 6 इनका राजस्थान मथुरामें था । 7 वहांसे । 8 अभी तक वह 'बुधेरो खरड़' कहलाती है । 9 पास ।

कमो घोरंधार बापसूं कोस १ बावड़ी तठै[1] वसतो, तिको रांणा रूपड़ै पड़िहाररी बेटी परणियो थो ।

खरड़रा गांव–

१ बाप । १ बावड़ो । १ नींबली । १ कानासर । १ चूंनी । १ लीकड़ा । १ भदळो । १ अहवा । १ नाचणो । १ सतिहाहो । १ घंटयाळी । १ वारू । १ कमळो । १ सेखासर । १ खीरवो । १ भाड़हर । १ बूटहर । १ अंतरगढो ।

आ[2] खरड़ कमो भोगवतो[3] । पछै रांणै रूपड़ै चूक करनै[4] कमानूं मारनै पड़िहारै खरड़ लीवी । तठा पछै रावळ केलण विकूंपुर पूंगळ धणी हुवो, नै मूंवो जदी टीको रिणमल केलणोतनूं हुवो[5] । तिको रिणमल मूवो तरै टीकै जगमाल रिणमलोत बैठो । पछै जगमालरो भाई अचळो रिणमलोत मुलतांण जाय तुरकांरो कटक ले आयो । जगमालनूं मारनै अचळो आपरा वडा भाई गोपानूं पाट विकूंपुररैं वैसांणियो;[6] तरै जगमालरो बेटो जैतो पड़िहारांरो भांणेज हुतो[7] सु नीबलायां नांनांणै[8] वसियो । तठा पछै पडिहार दिन दिन गळता गया[9] अै दिन दिन वधता गया । पडिहार भूका,[10] तरै इणे पैहली घोड़ा ऊंठ दीठा[11] तिकै लिया । पछै क्यूं देनै गांव लिया । पछै पड़िहार तूट गया[12] । सारी खरड़ केलणां हेठै आई[13] । आ खरड़ विकूंपुरसूं जुदी । अै जैसळमेर जुदी चाकरी करै; सु पड़िहार अजै इणां गांवां मांहे रहै छै । वडा-वडा तळाव, कोहर इणां गांवां पड़िहारांरा खणाया छै । मुदै[14] गांव छारू, तिणमें कोहर[15] १२; वडो कोहर १ हेमराजसर पड़िहारांरो खणायो[16] ।

पोहड़ रांणा राजपाळरो । आगै इणांरै धणी धरती हुती[17] । इतरा कोट पोहड़रा[18]–

---

1 वहां । 2 यह । 3 उपभोग करता था । 4 दगा करके । 5 और जब मर गया तब टीका केलणके बेटे रिणमलको हुआ । 6 बैठाया । 7 था । 8 ननिहाल । 9 जिसके बाद पड़िहार दिन-दिन कमजोर होते गये । 10 असमर्थ, गरीब । 11 देखे । 12 पीछे पड़िहार कमजोर हो गये । 13 सारा खरड़ प्रदेश केलण भाटियोंके अधिकारमें आ गया । 14 मुख्य । 15 कुए । 16 खुदवाया हुआ । 17 थी । 18 पोहड़ोंके इतने कोट हैं ।

१ नाहवार । १ वीझणोट । १ नांदणौ । १ कोटड़ो । १ काळो डूंगर । १ वछणोट । १ जेसूरांणो । १ सापली । १ द्रेग ।

पोहड़ांरै कोहेक[1] दिन कोटड़ो हुतो । नीभड पोहड़ कोटड़ै धणी हुतो, सु रावळ मालारै भैंस १ वेल नांमा[2] हुती, तका कोटड़ांरो गांव सिव, तिणरी वाड़ी[3] भैंस खाय जाय, तरै मालो वाड़ीरो धणी कोटड़ारा धणी नीभड़नूं पुकारियो; तरै उण वेल नांवै भैंस वाढ़ी नीभड़;[4] तिण ऊपर पोहड़ नै राठोड़ै वेढ़ हुई[5] । पछै रावळ मालै द्रेग ऊपर हईया मारिया, सु हिंदू हुता । पछै रांणा राजपाळरा पोतरा पोहड़रा भाई उण मांमलै हईया पोहड़ भेळा मारांणा[6] । रावळ मालानूं उण मांमलारो गीत छै तिण मांहै नांव आंणिया छै[7] ।

वात रावल घड़सीरी

रावळ घड़सी घणां दिनांसूं जैसळमेर बोलायो छै । नै तद[8] धरती मांहै हईया पोहड़ सबळा[9] मांणस द्रेग रहै, सु रावळ घड़सीनूं को वदै न छै[10] । अमल मांनै न छै[11] । पण पोंहच सकै नहीं[12] । सु रावळ मालदेजी पिण हईयांरै परणिया छै सु रावळजी हईयांसूं घणी मया[13] करै छै नै रावळ घड़सीनूं पिण रावळ मालदेजीरी बेटी दी छै[14] सु रावळ घड़सी नै जगमाल मालावत सुख घणो,[15] सु रावळ मालदेजी देवीरी जात द्रेग आया छै । रावळ घड़सी जगमाल मालावत साथै छै, सु रावळ घड़सी जगमालनूं कहै छै–" अै हईया पोहड़ द्रेग वसै छै, तिकै अै म्हांनूं लिगार मात्र वदै न छै[16] । अै जठा तांई[17] जैसळमेररी धरतीमें छै, तितरै[18] म्हांनूं धरतीरी आस

---

1 किसी दिन । 2 नामक । 3 वाटिका । 4 तब उस वेल नामक भैंसको नीभड़ने कटवा दी । 5 जिस पर पोहड़ और राठौड़ोंमें लड़ाई हुई । 6 उस मामलेमें (लड़ाईमें) हईया और पोहड़ साथमें मारे गये । 7 उस लड़ाईमें रावल मालाका एक गीत (छंद) है जिसमें उन सबके नाम दिये गये हैं । 8 उस समय । 9 सबल । 10 सो रावल घड़सीको कोई कुछ नहीं समझता है । 11 उसके अमलको कोई नहीं मानता । 12 लेकिन वश नहीं चलता । 13 कृपा । 14 बेटी व्याही है । 15 प्रेम बहुत । 16 ये हमें किंचित भी नहीं मानते । 17 जब तक । 18 तब तक ।

काई[1] नहीं।" तरै जगमाल कह्यो–"इणांनूं मारण सहल छै,[2] पण इणांसूं रावळजी मया करै छै।" तरै घड़सी बोहत दिलगीर हुवो। तरै जगमाल कह्यो–"जमैखातर राखो, इणांनूं तोत कर मारस्यां[3]।" सु रावळजीनूं सवारै[4] जाय कह्यो–"म्हे फलांणो गांव मारस्यां सु राज साथनूं हुकम करज्यो[5]।" सु रावळजी मालदेजी दातण-कुरळा-सिनांन करनै दिन पोहर १ चढ़तो तठा तांइं[6] बोलता नहीं, सु जगमाल हईया पोहड़ांनूं दरबार बैसांणिया[7] नै पछै रावळजी कनै जायनै कांन मांहै कह्यो[8]–"म्हे फलांणा[9] गांव ऊपर चढ़ां छां,[10] राज[11] साथनूं हुकम करो।" तरै रावळजी साथनूं बोलिया तो नहीं नै हाथसूं हुकम कियो। तरै जगमालजी साथनूं कह्यो–"सको उठो,[12] रावळजी हुकम कियो छै सु कांम करां।" बाहिर आयनै साथनूं कह्यो–"हईया पोहड़ मराया छै,"[13] सु कूट मारिया[14]।

गीत रावळ भींव हरराजोतनूं भवनो रतनूं वंसावळीरो कहै[15]। असुधसो गीत छै[16]–

दादै जैतल करण दादै देदल बानगदेव,
वैरसीह लखमण विरद-विसाळ[17]।
मालाहरौ[18] मनमोट[19] मोटै पाट मेरगिर,
भाटियां भवाड़ै भला भींवजी भोवाळ[20]।।१
धरमी केहर देदे घड़सी घेरणां धर,
छोगाळा रतन मूळू जैतसी छात्राळ[21]।
करन तेजल कुळ-कळाधारी[22] नवे कोट,

---

1 कुछ। 2 इनको मारना सहज है। 3 तसल्ली रखो, इनको धोखेसे मार देंगे। 4 दूसरे दिन प्रातःकाल। 5 हम अमुक गांव पर छापा मारेंगे अतः आप साथको (सरदारोंको) हुक्म दें। 6 तब तक। 7 हईया और पोहड़ भाटियोंको दरबारमें बैठा दिया। 8 पासमें जाकर कानमें कहा। 9 अमुक। 10 चढ़ाई करते हैं। 11 आप। 12 सभी उठो। 13 हईया और पोहड़ोंको मारनेकी आज्ञा हुई है। 14 अतः मार दिया। 15 रावल भीम हरराजोतके संबंधमें रतनूं भवनाने वंशावलीका गीत कहा है। 16 गीत अशुद्धसा है। 17 विशाल विरुद वाला। 18 मालाका वंशज। 19 उदार, दानी। 20 भूपाल। 21 छत्र-धारी जैसलमेरके रावल। 22 प्रकाशमान्।

हराउत[1] खागधारी[2] रेणा - रखपाळ[3] ॥ २
चाच कालहण सालवाहण जसल चाह,
दुसाझ वछुह मुंध देद विजपाळ ।
हुवा तेणे वस हुवो हिंदूकार हरि हंस,
राव राजा जांणै रांणा रावळ रंढाळ[4] ॥ ३
तणु केहर मंझमराव मांगळराव तुंगेस,
भूपाळै भूपाळ भाटीवटी[5] वखत-वडाळ[6] ।
जादव जगत-जेठा[7] जेसाणै[8] भीमेण जेम[9],
जांणरा छतीस भाख साख उजवाळ ॥ ४
बाळ बुधतणा व्रद सोढाळ गज समांण,
वरज अनुरुध वंस सूरत विसाळ ।
प्रदमन कान्ह पाट परम भगत पूरो,
सुवरण सुजांण देह सोहै साखपाळ ॥ ५

भाटी छत्राळा कहीजै छै तिणांरी[10] वात । संमत १७०६रै फागुण सुद १५ आढा महेसदास किसनावत कही, जिणरा दोय भेद[11]—

१ रावळ टीकै बैंसै[12] तरै[13] छत्र आपरै बारहटां माथै मंडावै, सु दांन छत्र दियो, तिण छात्राळा कहावै[14] ।

१ कहवत यूं छै[15]—एक गढ़ां मांहै दिली छत्र, एक गजनी छत्र, हिंदुसथांनरा गढां ऊपर है जैसळमेर छत्र । तिण कारण भाटी छात्राळा कहीजै[16] ।

वात

भाटियांरी सोमवंसी हरिवंस पुरांण मांहै इणांरी[17] उतपत कही—

पहला तो क्रष्णजीरा बेटा प्रदमनरी[18] औलाद, औ[19] भाटी गुणां गीतां मांहै कह्या छै । नै जाड़ेचा भुज नवानगररा धणी, औ

---

1 हराका बेटा । 2 खड्गधारी । 3 पृथ्वीकी रक्षा करने वाला । 4 जबरदस्त । 5 भाटी क्षत्रियोंका देश, भाटीपा । 6 भाग्यशाली । 7 जगतमें श्रेष्ठ । 8 जैसलमेर । 9 जिस प्रकार । 10 जिनकी । 11 जिसके दो भेद हैं । 12 बैठे । 13 तब । 14 जिससे छात्राला कहाते हैं । 15 एक लोकोक्ति यों भी है । 16 हिन्दुस्थानके गढों ऊपर जैसलमेर छत्र है इस कारण भाटी छत्राला कहे जाते हैं । 17 इनकी । 18 प्रद्युम्नकी । 19 ये ।

स्यांमा कहावै, तिकै कृष्णजीरा बेटा सांमरी[1] ओलाद सुणिया छै।

कृष्णजीसूं पीढी। राजा जदु पैहला हुवो छै, तिणांसूं[2] जदुवंसी कहावै छै। नै भाटी, प्रदमन पछै पीढ़ियां······हुवो छै, तिणरो नांव[3] भाटी हीज हुतो, तिणरा पोतरा सारा भाटी छै। मुथरा छूटी तरै[4] भाटी कोहेक दिने गूढो कर लखी जंगळमें भटनेररी ठोड रह्या था। पछै ओ[5] सहर वसियो, तिणरो नांव भटनेर पड़ियो।

इतरी साख–

१ जाड़ेचा भुज, नवैनगररा धणी।

१ सरवहिया जूनैगढ़रा धणी।

१ चूड़ासमा भखछरा धणी। हमैं धांधुकारै परगनै ग्रासिया[6] छै।

१ जादव वाघोर करोलीवाळा, वज्रनाभरी ओलाद। पीढ़ी मंगळराव मंझमरावरो। ऊपरली पीढ़ीसूं तो पीढ़ी ३३ छै, पण अठा आगै इणसूं हीज[7] आदरो[8] आंक दियो छै।

१ मंझमराव।

२ मंगळराव। तिण मंगळरावरो परवार–

३ सांगम मंगळरावरो।

४ रांणो राजपाळ। केलणांवाळी खरड़रो धणी। तिणसूं इतरी साख चाली[9]। रांणो राजपाळ मुथरामें हुवो। पछै उठै मुगले धरती लीवी, तरै बुध नै बीजा[10] बेटा खरड़ आया। खरड़रो नांव बुधेरो।

५ बुध।

५ लहुवो।

५ छेना, तिणांरो[11] गांव १ जैसळमेररै देस गोरोटी लुद्रवै कनै। तळाई १ मांणल देवाइतरा तळाव कनै चांपा छैनैरी कराई, बीकानेररै देस छै। पांणी मास ८ तथा १० रहै।

---

1 साम्वकी। 2 जिससे। 3 जिसका नाम। 4 तब। 5 यह। 6 ग्रास रूपमें जागीर पाने वाला जागीरदार। 7 इससेही। 8 आदिका, शुरूका। 9 जिससे इतनी शाखाएँ प्रचलित हुईं। 10 दूसरे। 11 जिनका।

५ छीकण ।
५ आटेरण ।
५ पहोड़ ।
५ लपोड़ ।
५ हईया ।
३ केहर वडो, जिण आपरै नांवै[1] सिंधमें केहरोर नवो सहर वसायो ।
४ तणु केहररो, वडो रजपूत हुवो । जिण आपरै नांवै[2] खाडाळ मांहै लणोट कोट करायो । पछै तणु ऊपर अरोड़-भाखररी फौज आई, तरै तणुं बाज मुंवो[3] । तिणरा बेटा–
५ विजैराव चूड़ाळो ।
५ जैतूंग ।

विजैराव चूड़ाळो निपट वडो रजपूत आखाड़सिद्ध[4] हुवो तणुंरो बेटो । इणरी ठाकुराई पैहली तो आछी ती, पछै तिण ऊपर सिंधरी वडी फोज आई नै विजैराव नीसरणवाळो[5] रजपूत नहीं, सु आप देवीजीरी घणी पूजा करतो, सु तरै देवीजीसूं इंछना[6] करी, मो आगै आ फोज भाजै तो हूं तुरत देवीजीनै म्हारो माथो चाढूं । मन मांहै इंछना की । वात किणहीनूं जणाई नहीं । देवीजी रथ आया, वेढ हुई, विजैराव जीतो, मुगल भागा । पछै राव आपरै घरै आयो । आ वात किणहीसूं जणाई नहीं[7] । आधी रातरा आप एकलोहीज ऊठ नै देवीजीरै देहुरै गयो । उठै जाय हाथ-पग धोयनै आपरी तरवार काढ़ नै कंवळ-पूजारै वास्तै गळा ऊपर मेली[8] । तरै देवीजी कह्यो–"मां ! मां[9] !" तरै इण जांणियो, वांसै[10] कोई मांणस आयो, सु तरवार परी कीवी[11]। बीजै फेरै वळै तरवार कांधैनूं मांडी,[12] तरै देवीजी मोंहडै बोलिया[13]– " तूं विजैराव कंवळपूजा मत करै, म्हेतो थारी पूजा मांनी ।" इतरो कहि अबोला रह्या[14] । तरै इण वळै कांधैनूं तरवार मांडी । तरै

---

1 नाम पर । 2 जिसने अपने नामसे । 3 तब तणू युद्ध करके काम आया । 4 युद्ध-विशारद । 5 भाग कर निकल जाने वाला । 6 इच्छा, कामना । 7 यह बात किसीको प्रगट नहीं होने दी । 8 मस्तक अर्पण करके पूजा करनेके निमित्त (शिरच्छेदन करनेको) अपनी तलवार गर्दन पर रखी । 9 मत, नहीं । 10 पीछे । 11 सो तलवार हटा दी । 12,13 दूसरी बार पुनः तलवारसे कंधेका संधान किया तब देवीजी मुंहसे बोलीं । 14 इतना ह ककर चुप हो गई ।

देवीजी वळै कह्यो–"तोनूं म्हे बगसियो,[1] उबारियो,[2] तूं कंवळपूजा मत कर।" तरै इण कह्यो–"माताजी, यूं तो हूं मांनूं नहीं।" तरै माताजी आपरा हाथरी सोनारी चूड़ उतार नै विजैरावरै हाथै पैहराई नै सीख दी, कह्यो विजैरावनूं–"घरे जा।" पछै घरे आयो। विजैरावरै हाथ देवीजी चूड़ी घाली तठाथी विजैराव चूड़ाळो कहायो।

तठा पछै वरहाहा रजपूत, कहै छै, पँवारां भिळै, तिणांरी ठाकुराई ऊंचदेरावर कनै छै, तठै हुती। नै खाडाळ मांहै विजैराव रहै, सु भाटियांरो साथ वरिहाहांरा सासता[3] विगाड़ करै, सु इणांनूं जोर खारा लागै[4] तरै दीठो, बीजो तो पोहचां नहीं, नै दाव करां[5]। तरै विजैरावनूं वरिहाहे नाळेर मेलियो। तरै आपरै नांवै तो विजैराव न भालियो, नै देवराव वरसै ५में बेटो हुतो, तिणरै नांवै नाळेर भालियो, नै साहो थापियो[6]। रावळ आप नान्हा बेटारै कोडरै वास्तै आयो[7]। पैहलै दिन वीमाह[8] हुवो नै बीजै दिन गोठ की, नै साथ सदोरो हुवो, तठै चूक कर नै विजैरावनूं मांणस ७५०सूं मारियो[8]। तरै देवराजरी धाय डाही थी,[9] तिण देवराजनूं प्रौ॥ लूंणानूं सूंपियो, कह्यो–"थांरै सांढ[10] १ हाथबाथ छै,[11] तिका नांवजादीक छै। थे इतरो आपणा धणीरो बीज उबारो, ले नीसरो[12]।" तरै प्रौ॥ लूंणो देवराजनूं ले नीसरियो। वांसै देवराजनूं वरिहाहे डेरांमें घणो ही जोयो पण लाधो नहीं[13]। तरै कह्यो–"मारगमें पग देखो, को ले नीसरियो न छै?" तरै उणै सांढरा पग मारगमें दीठा। तरै कितरोहेक साथ वांसै वाहर चढ़ियो। सु सांढ वाहर अपड़ावण सारीखी

---

1 तुझको हमने बख्शिश किया। 2 बचाया। 3 निरंतर। 4 सो इनको बहुत ही बुरा लगता है। 5 तब देखा कि छल करनेके अतिरिक्त इनको पहुंच (जीत) नहीं सकते। (बीजो = अतिरिक्त, अलावा)। 6 और विवाहका दिन निश्चित किया। 7 रावल स्वयं अपने छोटे बेटेके लाड़-प्यारके लिये साथमें आया। 8 वहां धोखा करके विजयराजको ७५० मनुष्योंके साथ मार दिया। 9 तब देवराजकी धाय जो बड़ी समझदार थी। 10 ऊँटनी। 11 अपनी इच्छाके अनुसार तेज गतिसे चलाई जा सकने वाली है। 12 अपने स्वामीके बीजको (वंशको) बचानेके लिये इतना काम करो और इनको लेकरके यहांसे निकल जाओ। 13 परंतु मिला नहीं।

नहीं[1]। प्रोहित लूंणारा घर पोकरण कन्है था; तठै देवराजनूं ले कुसळै आय पुंहतो[2]। वरिहाहांरो साथ वांसै हुवो आयो। आयनै बांभण रतन लूंणोतरानूं पूछियो–"थे देवराजनूं ले आया छो ?" तरै बांभण लांप कह्यो–"म्हे तो किणनूं ही ले आया नहीं।" वळै उणांनूं कह्यो–"थांरै मन मांहै कूं भरम रहै छै तो थे म्हांरा घर जोवो[3]।" उणा फिर फिर सारा वस्तीरा डावड़ा[4] जोया। जोवतां जोवतां देवराजनूं उणां मांहै ओपरो सो दीठो,[5] तरै बांभणनूं पूछियो–"ओ डावड़ो कुण छै ? ओपरो सो दीसै छै।" तरै बांभण कह्यो–"ओ म्हांरो बेटो छै।" तरै उणै वरिहाहांरा आदमियां कह्यो–"थांहरो बेटो पोतरो छै, थे भेळो ले जीमो, ज्यूं म्हे परा जावां[6]।" तरै बांभण आप तो भेळो ले न बैठो नै वडा बेटा रतनानूं देवराजरै भेळो बैसांणियो नै जीमियो। तरै वरहाहांरा आदमी फिर गया। देवराज तो इण भांत वचियो। तठा पछै बीजा बांभणां रतनरा भाईयां रतननूं पांत मांहिथा परो काढ़ियो[7]। तरै रतन जोगी हुयनै सोरठ गयो। उण बांभणरी जात लूंणोत नांव लांप वसुदेवरो सीहथळी गांव वसै छै[8]।

तठा पछै देवराज मोटो हुवो। तुरकांरी चाकरी गयो। वांसै रबारी सांगी देवराजरो वरिहाहांरै उठै गयो हुतो सु उण रबारीनै वरहाहांरी बैर[9] रवाय भाई कह वतळायो तो सु उण रबारी आयांरी खबर रवायनूं हुई, तरै उण रबारीनूं रवाय तेड़ लियो[10]। वात-विगत पूछनै बेटी हुरड़ दिखाय नै जीव दोहरो करण लागी; तरै रबारी सांगी कह्यो–"थे किण वासतै जीव दोहरो करो छो[11] ?"

---

1 वह सांढ़ (ऊंटनी) पीछा करने वालोंकी पकड़में आ जाय वैसी नहीं है। 2 पहुंचा। 3 तुम्हारे मनमें कोई वहम है तो हमारे घर देख लो। 4 लड़के, वच्चे। 5 देखते-देखते उन सवमें देवराजको कुछ अजनवी सा देखा। 6 तुम्हारे वेटे-पोतोमें से ही है तो तुम उसको अपने शामिल वैठा कर भोजन करो, ताकि (हमारा वहम मिट जाय और) हम चले जायं। 7 जिसके वाद दूसरे व्राह्मणों और रत्नके भाइयोंने पंक्तिमेंसे निकाल दिया (जाति-च्युत कर दिया)। 8 वह वसुदेवका पुत्र लांप नामसे लूणोत जातिका व्राह्मण सीहथली (सिंह-स्थली) गांवमें रहता है। 9 स्त्री। 10 तव उस रैवारीको अपने पास वुला लिया। 11 तुम किसलिये जी उदास कर रही हो।

तरै कह्यो–"बेटी इतरी[1] मोटी हुई, नै इणरै[2] वररी[3] खवर ही नहीं। न जांणां मुंवो,[4] किना[5] कठी[6]ही जोगी सन्यासी हुय गयो।" तरै रबारी सांगी कह्यो–"मोनूं[7] वधाई दो, थांहरो[8] जमाई सलामत छै, मोटो हुवो छै, लायक छै।" तरै रब्रायनूं घणो सुख हुवौ। पछै घणी अजीजी की—'जु किणही सूल देवराजनूं अठै आणो,[9] तिका वात करो।" तरै इण कह्यो—"मोनूं थांहरो, थांरा धणीरो वेसास नावै[10]।" तरै रवाय घणा वचन किया। तरै रवारी सांगी देवराजनूं छांनै[11] ले आयो। रवाय घर मांहै ले राखियो। कितराहेक दिन वतोत हुआ। रवायरो धणी जाणै नहीं। पछै कितरैहेक दिने हुरड़नूं आधांन रह्यो,[12] तरै बैर[13] किणही भांत आपरा धणीनूं समझाय नै बोलबंध[14] लेनै देवराज आपरा धणीसूं मिळायो। पछै देवराज को दिन उठैहीज[15] रहतो हुतो। उठै देवराज मैड़ीमें पोढ़ै छै, तठै जोगी बाबो रैहतो। एकरसां[16] इणरो कूंपो[17] रवायनूं सूंप गयो थो। भरम भागो न थो[18]। सु उण कूंपा मांहिथा टबको १ छण नै हेठो पड़ियो,[19] तिको देवराजरी कटारीरै लागो, सु लोहरी थी सु सोनारी हुई। तरै सवारै देवराव दीठी,[20] तरै विचार दीठो जु–"इण कूंपा मांहै काई बलाई छै।" तरै ओ कूंपो देवराज उरो लेनै कबज कियो[21]। सवारै मैडो रातरी वाळदी,[22] तरै रवाय जांणियो–"कूंपो मांहै बळ गयो।" तठा पछै कितराहेक दिने उठाथी देवराव सुसरा सासूनूं कह्यो–"मोनूं लोक सको[23] 'हुरड़वनो[24]' कह वतळावै छै। हूं थांसूं जुदो वसीस[25]। तरै नदीरै पैलै कांठै[26] जाय आपरो गूढो कर रह्यो। तिणनूं ही लोग 'हुरड़वाहण' कैहण लागा। तिका ठोड़ हमैंही 'हुरड़वाहण' कहीजै

---

1 इतनी। 2 इसके। 3 पतिकी। 4 मर गया। 5 अथवा। 6 कहीं। 7 मुझको। 8 तुम्हारा। 9 किसी भी प्रकार देवराजकों यहां लाओ। 10 तुम्हारे पतिका विश्वास नहीं होता। 11 गुप्त। 12 हुरड़को गर्भ रहा। 13 पत्नी। 14 वचन। 15 वहां ही। 16 एक वार। 17 कुप्पा। 18 संदेह दूर नहीं हुआ था (कुप्पेमें क्या वस्तु थी, इसका पता नहीं था) 19 उस कुप्पेमेंसे छन कर एक बूंद नीचे गिरी। 20 देखी। 21 तब इस कुप्पेको देवराजने लेकर अपने कब्जेमें कर लिया। 22 दूसरे दिन मैंड़ीमें आग लगा दी। 23 सभी। 24 हुरड़का पति। 25 मैं तुम्हारेसे अलग रहूँगा। 26 परले किनारे।

छै। तरै देवराज मनमें विचारियो—हूं अठै रहूं तो म्हारा माईतांरो नांव जाय[1]। तरै उठाथी छाड़ नै मांमा भुटादेरावर नजीक[2] किणही ठोड़ रहता था तठै नजीक आय रह्यो, नैं मांमारी घणी चाकरी करी, नै माल तो देवराज कन्है उण रस कूंपा कर घणोई[3] छै। सासतो[4] पांच दस कोस फिर आवै। सु एक ठोड़ गढ़नूं देखतो फिरै छै। सु किणहीक देवराजनूं, जिण ठोड़ हमें देरावर छै, तिका ठोड़ वताई। कह्यो—"कोस ४०री सिंध दिसा उजाड़ छै, कोस ६० तथा ८० माड[5] दिसा उजाड़ छै, नै इण ठोड़ पांणी छै।" तरै मांमा भुटारी घणी चाकरी करण मांडी। मांमो खुसी हुवो, कह्यो—"तूठो भांणेज[6]! क्यूं मांग[7]। म्हे म्हारा घर सारू दां[8]।" तरै इण देवराज कह्यो—"ब्रह्म-वाचा, रुद्रवाचा, हूं दिन दोय मांही विचार नै मांगीस[9]।" तठा पछै दिन दोयनूं कह्यो—"एक आसरा जोगी ठोड फलांणी जायगा पाऊं[10]।" तरै इण मांमै कह्यो—"भली वात।" तरै उणरै परधांनै भाइयां-बंधवां मांमानूं समझायो, कह्यो—"ओ किण घररो छोरू छै[11]। ओ अठै रह्यो थांनूं दुख देसी।" तरै वळै नटियो[12]। तरै देवराज कह्यो—"मैं कदै थां कनां धरती मांगी थी[13]। थे थांरी उचितसूं मोनूं तसलीम कराई थी[14]। हमैं तो म्हांरो थांरो ना कह्यो भलो न दीसै। हमैं पांचै लोगै वात सुणी।" तरै भुटै कह्यो—"म्हे थोड़ी धरती देस्यां।" तरै कह्यो—"जिका[15] राज[16] खुसी होय देस्यो तितरी म्हे माथै चढ़ाइ लेस्यां[17]।" मांमै लिखदी—एकण भैंसरा चाम मांहे आवै तितरी दीनी। पछै देवराज पटो मांथै चढ़ाय लियो। भुटै साथै आदमी दिया। तरै कह्यो—"राज! आदमियांनूं हुकम करो, हूं भायसो[18]

---

1 मैं यदि यहां रहता हूं तो मेरे माता-पिता का नाम चला जाता है। 2 नजदीक। 3 बहुत ही। 4 निरंतर। 5 जैसलमेर प्रान्त (पहले मड्ड जैसलमेरसे अलग प्रदेश माना जाता था)। 6 भानजे! तेरे पर मैं प्रसन्न हुवा। 7 कुछ मांगले। 8 हम अपने घरकी हैसियतके अनुसार तुमको देंगे। 9 मांगूंगा। 10 आश्रय योग्य एक स्थान अमुक जगह पर पाऊं। 11 पुत्र, औलाद। 12 तब फिर नट गया। 13 मैंने कब तुम्हारे पास धरती मांगी थी। 14 आपने अपनी इच्छासे मुझे अंगीकार करवाया था। 15 जितनी। 16 आप। 17 उतनी हम सिर चढ़ा कर लेंगे। 18 भैंसका आला (विना कमाया हुआ कच्चा) पूरा चमड़ा।

भिजोय चीराइ नै वाध[1] कढाईस, तिण हेठै आवसी तितरी लेईस[2] । भुटै दीठो बुरी हुई, पिण कांसूं करै । 'बोल बोलिया, धन पराया,' तिका वात हुई । देवराज अठै आइ नै भायसो एक भिजोय नान्हो चीराय नै[3] जठै पांणी हुतो तितरी धरती दोळो[4] फेर आपणी कीवी । पछै घणो साथ राखियो । घणा घोड़ा लिया । गढ़ घातणरी रांग रोपाई[5] । भींत हूंण लागी,[6] सु उठै खेड़ा देवत,[7] सु भींत दीहांरी[8] करै, तिसड़ी रातरी पाड़ नांखै[9], वाज आयो[10] । पछै देवी ऊपर लांघण[11] पांच दस किया । देवी प्रसन हुई, कह्यो—"तूठी, मांग ।" तरै कह्यो—"गढ़ करण दीजै, गढ़री राज रिख्या[12] करो" । तरै देवीजी हुकम कियो—"एक थारी पाकी ईंट, एक मांहरै नांवै काची ईंट, इण भांतरो गढ़ कराय, वज्रमई दुरंग[13] अविचळ हुसी । वाहिरलो कोई ले नहीं सकै, मांहिलांरो दियो जासी[14] ।" पछै इण भांत देवराव देरावर देवीरै हुकमसूं करायो । वडो दुरंग हुवो । कोहर[15] ४ कोट मांहै, कोट भरत हुवो[16] । तळाव १ कोट मांहै, तळाव १ काचो पाको कोटरा पट्टा हेठै खाईरी ठोड छै । कोहर ४ कोट मांहै सीगीवंद[17], पांणी मीठो । वडो कोट हुवो । सारी सिंधरै फळसै[18] । सारांरै ऊपर माडरो गढ़ हुवो[19] । सारो राह मुलतांन सिंधरो अठै वहै[20]। वाहिरला मिळनै तळावरो पांणी पीवै । जोरावरी को सांम्हो जाय न सकै । देरावर नागजो कोट छै[21] । लगाव को नहीं । निपट वडो अगजीत कोट[22] । कोस १० तथा १५ उरै पांणी कठै ही नहीं । कोट तयार हुवो, तरै देवराज घणा घोड़ा रजपूत उण

---

1 लम्बी पट्टी । 2 लूंगा । 3 सैंकड़ा चिरवा कर । 4 चारों ओर । 5 गढ़ वनानेकी नींव रखी । 6 दीवाल होने लगी । 7 स्थान देवता, क्षेत्रपाल । 8 दिनको । 9 उतनी ही रातको गिरा डाले । 10 हैरान हो गया । 11 लंघन । 12 रक्षा । 13 दुर्ग । 14 भीतर वालोंका दिया हुआ जायेगा । 15 कुएँ । 16 कोट सर्वांग संपूर्ण हुआ । 17 पक्के वँधे हुए । 18 समस्त सिंधके द्वार (सीमा) पर । 19 सब गढ़ोंके ऊपर मांड प्रदेशका यह गढ़ तैयार हुआ । 20 मुलतान और सिंधके सभी मार्ग इधर होकरके चलते हैं । 21 देरावर नहीं टूटने वाला कोट है । (वि० एक प्रतिमें 'देरावर नागोजोगी कोट छै' लिखा है ।) 22 नहीं जीता जाने वाला बहुत बड़ा कोट ।

रस-कूंपारो माल करनै राखिया[1]। तठा पछै वरिहाहांसूं दावो मांगणरी मनमें राखै[2], सु घणो साथ राखियो। घणा घोड़ा पायगाह किया। वडी राजवट जमतो गई। पाखर[3], जीन सालरो[4] वडो सामांन कियो नाळां आराबैगढ़ साझियो[5]। सुवरिहाहां मारणनूं हजार दाव प्रपंच करै। सु जिसड़ो[6] साथ करै, तिसड़ी जांण उठै पड़ै[7]। सु वरिहाहां पिण चकिया[8] रहै छै। तिसड़ै समै ऊ[9] रस-कूंपा वाळो जोगी देवरावरी सासू रवाय कनै आयो। कह्यो–"ऊ कूंपो लाव।" तरै इण कह्यो–"ऊ कूंपो म्हे माळिया मांहे मेलियो थो[10], म्हारो जमाई मांहे सूतो थो, सु एक दिन लाय लागी[11], सु कूंपो मांहे बळियो।" तरै जोगी मनमें जाणियो, दीसै छै, "उण मांहिली कोईक बूंद पड़ी छै, तिणसूं लोहरो सोनो हुवो छै। तिण भरम मिटावणनूं जांणीजै छै लाय लगाई छै नै कूंपो उण लियो छै[12]।" तरै जोगी रवायनूं कह्यो--"कूंपो बळै नहीं, पिण लायरो उपाय थारै जमाई कियो[13], नै कूंपो उण लियो छै।" तरै कह्यो--"ऊ जमाई हमैं मांहरै हाथ नहीं[14]। उण मांहरी धरती कितरीहेक तोत कर ली,[15] नै हमैं म्हांनूं मारणनूं सासता साथ करै छै। नै ओ देवराज उठाथी कोसै ३० बैठो छै। नवो गढ़ करायो छै।" तरै उण जोगी लोगांनूं पिण[16] समाचार पूछिया। लोगै पिण अैहीज समाचार कह्या[17]। तरै जोगी देरावर आयो। देवराज पैहलां हीज जांणियो–"ओ कूंपा वाळो जोगी छै।" तरै निलाड़[18] पिण दीठी, मुंहडारो नूर अटकळियो[19]। देवराज आय सांम्हो पगै लागो। घणो जोगीरो आदर-भाव कियो। जोगी पिण

---

1 तब देवराजने उस रस-कुप्पेके द्वारा (लोहेसे सोनेका) माल बना कर बहुतसे घोड़े और राजपूत (सैनिक) रख लिये। 2 जिसके बाद वरिहाहोंसे प्रतिकार लेनेकी मनमें धारे हुए है। 3 हाथीकी झूल, हाथीका कवच। 4 घोड़ेका कवच। 5 बंदूकों और आराबोंसे गढ़को सजाया। 6 जैसा, जितना। 7 वैसी ही उधर जानकारी हो जाय। 8 सावधान। 9 वह। 10 रखा था। 11 सो एक दिन आग लग गई। 12 मालूम होता है उस संदेहको मिटानेके लिये आग लगा दी गई है और कुप्पा उसने ले लिया है। 13 आग लगा देनेका प्रयत्न तुम्हारे दामादने किया। 14 वह दामाद अब हमारे वशमें नहीं। 15 धोखा करके ले ली। 16 भी। 17 लोगोंने भी ये ही समाचार कहे। 18 ललाट। 19 अनुमान किया, समझा।

देवराजनूं देख प्रसन्न हुवो। देवराजरो दिन पिण वळियो[1] सु सांमीरै मनमां भली हीज आई। दिन १ तो सांमी देवराजनूं वात पूछी ही नहीं। देवराज सेवा निपटही घणी करै, सु सांमी एक समै देवराजनूं एकलो देखनै कह्यो–"बाबा! उण कूंपारो कांसूं विचार हुवो[2]?" तरै देवराज कह्यो–"जिका वात हुई सु बाबाजीसूं मालम छै। मोनूं तो क्यूं राज सोंपियो न थो[3]। नै जिकूं भलो छै, जिको रावळो प्रसाद छै[4]।" सु देवराजसूं सांमी प्रसन्न हुयनै कह्यो–"वात हुई सु म्हे जांणी। हिमैं तूं नांव, सिक्को मांहरो माथै ऊपर राख[5]।" तरै देवराज कह्यो–"भली वात। म्हारै माथै भाग, जो राजरा हाथ माथै ऊपर हुसी[6]। कतो हूं मोटो हुईस, नै मांहरी धरती गई छै सु वाळीस[7]। मांहरो दावो वरिहाहां मांहै छै, सु वळसी। राजरी मैंहरथा मांहरै सोह वात भली हुसी[8]।" तरै जोगी देवराजनूं कह्यो–"थारा बळरो विरद वधो[9]।" नै मेखळी, नाद दियो, पात्र दियो, नै कह्यो– "ओ थे पाट बैसो तद दीवाळी दसरावै धारिया करो।"। तरै जोगी वाबै कयो सु यां कबूल कियो। तरै जोगी आपरी मेखळी, नाद, पात्र देवराजनूं दिया। तिका मेखळी देवराज गळैमें घाती[10]; नाद गळा मांहै घालियो;[11] पात्र आगै मेलियो; नै जोगीरो सिक्को धारियो। तरै जोगी खुसी हुय दवा दीनी[12]।–कह्यो–"थांहरी ठाकु-राई दिन दिन वधसी, थांहरै पगसूं आ धरती कदै नहीं जाय, थांहरा दावा वळसी[13]।" सु जोगी तो दवा दे रमतो हुवौ नै देवराज वरि-हाहां माथै मारणनूं साथ भेळो कियो, सु हुरड़ रोजरी रोज[14] वरि-हाहांनूं खवर दै नवा-नवा रूप करि। तिण कर वरिहाहांनूं देवराज

---

1 देवराजका दिन भी फिरा (सुदिन आया)। 2 उस कुप्पेका क्या किया? 3 मुझे तो कोई आपने सौंपा नहीं था। 4 और जो कुछ अच्छा है वह आपकी कृपाका फल है। 5 अब तू हमारा नाम और सिक्का अपने मस्तक पर धारण कर। 6 बहुत अच्छी बात, मेरा सौभाग्य जो आपके हाथ मेरे सिर पर होंगे। 7 और मेरी धरती गई है उसको लौटा-ऊंगा। 8 आपकी कृपासे मेरी सब बातें भली होंगी। 9 तेरे बलकी कीर्त्ति बढ़े। 10 पहिनी, डाल दी। 11 पहिन लिया। 12 तब योगीने प्रसन्न होकर आशिष दी। 13 तुम्हारे पांवोंसे यह धरती कभी नहीं जायेगी और तुम्हारे स्वत्व तुमको मिलेंगे। 14 प्रति दिन।

मार सकै नहीं। सु एक दिन देवराज मांचै बैठो थो, सु हुरड़ मिनकीरो[1] रूप कर मांचा हेठासूं नीसरी[2]। देवराज अटकळी[3]। तरै बरछी पड़ी थी सु लेनै मिनकीरै दीनी, सु अठै मिनकी मुई,[4] नै उठै हुरड़ मुई। तठा पछै साथ करि देवराज वरिहाहां ऊपर गयो सु आदमी ६००सूं वरिहाहांनूं मारियो। वरिहाहांरो गांव लूटियो। सासू रवायरा लूगड़ा खोसांणा[5]। सु देवराज देखतां खोसांणा। सु देवराज खोसणवाळांनूं पालिया नहीं,[6] नै सासू देवराजनूं मांटी छांनो राखियो थो,[7] घणा हीड़ा रवाय किया था[8]। सु रवाय उण वखत दूहो कह्यो–

"विरस भलो वरिहांह; मित न भल्लो भाटियो।
जे गुण किया रवाह, ते सब कालर झल्लिया[9]॥" १

वात

वरिहाहांरो खांनो खणियो[10]। घणो माल, वित, घणा घोड़ा, ऊंठ सारो सामांन हाथ आयो। धरती सारी आपरो अमल कियो। विकूंपुर देरावर विचै आ धरती चित्रांगलस आ अजेस[11] 'वरिहाहो' कहीजै। सु आ धरती सारी हाथ आई। कितरीहेक माडरी धरती देवराजरै रावळै उघरै छै[12]। तिण समै देवराज रतननूं चीतारियो[13]। रतनरै बाप लांपनूं सीहथळीती तेड़ायो[14]। बात पूछी–"थांहरो बेटो रतन कठै? जिको थे मो भेळो बैसांण जीमायो थो[15]।" तरै लांप कह्यो–"उणनूं तो तदहीज उणरै भायां पांत बाहिर काढ़ियो, सु जोगी

---

1 बिल्ली। 2 निकली। 3 जान लिया। 4 मर गई। 5 सास रवायके वस्त्र खोसे गये। 6 देवराजने खोसने वालोंको रोका नहीं। 7 और सासने देवराजको अपने पतिसे छिपा कर रखा। 8 रवायने उसकी बहुत सेवा की थी। 9 वरिहाहा-क्षत्री शत्रु भी अच्छा, किन्तु भाटी क्षत्री मित्र भी अच्छा नहीं। रवायने जो उपकार (देवराजके साथ) किये, वे सब कल्लर भूमिमें वर्षाके समान हुए (निरर्थक हुए)। 10 वरिहाहोंका खोज उठा दिया। 11 अभी तक। 12 कितनी माड प्रदेशकी धरतीका राजस्व देवराज प्राप्त करता है। 13 याद किया। 14 रतनके बाप लांपको (सिंह-स्थली) सीहथलीसे बुलवाया। 15 जिसको तुमने मेरे शामिल बैठा कर भोजन करवाया था।

हुय सोरठ-गुजरातनूं गयो । तरै देवराज लापनूं कह्यो"–थे उठै जावो, म्हारा आदमी खरच दे साथै थांहरै मेलस्यां;[1] दावै तठासूं ले आवो;[2] म्हारै माथै रतनरो घणो किरावर छै[3] । म्हे रतनसूं घणो भलो करस्यां[4] ।" पछै लांपनै देवराजरा आदमी सोरठसूं रतननूं ले आया । पछै देवराज रतननूं आपरो बारहटो[5] दियो । माथै छत्र मंडायो । तिणरै पछै देथा चारणांरी बेटी देवराज मांगनै रतननूं परणाई । तिण रतनरै पेटरा भाटियांरै चारण रतनूं छै[6] ।

तठा पछै एक वार रावळ देवराज धार ऊपर गयो,[7] तद आपरा भांणेजनूं देरावर सूंप गयो हूंतो, सु एक वार तो भांणेज फिर बैठो हुतो[8]। पछै देवराज गढ़नूं ढोवो कियो,[9] तरै उण डरनै प्रोळ खोल दी । तरै देवराजरै मनमें वात आई । इण गढ़री ठोड़ सूरमी न छै[10] । तदसूं बीजी ठोड़ खाटणरी मन धारी[11] । तिण दिन लुद्रवै पँवांरांरी वडी ठाकुराई छै । बीजी ही तिण ठोड़ घणी ठोड़ां पँवांरांरी ठाकुराई छै । सु देवराज लुद्रवो लेणरा दाव-घाव घड़ै छै[12] । तरै पैहली तो पँवांरांसूं मास ४ कागळवाई[13] कीवी । काई अवीरी भली वस्तु व्है सु मेलै[14] । तिणां साथै आपरै घर मांहै रूड़ेरा आदमी मेलै[15] । उणां आदमियांनूं कहै–"उठारो चास-वास देख आवो[16]।" यूं करनै आवो-जाव कीवी । पछै मास ४ आडा घात नै लुद्रवारा धणियां पँवारां कनै आदमी ४ आपरै घर मांहै रूड़ा हुता सु मेलिया । उणां साथै सिंधरी तरफरो कपड़ो, घोड़ा मेलिया नै कागळ दिया । कहाव करायो[17]– "कहो तो खाडाळ मांहै पांणीरो तळाव न छै, नै मांहरै तळाव ३ करावणा छै । थे कहो तो म्हे खाडाळ मांहै तळाव करावां,

1 मेरे आदमियोंको खर्च देकर तुम्हारे साथ भेजूंगा । 2 चाहे जहांसे ले आओ । 3 मेरे ऊपर रत्नका वहुत उपकार है । 4 रत्नके साथ वहुत भला व्यवहार करूंगा । 5 बारहटका पद । 6 उस रत्नके वंशज भाटियोंके रतनूं चारण कहलाते हैं । 7 धार ऊपर चढ़ करके गया । 8 सो एक वार तो भानजा वदल गया था । 9 पीछे देवराजने गढ़ पर धावा किया । 10 इस गढ़की भूमि शूरवीर (वीरभूमि) नहीं है । 11 जबसे दूसरी जगह प्राप्त करनेका विचार किया । 12 घाव करनेके प्रयत्न (दाव-पेच) सोच रहा है । 13 पत्र-व्यवहार । 14 कोई अनोखी अच्छी वस्तु हो सो वहां भेजे । 15 उसके साथ अपने घरके चतुर मनुष्योंको भी भेजे । 16 वहांके रंग-ढंग (भेद) देख कर आओ । 17 कहलवाया ।

नांव मांहरो हुसी नै तळाव कांम थांहरी रैतरै थांहरा रजपूतांरै आवसी[1]। तरै एक वार तो पँवार नटिया, पछै देवराजरा परधांन मास खंड उठै रहिनै पाखा देवळी सारी भरमारी[2]। आपरै हाथ पईसांरै पांण सोह वस करने जैसळमेरसूं कोस······काळो डूंगर खाडाळरै मध्य भाग छै, तठै तळाव ३रो दुवो कढ़ायो,[3] नै परधांन देवराज कनै आयो। सु देवराज गाढो राजी हुवो। तळाव ३ मंडाया—

१ तणुंसर।
१ विजैरावसर।
१ देवरावसर।

अै तीन तळाव मंडाया[4]। तिणां करणनूं पैहला तो आपरो कांमदार मुसालो मेलियो[5]। पछै तळावरै बांहनै उठै वस्ती कीवी[6]। उठै सादीसी आपरै रहणनूं हवेली वणाई[7]। पछै आप पिण आया करै। जिको पंवारांरो आदमी आवै तिण आगै पंवारांरी घणी वडाई[8] करै। अै वडा ठाकुर छै। तळावां मांहै मांहरो[9] कासूं[10] छै। जिणांरी[11] धरती छै तिणांरो[12] धरम छै। जिको आवै तिणनूं पईसा दे राजी करै। मुसालानूं सासता आदमी लुद्रवै आवै। तिणां साथ परधांनां, कांमदारां, खवास, पासवांनां, छड़ीदारां सारांनूं भली-भली वस्त मेलै। सारी साहिबी हाथ कीवी। कोई यूं रोकणहार नहीं रह्यो, जु—"ओ देवराज मास-मास दोय-दोय मास अठै रहै छै सु भलो नहीं।" यूं करतां तळाव तो पूरा हूंणरी तयारी हुई, तठै पंवारां ठाकुरांसूं कहाव कियो[13]—"मोनूं रावळी बेटी दो, मोनूं राजपूत करो[14]।"

1 नाम तो मेरा होगा ही किन्तु ये तालाव तुम्हारी प्रजा और राजपूतोंके लिये काम आयेंगे। 2 पीछे देवराजके प्रधान मनुष्योंने मास-दिन वहां रह करके सभी कर्मचारियोंको वहुत धन देकर अपने वशमें कर लिया। 3 वहां तीन तालाव करवा देनेकी आज्ञा प्राप्त की। 4 ये तीन तालाब करवाने शुरू किये। 5 उनको बनवानेके लिये पहले तो अपने कामदारको और पत्थर-चूना आदि मसाला भेजा। 6 पीछे तालावोंके मिस वहां पर कुछ वस्ती भी वसाई। 7 और एक सादी हवेली भी अपने रहनेके लिये वहां बनवा ली। 8 प्रशंसा। 9 हमारा। 10 क्या। 11 जिनकी। 12 उनका। 13 कहलवाया। 14 मुझको अपनी कन्या दें और मुझको राजपूत बनायें (मुझे भी योग्य राजपूतोंमें समझ कर अपनी कन्याका विवाह मेरे साथ करें)।

तरै पंवारै कह्यो–"म्हे देवराजसूं डरां ।" तरै आदमी फिर पाछा आया । मास २ बोच पाड़िया । राजलोगनूं, रांणीनूं भली-भली वस्त मेलनै आपरै हाथ किया[1] । मास २ पछै रांणी साथै कहाव करायो । तरै राजा कह्यो–"ओ खोटो आदमी छै, कोहेक दगो दै ।" तरै कह्यो–"किसो अठै दगो देसी[2] ? उणरा आदमियांनूं सूधो कहिस्यां,[3] सो १०० आदमियांसूं आवो । इधक[4] आदमियांसूं आवण न दां ।" तरै आ वात थापी[5] । तरै देवराज कह्यो–" भली वात ।" पिण आदमी पाछा मेलिया, कहाड़ियो–"म्हांरै मांथै वैर छै,[6] हूं फलांणां[7] दिनरै साहा ऊपर आईस । घणो जताव राज किणहीसूं मत करो[8] । नै लुद्रवारी बारै प्रोळ छै, सु म्हे अवेरा-सवेरा किणही प्रोळि आवस्यां[9] । सारी प्रोळिरा प्रोळियांनूं[10] हुकम कर राखो, म्हे जिण प्रोळि आवां, म्हांनूं उण प्रोळि मांहै असवार १०० एक वींद[11] आवण देज्यो ।" इसड़ो दूवो कढायो,[12] नै आया सु प्रोळियां सारांनूं पईसांसूं पैहली भर मारिया था[13] । सारांनूं राजी कर राखिया था । पछै साहारै दिन बारैसो १२०० असवार जीनसाळिया[14] करि ऊपर ढीला वागा पैहर केसरिया करनै बारै वींदारै माथै मोड़ बांधनै बारै जांन[15] करनै एकण समचै[16] बारां ही प्रोळि मांही पैठा[17] । मांहै जाय पंवारांनूं कूटमार देवराज लुद्रवो लियो । आपरी आंण-दांण फेरी[18] । वडी साहिबी जमी । पछै कितरेके दिनैं देवराजनूं अरोड़रै तुरके सिकार रमतानूं मारियो[19] ।

---

1 अपने वश किये । 2 यहां कौनसा दगा देगा । 3 उसके आदमियोंको स्पष्ट कह देंगे । 4 अधिक । 5 तब यह वात निश्चित हुई । 6 हमारे ऊपर शत्रुता रखने वाले हैं । 7 अमुक । 8 आप किसीको इस संबंधकी अधिक जानकारी नहीं होने दें । 9 सो हम वेर-अवेर किसी समय किसी भी पोल से आयेंगे । 10 पोलके पहरेदार । 11 दूल्हा । 12 ऐसा हुक्म निकलवाया । 13 सबको पैसे देकर अपने वशमें कर लिये थे । 14 कवचधारी घुड़-सवार । 15 वरात । 16 एक ही संकेतसे, एक ही साथ । 17 प्रवेश किया । 18 अपनी आन-दुहाई प्रवर्त की । 19 फिर कितनेक दिनोंके वाद अरोड़के मुसलमानोंने देवराजको शिकार खेलते हुएको मार डाला ।

वात

तिण समै धार पंवार धणी छै। पंवारांरै एक मुंहतो[1] वडो ग्रादमी छै। परधांन वडो ग्रादमी नांवजाद[2] छै। तिरारै माथै केहेक रुपिया हुवा, नै हाथी सोएक माथै हुवा[3]। सु पईसा तो ज्यूं त्यूं कर भरिया, नै हाथी कठैही जुड़ै नहीं[4]। सु उण परधांनरो कबीलो सारो ग्रटक मांहे[5], तिको बिना हाथी दियां छूटै नहीं। सु मुंहतो घणी ही राईतनां फिरियो,[6] पिण हाथी कठैही जुड़ै नहीं। हाथी मांगियां कुण दै? सु तिण दिन रावळ देवराज वडो दातार, वडो जूंझार, वडो नांवजाद। सु धाररा धणियांरो मुंहतो रावळ देवराज कनै ग्रायो। सु ग्रो मुंहतोई नांवजाद थो, सु देवराजरा हुजदारांसूं[7] मिळियो, उणां घरै उतारियो[8]। घणो ग्रादर-भाव कियो, वात पूछी, कह्यो–"क्यूं ग्राया छो?" तरै ग्रापरी वात मांड कही[9]। नै देवराजरा हुजदार पिण वडा मांणस हुता, तिण भलो समो[10] जोयनै धाररा मुंहतानूं रावळसूं मिळायो। वात एकंत मिळ सको कीवी[11]। ग्रागला राजा सती हुता[12]। ग्रचड़ां बोल उबारणरी घणी वात मन मां राखता[13]। तरै देवराज कांमदारांनूं कह्यो–"ग्रो वडो मुंहतो वडै दरबाररो परधांन इतरा[14] राईतन[15] छोड़नै मोनूं जांणनै इतरी भूंय[16] ग्रायो, तौ इणरो जरूर ग्ररथ सारणो[17]।" तरै हाथी सौ दिया। मुंहतानूं घोड़ो सिरपाव दै सीख दी[18]। हाथियांरै बांट-खरचरा दांम लेखो कर दिया[19]। महावत भोई साथै दिया। कह्यो–"धार जायनै पोंहचाय

---

1 महता, कामदार, प्रधानामात्य। 2 ग्रपने नामसे पहचाना जाने वाला। 3 जिसके ऊपर कई रुपयोंका ग्रौर एकसौ हाथियोंका कर्जा हो गया। 4 ग्रौर हाथी कहीं भी मिले नहीं। 5 सो इस कारण उस प्रधानका सारा परिवार भी जेलमें। 6 सो वह प्रधान कई रजवाड़ोंमें फिरा (राईतन=राजा)। 7 प्रमुख कर्मचारियोंसे। 8 उन्होंने उसे ग्रपने घरमें ठहराया। 9 तब ग्रपनी ग्रथसे इति तक कही। 10 मौका। 11 एकान्तमें मिल कर सब वात कही। 12 पहलेके राजा दानी थे (सती=दानी, सत्यवादी)। 13 श्रेष्ठ पुरुषोंकी वात (प्रतिज्ञा) निबाहनेकी मनमें बहुत उत्सुकता रखते थे। 14 इतने। 15 रजवाड़े, राज्य, राजाग्रोंको। 16 दूर। 17 तो इसका काम जरूर पार लगाना। 18 प्रधानको घोड़ा ग्रौर सिरोपाव देकर रवाना किया। 19 हाथियोंके जैसलमेरसे धार पहुँचने तकके मार्गमें लगने वाले दिनोंकी खुराक खर्चका हिसाब करके उतनी रकम भी दी।

आवो।" पछै कितरेहेक दिनै मुंहतो हाथी ले धार आयो। हाथियांनूं भली-भांत सांतरा करनै धाररा धणीरी नजर गुदराया[1]। तरै धाररा धणीनूं इचरज[2] हुवो, नै पूछियो "अै हाथी किण दिया[3]?" तरै कह्यो—"रावळ देवराज भाटी दिया।" तरै आप मनमें ऊणो गयो[4]। जु—"हूं इसड़ा घरराा छोरुवांनूं घर-घर भीख मंगाड़ी[5] नै देवराज उपगाररै वास्तै सौ, सौ हाथी दै।" मनमां तो आ वात जांणी, नै मुंहडा ऊपर कहण लागो[6]—"भाटियांरै हाथी भूखां मरता हुता, आंखियां अदीठ किया[7]। इणरै माथै चढ़ाया[8]।" पछै मुंहतैरा मांणस छूटा[9]। नै माहवतां, भोयानूं मुंहतै मारग खरच देनै सीख दी। वे पाछा देवराज कनै देरावर जाय मुजरो कियो। मुंहतारा कागळ गुदराया[10]। तरै रावळ वात पूछी जु—"धाररै धणी अै हाथी देखनै कांसूं कह्यो[11]?" तरै किणीहेक[12] कह्यो—"पंवार कहण लागो, भाटियांरै हाथी भूखां मरता हुता, आंखै अदीठ किया।" तरै आ वात रावळ देवराज सुणनै घणो बुरो मानियो। तरै आदमी दोय मांणस[13] घरराा चाढ़नै मेलिया। कहाड़ियो[14]—"म्हे भूखा मांहरा हाथी आंखियां अदीठ किया था सु उरा दीजै[15]। नहीं दो तो म्हां नै थां बुराई होसी[16]। वे रावळरा आदमी धार गया। पंवारसूं जाय मिळिया। रावळ कहाड़ियो थो सु कह्यो। वात हँसीरी विख-सी हुई[17]। "देवराज नांमसाद इसड़ो जु सको जांणै[18] मुंहडा वारै काढी छै, तो करसी[19]। पिण क्यूं सौ, सौ हाथी वातां साटै दिया जाय नहीं[20]।"

---

1 हाथियोंको अच्छी तरह सजा कर धारके स्वामीको पेश किये। 2 आश्चर्य। 3 ये हाथी किसने दिये? 4 तब आप मनमें लज्जित हुआ (ऊणो=छोटा, कम)। 5 मैंने ऐसे प्रतिष्ठित घरके पुत्रको घर-घर भीख मांगनेके लिए विवश किया (छोरू=पुत्र, निर्जीव)। 6 और प्रगटमें कहने लगा। 7 भाटियोंके यहां हाथी भूखे मरते थे, आंखोंसे दूर किये। 8 इसके ऊपर एहसान चढ़ा दिया। 9 पीछे प्रधानके कुटुम्बीजन मुक्त हुए। 10 प्रधानने जो पत्र देवराजके नाम लिखे थे, पेश किये। 11 धारके स्वामीने इन हाथियोंको देख कर क्या कहा। 12 किसी एकने। 13 अच्छे आदमी। 14 कहलवाया। 15 हम भूखे (असमर्थ) थे इसलिये हमने अपने हाथियोंको आंखोंसे अदीठ किये लेकिन अब वापिस दे दें। 16 नहीं देओगे तो हमारे और तुम्हारे बीचमें लड़ाई हो जायेगी। 17 हंसीकी बातमें विष (झगड़ा) पैदा हो गया। 18 देवराज ख्यातिप्राप्त है सो सब जानते हैं। 19 जो बात इसके मुंहसे निकली है सो कर कर बतायेगा। 20 परंतु सौ, सौ हाथी बातोंके बल पर दिये नहीं जा सकते।

मांहोमांहे परधांनां नै पंवारांरै बोलाचाली हुई[1] । नै परधांन पाछा आया । हाथी पंवारां न दिया । तठा पछै रावळ देवराज धार ऊपर कटक कियो,[2] सु पंवारांरा वावसूता त्यां रावळ चढ़ियांरी खबर दी[3] । तरै पंवार सांमां मेड़तै आया, हाथी लाया और डंड दे मन मनायो देवराजरो ।

रावळ मुंध देवराजरै पाट हुवो ।

रावळ मुंधरा बेटा—

१ रावळ वछु । १ जगसी ।

वात भाटियांरी

भाटियां मांहे एक साख[4] मंगरिया छै । पैहली तो सुणियो थो, अै मंगळरावरा पोतरा[5] छै । पछै गोकळ रतनूं कह्यो—"अै विजैराव लांजो रावळ दुसाझरो तिणरी औलादरा छै । पैहली हिंदू था, हमैं[6] तो किणही सबब मुसलमांन हुवा छै । तिकै जैसळमेरथा[7] कोस २५ आथवणनूं[8] मंगळीका-थळ छै, तठै रहै छै । वा ठोड़ मंगळीका-थळ कहावै छै । तठै द्रम छै[9] । सु भोमियो होय सु डांडी आवै[10] । असैंधो डांडी टळै सु घोड़ो असवार गरक हुजाय[11] । अभूमियो डांडीसौं टळै सु मरै[12] । इणांरो ऊमरकोट खाडाहळसूं सींव-कांकड़[13] एकण-कांनी[14] चीन्हासूं सींव । सिंधरै सावड़ासूं सींव, भाखररा गांव हींगो-ळजांसूं सींव । एकण कांनी मैहरसूं सींव । खाटहड़ा खारी सौं, मैहर तुरक थळ मांहे रहै छै, सु जैसळमेररा चाकर । गांव सांखली, खुहियो,

---

1 भाटियोंके प्रधानोंमें और पंवारोंके परस्पर कहा-सुनी हो गई । 2 चढ़ाई की । 3 पंवारोंके जो जासूस थे उन्होंने रावलकी चढ़ाईकी खबर पहुँचाई । 4 वंशशाखा । 5 पौत्र । 6 अब । 7 से । 8 पश्चिम दिशाकी ओर । 9 वहां एक ऐसा मरुस्थल है । (द्रम=प्रचंड वायुवेग—आंधियोंके कारण निरंतर बदलते रहने वाले टीवोंका मरु-प्रदेश । 10 जानकार हो सो तो पगडंडी चला आवे । 11 अपरिचित यदि पगडंडीसे टल जाय तो घोड़ा और सवार दोनों उसमें धँस जाते हैं । 12 अनजानसे यदि पगडंडी छूट जाय तो वह मर जाता है । 13 सीमा-सरहद । 14 एक ओर ।

लाखारो-घट अै जागीर छै, थटैरा पातसाही चाकर[1]। तैरै मांणस २०००री जोड़[2]। उण मंगरियांरा ३ धड़ा छै—१ चांवडदे, १ वीरमदे, १ ढेढिया[3]। इणांरै मुदै गांव वीरमो छै[4]। वीजांरै[5] साहळवो छै। तीजांरै[6] गांव भड़वो-सुरड़ियो छै। गांव चाळीस वसै छै। सूनी धरती घणीही छै। पांणी पुरसै १४, कठैही पुरसै ३०, कठैही ६० साठै[7]। चांडीसो महादेव उठै छै[8]। तठै मकर-संक्रांत लागै तद दिन आठ पांणी वैंहत १ हेठै नीसरै[9]।

रावळ वछु मुंधरै पाट वैठो।

रावळ दुसाझ वछुरो।

रावळ दुसाझरा वेटा—

१ रावळ जेसळ।

१ रावळ विजैराव लांजो।

१ देसळ, जिणरा अभोहरिया भाटी[10]।

राहड़ आंक ४०, रावळ विजैरावरो वेटो। तिण राहड़ांरै इतरी ठोड़ जैसळमेररै देस—

गांव ३ खाडाळ मांही। भोपत राहड़ोतरा पोतरा।

२ वाराहा, नहवरथा कोस १० तठै धड़ा २, १ पुनराजरो, १ साजनांरो। १ देवरासर तळाव मांथै गांव २० वसै। कोहर नहवरथा कोस ५ छै। १ नीलपो। १ समदड़ो। १ काका। १ देवरासररी वावड़ी। १ वीखरण मांहि वावडो १४०१नूं वणी[11]। १ राहड़-धोधा रांणा राहड़ोतरा पोतरा, गांव माळोगड़ो। ऊमरकोटरै कांठै[12] जैसळमेरथा[13] कोस १५, तठै घर ५० तथा ६०। तिण नजीक अै गांव—

---

1 सांखली, खुहियो और लाखारो-घट ये तीन गांव जागीरीके हैं जो (जागीरदार) थट्टेके बादशाहके चाकर हैं। 2 इनके पास दो हजार मनुष्योंकी (सुभटोंकी) जोड़ है। 3 उन मंगलियोंके चावड़दे, वीरमदे और ढेढिया ये तीन धड़े (विभाग) हैं। 4 वीरमो इनका खास गांव है। 5 दूसरोंका, दूसरे धड़े वालोंका। 6 तीसरे धड़े वालोंका। 7 कहीं-कहीं ६० पुरुप तक गहरा। 8 वहां चंडीश्वर महादेवका (मन्दिर) है। 9 जब मकर-संक्रांति लगती है तब वहां (उस निर्जल भूमिमें) आठ दिन तक सिर्फ एक बालिश्त नीचे ही पानी निकलता रहता है। 10 देसल, जिसके वंशज अभोहरिया भाटी हैं। 11 वीखरणमें एक बावड़ी सं० १४०१में बनी हुई है। 12 किनारे (सीमा) पर। 13 से।

१ हट-हटांरो । १ सीहडांणो । १ करड़ो सत्तांरो । १ पोछीणो । १ वीकानेररैं देस पीलाप, भरेसर नजीक । माङ राठीवाळी तठै वास[1] ४ राहड़ वैरसळ जसारो वसै छै[2] ।

रावळ विजैराव लांजो, रावळ दुसाझरो बेटो । वडो मांणस ठाकुर हुवो[3] । सिद्धराव जैसिंघदेरै पाटण परणियो हुतो[4] । उठै सिद्धरावरै कपूर-वासिया पांणीरो क्यूं चरचा हुई[5] । तरै रावळ विजैराव पाटण मांहै कपूर थो सु सारो मोल लेनै[6] सहसलिंग तळाव मांहै नाखियो[7] । सारै सहर कपूर-वासियो पांणी पियो । तठाथी रावळ विजैराव 'लांजो' कहांणो[8] ।

रावळ विजैरावरा बेटा–

१ भोजदे रावळ । १ राहड़ । १ देहुल । १ मांगरिया । इतरी साख लंजै विजैरावरा पोतरा[9]–

१ पाहु वापैरावरो । बापोराव विजैरावरो[10] ।

१ साख 'गाहिड़' भाटियां मांहै तिकै रावळ विजैराव पोतरा । जोधपुररै देस वणाड़ कदीम गाहिड़ांरो गांव । वीकानेररै देस गाहिड़-वाळो गांव, वीकानेरथा कोस ३ छै ।

रावळ भोजदे विजैराव लांजारो बेटो लुद्रवै धणी हुवो । निपट वडो रजपूत हुवो । कहै छै वरसां १५ तथा १६री ऊमर मांहै पचास वेढ़ जीतो हुती[11] ।

वात गजनो पातसाहरी छै–

---

1 राठी वालोंका माड गाँव जिसमें चार अलग-अलग बस्तियां हैं । 2 राहड़ गाँवमें जसाका पुत्र वैरसल रहता है । 3 बड़े व्यक्तित्व वाला ठाकुर हुआ । 4 विजयराव लंजा जिसका विवाह पाटणके सिद्धराव जयसिंहदेवके यहाँ हुआ था । 5 वहां सिद्धरावके यहां कर्पूर-वासित पानीकी कुछ चर्चा चली । 6,7 तब रावल विजयरावने पाटणमें जितना कपूर था सो सब खरीद करके सहस्रलिंग तालावमें डलवा दिया । 8 सारे शहरने कपूर-वासित पानी पीया । तबसे रावल विजयराव 'लंजा' कहा जाने लगा । (लंजा=बहुत शौकीन । खूब रंगीला) 9 लंजा विजयरावके पोतोंसे इतनी शाखायें प्रचलित हुईं । 10 विजयरावका पुत्र राव बापा और राव बापाका पुत्र पाहु, जिससे पाहु शाखा चली । 11 कहा जाता है कि रावल भोजदेवने १५-१६ वर्षकी आयुमें ५० लड़ाइयां जीती थीं ।

तिण समै विजैराव लांजो आबूरा पंवारांरै परणियो, तरै सासू निलाड़ दही दियो तरै कह्यो[1]–

"बेटा ! उत्तर दिसि भड़-किंवाड़ हुए[2] ।" सु रावळ विजैराव तो काळ-प्राप्त हुवो छै[3] । तिण समै गजनीरो पातसाह आबू ऊपर अजांणजकरो[4] जाय छै । रावळ भोजदेनूं कहाड़ियो, आगै आदमी मेल[5]–"म्हे पँवारां ऊपर आबू जावां छां, तूं आगै खबर मत देई । म्हे थारो विगाड़ क्यूं नहीं करां; तू थारा[6] लुद्रवा मांहै बैठो रहै ।" सु तिण दिनां जेसळ दुसाझरो आसियो हुय वारै नीसरियो छै[7] । पातसाहनूं कहै छै–"पँवार इणांरै मांमा छै, ओ खबर विगर दियां रहसी नहीं ।" नै भोजदे पातसाहसूं वात की छै, "म्हे कटकरी खबर आबू नहीं दियां[8] ।" आ वात भोजदेरी मा सुणी, तरै भोजदे कनै आइ कहण लागी,–"थारै वापरी निलाड़ म्हारी मा दही दियो तरै कह्यो थो–"बेटा जमाई ! उत्तर-दिस भड़-किंवाड़ हुए । तरै थारै वाप वात कवूल की थी । तिको वोल थारा वापरो जाय छै। आखर एक दिन जायो पूत मरेवो छै[9] ।" तरै रावळ भोजदे नगारो दियो[10] । पातसाह लुद्रवाथी कोस १ मेढ़ीरो माळ छै, तठै उतरियो थो सु पातसाह ही नगारो सुणियो[11] । आगै जेसळ लगावतो हुतोईज[12] । पातसाह चढ़ लुद्रवा ऊपर आयो । रावळ भोजदे बाज कांम आयो [13] । पातसाह सारो सहर लूटियो । रावळरो घर-भार-भरत जेसळनूं दियो[14] । जेसळमेर माथै टीको काढ रावळाई दो[15] । पातसाह फिर पाछो गयो । भोजदे बाळक थको कांम आयो । बेटो नहीं[16] ।

---

1 तोरन-द्वार पर जब सासने विजयरावकी ललाट पर दहीका तिलक निकाला था, तव कहा था । 2 वेटा ! तू उत्तर दिशाका रक्षक होना । 3 रावल विजयराव तो मृत्युको प्राप्त हो गया । 4 अचानक । 5 आगे आदमी भेज कर रावल भोजदेवको कहलवाया । 6 तेरे । उन दिनोंमें दुसाझका पुत्र जेसल ग्रासिया होकर वाहर निकल गया है । 8 हम तुम्हारे कटक लेकर आनेकी खवर आवू नहीं देंगे । 9 आखिर एक दिन जिस पुत्रने जन्म लिया है वह तो मरने वाला है ही । 10 तव रावल भोजदेवने युद्धका नगाड़ा वजवाया । 11 लुद्रवासे एक कोश पर 'मेढ़ीरो माळ' नामक स्थान पर वादशाह ठहरा हुआ था, वहां उसने नगाड़ा सुना । 12 इधर जेसल भोजदेवके विरुद्ध उसे भड़का ही रहा था । 13 रावल भोजदेव लड़ कर काम आया । 14 रावल भोजदेवके घरका सभी सामान, मालमत्ता जेसलको दिया । 15 जेसलके तिलक निकाल कर जैसलमेरका रावल पद दिया । 16 इसके वेटा नहीं ।

वात

रावळ जेसळ दुसाभ्करो बेटो, तिणनूं गजनीरै पातसाह रावळ भोजदेनै मारनै लुद्रवो दियो, सु जेसळ मन मांहे जांणै जु "ग्रा ठोड़ पाधर[1] मांहै नै मांहरै माथै हजार दुसमण छै, सु कठै कै म्हे वांकी ठोड़ देखनै गढ बीजो[2] करावां।" तरै गढरी ठोड़ देखतो फिरै छै। पछै जेसळमेरथा कोस... ग्राथवणनूं[3] सोहांणरा भाखर[4] छै, तठै गढ मंडायो, सु बांभण ईसो वरस १४०रो हुवो थो[5]; उणरा बेटा रावळ जेसळरी चाकरी करता था सु गढनूं कबाड़ो[6] जाय, सु गाडा नीसरै, तिणरो सोर-हाबो हूंण लागो[7]। तरै ईसो बेटांनूं पूछियो–"ग्रो सोर कासूं हुवै छै[8]।" तरै ईसारै बेटां कह्यो–"रावळ जेसळ लुद्रवासूं राजी नहीं, सु सोहांणरै भाखर गढ करावै छै, भुरज दोय हुवा छै।" तरै ईसै बेटांनूं कह्यो–"रावळ जेसळनूं थे मो तांई तेड़ ग्रावो[9]। म्हे गढनूं ठोड़ जांणां छां, तिका बतावसां।" पछै ईसारा बेटा जाय नै रावळ जेसळनूं तेड़ लाया। तरै ईसै जेसळनूं पूछियो–"थे कठै गढ मंडावो छो ?" तरै जेसळ सोहांणरी ठोड़ वताई। तरै ईसै कह्यो–"ग्रठै गढ मत करावो, नै म्हारो नांव राखो जु गढरी ठोड़ हूं वताऊं। मैं पुरातन वात सुणी छै; नै एक वात मैं सुणी छै।" ईसै वात कही सु कबूल कीवी जेसळ। तरै ईसै वात कही–"एक तो वात मैं यूं सुणी छै–"एकण समै[10] श्री कृष्णदेव ग्रठै किणही कांम नीसर ग्राया। ग्रठै म्हारी डोळी छै, कपूरदेसररी पाळ हेठै, तठै ग्राया[11]। ग्ररजुनजी साथै छै। तद भगवांन ग्ररजनजीनूं कह्यो–"इण ठोड़ वांसै मांहरी ग्रठै राजधांनी हुसी[12] तठै जेसळमेर गढ मांडियो छै[13]। ग्रठै तिण मांहै जेसळु मुदायत वडो

---

1 मैदान। 2 दूसरा। 3 पश्चिम दिशाकी ओर। 4 पहाड़। 5 ईसा नामका एक ब्राह्मण जो १४० वर्षकी आयुका हो गया था। 6 मकान आदि बनानेका सामान। 7 जिसका शोर-गुल होने लगा। 8 यह शोर क्यों हो रहा है। 9 रावल जेसलको तुम मेरे पास बुला लाओ। 10 एक समय। 11 यहां कपूरदेसर तालावकी पालके नीचे मेरी डोलीकी जमीन है, वहां आये। (डोहली, डोळी=दानमें दी हुई भूमि)! 12 यहां हमारे पीछे (हमारे वंशजोंकी) इस स्थान पर राजधानी होगी। 13 जहां जैसलमेरका गढ बना है।

कोहर छै[1] । तठै अरजुननूं कह्यो "अठै वडो पांणीरो कुंड तळसीर[2] छै । ओ वचन छै ।" नै ईसै कह्यो–"उठै म्हारी डोहळी[3], कपूरदेसररी पाळ हेठै, तिण कपूरदेसर मांहे सिला १ लंबी फलांणी[4] ठोड़ छै, सु थे उठै जाय, वा सिला उथळ देखो, उण वांसै लिखियो छै सु करीजो[5] । उठै वडो गढ हुसी । लंकारै आकार तिखूणो करज्यो[6] । थांहरै घणी पीढी रहसी । वडो अगजीत दुरंग हुसी [7] ।" पछै जेसळ कारीगरां सारांनूं ले उठै आयो । सिला वताई थी सु उलट दीठी[8] । उण हेठै लिखत नीसरियो[9]–

दूहो—"लुद्रवा हूंती ऊगमण, पांचै कोसै मांम ।
ऊपाड़ै ओ मंडज्यो, तिण रह अम्मर नांम[10] ॥१

वात

वांभण ईसारै कहै रावळ जेसळ कपूरदेसररी पाळ कनै रड़ी[11]सी थी उण कुंडरा पांणी ऊपर संमत १२१२रा सांवण वद १२ आदीतवार मूळ नखत्र रावळ जेसळ जेसळमेररी रांग[12] मंडाई । थोड़ो-सो कोट, आथवण दिसली[13] प्रोळ तयार हुई । वरस ५ पछै रावळ जेसळ काळ कियो । पाट रावळ सालवाहन जेसळरो वैठो । आंक २ ।

रावळ सालवाहन जेसळरो । जेसळ पछै जेसळमेर पाट वैठो । सालवाहण निपट वडो ठाकुर हुवो । जेसळमेररो गढ जेसळ मंडायो थो पण गढ, मोहल, प्रोळ कोहर सारो कांम सालवाहण करायो[14] । जेसळमेर सालवाहण वडो करमप्रसाद[15] धणी हुवो । घणी धरती नवी

---

1 और उसमें जेसलू नामका मुख्य और वड़ा कूप है । 2 तल-स्रोत वाला । जिसमें तल-स्रोतका अपार पानी हो । 3 दानमें दी हुई भूमि । 4 अमुक । 5 उसके पीछे जो लिखा हुआ है उसके अनुसार करना । 6 लंकाके त्रिकोण गढ़के आकारमें वनवाना । 7 किसीसे नहीं जीता जाने वाला वह दुर्ग होगा । 8 जिसको उथल करके देखा । 9 उसके नीचे यह लिखा हुआ निकला । 10 लुद्रवासे पांच कोस पूर्व दिशामें जो स्थान है उसके पास यह गढ़ वनवाना, जिससे नाम अमर हो जायगा । 11 पथरीली ऊंची भूमि । 12 नींव । 13 पश्चिम दिशा वाली । 14 जैसलमेरका गढ जेसलने वनवाना शुरू किया था किन्तु गढ़, महल, पोल और कुएं आदि दूसरा सारा काम शालिवाहनने वनवाया था । 15 भाग्यशाली ।

खाटी[1]। वरस २२ राज कियो। पछै काळ कियो[2]। तरै सालवाहनरो बेटो वैजल एकरसूं पाट बैठो[3]। वैजलमें लखण क्यूंही नहीं। मात्रईथा चूको[4]। तरै वैजलनूं भाटियां मारि परो काढियो[5]।

कवित्त भाटी सालवाहणरा

"सहस बीस हण सुवग सद्द[6] ढोलां सम चलत,
तिण ऊपर भड़-अभंग[7] लीण मतवाळा लोडत।
दस सहँस पायदळ[8] फरद पायक्क फरीधर,
बीस खट्ट वाजंत्र रोळ खळ हण रिण पाखर।
खट तीस वंस दरगह खड़ी दीपै जे दीवांण गहि,
जादव नरंद जै जै जपत सकळ कमळ सालवाहण लहि ।।१
दुअति दुअति ताय दीपत नमत अनमति[9] ताय नांमत[10],
कहत कहत न न करत कमै जाय करत सु न करत।
रचै दुरंगव रूप आप पित नांम अचंचळ,
बारंगना चंद करत जगत धिन संभ्रम जेसळ[11]।
सेहरो चंद सूरह समै राहै न सकै तूझ रहि,
जादव नरंद जै जै जपत सकळ कमळ सालवाहण लहि ।।२
संहँस एक श्रंगार कांम हांमा कै करि अति,
त्रिहु थांनै त्रिय रभह सुसुर वाजित्र वाज जिति।
अद्वेसर मद लहै कोड़ आखाड़ा कीजत,
लीला अंग सुलंक[12] रंग त्यै रावळ रीझत।
अनभाख साख अन अन अवर अमल मलै दाझै असह,
जादवै नरंद जै जै जपत सकळ कमळ सालवाहणह ।।३
कंकण दांमण सघण काछ पंचाळ निरंतर,

---

1 प्राप्त की। 2 मर गया। 3 तब शालिवाहनका बेटा वैंजल एक बार पाट बैठ गया। 3 वैजलमें समझदारी कुछ भी नहीं। 4 किसी मातृ-समान पूज्यासे अनुचित सम्बन्ध हो गया। 5 तब भाटियोंने वैजलको ठोक-पीट कर निकाल दिया। 6 शब्द। 7 अजीत सुभट। 8 पैदल। 9 नहीं झुकने वालोंको, अनम्रोंको। 10 झुका दिया। 11 जेसलका पुत्र। 12 सुन्दर कटि वाली।

सेतबंध रांमेस लगो नव दीपां सायर[1] ।
झाड़खंड मेवाड़ खंड गुज्जर वैरागर,
बागड़ महियड़ सहित खेड़ पावट पारक्कर ।
मुरधरा खंड आबू मंडळ सहित पाल ईढहि सवै,
सालवाहण जो एती सुपह भोम भेयटी[2] भोगवै ॥४
सांसण कोड़ सवाय उभै हसती सो हैमर[3],
दस्स सहँस दारक्क[4] सहँस दस भैंसा सद्धर ।
सहँस गाय सुवाय सहँस दस गाडर[5] छाळी[6],
मांणो[7] एक मोतियां वसुह दै मौज[8] वडाळी ।
सालवाहण जेसळ-संभ्रम कवियां दाळिद्र कप्पियौ,
करि वीर मूठ बूजो सुकव थिर बारहठ थप्पियौ ॥५

चारण रतनरा बेटा बूजानूं रावळ सालवाहण गांव सांसण सिरवो कर दियो[9] । आसणीकोटसूं कोस २, पांणी आसणीकोट पीवै ।

रावळ कालण जेसळरो । वैजळ पछै पाट बैठो । वरस १८ राज कियो । कालणरो पेट जोर वधियो[10] । जोधपुर रिणमलां माथै मंड[11] त्यूं जेसळमेर कालणरा परवार ऊपर सारी साहिवीरी मदार[12] । धणो सारव कालणसूं मिळै[13] । आंक २ । बेटा—

२ रावळ चाचगदे कालणरो ।
३ आसराव कालणरो ।
४ भूणकमळ आसरावरो ।
५ जांझण ।
६ भवणसी ।
६ थिरो
७ ऊगो ।
८ मेहाजळ ।
९ देवो ।
१० अमरो ।
११ तेजसी ।
१२ आसो ।
१३ अजु । इणांरा गांव १२सूं भांभेरो ऊमरकोटरै मारग[14] ।

---

1 सागर । 2 भाटी । 3 घोड़े । 4 ऊँट । 5 भेड़ । 6 बकरी । 7 चारसौ भरीका एक माप । 8 दान । 9 सिरवा गाँव शासनमें दे दिया । 10 कालणका वंश खूब बढ़ा । 11 जिस प्रकार जोधपुरमें रिणमलके वंशजोंका फैलाव और आधार । 12 उसी प्रकार जैसलमेरमें सारी साहिवीका आधार कालणके परिवारके ऊपर है । 13 बहुत-सी शाखायें कालणसे मिलती हैं । 14 इनके १२ गाँवोंके साथ भांभेरो गांव ऊमरकोटके मार्गमें ।

१ गांव भूरो जेसळमेरथा कोस १० उत्तरनूं ।
गांव विकूंपुररीमें भूणकमळांरा नौख, चारण वाळो ।
वीकानेररै देस १ हदांरो वास जभू कनैं ।

१ उदळियावास खींदासर कनैं ।
३ पालण कालणरो ।
४ जसहड़ ।
५ रावळ दूदो ।
५ तिलोकसी । भैसड़ा, राकड़वा, सांजीत, लूणोई, नेडांग, जेबांध[1] ।
५ सांगणद्रेग ।
बांगण चांधण ।
३ लखमसी कालणरो ।
४ रावळ करन चाचगदेरो ।
४ तेजराव चाचगदेरो ।
४ वीकमसी ।
५ साल्ह ।
६ सीहड़ । व्रमसर, मदासर गांव ।
४ जैचंद लखमसीरो । आंक ३
३ रावळ चाचगदे कालणरो, कालण पछै पाट बैठो । वरस ३२ दिन २० जेसळमेर राज कियो । तिणरा बेटा—
५ रावळ तेजसी वडो करनरो । आंक ४ ।

४ रावळ करन चाचगदेरो । चाचगदे पछै टीकै बैठो । वरस २८ मास ५ जेसळमेर राज कियो । तिणरा बेटा—
५ रावळ जैतसी वडो करनरो । घणा वरस जीवियो ।
६ रावळ मूळराज । तिणरा उरजनोत । जोधपुर चाकर ।
६ रांणा रतनसीरो हमीर । हमीर जेसळमेर चाकर ।
५ रावळ लखसेन करनरो ।
६ मूळपसाव भाटी । इणांरै गांव कूंछड़ी जेसळमेरसूं कोस २० ।
६ लूंणराव । इणांरै गांव २— सोजेरो, अरजणी, चांधणथा[2] कोस ६ ।

५ रावळ लखणसेन करनरो । करन पछै पाट बैठो । भोळो-सो ठाकुर हुवो । वरस १८ जेसळमेर भोगवियो । तिण समै रावळ कांनड़दे सांवतसीयोत[3] सोनगरो जाळोर धणी छै । तिण रावळ कांनड़दे

---

1 तिलोकसीके ६ गाँवोंके नाम हैं । 2 से । 3 सामन्तसिंहका पुत्र कान्हड़देव ।

नींबो मांणस ४००सूं जाळोर आयो। पछै कितरैहेक दिनै राजड़िये सूरमालणरै वेटै घात घाली[1]। पछै नींबानूं चूक कर मारियो[2]। नींबो मरतो राजड़ियानूं ले मुवो[3]। नै पंजूपायक छोड नै पातसाहरै गयो।

वात राठौड़ सीमाळरी

सीमाळ पैहली कांनड़देजी तीरै[4] रहतो। पछै कांनड़देजी जाळोर ऊपर घर कराया, तिकै देखणनूं सीमाळनूं मेलियो नै सूरमालणनूं साथै मेलियो, सु सीमाळ मेहलायत देख क्यूं वैंतमें खोड़ काढी[5]। तरै सूर कह्यो–"तूं कांनड़देजीसूं ही घणो समझै ?" यूं करतां माहोमांही वोला-चाली हुई। तरै सीमाळ सूरनूं लोह वाह्यो, सु चूको[6]। सूर लोह वाह्यो सु सीमाळ कांम आयो।

पछै रावळ लखणसेन कांनड़देरी वेटी वांसै मेल आप आगै जेस-ळमेर गयो हुंतो, नै सूरमालण कांनड़दे वेटी साथै मेलियो थो सु नींवो मंडळ परै तळाव झूलतो थो,[7] सु क्यूं सवण[8] वोलियो। तरै नींबै सवणीनूं[9] पूछियो, तरै सवणी कह्यो–"ओ सवण यूं कहै छै–"जांम[10] ४ अठै रहसी तो बापरो मारणहार हाथ आवसी, नै एक पदमणी सारीखी बैर हाथ आवसी[11]।" तरै नींवो उठै रह्यो। अतरै[12] सोनगरी सेझवाळो नै साथै सूरमालण आयो। तरै अठै नींबै सूरमालणनूं साथ सूधो माररनै कांनड़देरी वेटी ले गयो।

६ रावळ पुनपाळ लखणसेनरो। एक वार, लखणसेन काळ कियो। इणरै माथै टीको नीसरियो[13]। वरस २मां दिन ५ हुवा तरै जैतसी तेजरावरो वेटो, चाचगदेरो पोतरै गढ लियो[14]। टीको कढायो। पुन-पाळनूं पूंगळ दे नै उठीनूं परो मेलियो[15]।

---

1 पीछे कितनेक दिनोंके वाद सूरमालनका वेटा राजड़िया उसे मारनेकी ताकमें रहता रहा। 2 फिर नींवेको धोखेसे मार दिया। 3 नींवा भी मरता हुआ राजड़ियाको ले मरा। 4 पास। 5 सीमालने महलोंको देख कर मापमें कुछ कसर निकाल दी। 6 सो टल गया। 7 स्नान कर रहा था। 8 शकुन। 9 शकुनी। 10 प्रहर। 11 और एक पद्मिनीके समान स्त्री हाथ आयेगी। 12 इतनेमें। 13 लखनसेनकी मृत्यु हुई तब एक वार तो इसके सिर पर ही तिलक निकला। 14 दो वर्ष और पांच दिन हुए तब चाचगदेके पोते, तेजरावके वेटे जैतसीने गढ़ ले लिया। 15 पुण्यपालको पूगल प्रदेश दे कर उधर भेज दिया।

मूळपसाव कहै छै, पुनपाळरा पोतरा छै। इणांरै गांव १ जेसळ-मेररै देस गांव कुछड़ी, जेसळमेरथा कोस २० सोढां दिसी[1]।

लूंणराव इणांरै जेसळमेररै देस गांव २ सोजेवो नै आरजणी, चांधणथा कोस ६।

५ रावळ जेतसी तेजरावरो। तेजराव रावळ चाचगदेरो बेटो। तिण रावळ लखणसेनरा बेटा पुनपाळ कना जेसळमेर जोरावरी लियो[2]। निपट वडो ठाकुर हुवो। ओ रावळ घणा वरस जीवियो। इणांरै बेटा मूळराज रतनसी लायक हुता। राजरी सारी मदार आप जीवतां बेटां ऊपर छै। रावळ जैतसीरै परधांन सीहड़ वीकमसी, तिको भली भांत ठाकुराई चलावै छै। रावळ आप पुखतो[3] हुवो छै सु मांहै बैठो रहै छै। राज भली भांत वीकमसी चलावै छै। रावळरै इतबार सारो वीकमसीरै हाथ छै[4]। सु रावळरा सारा भाई-बंध वीकमसी माथै लागै छै[5]। सु रावळ जैतसी तो पुखतो ठाकुर सो किणहीरो कह्यो मांनै नहीं। यूं करतां रावळ निपट बूढांणो[6]; आंखियां ऊपरलो मांस छिटक डोळां ऊपर आयो। राजरी मदार सारी कंवर ऊपर मंडी। कंवर मोटियार तिण आगै सको वीकमसीरी घात घातण लागी[7]। कंवर पण सुणण लागा[8]। कंवर मूळराजरै कनै जसहड़रा बेटा रहै। तिणै दिने अै निपट लायक छै। दूदो तिलोकसी, सांगण, बांगण अै मनमें धरतीरो ग्रासवेध राखै छै[9]। पण मूळराज रतनसी कंवर निपट जोरावर, परधांन सीहड़ वीकमसी निपट जोरावर, तिण आगै कठैही क्यूं धरती मांहै खाय सकै नहीं[10]। सु एक दिन आसकरण जसहड़ोत मूळराज रतनसीनूं कहण लागो—"रावळजी तो निपट बूढा हुवा, थे बेपरवाह। कोई राजरी खबर ल्यो नहीं। परधांन वीकमसी तिको

---

1 जैसलमेरसे बीस कोस सोढोंकी ओर। 2 जिसने रावल लखणसेनके बेटे पुण्यपालसे जैसलमेर जबरदस्तीसे ले लिया। 3 वृद्ध। 4,5 विश्वास करने योग्य सभी कामोंकी जिम्मेवारी रावलकी ओरसे वीकमसीके हाथमें है, इसलिये रावलके सभी भाई-बंधु वीकमसीसे नाराज रहते हैं। 6 इस प्रकार चलाते रावल निपट बूढ़ा हो गया। 7 कुंवर जवान हो गया, अब उसके आगे सभी वीकमसीके विरुद्ध दांव-घातकी बातें करने लगे। 8 कुंवर भी उस ओर ध्यान देने लगे। 9 दूदा, तिलोकसी, सांगण और बांगण ये मनमें धरतीका ग्रासवेध रखते हैं। 10 उसके आगे देशमें ये कुछ भी खा नहीं सकते।

रावळ लखणसेननूं आपरी बेटीरो नाळेर मेलियो छै[1] । सु आगै लखणसेनरै वैर[2] सोढी ऊमरकोटरी हुती[3], सु निपट जोरावर हुती[4] । रावळ इणरो कह्यो लिगार लोप सकै न छै[5] । सु नाळेर आयो तरै गाढो सचींतो हुवो[6]; पछै सोढीनूं पूछण लागो–"रावळ कांनड़देरो वडी ठोड़रो नाळेर आयो छै सु पाछो फेरस्यां तो राईतनां मांहै बुरा दीसस्यां[7] । थे कहो तो नाळेर झालां[8] । तरै[9] सोढी कह्यो–"इतरी वात कबूल करो, आकरा देवाचा करो तो नाळेर झालण दूं[10] ।" तरै रावळ कह्यो–"किसी वात दिसा थे देवचो करावो छो[11] ।" तरै सोढी आ वात कही–"एक तो सांमेळै कंवर वीरमदे आवसी[12], तरै थे कहिजो–"सांमेळो[13] चहुवांणांरो भलो पण[14] सोढां सारीखो नहीं । एक गढ मांहै पधारो तरै[15] कहिजो–"सहर ऊमरकोट सारीखो नहीं । एक सोनगरीसूं हथळेवो[16] जोड़ो तरै कहिजो –"सोढी सारीखो सोनगरीरो हाथ नहीं ।" पछै परण नै सीख दै तरै सोनगरीनूं वांसै मेलनै इळगार कर आवजो[17] ।" सु इण भोळै ठाकुर सोह[18]वात कबूल की । उठै गयो तरै सारी वात यूंहीज[19] कोवी । रावळ कांनड़दे, वीरमदे, राजलोग सको[20] दिलगीर हुवा । पछै रावळ लखणसेननूं सीख दी[21] । कांनड़दे आपरी बेटीनूं वळाई[22] । सूरमालण कितराहेक साथसूं साथै दियो छै । नै रावळ लखणसेन तो इळगार कर सोनगरीनूं वांसै छोड़

---

1 अपनी बेटीका सम्बन्ध करनेके लिये नारियल भेजा है । 2 पत्नी । 3 थी । 4 जो बड़ी जबरदस्त थी । 5 रावल इसके कहे हुएको किंचित् भी लोप नहीं सकता है । 6 जब नारियल आया तो खूब चिंतित हुआ । 7 रावल कान्हड़देके जैसे बड़े राज्यका नारियल आया है सो इसको यदि वापिस लौटा देंगे तो अन्य राजाओंमें हम बुरे दिखेंगे । 8 तुम कहो तो नारियल स्वीकार कर लें । 9 तब । 10 इतनी बात कबूल करें और दृढ़ प्रतिज्ञा करें तो नारियल ग्रहण करनेकी आज्ञा दूं । वि०—देवाचा='दे' (क्रिया)+'वाचा' (संज्ञा) दोनों शब्दोंका (संज्ञाके रूपमें) समास है । 'देवचो' एक वचन समास रूप है । 11 कौनसी बातके लिए तुम प्रतिज्ञा करा रही हो । 12 एक तो यह कि सामेलेमें कुमार वीरमदेव आवेगा । 13 सम्मिलनोत्सव, स्वागत-समारोह । 14 परन्तु । 15 तब । 16 हस्त-मिलाप, पाणिग्रहण । 17 फिर विवाह करनेके बाद जब विदाई दे तब सोनगरीको घृणा और तिरस्कारके साथ पीछे छोड़ आना । 18 सब । 19 इसी प्रकार । 20 सब । 21 फिर रावल लखणसेनको विदाई दी । 22 कान्हड़देने अपनी पुत्रीको विदाई दी ।

परो गयो छै। सोनगरी दिलगीर थकी आवै छै[1]। निसींगड़ी गांवरै तळाव मंडळप कनै आय नीसरियो। आगै मंडळपरा तळाव मांहै रा ॥ नींबो सीमाळोत कसतूरियो मिरघ जवादि जळहर भूलै छै[2]। अठै पांणी ऊपर सोनगरीरो पिण सेझवाळो आंण ऊभो राखियो छै[3]। सोनगरी आपरी छोकरीनूं[4] कह्यो–"झारी तळावथी भर ल्याव।" तरै छोकरी झारी भर ल्याई। तरै सोनगरी पूछियो–"पांणी मांहै इसड़ी सुवास, इसड़ो तिरवाळो किण भांत पड़ै छै[5]?" तरै छोकरी कह्यो–"अठै तळाव मांहै नींबो सीमाळोत कँवर १४० सारीखा मलूक लियां भूलै छै, तिणरी सुवास छै[6]।" तरै सोनगरी बळती-जळती जाती थी[7] पछै छोकरी मेल नींबारी खबर कराई। वात वणाई[8]। पछै उठै सूरनूं कहि डेरो करायो। पछै नींबै सूरमालणनूं सगळा साथ सूधो मारनै सोनगरीनूं आंणी[9]। पछै रावळ लखणसेन तो नींबासूं को दावो कियो नहीं[10]। नै तठा पछै कितराहेक दिनै रावळ कांनड़देरै वळै व्याह मांडियो[11]; नींवारै कांनड़देरी बेटी ऊधळ आई, तिणरी मा रावळ कांनड़देरै सुहागण छै[12], सु आ बैर कांनड़देसूं हठै पड़ी, कहै[13]–"व्याह ऊपर म्हारी बेटी जमाई तेड़ावो।" तरै कांनड़दे तो घणूंही कह्यो–"वे कुण ? म्हे कुण ?" पण बैर रढ मांड रही[14]। तरै नींवासूं कहाव कियो। तरै नींवै कह्यो–"म्है बोहत गैर[15] की छै सु पंजूपायकरा वोल[16] हुवै तो हूं आऊं।" पछै पंजूरा बोल दिया। तरै

---

1 सोनगरी उदास होकर आ रही है। 2 आगे मंडलप तालावमें सीमालका बेटा राठौड़ नींवा तालावके पानीको मृगमदसे सुगंधित करके स्नान कर रहा है। 3 यहां पानीके किनारे सोनगरीकी सेजवाल लाकर ठहरा दी गई है। 4 दासीको। 5 पानीमें ऐसी सुगंध और चिकनाई (तिरमरा) किस बातकी है ? 6 यहां तालावमें नींवा सीमालोत अपने १४० समवयस्क कुमार और मित्रोंके साथ जल-क्रीड़ा करता हुआ नहा रहा है। यह सुगंध उसकी है। 7 तब सोनगरी तो पहलेसे ही जली-भुनी जा रही थी। 8 बात निश्चित की। 9 फिर नींवा सूरमालण और दूसरे साथ वालोंको मार करके सोनगरीको ले आया। 10 फिर रावल लखणसेनने तो (उसकी औरतको भगा कर ले जानेके विरुद्ध) नींबासे कुछ भी झगड़ा-टंटा नहीं किया। 11 रचा। 12,13 जिसकी मां रावल कान्हड़देकी मानिनी पत्नी है सो यह स्त्री कान्हड़देसे हठ करके कहती है। 14 परन्तु स्त्री अपनी हठ पकड़े रही। 15 अनुचित। 16 वचन।

सूंक-भाड़ा लै आपरो कांम करै[1]। उपजै सु सोह खाय जाय, थांनूं क्यूं दै नहीं[2]।" इण भांत कंवरांनूं भखावै छै[3]। एक दिन मूळराज रतनसी दरबारै वैठा छै। दूदो जसहड़ोत कनै बैठो छै, तरै साकारी वात चली। तरै दूदै जसहड़ोत मूळराज रतनसीनूं कह्यो—"जेसळमेर इतरी वडी ठोड़, नै पीढ़ी ५ तथा ७ आपणी हुई, नै साको न हुवो[4]। साका विगर नांम न रहै, सु एक साको कीजै[5]।" तरै मूळराज, रतनसी नै दूदै साकैरी निसचै करी, नै पातसाहसूं विरोध वधावणरी करै। पिण वीकमसी करण न दै[6]। वळै आसकरण वीकमसीरी घात कंवरां कनै घातो[7] सु कहै—"आगलै दिन वोखारी सेखां कनै रु० १३०००) वीकमसी लिया[8], ज्यांमें रु० ७००) रावळ दिया[9]।" औ वातां करै[10]। सु इणांरी वातांसूं मूळराज रतनसी वीकमसीनूं मारणरो विचार कियो।

दूहा—नृभै[11] दुरंग दूवा नरां, सोह[12] आलोचै सीर।
कंवरो सत्र[13] वीकम कहै, हीया पलट्टै हीर॥१
मूळू मंकड़ दोयण[14]मुख, कर लागौ कूंटाळ।
वीकमसी वीसूत्रसौं, रतनो पूंछ रंढाळ[15]॥२

वारता

आसकरण नै मूळराज रतनसी वीकमसीनूं मारणरो विचार कियो सु आ वात रावळ जैतसीरी रांणी सुणी। तरै वीकमसीनूं एकंत तेड़ कह्यो—"तूं परो जा। कंवरांमें लखण क्यूं न छै[16]।" तरै वीकमसी कह्यो—"हूं कठी जाऊं[17]?" पण रावळ सूंस दे वीकमसीनूं जांणो थपायौ[18]।

---

1 प्रधान वीकमसी रिश्वतें आदि लेकर अपना काम चलाता है। 2 जो उपज होती है सब वह खा जाता है, तुमको कुछ नहीं देता। 3 इस प्रकार कुंवरोंको वहकाते हैं। 4 और कोई साका (ख्यातिका काम या युद्ध) नहीं हुआ। 5 सो एक साका किया जाय। 6 लेकिन वीकमसी करने नहीं देता। 7 आसकरणने भी वीकमसीके विरुद्ध कुंवरोंके कान भरे। 8 सो यह कहता है कि अभी थोड़े दिन हुए बुखारी शेखोंसे रु. १३०००) वीकमसीने लिये। 9 जिनमेंसे रु. ७००) ही आपको दिये। 10 ऐसी वातें करते हैं। 11 निर्भय। 12 सभी। 13 शत्रु। 14 शत्रु। 15 जिद्दी, हठी। 16 तू यहांसे चला जा, कुंवरोंमें कुछ भी विवेक नहीं है। 17 मैं कहाँ जाऊं। 18 परंतु रावलने शपथ देकर वीकमसीको जानेका निश्चय करवाया।

दूहा— केथ[1] रयण मूळू सु कुण, देखै नाहीं देख।
अै वीकम ऊवेळिया, बोखारी नै सेख ॥१
सोनो रूपो सावटू[2], लाखां लेखा लेह।
लीण महाघण लाखउत, लोभ कंवर लोपेह ॥२
सोनो जैत संभारियो, हय हय आंणै हत्थ।
तूं भाई परधांन तूं, वीकम छंड कुवत्थ ॥३
उर करवत वहि आपरै, साठ भड़ां सप्रमांण।
वीकम सिव मारग वहै, ले दीना मोजांण[3] ॥४
सांम पसावै सांमध्रम, कीधा मैं क्रम कोड़।
प्रगट रिजक दिन पाधरै, जपै वीक कर जोड़ ॥५
वीकमसी रावळ वदै[4], करदै जो करतार।
हूं जेसळगिर हेकठा, वळै प्रधांनै वार ॥६
वीक विदेसज चालियौ, विजड़हथो[5] बळ बांध।
मूळै तोड़ी मुण सुगुर, साहि आलमसूं सांध ॥७

वात

वीकमसी आगै काई[6] बुराई कर सकतो नहीं, पाल-पाल राखतो वीकमसी[7]। पछै मूळराज आप-मुरादो हुवो[8]। तरै पातसाहसूं तोड़णरी कीवी। सु पातसाहरा गुर रूम-सूंम गया था। सु रूम-सूंमरै पातसाह इणां पीरजादांनूं तेरै कोड़ रुपियांरो माल दियो नै विदा किया[9], सु पाछा वळता जेसळमेर आय उतरिया[10]। असवार २०० पातसाहरा सेखरै साथै वोळाऊ[11], सु मूळराज रतनसी उणांनूं मारनै वित सोह लियो[12]। पातसाहरा गुर बेऊं मारिया[13]। तेरै कोड़ रुपिया नै घोड़ा लिया।

---

1 कहां। 2 एक वस्त्र। 3 दान। 4 कहता है। 5 जिसके हाथमें तलवार है, खड्ग-धारी। 6 कोई। 7 वीकमसी उन्हें रोक-रोक रखतो। 8 फिर मूलराज स्वेच्छाचारी हो गया। 9 सो रूम-सूमके बादशाहने इन पीरजादोंको तेरह करोड़ रुपयोंका माल दिया और फिर वहांसे रवाना किया। 10 सो लौटते हुए ये जैसलमेर आकर ठहरे। 11 यात्रा-रक्षक। 12 मूलराज और रतनसीने उनको मार करके उनका सब धन ले लिया। 13 बादशाहके दोनों गुरुओंको मार दिया।

दूहो—हुओ हमल्लो हिंदवां, सिंधारै सुजड़ेह[1] ।
तरै कोड़ी माल ले, पीट सईदां देह ॥१

उणां सेखजादांनूं मारिया । माल घणो दीठो, जु ओ माल पातसाहरै घररो सु इण वांसै उपद्रव हुसी[2] । जिणै ठाकुरै कहि नै माराया था, तिणांसूं वुरो मांनियो[3] । माल सगळो गढ नीचै भुंहरा छै तिणां मांहै घातियो[4] । पछै आ वात पातसाह सांभळ नै गाढो कोपियो[5] । कह्यो—"मैं इणांनूं घणा गुना माफ किया था, पिण ओ गुनो माफ करूं नहीं ।"

दूहा—जेसळमेर दुरंग गढ, वसै न काही वाक[6] ।
खून[7] बगस्सै खाफरां[8], ते सुरतांण तलाक[9] ॥१
आलम[10] दाढी कढ्ढ कर, घातै वेवै[11] हाथ ।
साझूं[12] गढ हूं मूळ रयण, लेखूं चंद्रप्रसाथ ॥२

वात

पातसाह जेसळमेर ऊपर फोज विदा कीवी, तिणमें सिरदार कमालदी, घोड़ा हजार तीससौं विदा कियो । कमालदी गढ आय घेरियो । घणा दिन हुवा पण गढ तूटो नहीं । वरस २ तथा ३ हुवा सु कमालदीनूं सोगटां[13] रमण घणी चूंप[14] हुती, सु एक दिन मूळराज सादो सो वागो पेहर सादा हथियार वांध नै कमालदी चोपड़ रमतो थो तठै[15] आय ऊभो रह्यो, दांण वतावण लागो[16] । सखरा दांण करै[17] । तरै आप कमालदी रमण लागा सु मूळराज दांण २ जीतो[18] । ऊठतां दांण १ कमालदी जीतो[19] । तरै तो परा ऊठिया । दिन १० तथा १५

1 कटारियोंसे मार दिया । 2 माल वहुत देखा, तव सोचा कि यह माल वादशाहके घरका सो इसके पीछे उपद्रव होगा । 3 जिन ठाकुरोंने कह करके इनको मरवाया था उनसे नाराज हो गये । 4 सारा माल गढ़के नीचेके तलघरोंमें डाल दिया । 5 पीछे वादशाहने जब यह वात सुनी तो वहुत क्रोधित हुआ । 6 प्रकार । 7 अपराध । 8 काफिरोंको । 9 शपथ, प्रण । 10 वादशाह । 11 दोनों । 12 अधिकार करूं, नाश करदूं । 13 चौपड़के पासे । 14 इच्छा, शौक । 15 वहां । 16 खेलकी चाल वताने लगा । 17 अच्छे दांव करता है । 18 तव आप और कमालुद्दीन खेलने लगे उसमें मूलराज दो दांव जीत गया । 19 उठनेके समय (वाजी समाप्त करते समय) एक दांव कमालुद्दीन जीता ।

रमतां हुवा । तरै कमालदी रावळ मूळराजनूं ओळखियो[1] । तरै कमालदी रावळनूं कह्यो–"थे अठै सासता[2] रमणनूं आया करो । अठै आवतां-जावतां थांनूं बुरो चाहसी नहीं[3] । तिण वातमें खुदाय विचै छै[4] ।" तठासूं[5] रावळ रमणनूं सासतो आवै । सु कितराहेक दिन हुवा । तरै आ वात पातसाहजी सांभळी[6], सु पातसाहरै कपूरो मरहठो पंच-हजारी उमराव थो, तिण पातसाहनूं मालम कियो–"मूळराज कमालदी सोगटै रमै छै । गोठिया हुवा रहै छै[7] । गढ़ ले कुण[8] ? म्हांनूं हजरत निवाजस कर विदा करै तो म्हे गढ़ ल्यां[9] ।" तरै पातसाह इणांनूं बारै-हजारी[10] कर विदा करण लागा । तरै यो कह्यो–'हजरत ! एक कोई सिरदार कर मेलो, जिणांरै मुंहडा आगै म्हे दोड़ां[11] ।" तरै मिलक केसर पातसाहरो भांणेज अर जमाई पण हुंतो[12] तिणनूं[13] घणो साथ दे विदा कियो । सु फोज लेनै जेसळमेर नजीक आयो । कमालदी पण साम्हो आयो । उणांनूं कह्यो–"गढ घाए लिरीजसी नहीं[14] । गढ सांमो तूटसी जद लिरीजसी[15] । थे गढ घेर बैसज्यो ।" सु अै मांनै नहीं । तरै कमालदी कह्यो–"थे मोनूं लिखद्यो । सु कमालदी कह्यो घणोही, पिण इणां मानियो नहीं[16] ।" तरै कमालदीनूं रुक्को कर दियो । कमालदी उतरियो । उणै गढनूं चलाया । तरै कमालदी मूळराजनूं कहाड़ियो[17] जु–"मांहरी रोजी मनै व्है छै[18] । देखां थे किसड़ी[19] वेढ[20] करो छो ।" तरै मूळराज रतनसी साथनूं कह्यो जु– "तुरकांनूं गढ लगाव दो, कांगुरै हाथ घाततां तांई कोई तीर गोळी मत चलावो । सु गढरोहो व्है छै[21], नीसरणियां लागै छै, गढरै ठठ-

---

1 पहिचाना । 2 निरन्तर । 3 यहां आते-जाते रहनेमें तुम्हारा कोई अहित नहीं चाहेगा । 4 इस बातके लिये खुदा बीचमें है । 5 उस दिनसे । 6 यह बात बादशाहने सुनी । 7 परस्पर मित्र हुए रहते हैं । 8 गढको कौन फतह करे ? 9 हजरत, हमें कृपा कर भेज दें तो हम गढ फतह करें । 10 बारह हजारी मनसब । 11 जिसके आगे हम सेवा बजावें । 12 था । 13 उसको । 14 उनको कहा—केवल लड़ाई करनेसे गढ़ नहीं लिया जा सकेगा । 15 सामनेसे गढ़ टूटेगा तब लिया जा सकेगा । 16 तब कमालुद्दीनने कहा—तुम मुझे लिख कर दो । कमालुद्दीनने बहुत कहा, परन्तु इन्होंने नहीं माना । 17 कहलवाया । 18 मेरी रोजी मारी जा रही है । 19 कैसी । 20 लड़ाई । 21 सो गढ़का घेरा लग रहा है ।

रियांरी ओट जूंझार जाय लागा छै गढनूं, नै मरहठो कपूरो साथरी मदत करै छै; नै मिलक केसर, रामसा, सराजदीन पोळरी अणी मांहै छै[1]। हाथी १५ किवाड़ भांजणनूं आगै किया छै। नै मूळराज पोळरी हाटां मांहै जीनसाळ पैहर मांणस हजार दोयसूं रह्यो छै[2]। नै तुरक नीसरणियां चढिया छै। नै मूळराज साथसूं ताकीद करै छै जु–"जरैही भेर व्है, तरै सको लोह करज्यो[3]। सु तुरकै कांगुरांनूं हाथ घातियो नै नजीक आया तरै भेर हुई। तरै कांगुरांसूं मतवाळां डांगरजंत्र[4] छोड़िया, सु घणा आदमी मारिया। नै पोळरै मुंहडै मूळराज हाटां मांहिसूं ऊठियो लोहै मिळियो। नै किवाड़ नांख नै रतनसी पण लोहै मिळियो। उठै मिलक केसर सराजदीन, रांमसा बीजाही[5] घणा सिरदार मारिया, घणो साथ कांम आयो। आदमी हजार सित्तर मारांणा। हाथी १५ मारिया। कपूरो मरहठो भागो। बीजी ही[6] पातसाही फोज भागी।

दूहा–केसर मिलक सराजदी, बे[7] मूळू हत्थांह[8]।
जांण कंदोई ऊथळै, खाजो मंझ कड़ाह[9] ॥१
भांणेजो पतसाहरो, जामादो[10] पतसाह।
मुणसज खाधो मूळरज, सबळै ऊभी बांह ॥२
रांमसाह हर रतनसी, खांचिय पांणो वांण।
सिर धड़ सहितो संग्रहै, लीधो जोर विनांण ॥३
सित्तर सहँस निकंदिया[11], कोट भयंकर काळ।
बंधव सेन विछोड़िया, के कूटंत कपाळ ॥४
कांही सेवग सांभरै, के संभारै सांम।
हूंकळ भेरी मूळरज, जीतो गढरो कांम ॥५
पनरै पट-हसती पड़ै, सतर हजार कमंध।
कप्पूरौ नै मरहटो, वे भागा अनमंध ॥६

---

1 और मलिक केसर, रामशाह और सराजुद्दीन ठीक पोलके सम्मुख आ गये हैं। 2 और मूलराज पोलकी आलोंमें दो हजार सैनिकोंके साथ कवच पहिन कर तैयार हो रहा है। 3 जिस समय भेरी बजे तब सभी एक साथ प्रहार कर देना। 4 एक प्रकारकी तोप। 5 और भी। 6 दूसरी भी। 7 दोनों। 8 हाथोंसे। 9 हलवाई जिस प्रकार कड़ाहीमें खाजा उलट रहा हो। 10 दामाद। 11 नाश किया।

वात

फोज भागी तरै कमालदी आय मूळराजसूं अरज की–"जु मिलक केसर, सराजदी, रांमस्या बीजा ही भला मांणस कांम आया छै, तिणांरी लोथां दो जु मक्कै मेलां[1]।" तरै मूळराज कह्यो–"लोथां द्यां नहीं, लोथां आगमें घात नै बाळसां[2]। बीजी लोथां स्याळ, जरख जिनावर खासी, पिण द्यां नहीं[3]।" तरै कमालदी कह्यो–"थे लोथां नहीं दो तो पातसाह मांहरी खाल पाड़सी[4]। हूं इतरी अरज करूं छूं जु लोथां पाऊं[5]।"

दूहा–कप्पूरो नै मरहटो, भड़े उतारै भूत।
मांगै साह कमालदी, केहररो ताबूत[6] ॥१
मिलक कहै मूळा सरस, राय म[7] कर मन रोस[8]।
साहि-आलम पड़ावसी[9], मूझ[10] सकांनी[11] पोस[12] ॥२
जड़-धड़[13] जरखां[14] जंबकां[15], मिलक कमाल म-मग्ग[16]।
पेस करै जे पातसा, केहर जाळिस अग्ग[17] ॥३
तेरी माई पुत्र हूं, तू मेरा सुरतांण।
बाप ! तूझ मो बाप है[18], मूळू जोय प्रमांण ॥४
मूळू कहै कमालदी, सत्र[19] न कोई देह।
केहररो ताबूत लै, मैं तोनूं दीनेह ॥५
मुसलमांन कांधे बिहू,[20] ऊतारै ताबूत।
मूळू नै कम्मालदी, बंधव हुवा जुगून[21] ॥६
ऊपाड़ै नरवाहणां, आसी[22] सौ ताबूत।
रारी[23] व्रन्नां[24] चोळ[25] मुख, साह धखै जमदूत ॥७

---

1 उनकी लाशें दो सो मक्के भेज दें। 2 लाशें नहीं दें, लाशोंको आगमें डाल कर जलायेंगे। 3 दूसरी लाशें भेड़िये जरख आदि जानवर खायेंगे, परन्तु देंगे नहीं। 4 तुम लाशें नहीं दोगे तो बादशाह मेरी चमड़ी उतार देगा। 5 मैं इतनी प्रार्थना करता हूँ कि इनकी लाशें मुझे मिलें। 6 लाश, जनाजा। 7 मत, नहीं। 8 क्रोध। 9 उतरवायेगा, खिंचवायेगा। 10 मेरी। 11 सबकी। 12 पोश, चमड़ी। 13 सिर और शरीर। 14 भेड़िये। 15 जंबुक, गीदड़। 16 मत मांग। 17 आगमें जलाऊंगा। 18 तू मेरा बाप है। 19 शत्रु। 20 दोनोंको। 21 दोनों। 22 आयेंगे। 23 नेत्र। 24 वर्ण, रंग। 25 लाल।

ताबूतां ऊतारिया, प्रह ढोई मड[1] हांण ।
पड़िया दिल्ली पीटणा[2], भाखिस[3] दुक्ख दिवांण ॥८
डसण-गयंदां[4] नांखिया[5], भारवंध भुज ठोर ।
कनछ[6] रजां पट्टाभ्भरण[7], जेहा पावस घोर ॥९
पेरोसा सुरतांण धिख, वळ छळ देखै बेव[8] ।
कप्पूरौ नै मरहटो, सिर मूंडै गद देव ॥१०
सांभळ[9] मिलक कमालदी, सुज[10] भाखै पतसाह ।
केहर मार अदावदै[11], से[12] भाटी चावाह[13] ॥११

वात

पातसाह वळै कमालदीनूं विदा करै छै । कमालदी उजर करै छै जु–"हजरत मरहटा कपूरारै कहै मोनूं हळको पाड़ियो[14] । म्हारा भाई-भतीजा रजपूत मराया, खराब हुवो नै हजरत पण भलो न मांनियो सु हूं जेसळमेर ऊपर जाऊं नहीं ।" तरै पातसाह घणो हठ करनै कमालदीनूं विदा कियो ।

दूहो–सुण फुरमांण न खांण अन, एक न दूजी वार ।
हंसां वचन संभाहियो, गढचै रंद दुवार ॥१

वात

कमालदी घोड़ा हजार अस्सी ले आयो । गढ घेरियो । दिहाड़ै ढोवा हुवा छै[15], सु परधांन वीकमसी ईडर जाय चाकर हुवो थो, सु गढ विग्रहियो सांभळ नै आयौ[16] । आयां पछै कहण लागो जु–"राज मोनूं कूड़ो[17] कळंक दे चोरीरो काढियो थो सु हमैं[18] साच कूड़रो

---

1 युद्ध । 2 रोना-धोना । 3 कहेगा । 4 हाथियोंके दांत । 5 डाल दिये । 6 केवाँच ? 7 हाथी । 8 दोनों । 9 सुन कर । 10 पुनः । 11 शत्रुतासे । 12 सभी, समस्त । 13 प्रसिद्ध । 41 मरहट्टा कपूरेके कहनेसे हजरतने मुझे हल्का दिखाया । 15 दिनको आक्रमण हो रहे हैं । 16 गढ़के घिर जानेकी वात सुन करके आया । विग्रहियो=युद्ध होना । 17 झूठा । 18 अब ।

आसकरणनै पूछै नै नवेड़ो[1] लीजै। तिण दिन राजनूं म्हैं कह्यो नहीं, पिण हमें साच लीजै[2] ।" तरै आसकरण भूठो हुवो । तरै मूळराज रतनसी जांणियो–"ओ मांहरो[3] दुसमण थो सु म्हांरो[4] भलो चाकर गमायो[5] । तिणथी[6] इणां[7] ठाकुरांरै माहोमांहै[8] असुख[9] घणो वधियो[10] । तरै जसहड़ोतां जांणियो[11]–"म्हांसूं बुरो मांनै तो म्हे क्यूं मरां[12] ? तरै दूदो नीकळण मांहै नहीं[13] । तरै आसकरण सूतानूं बांध मांचा मांहै घात नै ले नीसरियो[14] । अै ठाकुर परा गया[15] । दूदो पारकर परणियो हुतो, उठै गया छै[16] । पछै मूळराज जैतसी गढ विढिया[17] । पछै रावळ जैंतसी रांम कह्यो[18] । पछै मूळराज रावळ हुवो । रतनसीनूं रांणाईरो विरद[19] । मूळराज वरस १ नै मास ६ राज कियो। वरस १२ बारै गढ विग्रहियो रह्यो[20] । पछै गढ मांहिलो सांमांन तूटो, बीजो[21] धांन नहीं, काळबी ज्वार[22] मास ६ री हुती, सु मूळराज रतनसी कह्यो–"खावां नहीं; असत धांन छै[23] ।" तरै मरणरो मतो कियो[24] ।

दूहो–पांच कले परवारसूं, रावळ आलोचेह ।
आंपै[25] मर गढ आपस्यां[26], विजड़ां[27] वार करेह ॥१

वात

कमालदीनूं कहाड़ियो जु–"थे म्हांरा भाई हुवा था, सु आज भाईयांरो वेळा छै, म्हांरो बीज उबार राखो[1] ।"

---

1 निर्णय। 2 उस दिन आपको मैंने कहा नहीं, परन्तु अब सच बात क्या है, इसका पता लगावें। 3 हमारा। 4 हमारा। 5 खो दिया, दूर कर दिया। 6 इससे। 7 इन। 8 परस्पर, आपसमें। 9 शत्रुता। 10 बढ गया। 11 तब जसहड़ोतोंने विचारा। 12 हमसे वे शत्रुता मानते हैं तो फिर हम क्यों मरें। 13 दूदाका विचार तब भी वहांसे निकलनेका नहीं। 14 तब आसकरणने उसे सोते हुएको बाँध दिया और खाटमें लेकर निकल गया। 15 ये सरदार चले गये। 16 दूदा पारकर व्याहा था, इसलिये वहां चला गया। 17 फिर मूलराज और जैतसीने गढमें युद्ध किया। 18 जिसके बाद रावल जैतसी मर गया। 19 रतनसीको रानाकी पदवी और विरुद। 20 बारह वर्ष तक गढ घिरा रह कर युद्ध चलता रहा। 21 दूसरा। 22 काली ज्वार। 32 सत्वहीन धान्य है। 24 तब मरनेका निश्चय कर लिया। 25 अपन। 26 देंगे। 27 तलवारोंसे। तुम हमारे धर्म-भाई हुए थे सो आज भाइयोंकी सहायता करनेका समय है, हमारा बीज (वंश) बचा कर रखो।

दूहा—"मूवां गाढै तै हुवै, दीनो वचन सतोल।
क्यूं पाळीस[1] कमालदी, बंधवतणरा बोल[2] ॥१
अखै[3] कमालहि मूळरज, सुण नरवै-नरनाह[4]।
साय अमांन समंधरै, सहिया सोह पतसाह ॥२
इक भांणेज असांहजो[5], कुंवर वचाय चियार[6]।
मूळू कहै कमालदी, सां कीधा तो सार[7] ॥३

दूहा-सोरठा

असहांजी[8] अमांन[9], मूळू कहै कमालदी।
म करै मूसलमांन[10], मिलक म मारै म नव हथ ॥४
इमांन मां[11] उतपत्ति जे, नोज[12] मजार निवेस।
कमाल पयंपे[13] मूळरज, तास न कोई वेस[14] ॥५
कमाल पयंपै मूळरज, सुण मेरा सुरतांण।
जां धड़ ऊपर सीस छै[15], पाळिस वाच प्रमांण[16] ॥६

इतरा सिरदार कमालदीनूं सांपिया[17]—घड़सी, लखमण, मैंगळदे भाटी, कांनड़दे, ऊनड़। पछै किंवाड़ प्रोळरा नांख मांणस १२०सूं कांम आयो[18]।

साखरो गीत—

घड़ रयण-गळंती[19] घड़ी-घड़ी घर,
पुड़ लोना खत्रमाळ[20] प्रज।
मेर-सिखर[21] उर ऊपर मंडियो,
मन ध्रू चळै न मूळरज[22]।

---

1 पालन करेगा। 2 भाईकी प्रतिज्ञाको। 3 कहता है। 4 नृपतियोंका नृपति। 5 हमारा। 6 चारों। 7 अपनी प्रतिज्ञाको याद कर। 8 हमारी। 9 अमानत। 10 उन्हें मुसलमान मत बना लेना। 11 धर्ममें। 12 नहीं। 13 कहता है। 14 तेरे साथ कोई कपटकी बात नहीं है। 15 जब तक धड़के ऊपर शीश है। 16 प्रामाणिक पुरुषकी तरह अपने वचनोंका पालन करूंगा। 17 कमालुद्दीनको इतने सरदार सुपुर्द कर दिये। 18 पीछे पोलके किवाड़ खोल कर १२० मनुष्योंके साथ काम आया। 19 पिछली रात। 20 नक्षत्रमाला। 21 सुमेरुगिरि पर्वतका शिखर। 22 मूलराजका मनरूपी ध्रुव चलायमान नहीं होता।

तरण[1] धाय निस[2] फोज तूटती ,
उडियण[3] नर जाते आवग्ग[4] ।
सुगिर सुरंग[5] उर सुचित जैत-सुत ।
खित डोलियो[6] नवहतो[7] खग ॥२
निसा फोज घटी तो[8] नीमटती[9] ,
फिरतै नर नाखत्र[10] अणफेर[11] ।
उरधज कियौ न जैत-अगोभ्रम[12] ,
मन मूळरज ज्यूंही धू मेर[13] ॥३

रावळ मूळराजरा बेटा, आंक ६–

७ देवराज मूळराजरो, तिको टीकै तो न बैठो[14] । मूळराज रतनसी मरियां पछै दूदो जसहड़ोत रावळ हुवो[15] । दूदो तिलोकसी साको कर मुंवां पछै रावळ घड़सी रतनसीयोत पातसाहनूं ओळग नै धरती वाळी[16] । पछै घड़सीनूं जसहड़ तेजसी चूक कर मारियो[17] । घड़सीरै बेटो को न थो[18] । पछै विमळादे रावळ मालदेरी बेटी केहर रांणा रूपड़ारो दोहीतरो[19], तिणनूं[20] बारूछांहिणसूं तेड़नै[21] जेसळमेर टीको दियो ।

८ केहर देवराजरो रावळ हुवो, रावळ घड़सी पछै ।

८ हमीर देवराजरो । जिणरा वांसला[22] उरजनोत भाटी सत्तारा पोतरा[23] । जोधपुर चाकर छै । हमीर देवराजोतरै मारोठ हुती । हमीररो धड़ो १ जेसळमेर चाकर । आगै पोकरणरा वाहळा[24] ऊपर रैहता । उरजनोत जोधपुर चाकर । जैतो साळोड़ी पीपळ-वडसायै

---

1 सूर्य । 2 रात । 3 तारे । 4 समस्त । 5 शृंग । 6 कंपायमान हुआ । 7 सिंह । 8 तीन । 9 बीतती हुई । 10 नक्षत्र । 11 नहीं फिरने वाला । 12 जैतेके वंशजने । 13 जिस प्रकार ध्रुव और मेरु अटल हैं उसी प्रकार मूलराजका मन अटल है । 14 मूलराजका बेटा देवराज गद्दी नहीं बैठा । 15 मूलराज और रतनसीके मरनेके बाद दूदा जसहड़ोत रावल हुआ । 16 दूदा और तिलोकसीके मर जानेके बाद रावल घड़सी रतनसीयोत बादशाहकी खुशामद करके धरतीको लौट आया । 17 फिर घड़सीको जसहड़ने धोखेसे मारा । 18 घड़सीके बेटा कोई नहीं था । 19 दोहिता । 20 जिसको । 21 बुला कर । 22 जिसके पीछेके । 23 पोते । 24 नाला ।

परणीजण आयो हुतो सु किणही सूल व्याह तो न हुवो[1], नै मांगण घणा भेळा हुवा। तिणांनूं विना परणियां त्याग दियो[2]।

जसहड़रा बेटा—

१ रावळ दूदो। १ तिलोकसी। १ वांगण। १ सांगण। १ आसकरण।

रावळ दूदो जसहड़ोत नै तिलोकसी जसहड़ोत अै वेहूं[3] भाई, जसहड़रा बेटा। जसहड़ पाल्हणरो। पाल्हण काल्हणोत। सो अै क्युंही टीकायत हुता नहीं। मूळराज, रसनसी कांम आया तरै[4] गढ़ पातसाह लियो नै रांणा रतनसीरा बेटा घड़सी, कांनड़, ऊनड़—मूळराजरा। भायेलो[5] कमालदी थो, तिणनूं[6] बीज[7] उबारणनूं सूंपिया था, सु कमालदी जीव ज्यां राखै छै। पछै पातसाहनूं खबर हुई तरै कमालदी घोड़ां ४ चाढ नै काढिया सु अै[8] नागोर आया। पछै गढ़ सूनो पड़ियो; तद रावळ मालदेजीरी वडी ठकुराई थी सु राठोड़ जगमाल मालावत गढ सूनो देख नै लेणरो विचार कियो। गढ़में वसणरी तयारी कीवी। गाडा ३०१ सीधारा[9] भर चलाया सु जाय गढ़ पोहता[10], सु बारहठ रतनूं चंद्रव मालारो विखायत थको महेवै रह्यो थो[11], तिण[12] जांणियो गढ़ माहरा ठाकुरांसूं जाय। तरै भाटी दूदो तिलोकसी जसहड़रा बेटा पारकर रेहता उणांनूं[13] खबर कराई, जु—"गढ़ लीजै छै[14]।" तरै दूदो तिलोकसी आय गढ मांहे पैठा[15] सु जगमाल बांसाथी[16] आयो। तरै आगै घोड़ांरो घंस दीठो[17], तरै कह्यो—"अै कुण[18] ?" तरै वारहठ चंद्रव राठोड़ जगमाल कनै[19] रहतो सु वारहठ कह्यो—"वीजो[20] तो कोई इसड़ो[21] भाटी जांणियो

---

1 जैता सालोड़ी पीपल-वड़ लग्नमें विवाह करनेको आया था परन्तु किसी कारण विवाह नहीं हो सका। 2 परन्तु वहां मांगने वाले वहुत इकट्ठे हो गये उनको बिना विवाह हुए ही त्याग (विवाहका दान) दिया। 3 दोनों। 4 तव। 5 मित्र। 6 जिसको। 7 वंश। 8 ये। 9 भोजन सामग्रीके। 10 पहुँचे। 11 मालाका वेटा रतनूं-वारहठ चंद्रव संकट कालमें मेहवेमें रहा था। 12 उसने। 13 उनको। 14 गढ ले रहे हैं। 15 प्रवेश किया। 16 पीछेसे। 17 तव आगे घोड़ोंका झुंड देखा। 18 ये कौन ? 19 पास। 20 दूसरा। 21 ऐसा।

नहीं नै भाटी दूदो तिलोकसी जसहड़रा बेटा पारकर रैहता, सु श्रै व्है तो खबर नहीं[1] ।" तरै जगमाल उठै उतरियो[2], नै श्रागै खबर करणनूं श्रादमी २ मेलिया[3] तिकै[4] जाय देखै तो दूदो तिलोकसी छै। सु इणे ठाकुरै जगमालजीनूं जुहार कहाड़ियो[5] नै कह्यो–"मांहरो गढ़ थो, म्हे लियो ।" तरै श्रादमियां पछै जगमालनूं कह्यो । तरै जगमाल वळै[6] कहाड़ियो–"जु गाडा ३०१ सीधारा म्हांरा छै, सु उरा द्यो[7]।" तरै दूदै तिलोकसी कह्यो–"श्रै तो म्हे लिया[8]। थे म्हांरा गाडा जांणो तठारा लेज्यो[9]। जगमाल पाछो श्रायो । नै रावळ दूदो पाट बैठो, सु दूदो पण वडो श्रौनाड़[10] हुवो नै रावळ मूळराज, रांणो रतनसी जसळमेर नेम घातियो[11], तद दूदै पण नेम घातियो थो, तिका वात मूळराज रतनसीरी वात मांहै लिखी छै। सु एक दिन रावळ दूदो श्रारीसो जोवतो थो[12] सु पळी[13] १ दाढी मांहै दीठी तरै मूळराज रतनसी भेळो नेम लियो थो सु दूदानूं नेम चीत[14] श्रायो । तरै रावळ मन-मांहै जांणियो जु–"जरा तो नेड़ी श्राई[15]; यूंही मर जाईजसी[16]; किणीक सूल नाम रहै तिका वात कीजै[17] ।" तरै तिलोकसीनूं कह्यो, तरै तिलोकसी कह्यो–"भली वात छै ।" सु रावळ दूदै वरस १० मास ...दिन ७ राज कियो। दूदै तिलोकसी पातसाही धरतीरा बिगाड़ करणा मांडिया, सु रावळ दूदो तौ गढ़में रहै नै तिलोकसी च्यारूं ही तरफां पातसाही धरतीरो रोज बिगाड़ करै, सु कांगड़ो बलोच मारे नै घणी घोड़ियां श्रांणी । बाहेली गूजरांरी थाट भेंसियांरी लाहोर कनैथा श्रांणी[18]। सोनारो मथांण ले श्रायो[19]। पातसाहरै पांणीपंथा घोड़ांरी सोबत श्रावती थी सु मार ली।[20] श्रै तो वड़ा बिगाड़ किया नै

---

1 सो ये हों तो पता नहीं । 2 तब जगमाल वहां ठहरा । 3 भेजे । 4 वे । 5 सो इन ठाकुरोंने जगमालजीको प्रणाम कहलवाया । 6 दूसरी बार । 7 सो दे दें । 8 ये तो हमने ले लिये । 9 तुम हमारी गाड़ियां चाहे जहांसे ले लेना । 10 अनम्र, जबरदस्त । 11 नियम धारण किया था । 12 देखता था । 13 सफेद बाल । 14 याद । 15 बुढापा तो निकट आया । 16 यों ही मरना हो जायेगा । 17 किसी भी प्रकार नाम रह जाय वैसी बात की जाय । 18 सो कांगड़ा बलोचको मार करके बहुतसी घोड़ियें ले आया और बाहेली गूजरोंकी भैंसियोंका समूह लाहोरके पाससे ले आया । 19 उनकी सोनेकी मथानी ले आया । 20 बादशाहके लिये (पानीपंथा) पवनवेगी घोड़ोंकी सोहबत आ रही थी उसे भी मार कर खोस लिया ।

बीजा[1] विगाड़ किया तिणांरी[2] संख्या ही नहीं। सु पातसाह कनै ठोड़-ठोड़री पुकारां गई। तिण ऊपर पातसाह घणो कोप कर फोज विदा की, सु गढ आय घेरियो, सु दूदै तिलोकसीरै साको करणरी मनमें हुती, जिणसूं दूदै तिलोकसी गढ साझियो नै सासता ढोवा हुवै छै[3]। तिण साखरो रतनूं आसरावरो कह्यो घणो गुण[4] छै, तिण मांहिला—

दूहा—आवटियो[5] एकोहटा[6], दे दुरहटा[7] मेल्हांण।
सांभर आपो आपरा, गा सोवे रिण ढांण ॥१
एक सु तत्तै संग्रहै, हूंता सेन वहूत।
थेटा-लग[8] काढै परी, किय तुरकै तावूत ॥२
मडु हुवा आयो मुगल, नाया ढलपति ढाल।
पड़ियो दिल्ली पीटणो, गो रण तोड़ै गाल ॥३
दांतूसळ[9] हसती तणा[10], सांकळ केकांणेह[11]।
साखत[12] आई सोवनी[13], तणीज तुरकांणेह ॥३
ऊसस्सै[14] नै[15] सासियो[16], धिखियौ[17] दांणव-राह[18]।
हिंदू ग्राध न आवही, नहीं मळेछै मांह ॥५
परवांणो[19] पतसाहरौ, लिख मूकै[20] मेलांण।
इण गढ हिंदू वांकड़ौ[21], कर ग्रहियां केवांण[22] ॥६
जेसळमेर दुरंग[23] गढ़, दूठ[24] ज दूदो राव।
मेघाडंवर-छत्र सिर, दोध निसांणै[25] घाव[26] ॥७
नीसांणै घाव वाजिया, गाजै गहरै सद्द[27]।
आकंपै[28] पतसाह दळ, पडहायौ[29] पर-मद्द[30] ॥८

---

1 दूसरे। 2 उनकी। 3 इसलिये दूदे और तिलोकसीने गढ सजाया और निरन्तर हमले हो रहे हैं। 4 वर्णन। 5 क्रोध किया, नाश किया। 6 एक वार। 7 दुवारा 8 अंत तक। 9 दांत (हाथीकी)। 10 का। 11 घोड़ोंकी। 12 घोड़ेकी जीनका सामान, जीन। 13 होनेकी। 14 जोशमें आ कर। 15 करके। 16 संधान किया, संभला। 17 युद्ध किया, भिड़ा। 18 मुसलमान। 19 फरमान। 20 लिख कर भेजता है। 21 वंका। 22 तलवार। 23 दुर्ग। 24 जवरदस्त। 25 नगाड़े पर। 26 डंकेकी चोट। 27 शब्द, आवाज। 28 भयभीत होता है, धूजता है। 29 मर्दन कर दिया। 30 शत्रुका गर्व।

जेतो[1] भुंय[2] गोळा वहै, सर[3] पूजै[4] सर वाव ।
तेती ढूक न सक्कही[5], मारै दूदौ राव ॥६
ओ[6] मारै ऊ[7] मोकळै[8], रहिया दळ नेठाह[9] ।
हठ[10] हूवौ दूदै सरस, प्रारंभ पेरोसाह ॥१०
हिंदू कोट न छांडही, ना तुरकै मेल्हांण ।
विग्रह[11] थौ बारै-बरस[12], दूदै नै[13] सुरतांण ॥११
रावळ भुरज पधारियौ, ए ऊपाव करेह ।
जंत्रमें चरू[14] नखाड़ियौ[15], घ्रत खंड खीर भरेह ॥१२
ऊपड़िया[16] पतसाह-दळ[17], वागी[18] भेर[19] निसांण[20] ।
भाटी दांनो भीमदे, तव गाढम[21] प्रामांण ॥१३
सुधन भंडारां निठियो[22], लिख मोकळिया[23] खत्त ।
जो असताई सांभळै, रावळ भखण परत्त[24] ॥१४
ढोवै ढूक न सक्किया[25], तोखै जोया त्रांण[26] ।
थाहर[27] आपो-आपरी[28], ग्रह रहिया मेलांण ॥१५
सूंडाळां-घड़[29] सांमही, फेरी जेसळमेर ।
पाछो दळ पतसाहरो, घिरियो घातै घेर[30] ॥१६
दूदो कहै तिलोकसी, तो सिर छत्र धरेह ।
परत[31] न भंजां आपणो, गढ छळ[32] घणो करेह ॥१७
आद अनादि उपाविया, लोचनहूंत[33] जवार[34] ।
जीभां हूं[35] गोहूं[36] किया, कोरड़[37] उरह[38] मँझार ॥१८

---

1 जितनी । 2 भूमि, दूरी । 3 बाण । 4 पहुंचता है । 5 उतनी दूरी तक शत्रु लक्ष्य नहीं कर सकता । 6 यह । 7 वह, उसके । 8 (१) बहुतसा, (२) भेजता है । 9 समाप्त, खत्म । 10 युद्ध । 11 युद्ध । 12 बारह वर्ष । 13 और । 14 भोजन-सामग्री रखनेका एक पात्र, चरू । 15 डलवाया । 16 चले, रवाना हुए । 17 बादशाही सेना । 18 बजी । 19 दुंदुभी । 20 नगाड़ा, ढोल । 21 बल, शक्ति । 22 समाप्त हो गया । 23 भेजे । 24 प्रतिज्ञा । 25 हमलेके स्थान पर (रणांगणमें) पहुँचनेका साहस नहीं कर सके । 26 घोड़ोंने (अश्वारोही सेनाने) शरणकी तलाश की । 27 रक्षा-स्थान । 28 अपनी-अपनी । 29 हस्ती-सेना । 30 चक्कर लगा कर वापिस लौटा । 31 किसी भी प्रकार । 32 के लिए । 33 से । 34 ज्वार । 35 जीभसे । 36 गेहूं । 37 (१) एक जंगली धान्य, (२) मोठ । 38 हृदय, छाती ।

हाडां हूं[1] चावळ हुवा, रू[2], राई, खड़[3], धन्न[4] ।
तो असताई संभळौ, ते क्यूं ढूकै मन्न ॥१९
रावळ अन[5] परतावियो[6], सो क्यूं अन्न भखेह ।
तो ओळी बोलाय कर, सिर क्यूं छत्र धरेह ॥२०
तो वैठै मैं सारिया[7], कज्जा लाख सवाय ।
मो बैठां वंजियै[8] कवण[9], कसवां करसी घाय ॥२१
अंतेवर[10] पूछाड़ियो, वां केहा[11] परियांण ।
सोढी आगै इम[12] कहै, सो चाढो निरवांण ॥२२
अंतेवरै कहावियो[13], साहस पूर न गत्त ।
वांसै[14] न रहो सांकवा, सांही अच्छ परत्त ॥२३
रावळ जमहर[15] राचियो, कुसळै पुत्र बोहळाय[16] ।
नीमणियाइत[17] के रह्या, रहचा जु अन परताय ॥२४
कोट तणै छळ वंस छळ[18], सरग तणी...जगीस[19] ।
रावळसूं अणनेमिया[20], रहिया सुभट पचीस ॥२५
कोट तणै छळ वंस छळ, सरग समेळै साथ ।
माधू खड़हड़ भाटियै, खग आवजियो[21] हाथ ॥२६
दूसळ अनियै देवरज, कहि भांणव[22] अणपाल ।
पतसाही दळ जूझवा, भडां[23] भेडूं कमाल ॥२७
सातळ सोह हमीर दे, चक्रवत अै चहुवांण ।
भालां भंवाड़ै[24] पून[25] रज, अधिक कळह[26] परमांण ॥२८
वैर सनेही वाळियो, फिटक संभ्रम[27] कुळ-मोड़[28] ।
खेड़ेचो खग ऊभियो, रहै हरो राठोड़ ॥२९
सांम ज संबाहै करै, कर सोळह स्रंगार ।

---

1 हड्डियोंसे । 2 रूई । 3 घास । 4 धान । 5 अन्न । 6 त्याग दिया । 7 बनाये, सम्पन्न किये । 8,9 भागा कैसे जाय । 10 जनानाने (पत्नी ने) । 11 कैसा । 12 इस प्रकार । 13 महिलाओंने कहलवाया । 14 पीछे । 15 जौहर । 16 बहुतसे । 17 चुने हुए लोग । 18 के लिये । 19 युद्ध । 20 नहीं चुने हुये । 21 धारण किया । 22 चारण । 23 वीरों-को । 24 चक्र दिलाये । 25 पवन । 26 युद्ध । 27 पुत्र । 28 वंश-शिरोमणि ।

आ[1] रांणी रावळ अगै, गळ तुळछीदळ हार ।।३०
तेलोचन[2] तेही-वदन[3], तेवै[4] थन गज थन्न ।
दुय भायां तणा विसावणा, जांण अंतेवर कन्न ।।३१
रावळ जमहर रच्चियौ, अंतर सरग प्रमांण ।
सोढी कहियौ सांमनूं, मो आपो अहिनांण[5] ।।३२
जे सोढी सिर कापियो, चहरो[6] थियै संसार ।
कहसी रावळ ओ कियो, एहो[7] दोख विचार ।।३३
जे कर काटां दाहिणो, खांडो किह[8] झालांह[9] ।
ओळी हुयसी[10] प्रह[11] समै, मेळो मिलकांणांह ।।३४
रावळ अंग निसंग कर[12], आ[13] वाहै[14] केवांण[15] ।
चलणह[16] काटै आपियो[17], नांउ[18] पुरख सहनांण[19] ।।३५

वात

रावळ दूदो तिलोकसी जसहड़ोत जेसळमेर गढ ऊपर छै । पातसाही फोज तळहटी[20] छै । वरस १२ विग्रहनै[21] हुवा छै । मांमला घणाही हुवा[22], पण गढ हाथ आवै नहीं । तरै एक दिन रावळ दूदै भँडसूरियां[23] गढ ऊपर हुती[24], तिणांरी[25] दूधरी खीर कराय पातळांरै[26] खीर लगायनै वे पातळां तळहटी नांखी[27] । पछै वे पातळां लसकररै लोगै ले जाय मांहै सिरदार थो तिणनूं[28] दिखाई; तरै कटकरै सिरदार विचारियो-"बारै बरस तो हुवा, अजेस[29] गढ मांहै संचो[30] अतरो[31] जु दूध दही हुवै छै[32], सु गढ हाथ आवणरो नहीं ।" तुरकै डेरो उपाड़ियो[33] । तरै[34] भाटी भीमदे आसकरणोत, आसकरण जसहड़ोतरै,

---

1 यह । 2 त्रिलोचन । 3 त्रिवदन । 4 तीनों । 5 चिन्ह । 6 अपकीर्ति । 7 ऐसा । 8 किस प्रकार । 9 पकड़ूं । 10 होगा । 11 प्रभात । 12 काट कर । 13 यह । 14 प्रहार करे । 15 तलवार । 16 पांव । 17 दिया । 18 नाम । 19 चिन्ह । 20 पहाड़के नीचेकी भूमि । 21 युद्ध को । 22 आक्रमण बहुत हुए । 23 मैलाखोर सूअरियें, ग्राम-शूकरियें । 24 थीं । 25 जिनकी । 26 पत्तलोंके । 27 गिरादीं । 28 जिसको । 29 अभी तक । 30 संचय । 31 इतना । 32 प्राप्त हो रहा है । 33 तुर्कोंने मोर्चा उठा दिया । 34 तब ।

भेद दियो। नै कोई कहै छै, सुरणाई वजाई[1], तिणमें काई वात जणाई[2]। केई कहै छै, भीमदे आदमी मेल कहाड़ियो[3],–"गढरो संचो तूटो छै[4], ओ दूध दीठो जिको भँडसूरियांरो छै[5], थे पाछा आय उतरो[6]। दिन २ नै तथा ३ नै रावळ गढरा किंवाड़ नांखसी[7]।" तरै मुगल फिर पाछा उतरिया। तरै रावळ दूदै तिलोकसी मरणरो विचार कियो।

भीमदे भेद दियो तिणरो दूहो–

गेमी[8] नांव धरावियो, आसावत अणजांण[9]।
भाटी दीनो भीमदे, तव गढ भेद प्रमांण ॥१

वात

रावळ दूदै पहलै दिन जमहर कियो, तरै सोढी रांणी रावळसूं अरज करी–"क्युंही[10] रावळै[11] डीलरो[12] सहनांण पाऊं।" तरै अंगूठो पगरो काटि दियो। दसमीरै दिन जमहर हुवो नै एकादसीरै दिन रावळरै मरणरो विचार छै, सु रावळरी वेटी १ वरस ९ नवरी छै[13] सु आग मांहै पैसती डरै, वळी न छै[14], सु दसमरी रात आधी गई छै नै वा डावड़ी[15] रावळ दूदै कनै[16] छै। नै रावळ कनै रजपूत मरणीक[17] हुय रह्या छै। तिणां मांहै[18] रजपूत १ धाऊ भेछळो वरस १५रो कंवारो छै, सु मरणीक जूंझारां मांहै रह्यो छै, तिको रावळरी पगथळी खुजाळै छै। उण निसासो नांखियो[19], तरै रावळ कह्यो–"कुण वास्तै[20] ? आंपै तो सरगरा हेड़ाऊ छां[21], तोनूं दिलगीरी मनमें क्यूं आई ?" तरै धाऊ भेछळै कह्यो–"दूजी तो दिलगीरी काई[22] नहीं

---

1 शहनाई वजाई। 2 जिसमें किसी सांकेतिक वातकी सूचना दी। 3 कई कहते हैं कि भीमदेने आदमी भेज कर कहलवाया। 4 गढका संचय खत्म हो गया। 5 यह दूध जो देखा है वह ग्राम-शूकरियोंका है। 6 तुम लोग वापिस लौट कर मुकाम कर दो। 7 गिरा देगा। 8 देशद्रोही। 9 मूर्ख। 10 कुछ भी। 11 आपके, श्रीमानके। 12 शरीरका। 13 रावलकी पुत्री एक नौ वर्षकी है। 14 जली नहीं है। जौहर नहीं किया है। 15 लड़की। 16 पास। 17 मरनेको तत्पर। 18 उनमें। 19 उसने निःश्वास छोड़ा। 20 किस लिये। 21 हम तो वीरगतिको प्राप्त कर स्वर्गमें एक साथ जाने वालोंमें हैं। 22 कुछ भी।

पिण सास्त्र पुरांण मांहे सुणां छां[1], कँवारांनूं गत नहीं[2] । आभा मांहै ओ कँवार-मग बतावै छै[3] । तरै राव दूदै विचार दीठो[4]–"जु आ डावड़ी पण कँवारी छै नै ओ पण रूड़ो रजपूत छै[5] ।" तरै आपरी दीकरी धाऊ भेछळैनूं परणाई[6], सु वा दीकरी पण सवारै इग्यारस थी, सु सत करनै बळी[7] । नै रावळ प्रोळरा किंवाड़ नांख नै दूदो तिलोकसी गढसूं लड़णनूं ऊतरिया, सु साथै २५ तो रजपूत नेमणीयायत[8] उतरिया; बीजो ही[9] घणो साथ ऊतरियो । वेढ हुई सु तिलोकसीरै मुंहडै पांजू पायक आयो सु तिलोकसी पांजूनूं झटको वाह्यो[10], सु पांजूनूं सरूं खेलणरी उरजस थी[11], हाथ-पग भेळा कर[12] कुळाचसूं[13] झटको टाळतो थो सु सारै ही डीलमें तरवार वह गई, नव टुकड़ा हुय पड़ियो[14] ।

साख–तील्हरै घाव सौं पांजुरो हेक[15] तण[16],
नवै कुटके हुवो वहि गयो नीझरण[17]।

वात

तरै रावळ दूदै घणो[18] वखांणियो[19], तरै तिलोकसी कह्यो–"भली हुई, आज ही वखांणियो ।" तरै रावळ कह्यो–"म्हांरी द्रीठ लागै छै[20]।" सु तिलोकसीरो तिणही वेळा जोव नीसर गयो[21] । मांणस १०० रावळ दूदो कांम आयो[22]। नै रावळ दूदारी बैरां बीजी तो सगळी ही गढ ऊपर जँवर कर बळी[23]। एक लखां मांगळिया रांणीरी

---

1 परन्तु शास्त्र और पुराणोंमें सुनते हैं । 2 क्वाँरे मनुष्यकी मरने पर गति नहीं होती । 3 आकाशमें क्वार-मग नामक नक्षत्र-समूह (आकाश गंगा) यही सूचित करता है । 4 तब राव दूदाने विचार कर देखा । 5 अच्छा राजपूत है । 6 तब अपनी कन्या धाऊ-भेछलेको ब्याह दी । 7 सो वह पुत्री दूसरे दिन जब एकादशी थी सती हो गई (धाऊ-भेछलेके साथ जल गई) । 8 चुने हुए । 9 दूसरा भी । 10 प्रहार किया । 11 सो पांजूको सिमट कर तलवारसे खेलने का अभ्यास था । 12 इकट्ठे कर, समेट कर । 13 कुलाँच, छलांग । 14 नौ टुकड़े होकर गिर पड़ा । 15 एक । 16 शरीर । 17 नौ टुकड़े हो गये और खून का झरना बह गया । 18 बहुत । 19 प्रशंसा की । 20 मेरी नजर लगती है । 21 तिलोकसीका उसी समय प्राण निकल गया । 22 रावल दूदा सौ मनुष्योंके साथ काम आया । 23 और रावल दूदाकी दूसरी तमाम स्त्रियें गढ़ पर जौहर कर के जल गईं ।

बेटी खींवसर थी। सु पातसाह खींवसर कनै आयो, तरै इण दूदारी बैर कह्यो[1]–"दूदारो माथो आंण दै तो हूं बळूं[2]।" तरै हूंफो सांदू पातसाह कनै जाय माथो मांगियो; तरै पातसाह कह्यो–"तीन मास हुवा, माथारी किसी खबर[3] ?" तरै हूंफै कह्यो–"हूं माथो ओळखूं छूं[4], दूदारो माथो हूँ मुंहडै बोलाईस, मोनूं दिखावो[5]।" तरै माथो दिखायो। तरै दूदारो माथो हसियो, बोलियो।

तिणरी साखरो गीत हूंफा सांदूरो कह्यो[6]—

गीत

क्रम केत स्वरग कज नह भारथ कज[7],
दूठ[8] दूदड़ै दळचा[9] दुजोण[10] ।
पह[11] तिण[12] भवणै-त्रिणै[13] पेखियो[14],
धड़ पाखै[15] नाचंतो ध्रोण[16] ॥१

वांछंतां वरमाळ वेगड़ा,
वकता सुणै दूदै वसियो ।
जेसळगिरा[17] तिको दिन जांणै,
हाथां ताळी दे हसियो ॥२

हूं[18] हूंफड़ा मरण किम हारूं,
धर सांमी लीजंती धर ।
मेलूं मूंछ[19] मीर पण[20] मांनै,
कमळ[21] कहै जो हुवै कर ॥३

कर विण मूंछ भ्रू हसौं सुजकर,
अउब ओपियो अंजसियो[22] ।
गढां गिळेवा आदम गोरी,
हड़ हड़ हड़ दूदो हसियौ ॥४

---

1 तव इस दूदाकी स्त्रीने कहा। 2 दूदाका सिर मुझे लाकर दिया जाय तो मैं उसके साथ जल कर सती हो जाऊं। 3 सिरका क्या पता ? 4 मैं सिरको पहचानता हूं। 5 दूदेके सिरको मैं मुंहसे बुलवाऊंगा, वह मुझे दिखाया जाय। 6 जिसकी साक्षीका चारण हूंफा सांदूका कहा हुआ गीत (छंद)। 7 लिए। 8 जवरदस्त। 9 नाश किया। 10 शत्रु। 11 स्वामी। 12 जिसने। 13 तीनों भुवनोंमें। 14 देखा। 15 पार्श्वमें, पासमें। 16 सिर। 17 जेसलमेरका निवासी, जेसलमेरका स्वामी। 18 मैं। 19 मूंछों पर हाथ रखूं। 20 प्रतिज्ञा। 21 सिर। 22 अपूर्व भांतिसे शोभित और गर्वित हुआ।

दूहो, रावळ दूदै आपरो कह्यो[1]—

मैं जांणतै[2] मेल्हियो[3], विसहर[4] माथै[5] पाव ।
मनखत[6] मांणी आपरी[7], अहिवा[8] खाव म[9] खाव ॥१

गीत वीठू बोहड़रो कह्यो—

धर काज[10] धीरत मल धरै धीर तण[11],
आपांणो बळ आउठ गिर ।
पाव परठवै[12] दूद परगंजण[13] ।
सरप कसण सुरतांण सिर[14] ॥१
सु विख किलंब[15] सिर केहर दुजणसल
पाव परठवै सभै फण ।
कंदळ[16] करण घणूं कसमसियो[17],
फेर न सकियो किही[18] फण ॥२
मिणधर[19] मेच्छ[20] कमळ मह-मोहण[21],
चाच[22] वंसोधर[23] दे चलण[24] ।
मूंणस वट तो तण माडेचा[25],
मनखत मांणी निूभै मण[26] ॥३
वडगिर[27] विखम वडो-वड[28] रावळ,
दुरंग[29] पांण ते दईव डरै ।
पोह[30] पतसाह पाळ-कुळ[31] पैहड़ै[32] ।
कीधो[33] पग तळ राज करै ॥४

---

1 रावल दूदेके स्वयंका कहा हुआ दोहा। 2 जानते हुए। 3 रखा। 4 सर्प। 5 सिर पर। 6,7 जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया। 8 सर्प। 9 नहीं, मत। 10 लिये। 11 शरीर। 12 रखना, धारण करना। 13 शत्रुओंका नाश करनेके लिये। 14 सर्परूपी सुल्तानके सिर पर कृष्णके समान। 15 मुसलमान। 16 युद्ध। 17 (व्यर्थ) प्रयत्न किया। 18 किसी भी प्रकार। 19 सर्प। 20 म्लेच्छ, मुसलमान। 21 महामोहन (श्रीकृष्ण)। 22 सिर। 23 वंशको रखने वाला, वंशको उज्ज्वल करने वाला। 24 पाँव। 25 माड धराका स्वामी, जैसलमेर प्रदेशका भाटी क्षत्री। 26 निर्भय होकर जैसा चाहा वैसा किया। 27 जैसलमेरका किला। 28 वड़े-वड़े। 29 दुर्ग, किला। 30 प्रभु, स्वामी। 31,32 कुलकी मर्यादा छोड़ देते हैं। किया।

गीत दूजो—

जेसळमेर धणी राव जादव,
घण दळ सरस मचंतै घोय ।
काल्हणहरो[1] पड़ै कम सीसै,
पड़त न फिरियो मिलकां पाय ॥१
असी लाख आलम-दळ[2] ईखै[3],
सांहण[4] लख आये सुरतांण ।
भुरज-भुरज फिरियो राव भाटी,
दूदो नह फिरियो दीवांण ॥२
सुत जसहड़ सामां सुरतांणै,
नित-नित ढोवा[5] कटक नवीन ।
क्रम राखण दीन्हा नव-कोटां,
दूदै धरम-द्वार नह दीन[6] ॥३

गीत दूजो—

पटहथ[7] पतसाह मयंद[8] मोताहळ[9],
पै भांजंतां जु भुय[10] पड़िया ।
दूद दीठा[11] मैं चक्रवत चुणता[12],
कळत[13] रैस आभरण किया ॥१
किलम[14] कुंजर नर केहर जुवा[15] कर,
पग पग पेखीजै[16] पड़िया ।
अविध सु अधपत[17] अधकंठ अबळा,
जसहड़ संभ्रम[18] अछै जड़िया ॥२

---

1 काल्हणका वंशज । 2 बादशाही सेना । 3 देखता है । 4 घोड़े, घुड़सवार, घुड़सेना । 5 आक्रमण । 6 किन्तु दूदा शरणागत नहीं हुआ । 7 हाथी । 8 मृगेन्द्र, सिंह । 9 मुक्ताफल, मोती । 10 भूमि पर । 11 देखे । 12 चुनते हुए । 13 स्त्रियोंके । 14 मुसलमान । 15 अलग करके । 16 दिखाई देते हैं । 17 अधिपति, राजा । 18 पुत्र ।

सादूळा तैं जसहड़ संभ्रम,
भिड़ भद्रजाती[1] असुर[2] भगा ।
दीसै[3] रायहरै[4] दुजणसल,
मोती महिळां[5] मवड़[6] लगा ॥३

गीत भाटी तिलोकसी जसहड़ोतरो—

तांतलीया तुरंगम खड़[7] खग[8] लीना,
जुड़वा रथ जोगणपुर[9] जाय ।
असपत[10] राव तणा[11] दळ[12] आया,
तिलोकसी नह विसरै ताय ॥१
भणै[13] तील्ह रिणभोम भयावण,
डरियां मूंम डरायो ।
नर नीसरै[14] जकै[15] सनियाई[16],
अनियाई[17] हूं[18] आयो ॥२
अविहड़[19] मन जसहड़ अंगोभ्रम[20],
वडफर[21] वजै न विहंडै[22] वंस ।
तील्हा तणो[23] कोट बकारण[24],
हांमूं करतो उडियो हंस[25] ॥३

रावळ दूदैरा बेटा—

१ वीसळदे दूदावतरो कडूंबो जेसळमेररै देस भैंसड़ै बालो राव चूंडारो मांमो, नागोर चूंडा साथै कांम आयो[26] ।

१ रांणो दूदावत ।

---

1 हाथी । 2 मुसलमान । 3 दिखाई देता है । 4 रायसिंहका वंशज । 5 महिलाओंके । 6 मस्तकाभूषण । 7 चला करके । 8 खड्ग, तलवार । 9 दिल्ली । 10 राजा । 11 का । 12 सेना । 13 कहता है । 14 निकल जाते हैं । 15 वे । 16 न्यायी (निर्मुक्त) 17 अन्यायी (बन्धनसे नहीं डरने वाला, निर्भय) । 18 मैं । 19 अखंड, निर्भय । 20 पुत्र, पौत्र, वंशज । 21 ढाल । 22 नाश करता है । 23 का । 24 ललकारनेको । 25 उत्साह पूर्वक प्राण-विसर्जन कर दिया, युद्ध करते-करते प्राण छोड़ दिया । 26 दूदाका पुत्र वीसलदेव और जैसलमेर राज्यके भैंसड़े गाँव वाले उसके कुटुम्बियोंमेंसे बाला जो राव चूंडाका मामा लगता है, उसके साथ नागोरकी लड़ाईमें राव चूंडाके साथ वह भी मारा गया ।

२ पूनो, राव रिणमल चंग वेढ हुई तठै कांम आयो[1] ।

३ दुरजणसल । ३ जैतो । ३ खेतो । ३ चाचो ।

४ रायमल तिणरो करायो रायमलवाळो तळाव[2] ।

२ वणवीर रांणारो चाकर थो । राव जोधै मंडोवर लियो तद कांम आयो[3] ।

३ भाटी जैतो पूनावत । तिणरो परवार जोधपुर चाकर[4], आंक ३

४ भांडो ।
५ वनो ।
६ रायसल । ६ भैरव ।
६ नांदण । ६ तेजो ।
६ जेसो ।
७ भारमल ।
८ हाथी ।
९ नरसिंघ । ९ करमचंद ।

८ तेजसी ।
९ रांमो ।
१० मांनो । १० करन ।
८ कलो ।
९ सूजो । ९ सांईदास ।
९ पीथो ।
८ पिराग ।
९ पंचाइण । ९ मोटो ।

वात

रावळ घड़सी रांणा रतनसीरो बेटो । मूळराज, रतनसी साको कर मुंवा[5] तद कमालदीनूं आपरो बीज उबारणनूं घड़सी, ऊनड़, कांनड़ आपरा छोरू नै एक देवड़ो भांणेज कमालदीनूं सूंपिया था[6] । कमालदी नै मूळराज इण विखा मांहै भाएला हुवा था; पाघड़ी पलटी हुती[7] । सु कमालदी नै[8] कमालदीरी बैर[9] इणांनूं[10] छांना[11] राखै ।

---

1 चंग गांवमें राव रिड़मलके साथ हुई लड़ाईमें पूना मारा गया । 2 रायमल जिसका बनवाया हुआ 'रायमल वाला तालाव' है । 3 वनवीर, राणाजीका चाकर, राव जोधाने मंडोर पर अधिकार किया तब काम आया । 4 पूनाका पुत्र भाटी जैता जिसका परिवार जोधपुरमें चाकर है । 5 मूलराज और रतनसी दोनों साका (क्षत्रियोचित कीर्ति-कार्य) करके मर गये । 6 उस समय रतनसीने अपनी वंश-रक्षाके लिये घड़सी, ऊनड़ और कानड़, अपने तीन लड़कोंको और चौथा अपना एक देवड़ा भानजा, इन चारोंको कमालुद्दीनके सुपुर्द कर दिया । 7 कमालुद्दीन और मूलराज दोनों इस संकटमें (युद्धमें) पघड़ी-बदल भाई (धर्म भाई) हो गये थे । 8 अर । 9 स्त्री । 10 इनको । 11 गुप्त ।

आपरा छोरूवांसूं उपरंत किया राखै छै[1]। इणांरै[2] रसोईदार बांभण २ जुदा-जुदा राखिया छै। पछै कमालदी जेसळमेर ले पातसाहरी हजूर आयो[3]; तरै कपूरै मरहटै पातसाहनूं अरज गुदराई[4]–"कमालदी नै मूळराज रतनसी भाएला था[5], सु मूळराज रतनसी साको कर मुंवा, तरै[6] आपरा[7] बेटा-भतीजा कमालदीनूं सूंपिया छै, सु कमालदी कनै छै[8]।" पछै कमालदी दरबार आयो तरै पातसाह पूछियो–"थारै घरै रतनसीरा बेटा घड़सी, कांनड़, ऊंनड़ तीनैई भाई नै देवड़ो १ मूळराज रतनसीरो भांणेज छै, सु आंण हाजर कर[9]।" तरै कमालदी कह्यो–"हजरत! म्हारै कनै को न छै[10], हुसी तो वळै खबर करीस[11]।" तरै कमालदी घरै आयो। आयनै[12] घड़सी, कांनड़, ऊंनड़, देवड़ो यां च्यारां ही नै ४ च्यार वडा घोड़ा दे नै काढिया[13], सु अै अठारा नीसरिया नागोररै सकरसर आया[14]। सु पातसाह ठोड़-ठोड़ जासूस मेलिया था[15], सु घड़सी, कांनड़, ऊंनड़, देवड़ो यां च्यारां हीरा अहिनांण[16] लिखिया जु–"इसड़ै अहिनांण छै[17], तिकांरी खबर करज्यो[18], अठासूं नीसरिया छै[19]।" सु अै अठै नागोररा हाकमरै पांनै पड़िया[20], सु ओ लेनै पातसाहरी हजूर जातो थो[21]। पछै निवाज करतानूं घड़सी उणरीहीज तरवारसूं उणरो माथो काटनै उणहीजरै घोड़ै चढनै नीसरिया सु चांमूं आया[22]। आयनै[23] पछै कठैक[24] भायांनूं राखनै, देवड़ै मैंगळदे भांणेजनूं पोहचावणनूं

1 अपने पुत्रोंसे भी विशेष समझ कर उनकी रक्षा करती है। 2 इनके लिये। 3 फिर कमालुद्दीन जैसलमेर पर अधिकार करके जब बादशाहके दरबारमें आया। 4 तब कपूर मरहट्ठ ने बादशाहसे अर्ज की। 5 कमालुद्दीन और मूलराज तथा रतनसी परस्पर मित्र थे। 6 तब। 7 अपने। 8 वे कमालुद्दीनके पास हैं। 9 उनको लाकर हाजिर कर। 10 हजरत! वे मेरे पास नहीं हैं। 11 यदि होंगे तो मैं पता लगाऊंगा। 12 आकर के। 13 इन चारों हीको चार बड़े घोड़े दे करके रवाना कर दिया। 14 सो ये यहांसे निकल कर नागोरके सकरसर गांवमें आये। 15 बादशाहने जगह-जगह जासूस भेज दिये थे। 16 चिन्ह, हुलिया। 17 ऐसे हुलिया वाले हैं। 18 जिनका पता लगाना। 19 यहांसे निकल गये हैं। 20 सो ये यहां नागोरके हाकिमके हाथ लग गये। 21 सो यह उन्हें लेकर के बादशाहकी हुजूर जा रहा था। 22 फिर घड़सीने नमाज पढ़ते हुए उस हाकिमका उसीकी तलवारसे सिर काट कर उसीके घोड़े पर चढ़ करके रवाना हुआ सो चांमू आया। 23 आकर के। 24 किसी स्थान पर।

घड़सी आबू दिसा गयो तो[1], सु पाछो वळतो मेहवा मांहै आयो[2]। माळीरै घरे डेरो कियो[3], सु जगमाल सिकार चढियो, तरै घड़सी ऊभो थो सु जुहार न कियो[4]। तरै रावळजीनूं जगमाल आय कह्यो—"जु गांव मांहै आज इसड़ो[5] रजपूत आयो छै, सु कैतो कोई गिंवार छै[6], कै कोईक राजवीरै घररो छोरू छै[7]।" तरै रावळजी तेड़ियो[8], सु खवर को पड़ै नहीं[9]। तरै चाकरनूं पूछियो, कह्यो—"तूं जांणै छै, ओ कुण छै[10]? "तरै चाकर कह्यो—हूं तो क्यूं जांणूं नहीं[11]; नै एक दिन म्हनै घड़सी मारणो विचारियो थो, तरै मोनूं कह्यो—"तूं हथियार नांख दे, रावळ मूळराज रांणा रतनसीरी आंण, तोनूं मारूं नहीं[12]।" तरै रावळ मालदेजी अटकळियो जु मूळराज रतनसीरो बेटो-भतीजो छै[13]। घणो आदर-भाव कर राखियो[14]। पछै रावळ मालदेजी आपरा बेटा जगमालरी वेटी घड़सीनूं परणाई[15]। तठा पछै कतराईक दिन घड़सी रावळ मालदेजी कनै रह्यो[16]। पछै मास ५ तथा ७ आडा घातनै घड़सी रावळ मालदेजीसूं अरज कराई[17]—"जु राज कहो तो हूं पातसाहरी ओळग जाऊं[18]। मांहरी धरती वळणरो काई सूल करां[19]।" तरै रावळ मालदेजी खुसी हुयनै सीख दीवी[20]। तरै रावळ घड़सी आपरा मांणस लेनै[21] फळोधीरै किनारै किरड़ारै

---

1 घड़सी अपने भानजे मैंगलदेवको आबूकी ओर पहुँचानेको गया था। 2 वह वहांसे लौटता हुआ मेहवामें आया। 3 किसी मालीके घर पर डेरा लगाया। 4 उस समय घड़सी खड़ा था परंतु उसने जगमालको जुहार नहीं किया। 5 ऐसा। 6,7 सो या तो वह कोई गँवार है या किसी राजवंशीके घरका पुत्र है। 8 तब रावलजीने उसे अपने पास बुलवाया। 9 परंतु कोई पता नहीं लगा। 10 तू जानता है क्या, यह कौन है? 11 मैं तो इसके बाबत कुछ नहीं जानता। 12 किन्तु एक दिन जब कि इस घड़सीने मुझे मार डालनेका इरादा कर लिया था, लेकिन फिर उसने मुझे कहा कि 'तू शस्त्र डाल दे तो तुझे नहीं मारूंगा, मुझे रावल मूलराज और राणा रतनसीकी शपथ है।' 13 तब रावल मालदेवजीने अनुमान लगाया कि यह मूलराज और रतनसीके बेटे-भतीजोंमेंसे है। 14 फिर बहुत आदर-भावसे रखा। 15 पीछे रावल मालदेवजीने अपने पुत्र जगमालकी पुत्रीका घड़सीके साथ व्याह कर दिया। 16 जिसके बाद कितनेक दिन घड़सी रावल मालदेवजीके पास रहा। 17 फिर ५-७ महीने बीत जानेके बाद रावल मालदेवजीसे अर्ज करवाई। 18 यदि श्रीमान आज्ञा करें तो मैं बादशाहकी सेवामें जाऊं। 19 हमारी धरती (देश) प्राप्त करनेका कोई उपाय करूं। 20 तब रावल मालदेवजीने प्रसन्न होकर जानेकी आज्ञा दी। 21 तब रावल घड़सी अपने आदमियोंको लेकर।

किनारै गांव बधाउड़ो छै, तठै मांणसांनूं राखनै आप पातसाहरी ओळग गयो[1]। उठै वरस १२ चाकरी कीवी[2]। आदमी १० तथा १२ भाटी नै आदमी २ चारण कनै था[3], सु उठै बोहत परेसान हुवा। भूख गाढा दबाया[4]।

एक वात युं पण सुणी छै[5]। जु घड़सी आप चतुर थो, सु उठै किणांहेकां सिरदारां-उमरावांरा वागा डेरै बैठो सीवतो[6]। वागै एक रुपियो एक मसकतरो लेतो[7]। यूं कर आपरै डेरारो खरच कर आघो काढतो[8], पण पातसाहरी चाकरी करतो[9]। तिसड़ै पूरबरो पातसाह समसदी, तिको दिल्लीरा पातसाह ऊपर आयो[10]। कोस २० रो दोनूं फौजांरै वीच रह्यो[11], तरै पूरबरै पातसाह कबांण १ दिल्लीरै पातसाहनूं मेली[12],–"जुथांहरा कटक मांहै कोई इसड़ो छै, जिको आ कबांण चाढै[13]।" तरै पातसाहरो बीड़ो सगळै ही कटक मांहै फिरियो[14], "जिकोई आ कबांण चाढै तिकैनूं म्हे बहोत निवाजस करां[15]।" सु लसकररा सिपाइयां सगळां कबांण दीठी[16]; पिण किणहीथा कबांण चढावणरी आसंग पड़ै नहीं[17]। सकोई कबांणसूं खस-खस परा गया[18]। तरै रावळ घड़सीरै चाकर १ भाटी लूंणग ऊदळरो बेटो, जैचंदरो पोतरो, तिण घड़सीनूं कह्यो[19]–"थे कहो तो

---

1 अपने मनुष्योंको वहां पर रख कर स्वयं बादशाहकी सेवामें गया। 2 १२ वर्ष तक वहां रह कर चाकरी की। 3 १०-१२ भाटी राजपूत और २ चारण उसके पास थे। 4 भूखने (गरीवीने) बहुत कष्ट पहुँचाया। 5 एक बात यों भी सुनी जाती है। 6 वह वहां पर कईएक सरदारों-उमरावोंके डेरोंमें बैठ कर वागे सिया करता था। 7 प्रति वागा एक रुपया मजदूरीका लेता था। 8 ऐसा करके अपने डेरेका खर्च चलाता था। 9 फिर भी बादशाही चाकरी तो करता रहा। 10 इस बीच पूर्वका बादशाह समसुद्दीन दिल्लीके बादशाह पर चढ कर आ गया। 11 दोनोंकी सेनाओंमें २० कोस का अंतर रहा। 12 तब पूर्वके बादशाहने दिल्लीके बादशाहके पास एक कमान (धनुष) भेजी। 13 तुम्हारी सेनामें कोई ऐसा वीर है जो इस कमानको चढा दे। 14 तब बादशाहका बीड़ा इस घोषणाके साथ सारी सेनामें फिरा। 15 जो कोई इस कमानको चढा दे उस पर हम बड़ी कृपा करेंगे। 16 सेनाके सभी सिपाहियोंने कमानको देखा। 17 परंतु किसीकी भी कमान चढानेकी हिम्मत नहीं होती। 18 सभी कोई उससे पच-पच कर चले गये। 19 घड़सीका एक सेवक जिसका नाम भाटी लूणग, जो ऊदलका बेटा और जयचंदका पोता था, उसने घड़सीसे कहा।

हूं बीड़ो लूं, कवांण चढाऊं[1] ।" तरै घड़सी कह्यो-"बीड़ो लै ।" तरै लूंणसी बीड़ों लियौ । तरै लूंणगनूं पातसाह कनै[2] ले गया । उठै पातसाह मांहला मांडै तेड़नै लंणग आगै कवांण नांखी[3]; तरै उठै लूंणग कवांण चढाई । चढायनै एक पातसाहरी सहेलीरै गळैमें घाती[4], नै कह्यो-"हमैं राज जांणो तिण कना कढावज्यो[5] ।" इतरी कहिनै लूंणग डेरै आयो[6] । वांसै[7] पातसाह जोरावर[8] तिके[9] जांणतो त्यांनूं[10] तेड़ाया[11]; पिण[12] किण-हीसूं[13] कबांण निकळी नहीं । तरै वळै[14] लूंणगनूं हीज तेड़ कवांण कढाई । पछै पातसाह लूंणगसूं खुसी हुवो, कह्यो–"थारै जोईजै सु मांग[15] ।" तरै लूंणग कह्यो–"म्हारै नै म्हारा ठाकुररै चढणनूं घोड़ा निवळा[16] छै । दोय अैराकी घोड़ा म्हे पावां ।" तरै पातसाह आपरी असवारीरा दोय घोड़ा दिया । पछै दिन दोयनूं वेढ[17] हुई; तरै घड़सीनूं लूंणग कह्यो–"आंपै वेढसूं अलाहिदा रहिस्यां, नै आंपांनूं धरती वाळणी छै[18] । आंपै आगला पातसाहनूं निजरमें राख ठावो करां तो फाइदो छै[19], सु हमैं वेढ तो आंमो-सांमी हुवै छै[20] ।" तिण वेळा घड़सी नै लूंणग दोनूं असवार पाखतीवांणा ऊभा रह्या[21]; नै आदमी १० आपरांनूं जासूस मेलिया था[22], जिकां[23] आय कह्यो–"सुपेद हाथी, तिणरै[24] ऊपरै अंबारी, तिणरै मोती लटकै, उण अंबारी मांहै पातसाह छै ।" तरै पातसाहरा हाथी नजीक[25] आया, तरै बेऊं असवारे घोड़ा उपाड़ नांखिया[26], सु लूंणग तो पातसाहरै हाथीनूं झटको वाह्यो, सु सूंड

---

1 आप कहें तो मैं बीड़ा उठा लूं और कमानको चढ़ा दूं । 2 पास । 3 वहां बादशाहने लूणगको भीतरी मंडपमें बुला करके उसके आगे कमान डाल दी । 4 कमान चढ़ा करके वहां खड़ी एक बादशाहकी दासीके गलेमें डाल दी । 5 और कहा 'अब श्रीमान् जिसको अच्छा शक्तिशाली जानें उससे निकलवा देना' । 6 इतना कह करके लूणग अपने डेरे आ गया । 7 जिसके जानेके पीछे । 8 शक्तिशाली । 9 जिनको । 10 उनको । 11 बुलवाया । 12 किन्तु । 13 किसीसे भी । 14 फिर । 15 तेरे चाहिये सो मांग । 16 निर्बल । 17 लड़ाई । 18 अपन अलग रहेंगे, क्योंकि अपनेको अपना देश पुनः प्राप्त करना है । 19 अपन अगले (आक्रमणकारी) बादशाहको लक्ष्य बना कर आक्रमण करें तो अपनेको लाभ है । 20 सो अब युद्ध तो आमने-सामने हो रहा हैं । 21 उस समय घड़सी और लूणग दोनों घुड़ सवार एक ओर खड़े रहे । 22 और जिन अपने दस आदमियोंको जासूस बना कर भेजा था । 23 उन्होंने । 24 जिसके । 25 नजदीक । 26 तब दोनों सवारोंने अपने घोड़े उठाये ।

वाढी[1] । नै घड़सी हाथीरा दांतूसळां माथै[2] पग देनै, अंबाड़ी मांहै पग देनै पातसाहनूं हेठो नांखियो[3]; नै पातसाहरै माथैरो टोप सवा लाखरो थो सु उरो लीनो[4] । लूंणग हाथीरी सूंड उरी लेनै घोड़ारी पाहोरी मांहै घाती[5] । अतरै बोजोही साथ पातसाही आय पुहुँतो[6], तिको पातसाहनूं पकड़ ले गयो, सु पातसाह आगै सको वडा उमराव झूठा प्रवाड़ा कहण लागा[7] । पछै पातसाह समसदीनूं पूछियो–"थांसूं मुकालबै (बलै) मांहरा वडा उमरावां मांहै कुण-कुण हुवा[8] ?" तरै समसदी कह्यो–"नांव तो हूं जांणूं नहीं[9], नै मोसूं मांमलो[10] कियो तठै थांहरा[11] वड़ा उमरावां मुसलमांनां मांहै घणा साथरो धणी को न हुतो[12]। वे तो असवार २ हिंदु हुता, तिणां म्हांनूं झालियो[13], नै उणै म्हारा माथारो टोप रुपिया सवा लाखरी कीमतरो लियो छै; हाथीरी सूंड पाड़ी छै सु लीवो छै, नै हूं उणांनै देखूं तो वताय दूं[14] ।" तरै पातसाहरा वडा उमराव प्रवाड़ावै हुता तिके आंण दिखाया[15] । पूरबरै पातसाह उणां मांहै कोई कबूल न कियो[16] । पछै सारा उमराव पंच-हजारी था लेनै (मु)सदी ताऊं सारो लोग दिखायो[17]। सिगळां पछै[18] रावळ घड़सी नै लूंणग आया; तरै समसदी पातसाह इणांनूं दीठा[19]; तरै कह्यो-"अै हुवै[20] ।" तरै घड़सी माथारो टोप सवा लाखरो हाजर कियो । लूंणग हाथीरी सूंड पाहोरी मांहिसूं काढ हाजर कीवी । पातसाह गाढो राजी हुवौ[21] । इणांनूं फुरमायो–"चाहै सु मांगो, म्हे

---

1 सो लूणगने तो बादशाहके हाथी पर तलवारसे प्रहार किया और उसकी सूंडको काट दिया। 2 दाँतोंके ऊपर। 3 अंबारीके अन्दर पाँव रख कर बादशाहको नीचे गिरा दिया। 4 सो ले लिया। 5 लूणगने हाथीकी सूंडको लेकर के अपने घोड़ेकी पाहोरीमें (थैलीमें) डाल दी। 6 इतनेमें दूसरे बादशाही सैनिक भी आ पहुँचे। 7 सो वे सभी बड़े उमराव अपनी वीरताके झूठे बखान करने लगे। 8 हमारे बड़े उमरावोंमेंसे तुम्हारेसे मुकाबिलेमें कौन-कौन हुआ था। 9 नाम तो मैं जानता नहीं। 10 युद्ध। 11 तुम्हारे। 12 कोई नहीं था। 13 जिन्होंने मुझे पकड़ा। 14 और मैं उनको देख लूं तो बता दूं। 15 तब बादशाहके उन बड़े उमरावोंको जो अपनी वीरताकी शेखी हांकते थे, उनको लाकर दिखलाया। 16 पूर्वके बादशाहने उनमेंसे किसीको स्वीकार नहीं किया। 17 पीछे सभी पंच-हजारी उमरावोंसे लेकर...सभी लोगोंको दिखलाया। 18 सबके पीछे। 19 तब बादशाह समसुद्दीनने इनको देखा। 20 ये हो सकते हैं। 21 बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ।

थांनूं इनाइत करां[1] ।" पछै इणै[2] अरज कीवी—"मांहरो उतन जेसळमेर पावां[3] ।" तरै पातसाहजी अरज मांनी । जेसळमेररी तसलीम कराई[4] । दीवांण, बगसियांनूं फुरमायो—"फुरमांण कर दो[5] ।" सु रावळ साथै महिपो जैतुंग कोल्हारो बेटो साथै हुतो[6], तिणरै पईसा था[7], सु उणरा पईसा खरच-तालीको करायो[8] । और ही इणै पईसो-टको सारां नेगियां-लागदारांनूं दियो[9] । सारी सिरकाररो लोग राजी कियो, नै एक हलालखोर खासानूं क्युं न दियो हुतो[10]; तिण एक वार घात घाती थी[11]; पछै उणनूं ही राजी कियो[12] । पछै पातसाही दरगाहसूं विदा हुय चालिया[13] । जेसळमेरथा[14] कोस ३ वासणपीरै आगै जेसळमेरथा कोस ३ राजबाई कनै गया, राजबाईरी तळाई वासणपी नै जेसळमेर विचमें छै, सु तठै आया[15] । सु उठै कोई कसवण हुवो[16], तरै क्युं पग ठांभिया[17], उठै उतरिया[18], सवणी बुलायो[19], तरै सवणी कह्यो—"एक आदमी अटै वळ दियो जोईजै[20] ।" तरै रावळ साथै आदमी १२ साख-साखरा था[21], नै एक रतनूं आसराव बेटै सूधो थो[22]; तरै बारठ विचारियो, विचारनै कह्यौ—"सिगळीहो साखरो एकूको छै[23], नै म्हे दोय जणा छां[24], सु म्हां मांहिलो एक जणो वळ चाडो[25] ।" इसड़ो विचार करै छै[26], तिसड़ै वांसाथी मेवड़ो एक फुरमांण ले आयो[27] । तरै इणे जांणियो—"जु ओ वांसाथी आयो सु भलो

1 हम तुमको इनायत करें । 2 इन्होंने । 3 हमारा देश जैसलमेर हमें मिले । 4 जैसलमेरका (मान्यताका) मुजरा करवाया । 5 फरमान लिख दो । 6 कोल्हाका बेटा महिपा जैतुंग रावलके साथमें था । 7 जिसके पास रुपये-पैसे थे । 8 उसके पैसोंसे राज्य-तसलीम संबंधी जो खर्चा किया जाता था सो करवाया । 9 सभी नेगियों और लगानदारोंको भी नेग और लगान इसीने दिया । 10,11 बादशाहका एक खासा हलालखोर था उसे कुछ नहीं दिया था, क्योंकि उसने एक वार विश्वासघात किया था । 12 लेकिन पीछे उसको भी दे-दिवा कर राजी कर दिया । 13 पीछे बादशाही दरबारसे आज्ञा प्राप्त कर रवाना हुआ । 14 जैसलमेरसे । 15 वहां आये । 16 सो वहां कोई अपशकुन हुआ । 17,18 तब वहां कुछ देर खड़े रहे और फिर उतर गये । 19 शकुनीको बुलाया । 20 एक आदमीकी यहां बलि देनी चाहिये । 21 उस समय रावलके साथ भिन्न-भिन्न शाखाओंके १२ आदमी थे । 22 केवल रतनू शाखाका एक चारण आसराव अपने पुत्रसहित था । 23 सभी शाखाओंका एक-एक व्यक्ति है । 24 और हम एक शाखाके दो व्यक्ति हैं । 25 हमारेमें से एक व्यक्तिकी बलि दे दो । 26,27 ऐसा विचार कर रहे हैं इतने हीमें पीछेसे एक दूत फरमान ले करके आया ।

नहीं[1] ।" तरै कागळ खोल वाच दीठो[2] । कागळ मांहै लिखियो-"जु गढ मत द्यो ।" तरैं मेवड़ो मार खेजड़ी हेठै वळ दियो[3] । पछै छाप दिखाय गढ लियो[4] । वळै आतां कसवण बोलियो[5] । तरै रावळ पूछियो; तरै सवणी कह्यो–"जु इंण गढ सवो रावळरो नांम रह्यो चाहीजै नै पाछोपो नहीं रहै[6] ।" पछै रावळ घड़सी घड़सीसर तळाव करायो । पछै वरस ३ मास ६ राज कियो । पछै भीम जसहड़ोतरै बेटै तेजसी चूक करनै रावळ घड़सीनूं तळहटी वावड़ी छै तठै गोठ कीवी[7] । रावळजी पधारिया सु वे उतावळा हुआ घोड़ासूं उतरतां पैहला झटको वाह्यौ सु माथो तूट पड़ियो[8] । धड़ घोड़ो लेनै गढ ऊपर विडरियो थको ले आयो[9] । पछै प्रोळ रांणी ढकाई[10] । पछैं राहड़वेळा तांई मांहै तेजसी वांसे हुवो आयो[11] । तरै ऊपरलै भाटा नांखिया[12] । तेजसीरो कितरोहेक साथ मारांणो[13], तरै तेजसी परो नाठो[14] । तरै रांणी विमळादे दीठो, "रावळरै टीकानूं भाई बेटो को नहीं[15] । गढ किणनूं दीजै[16] ?" तरै विमळादे रजपूतांनूं कह्यो–"कोई इसड़ो रजपूत, जिको पांच-सात दिन गढ राखैं[17], तितरै म्हे मूळराजरो पोतरो[18], देवराजरो बेटो बारू-छाहिण केहर, रांणा रूपड़ारो दोहीतो उरो आंणां[19] ।" तरै

---

1 यह पीछेका पीछे आया सो ठीक नहीं है । 2 तब उसके पासका पत्र लेकर खोला और पढ़ देखा । 3 तब उस मेवड़ेको (दूतको) ही मार कर खेजड़ी (शमी) वृक्षके नीचे उसकी बलि दे दी । 4 फिर शाही मुद्रा वाला फरमान दिखा कर गढ पर अधिकार कर लिया । 5 आते हुए फिर अपशकुन हुआ । 6 इस गढके साथ रावलका नाम तो रहना चाहिये, परंतु उसका वंशज कोई नहीं रहेगा । 7 भीम जसहड़ोतके बेटे तेजसीने तलहठीकी बावड़ी पर रावल घड़सीको दगेके साथ एक गोठ दी । 8 रावलजी वहां आये और फुर्तीके साथ ज्योंही वे घोड़ेसे उतर रहे थे, उतरनेके पहिले ही (तेजसीने) तलवारका प्रहार किया जिससे (घड़सीका) सिर टूट पड़ा । 9 घड़सीके कटे हुए धड़को घोड़ा हांफता और घबराया हुआ गढ पर ले आया । 10 रानीने गढकी पोलें बंद करवा दीं । 11 पीछे संध्या समय(?) होते-होते तेजसी भी पीछे भागा हुआ आया । 12 तब ऊपर वालोंने उस पर पत्थर बरसाये । 13 तेजसीके कितनेक साथी मारे गये । 14 तब तेजसी भाग गया । 15 तब राणी विमलादेने विचारा कि रावलके पीछे गद्दीधरोंमें भाई-बेटा कोई नहीं है । 16 गढ किसके सुपुर्द किया जाय । 17 कोई ऐसा राजपूत है जो पांच-सात दिन तक गढकी रक्षा करे । 18 जितनेमें हम मूलराजके पौत्रको । 19 देवराजके बेटे केहरको जो राणा रूपड़ेका दोहिता है, बारू-छाहिणसे बुला लें ।

डेल्है जसहड़ आसकरणरै बेटै कह्यो—"गढ इणां आगै म्हे राखसां, थे म्हांसूं पछै भली करजो, म्हे वीनती करां सु मांनजो[1] ।" पछै विमळादे वाँह दीवो[2] । पछै डेल्हो आपरो साथ ले आदमी ५०० लेनै गढरी प्रोळ आडो बैठो[3] । विमळादे कांगरांसूं आदमी उतारनै केहरनूं तेड़ायो[4] । केहर आयो । केहरनूं टीको हुवो । गढरी प्रोळ खोली । भाटिये सारै आय केहर देवराजोतनूं जुहार कियो[5] । हरांमखोर नास गयो[6] । पछै डेल्है आसकरणोतनूं विमळादे केहरनूं कहिनै चांधणो जेसळमेरसूं कोस १२ पोकरणरै मारग दिसा पटै दिरायो[7] ।

रावळ घड़सी रतनसीयोतरै साथै विखा मांहै इतरा रजपूत था[8]—

१ जैतुंग महिपो कोल्हावत[9] ।

१ जसहड़ डेल्हो आसकरणोत[10] ।

१ जैचंद लूंणग ऊदळोत[11] ।

२ बारहठ आसराव रतनूं, आसराव तीहुणरावरो । तीहुणराव, जोगी, देदो, बूजो, रतनरा । चिराई आसरावरो, बाप बेटो २[12] ।

गीत रावळ घड़सीरो ।

घणा दीह[13] लग[14] ताहरो[15] नांम रहसी[16] घणो,
घणा जूझार जु वाहै घाह[17] ।
आप प्रांण दिल्ली ऊबेळी[18];
पूरवरो भागो पतसाह ॥१

---

1 इसके आगे गढ़की रक्षा हम करेंगे । आप हमारे साथ भला बर्ताव करना और हम विनती करें उसे स्वीकार करना । 2 विमलादेने वचन दिया । 3 तब डेल्हा अपने साथियों-के साथ ५०० आदमियोंको लेकर गढ़की पौलके आड़ा बैठ गया । 4 विमलादेने गढ़के कंगूरोंसे आदमीको नीचे उतार कर केहरको बुलवा लिया । 5 देवराजके पुत्र केहरको सभी भाटियोंने आ करके जुहार किया । 6 हरामखोर तेजसी भाग गया । 7 फिर विमलादेने केहरको कह करके चांधणा गाँव, जो जैसलमेरसे १२ कोस पर पोकरणके मार्गकी ओर है, आसकरणके बेटे डेल्हेको जागीरमें दिलवाया । 8 रावल घड़सी रतनसीओतके साथ, उसके संकटकालमें इतने राजपूत थे । 9 कोल्हाका बेटा जैतुंग महिपा । 10 आसकरणका बेटा जसहड़ डेल्हा । 11 जयचंद और लूणग ऊदलके बेटे । 12 तिहुणरावका बेटा बारहठ आसराव रतनूं । तिहुणराव, जोगी, देदो और बूजो ये रतनके बेटे और चिराई आसरावका बेटा । बाप-बेटा ये दोनों साथ थे । 13 दिन । 14 तक । 15 तेरा । 16 रहेगा । 17 तूंने अनेक जूझारोंके ऊपर प्रहार किया है । 18 अपने प्राणोंको हथेलीमें लेकर तूने दिल्लीकी सहायता की ।

एकण घाव धरा वस आंणी[1],
पड़गाहै दिल्ली पतसाह[2] ।
पूरब-पोह[3] गमियो[4] पर-दीपै[5],
रतनावत घड़सी रिम-राह[6] ॥२

वेढक जेसळमेर वाळियो[7],
कव सीगळ[8] बोलै जस कंठ ।
वड रावळ सरगापुर वसियो[9],
विमळादे सहितो वैकुंठ[10] ॥३

वात

रावळ केहर देवराजरो। देवराज मूळराजरो। रावळ घड़सी पछै टीकै बैठो। वडो ठाकुर हुवो। वरस ३४ मास १० दिन ६ राज कियो। पछै मीच मुंवो[11]। तिण केहररा बेटा—

१ रावळ लखमण केहररो। जेसळमेर टीकै बैठो। लीलादे महेवचीरै पेटरो[12]।

१ सोम केहररो। तिणरा अहिजनि, पोकरणरै मढलै प्रथम रावळ रूपसीयोतरा छै। नाथारा बेटा रांमदास, लालो, हरी, खेतो वीकानेररै देस गांव नाथूसर वसै छै। रूपसीरा पोतरा–गांगो, करन, रांमदास[13]।

१ रावळ केल्हण, रावळ केहररो वडो बेटो टीकाइत हुतो, लाछां देवड़ीरै पेटरो[14]। रावळ केहरनूं विगर पूछियां महेवचांसूं सगाई की,

---

1,2 दिल्लीके बादशाहका मान-मर्दन करके एक ही आक्रमणसे धरा पर अधिकार कर लिया। 3 पूर्वके बादशाहको। 4 भगा दिया, गर्व खंडन कर दिया। 5 दूसरे द्वीपमें। 6 शत्रुओंका नाश करने वाला। 7 इस वीरने अपने जैसलमेर राज्यको पुनः प्राप्त किया। 8 कवि सिंहल। 9,10 विमलादेके साथ बड़ा रावल घड़सीने स्वर्गमें जाकर निवास किया। 11 अपनी मृत्युसे मरा। 12 रावल लखमण केहरका बेटा, लीलादे महेवचीकी कोखसे उत्पन्न, जैसलमेरकी गद्दी पर बैठा। 13 रूपसीके पोते गांगा, करण और रामदास। 14 लाछां देवड़ीकी कोखसे उत्पन्न रावल केहरका वड़ा बेटा रावल केल्हण राज्याधिकारी था।

तरै रावळ केहररो वडो बेटो केल्हण थो, जिणनूं परो काढियो; नै लखमणनूं मुदायत कियो[1] ।

१ सोम केहररो, देवड़ी लाछांरै पेटरो । इणरै को दिन विकूंपुर हुतो । तिण सोमरै वांसला सोम-भाटी छै[2] ।

पछै राव केल्हण सोमरै सगो-भाई[3] विकूंपुर आयो । पछै सोम कतार आई हुती तिणरो दांण चुकावण गयो हुतो[4] । वांसै केल्हण किवाड़ आडा दिया[5] । पछै सोम जायनै देरावर लियो[6] । वरस पांच-सात सोम जीवियो, पछै सोम मुंवो[7] ।

टीकै सहसमल वैठो । पछै सोमरै बेटै सहसमल ऊपर जेसळमेररो धणी आयो[8], तद सहसमल किवाड नांख वाज मुंवो[9] । गढ देरावर, सोम नै सहसमलरी देवळियां छै[10] ।

रूपसी सोमरो बेटो । तिको आपरा भतीज लेनै सिंध गयो[11] । पछै राव वरसिंघ रूपसी सोमोतनूं गांव ५ विकूंपुररा दीना, पाछो विकूंपुर आंणियो[12] । १ ग्रावधी वसै[13] ।

१ वजु । १ कूंपासर । १ सिंध । १ पीथासर ।

तिण सेवड़ा मांहै अै गांव आगै राखसियांरा हुता, पछै सोमनूं दिया[14] ।

१ कलिकरण केहरो, लाछां देवड़ीरै पेटरो । तिणरै वांसला जेसा

---

1 तव रावल केहरका वड़ा वेटा जो केल्हण था, उसको निकाल दिया और छोटे वेटे लखमणको राज्याधिकारी वनाया । 2 कोई दिन इसके अधिकारमें विकूंपुर था । इस सोमके वंशज सोम-भाटी हैं । 3 सहोदर भाई । 4 पीछे सोम एक कतार (मालसे भरा हुआ ऊंटों आदिका काफिला) आई थी, उसका कर चुकानेको गया हुआ था । 5 पीछेसे केल्हणने द्वार वंद कर दिये । 6 इस पर सोमने जाकर देरावर पर अधिकार कर लिया । 7 पांच-सात वर्ष जीवित रह कर सोम मर गया । 8 सोमके वेटे सहसमल पर जैसलमेरका स्वामी (रावल केल्हण चढ़ कर आया । 9 तव सहसमलने गढ़के द्वार खोल दिये और युद्ध करके मर गया । 10 देरावरके गढमें सोम और सहसमलकी देवलियां वनी हुई हैं । 11 सोमका वेटा रूपसी अपने भतीजोंको लेकर सिंघमें चला गया । 12 पीछे राव वरसिंघने सोमके पुत्र रूपसीको विकूंपुर वुला करके, विकूंपुरके पांच गांव दिये । 13,14 वजू, कूंपासर, सिंध, पीथासर और ग्रावधी इस प्रान्तमें पहले ये गांव राखसिये राजपूतोंके थे, पीछे सोमको (रूपसीको) दिये । रूपसी ग्रावधीमें रहता है ।

भाटी जोधपुर चाकर[1] ।

सोम-भाटी केहररा इतरी ठोड़ छै[2] । आंक १ ।

२ सहसमल सोमरो । तिणरा फळोधीरी खीचवंद[3] ।

३ कान्ह ।

४ भैरव ।

५ रांम ।

६ हरदास ।

७ देवीदांन । ७ अजो । ७ ठाकुरसी ।

६ खेतो ।

७ अजो । ७ पीथो ।

६ रायसिंघ ।

७ जैतो । ७ जगमाल ।

६ वरसिंघ ।

७ मांनो ।

२ रूपसी सोमरो । विकूंपुररै गांव ग्रावधी, वजु[4] ।

३ सीहो ।

४ किसनो । ४ रामचंद ।

४ भगवांन । ४ कलो ।

४ सांवळ । ४ जीवो ।

४ रिणमल । ४ दयाळ ।

४ अजो । ४ विजो ।

४ रांम । ४ पिथुराव ।

१ सातळ केहररो, लाछां देवड़ीरै पेटरो[5] ।

१ सांवतसी केहररो, तिणरै वांसला सांवतसी-भाटी कहावै छै[6] ।

इणांरै जेसळमेररै देस गांव १ कोटड़ी, जेसळमेरसूं कोस १० गोरहराथी कोस ३ । रावळ कलै मनोहररी वार मांहै इणांरो वडो कारण हुवो[7] ।

२ महिपो ।

३ मालो ।

४ भींव ।

५ गोयंद ।

६ सीहो । ६ देवीदांन ।

६ अखो । ६ नगो ।

---

1 केहरका बेटा कलिकरण, लाछां देवड़ीकी कोखसे उत्पन्न, जिसके वंशज जैसा-भाटी जोधपुरमें चाकर हैं । 2 केहरके वंशज सोम-भाटी इतने स्थानोंमें रहते हैं । 3 सोमका पुत्र सहसमल, जिसके वंशज फलोधी प्रांतके खीचवंद गांवमें रहते हैं । 4 सोमका पुत्र रूपसीके विकूंपुरके ग्रावधी, वजू आदि गांव । 5 केहरका बेटा सातल, लाछां देवड़ीकी कोखसे उत्पन्न । 6,7 केहरका बेटा सांवतसी, इसके वंशज सांवतसी-भाटी कहलाते हैं । जैसलमेर राज्यमें इनका एक गांव कोटड़ी है जो जैसलमेरसे १० और गोरहरा से ३ कोस दूर है । रावल कलै और मनोहरके राज्य-कालमें इनकी (सांवतसी-भाटियोंकी) वड़ी प्रतिष्ठा थी ।

सांवतसीरा जेसळमेर ।
१ गोयंद । भींवो ।
मालो । महिपो[1] ।
२ सीहो[2] ।
३ जीवो ।
२ दांन (देवीदांन)
३ सादूळ । ३ वीरदास ।
३ सूरजमल ।
२ अखो गोयंदरो ।

३ गोपाळ ।
२ नगो ।
३ सांमदास । सांवतसी,
अहिजन[3] ।
१ ईसर, रायमल,
महिपो[4] ।
२ मनोहर । २ वीठळ ।
२ जसवंत[5] ।

१ मेहाजळ केहररो, लीलादे महेवचीरै पेटरो । तिणांरी जुदी साख छै—मेहाजळोत-भाटी । इणांरो जेसळमेररै देस गांव मेहाजळहर कोहररो नांम छै[6]। जेसळमेरथा[7] कोस ३०, ऊमरकोटरै मारग, १ गांव बुज कनै तिणमें भाटी नाथो किसनावत वसै छै[8] ।

१ तेजसी केहररो, लाछां देवड़ीरै पेटरो[9] ।

१ परबत केहररो ।　　　१ तणु केहररो ।

आंक १ लखमण केहररो । केहर पछै पाट वैठो । तिण वरस ३१ दिन १३ जेसळमेर राज कियो[10] ।

रावळ लखमणरा वेटांसूं लखमणरा पोतरा पाटवी नै वीजा पण छै, सु लखमणा कहावै छै[11] ।

---

1 गोयंद भीमेका पुत्र, भीम मालाका और माला महिपेका पुत्र । 2 सीहा गोयंदका वेटा । 3 सामदास, सांवतसी (दूसरा) और अहिजन, ये तीनों नगाके पुत्र । 4 ईसर, रायमल और महिपा, ये तीनों केहरके वेटे । 5 ये तीनों महिपाके पुत्र । 6 मेहाजल केहरका वेटा, लीलादे महेवचीकी कोखसे उत्पन्न । 'मेहाजलोत-भाटी' इसके वंशजोंकी यह एक अलग शाखा है । मेहाजलके नामसे मेहाजलहर नामक एक कुआँ है, जिसके नाम पर 'मेहाजलहर' नामका इनका एक गांव जैसलमेर राज्यमें है । 7 जैसलमेरसे । 8 गांव बुजके पास जिसमें किसनाका वेटा भाटी नाथा रहता है । 9 लाछां देवड़ीकी कोखसे उत्पन्न केहरका वेटा तेजसी । 10 केहरका वेटा लखमण, केहरके वाद गद्दी पर वैठा, जिसने ३१ वर्ष और १३ दिन जैसमेरमें राज्य किया । 11 रावल लखमणके वेटोंके वंशज लखमणके पोते गद्दीवरोंमें भी हैं और उनसे अतिरिक्त भी हैं, जो 'लखमणा' या 'लखमण-भाटी' कहलाते हैं ।

२ रावळ लखमणरो बेटो वैरसी जेसळमेर टीकै बैठो[1] ।

२ रूपसी लखमणरो, तिणरी जुदी साख रूपसी कहाड़ै[2] । तिणांरा इतरा धड़ा[3]—

एक तो मादळिया वाळा जोधपुर चाकर[4] ।

एक पोकरण वाळा[5] ।

नैं जैसळमेररै देस रूपसी घणा छै। इणांरो उतन काछो लुद्रवाथी कोस २ । आगै इणांरै रावताई हुती[6] । विजो, नाथो, हरदास, रूपसी जेसळमेररै देस[7] ।

१ करमचंद जसारो । २ वीको ।

२ भागचंद । १ वीरदास नीसळोत[8] ।

१ रायसल देवावत[9] ।

१ अमरो भाखररो, चंदरावरो पोतरो[10] ।

भाटी वीठळ गोयंदोत, जोधपुर चाकर[11] ।

२ राजधर लखमणरो तिणरै वांसला राजधर-भाटी कहावै । इणांरै जेसळमेररै देस कोहर २ गांव २[12]।

१ घणोली जेसळमेरथा कोस १ ।

१ सतोही जेसळमेरथा कोस १५ ।

१ पूठ वांसै धांधणियो ऊमरकोटरै मारगमें ।

१ सूजेवो-बांभणीको । रावळ कल्यांणदास भाटी जसवंतनूं उतन कर दियो, लाठोसूं कोस ४[13] ।

---

1 रावल लखमणका बेटा वैरसी जो लखमणके बाद जैसलमेरकी गद्दी पर बैठा। 2 लखमणका बेटा रूपसी, जिसके नामसे एक अलग शाखा 'रूपसी' या 'रूपसी-भाटी' कहलाती है। 3,4,5 जिनके इतने (दो) दल हैं—(१) मादलिया वाले जो जोधपुरमें चाकर हैं, (२) और एक वह जो पोकरण वालोंके नामसे प्रसिद्ध है। 6 जैसलमेर राज्यमें रूपसी अधिक हैं। लुद्रवासे दो कोस पर काछा गांव इनका वतन है। पहिले रावताई इनकी थी। 7 विजा, नाथा, हरदास और रूपसी जैसलमेर राज्यमें रहते हैं। 8 नीसलका बेटा वीरदास। 9 देवाका बेटा रायसल। 10 अमरा भाखरका बेटा और चंदरावका पोता। 11 गोयंदका पुत्र भाटी वीठल जो जोधपुरमें चाकर। 12,13 लखमणका बेटा राजधर, जिसके वंशधर 'राजधर-भाटी' कहलाते हैं। इनके जैसलमेर राज्यमें ये दो गांव और दो कुएँ हैं—(१) घणोली, जैसलमेरसे एक कोस, (२) सतोही जैसलमेरसे १५ कोस, (३) सतोहीकी पिछली बाजू उमरकोटके मार्गमें धांधणिया और (४) सूजेवो-बांभणीको, जो लाठी गांवसे ४ कोस पर है, जिसे रावल कल्याणदासने भाटी जसवंतको निवास-स्थानके लिये दिया था।

२ जैतमाल राजधर[1] ।

जसवंत वैरसलोत भलो रजपूत हुतो। रावळ मनोहररी वार मांहै च्यार परधांनांमें[2] ।

२ भोपत जसवंतरो[3] । ३ भागचंद ।

सकतो वैरसलरो[4] ।

२ किसनो । २ विसनो । २ धोवो । २ वीरदास ।

३ सूरजमल ।

२ उदैसिंह । २ भोजो । २ सांमो । २ जोगीदास ।

रावळ वैरसो लखमणरो । रावळ लखमण पछै पाट वैठो । वरस १९ मास ९ दिन १७ जेसळमेर राज कियो[5] ।

१२ रावळ चाचो । १२ मेळो ।

१३ करमो, पोकरणरै कैलावै वाळो[6] ।

१४ अजो करमारो[7] । १५ हरदास अजारो[8] ।

१५ सिवदास, उ ॥ भोपत उरजन मारियो, संमत १६५५[9] ।

१६ गंगादास । १७ रतनसी ।

१६ नेतसी अजावत[10] । १७ ऊदो ।

१४ सांगो करमारो। पातसाह हमाऊरो चाकर थटै मारांणो[11] ।

१५ भांनीदास (भवांनीदास) । १६ सुरतांण ।

१४ ठाकुरसी करमारो, जोधपुर विखै संमत १६०० कांम आयो[12] ।

१४ महेस करमारो । १५ कूंभो । १५ हमीर ।

१५ जगो हमीरोत[13] । १७ गोयंद । १७ रांमदास ।

---

1 जैतमाल राजधरका बेटा। 2 वैरसीका वेटा जसवंत भला राजपूत हुआ। रावल मनोहरके राज्यकालमें चार प्रधानोंमेंसे एक था। 3 भोपत जसवंतका वेटा। 4 सकता वैरसीका वेटा। 5 रावल वैरसी लखमणका वेटा, रावल लखमणके पीछे गद्दी बैठा। उसने १९ वर्ष ९ मास और १७ दिन जैसलमेरका राज्य किया। 6 करमा, पोकरण प्रदेशके केलावे गांवका निवासी। 7 अजा करमाका वेटा। 8 हरदास अजाका वेटा। 9 सम्वत् १६५५में शिवदास और भोपतको अर्जुनने मारा। 10 नेतसी अजाका वेटा। 11 करमाका पुत्र सांगा, बादशाह हुमायूंका चाकर, थट्टेमें मारा गया। 12 करमाका पुत्र ठाकुरसी सम्वत् १६००के जोधपुरके विग्रहमें मारा गया। 13 जगा हमीरका वे ा।

१४ जोधो करमारो[1] । १५ वीरदास । १५ रायमल ।

१२ ऊगो वैरसीरो, इणरो उतन सिंधरो सावड़ो । जेसळमेर छाड़ि बारोटियो हुवो[2] ।

१३ पतो । १४ नारणदास ।

१५ हरो । १६ पांञो । १६ कांन्ह ।

१७ भाटी चंद्रसेन पांचावतनूं संमत १६७६ राजा गजसिंघजी सूरजसिंघजीरै मोहनी पातररै पेटरी बेटी हुती सु जोधपुर भाटी गोयंददासजीरै घरे परणाई । पटो देनै वास राखियो[3] ।

१७ हींगोळदास । १७ भींव । १७ धोधादास । १७ कल्यांणदास ।

१७ उदैसिंह । १७ लूंणकरण । १८ जीवो १८ जसवंत[4] ।

१७ गोपाळदास । १८ जैतमाल ।

१६ सांगो । १७ धनराज ।

१६ दूदो । १७ खंगार ।

१५ नरो । १६ मेहाजळ ।

१३ सुरजन ऊगारो[5] । १४ भेटो ।

१५ खेतो । १२ वणवीर वैरसीरो[6] ।

१३ खींवो । १४ गांगो ।

१५ परबत गांगारो[7] । १६ खेतो परबतरो, रा ॥ जैतसिंघ राजावतरै वास[8] ।

१७ भोपत । १८ भगवांन ।

१७ नारणदास, खीनावड़ी पटै[9] ।

१७ नरसिंह । १७ सुंदरदास ।

---

1 करमाका पुत्र जोधा । 2 वैरसीका वेटा ऊगा, इसका निवास सिंधका सावड़ा गांव, यह जैसलमेर छोड़ कर लुटेरा हो गया । 3 पांचाका पुत्र भाटी चंद्रसेनको, राजा गजसिंहजी सूरसिंहजीकी मोहिनी नामक वेश्यासे उत्पन्न लड़कीको जोधपुरमें भाटी गोयंददासजीके घर पर सम्वत् १६७६ व्याह दी और जागीर देकर अपने पास रखा । 4 जीवा और जसवंत लूणकरणके वेटे । 5 सुरजन ऊगाका वेटा । 6 वणवीर वैरसीका वेटा । 7 गांगाका वेटा पर्वत । 8 पर्वतका बेटा खेताराव जैतसिंहकी चाकरीमें । 9 नारायणदासको खीनावड़ी गांव जागीरमें ।

१६ नेतो परबतरो, रा ।। मोहणदास राजावतरो चाकर । रा ।। भोपत साथै कांम आयो[1] ।

१२ रावळ चाचो वैरसीरो । रावळ वैरसी पछै टीकै वैठो । वरस १६ मास ११ जेसळमेर राज कियो[2] । सु एकरसूं थटै किणी कांम गयो थो[3] । पाछो वळतो ऊमरकोटरो धणी सोढो मांडण, तिणरै परणियो[4] । सु ऊमरकोट नै जैसळमेर सदा अदावत थी, सु रांणा मांडणरा भतीज भोजदे, भींवदे तिणांनूं रावळ क्युं अेकर वोलियो थो; तरै भोजदे चूक कर रावळनूं मारियो[5] । पछै भाटिए कोस २ डेरो करनै उठै देवीदासनूं तेड़ियो[6] । तेड़नै ऊमरकोट भेळियो[7] । रांणो मांडण नीसरियो[8] । वांसै कोस ८ आपड़नै मारियो[9] । भोजदे, भींवदे एकरसूं तो नीसरिया, नै पछै सवारै सात-वीसी आदमियांसूं आय मुंवा[10] । नै मांडणरो माथो वड़ टांगियो[11] । नै ऊमरकोट पाड़नै ईंटां जेसळमेर ले गया; तिणरो करणारै मोहल करायो[12] ।

गीत साखरो[13]

छत्रपत सुरतांण चाच स्राभेवा[14],
फूटी दह-दिस[15] वात फुड़ी ।

---

1 पर्वतका वेटा नेता राव मोहनदास राजावतका चाकर, राव भोपतके साथ मारा गया। 2 वैरसीका पुत्र रावल चाचा। रावल वैरसीके पीछे गद्दी पर वैठा। इसने १६ वर्ष ११ मास जैसलमेरमें राज्य किया। 3 वह एक वार किसी कामसे थट्टे गया था। 4 वहांसे लौटते हुए उमरकोटके स्वामी मांडणके यहां विवाह कर लिया। 5 परंतु उमरकोट और जैसलमेरमें सदासे शत्रुता थी। रावल चाचाने राणा मांडणके भतीज भोजदे और भींवदेको एक वार कुछ अपशव्द कहे थे, इसलिये तव भोजदेने धोखा कर के रावल चाचाको मार दिया। 6 फिर साथके भाटियोंने उमरकोटसे दो कोस पर अपना डेरा डाल कर चाचाके वेटे देवीदासको वुला लिया। 7 वुला करके भाटियोंने उमरकोटको घेर लिया। 8 राणा मांडण भाग गया। 9 आठ कोस पीछे भाग करके उसको पकड़ लिया और मार दिया। 10 भोजदे और भींवदे भी एक वार तो भाग गये थे, परंतु दूसरे दिन १४० आदमियोंके साथ आये और लड़ कर मर गये। 11 भाटियोंने मांडणके सिरको एक वड़ वृक्षमें टांग दिया। 12 और उमरकोट (के कोट) को गिरा कर उसकी ईंटें जैसलमेर ले गये जिनसे करणका महल वनवाया। 13 साक्षीका गीत (छंद)। 14 चाचाको मारनेके लिये। 15 दशों दिशाओंमें वात फैल गई।

मंडण गुड़िया नहीं महारिण,
ग्रहणै राजकुमार-गुड़ी[1] ॥ १
त्यै पांतरै[2] वडो छत्र पड़ियो,
बोटण गढां ग्रथग जळबोळ[3] ।
नेवर रोळ किया अगनैंणी,
रांणै कियो न पाखर[4] रोळ ॥ २
मांडण चाचगदे मारेवा[5],
करै जिगन मन कूड़ कियो[6] ।
ऊतारियो सनाह आपरौ[7],
दळद करी सनाह दियो ॥ ३

१३ रावळ देवीदास चाचारो[8], रावळ चाचो ऊमरकोट ऊपर गयो हुतो[9], पछै उणे बेटी देनै चूक कर मारियो[10] । पछै भाटियां पांच वडेरां[11] कोस ४ पाछो डेरो करनै[12] देवीदासनूं जेसळमेरसूं तेड़ियो[13], देवीदास आयो । भाटिये कह्यो–"टीको काढां[14] ।" तरै[15] देवीदास कह्यौ–"टीको हमार हूं कोई कढाऊं नहीं[16] । कै तो मांडण म्हारा बापनूं मारियो छै तिणनूं मारूं, कै हूंई कांम आऊं[17] ।" तरै इण वात सारै साथरा सींग आकास लगा[18] । पछै गुढ पाखरनै ऊमरकोटसूं ढोवो हुवो, गढ भेळियो[19] । तठै सोढांरो घणो साथ मारियो[20] । मांडण, भीमदे, भोजदे भातीजां सहित नीसरियो[21] सु कोसां ८ ऊपर जातां आपड़िया[22], तठै वेढ हुई[23] । मांडण, भोजदे, भीमदे, आदमी

---

1 कवचधारी राजकुमार। 2 उसके धोखेमें, उसके बदलेमें। 3 अत्यन्त क्रोधसे गढका नाश करनेके लिये। 4 घोड़े या हाथीका कवच। 5,6 चाचगदेको (मारनेके लिये) विवाहके मिससे धोखा देकर मारा। 7 अपना। 8 चाचाका पुत्र। 9 गया था। 10 फिर उसने अपनी बेटीका उससे व्याह करके धोखेसे मार दिया। 11 पांच बड़े भाटियोंने। 12 करके। 13 बुलाया। 14 राज्य-तिलक करदें। 15 तब। 16 टीका अभी मैं नहीं कढवाऊंगा। 17 या तो जिस मांडणने मेरे बापको मारा है उसको मैं मारदूं, या फिर मैं ही काम आ जाऊं। 18 तब इस वात पर सभी साथ वालोंको बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ (बहुत उत्तेजित हो गये)। 19 फिर सभीने कवच धारण करके उमरकोट पर हमला किया और गढ पर अधिकार कर लिया (नाश कर दिया)। 20 वहां पर सोढोंके बहुतसे सैनिकोंको मार दिया। 21 निकल कर भाग गया। 22 पकड़ लिये। 32 वहां पर लड़ाई हुई।

१४० मारिया नै ऊमरकोटरो कोट पाड़नै[1] ईंटां जेसळमेर ले गया तिणरो करणैंरो मोहल करायो देवीदास रावळ[2]।

रावळ देवीदास चाचावत[3] सारीखो[4] कोई रावळ जेसळमेर प्रतापवळी हुवो नहीं। पाखतीरा सारां देसोतांनूं छरा लगाई[5]।

रावळ देवीदासरा बेटा—

१४ रावळ जैतसी। १४ कुंभो।

१५ जगमाल। १६ सातळ।

१७ देवराज सातळोत। राव रिणमल राव चूंडारा वैर मांहै धणलै थकां मारियो[6]।

१६ सीहो जगमालरो[7]।

पातळ तोगावत जेसळमेर चाकर छै, खींवलो गांव खावै छै[8]।

वींझोराई सांगड़नै[9]।

भाटी केसोदास भारमलोत ठरड़ै पोकरणरैं रहै[10]।

रांम रावळ देवीदासरो[11]। तिको रावळ हापारै परणियो हुतो[12], तिण परसंग रांमरो बेटो संकर महेवैहीज रह्यो[13]। जोधपुर पिण संकर चाकर रह्यो हुतो[14]। कहै छै सोझतरो आंबो रांम, संकररैं पटै हुतो[15]। आंक १४।

१५ संकर महेवचीरा पेटरो[16]।

१६ खींमो। १५ सांवळ। १६ महेस। १६ ऊदो। १६ सूरो।

खीमा संकरोतरो परवार[17]—

---

1 गिरा करके। 2 रावल देवीदासने उन ईंटोंसे करणेका महल बनवाया। 3 चाचाका पुत्र। 4 समान। 5 पड़ौसके सभी राजाओं पर उसने अपनी धाक जमाई। 6 देवराज सातलका बेटा, जिसको राव रिणमलने राव चूंडाकी शत्रुतामें, जब वह धणले गांवमें था, मार दिया। 7 जगमालका बेटा सीहा। 8 तोगाका बेटा पातल जैसलमेरमें चाकर है, खींवला गांव उसके पट्टेमें है। 9 सांगड़के पट्टेमें वींझोराई गांव। 10 भारमलका बेटा केशोदास पोकरणके ठरड़ेमें रहता है। 11 रावल देवीदासका पुत्र राम। 12 इसका विवाह रावल हापाके यहां हुआ था। 13 इस प्रसंगसे रामका बेटा शंकर मेहवे (ननिहाल) में ही रह गया। 14 शंकर जोधपुरमें भी चाकर रहा था। 15 कहा जाता है कि राम और उसके बेटे शंकरको सोजत परगनेका आंबा गांव पट्टेमें दिया हुआ था। 16 रामका बेटा शंकर मेहवचीकी कोखसे उत्पन्न। 17 शंकरके बेटे खीमाका परिवार।

१७ सुरतांण ।

१८ राघो । १८ अचळो । १८ वीरो । १८ रामसिंघ ।

१७ खेतसी ।

१८ कलो । १८ मनोहर ।

केहेक रांमरा वीकानेर छै[1] ।

रावळ जैतसी देवीदासरो[2] । देवीदासरै पछै पाट बैठो[3] । वरस ३५ मास ४ दिन १० जेसळमेर राज कियो। सुसतो सो ठाकुर हुवो[4]। राव लूंणकरण वीकावत वीकानेररो धणी, देवीदासरो दोख विचार जेळसमेर ऊपर आयो[5]। वडांणी राजवाई तळाई कोसै २ जेसळमेरसूं, डेरो कियो, धरती मारी[6] । रातीवाहो भाटियै देणरो विचार कियो[7], सु भाटी नरसिंघदास देवीदासोत परो काढियो थो, राव वीकारो दोहीतरो, सु रावजीरै साथै हुतो[8] । पछै आगै इणांनूं[9] खबर हुई सु आगै साथ तैयार हुय बैठो । तरै कटक री पाखती भीटहरा ४ आंण राखिया था[10], भाटियांरो साथ नैड़ो आयो तरै भीटहरा लगाय दिया[11]। रातरो चांनणो हुवो[12]। तरै राठोड़ चढ़नै वांसै घातिया[13], नै भाटी आगै नीसरिया[14], तठै घणो साथ भाटियांरो मारियो[15] । वेढ राठोड़ां जीती[16] ।

एक वात यूं सुणी[17] । रावळ जैतसी बूढो हुवो । पछै इणरै बेटै जैसिंघदे, नारणदास, रांम, पुनसी इणै मिळनै रावळनूं को दिन अटक

---

1 रामके कई वंशज बीकानेरमें रहते हैं। 2 देवीदासका पुत्र रावल जैतसी। 3 जो देवीदासके बाद गद्दी पर बैठा। 4 यह कुछ सुस्तसा (अकर्मण्य) शासक हुआ। 5 बीकानेरका स्वामी लूणकरण बीकावत देवीदासके इस अवगुणका ख्याल करके जैसलमेर पर चढ कर आ गया। 6 जैसलमेरसे दो कोस पर वडाणी गांवकी राजबाई नामक तलाई पर उसने डेरा डाला और देशमें लूट-मार मचा दी। 7 इस पर भाटियोंने रात्र्या-क्रमण करनेका विचार किया। 8 राव बीकाका दोहीता, देवीदासका बेटा भाटी नरसिंह-दास जो जैसलमेरसे निकाल दिया गया था, वह राव लूणकरणके साथमें था। 9 इनको। 10 तब सेनाके पास चार कांटोंके बड़े ढेर ला कर रख दिये थे (भीटहरो, वीठोड़ो=वेरी वृक्षकी पतली कँटीली शाखाओंका अमुक परिमाणमें बनाया हुआ एक ढेर)। 11 जला दिये। 12 रातको प्रकाश हुआ। 13 तब राठौड़ोंने पीछा किया। 14 भाटी आगे भाग गये। 15 वहां भाटियोंके बहुतसे मनुष्योंको मार दिया। 16 राठौड़ोंने लड़ाई जीती। 17 एक बात इस प्रकार भी सुनी गई है।

में कियो[1] । नै बाहिड़मेरी सीतारा बेटा रावळ लूणकरण नै रावत करमसीनूं इणे परा काढिया[2] । अै रावत भीमा बाहड़मेरारा भांणेज, सु अै सिंध गया[3] । पछै कितरेके दिने रावळ जैतसी इणांसूं घणो ललो-पतो कराय, पछै कह्यो[4]–"भाटी च्यार ४ बूढा म्हां कनै मेलो, राज थे भोगवो[5] । हूं तो इण वात गाढो राजी छूं[6] । म्हारै थे सपूत छो[7] । लूणकरण करमसी वे कपूत छै, सु परा गया । वलाय चूकी[8] ।" बाप बेटांरै ऊपरलो रस हुवो[9] । तिण दिन पायगां घोड़ा घणा बाधै[10] । तरै रावळ जैतसी बेटांनूं कहाड़ियो[11]–"इतरा घोड़ा बाधा चारीजै, इतरो हासल आंपणै किसूं छै[12] ? घोड़ा असवारीरा पायगां बाधा राखो । बीजा[13] खारींग मांहै छोड़ दो ।" तरै छोड़ दिया । रावळ जैतसी वडेरा भाई सारा हाथ किया[14] । भाटियां सारां आगै कह्यो–"म्हांरो जीव निपट दोहरो हुवो छै[15] ।" तरै कह्यो[16]–"कुण वास्तै[17] ?" तरै कह्यो–"इणे म्हारी बूढै वारै इजत पाड़ी, मोनूं रोक मांहै कियो[18] ।" सारै राईतनै सुणियो[19] । तरै भाटिये सारां कह्यो–"हमैं राज कहो सु करां[20] ।" तरै रावळ पांच भाटियां कनै बांह मांगी[21], दो तो दिलरी वात कहूं[22] । तरै सारां बांह दीवी[23] । तरै रावळ जैतसी भाटियां आगै कह्यो–"लूंणकरणनूं तेड़ावो, नै इणांनूं

---

1 इन्होंने मिल करके रावलको कई दिन कैदमें रखा । 2 बाहड़मेरी सीताके बेटे रावल लूणकरण और रावत करमसीको इन्होंने निकाल दिया । 3 ये रावत भीमा बाहड़-मेरेके भानजे सिंधको चले गये । 4 इनकी बहुत खुशामद करके फिर कहा । 5 मेरे पास चार बूढ़े भाटियोंको रख दो और राज तुम करो । 6 मैं तो इस बातसे खूब खुश हूं । 7 मेरे तो तुम ही सपूत हो । 8 लूणकरण और करमसी दोनों कपूत हैं, सो तो चले गये, अपने आप बला टल गई । 9 बाप बेटोंमें ऊपरकी (कपटपूर्ण) प्रीति हुई । 10 उन दिनों घुड़सालमें घोड़े बहुत बंधे रहते थे । 11 कहलवाया । 12 अपने इतनी कौनसी आमदनी है ? । 13 दूसरे । 14 रावल जैतसीने अपने बड़े-बूढ़े भाईयोंको अपने वशमें कर लिया । 15 मेरा जीव बहुत दुख पा रहा है । 16 तब कहा । 17 किस लिये ? 18 इन्होंने बुढ़ापेमें मेरी बेइज्जती की और मुझे कैदमें डाल दिया । 19 सब राजाओंने सुना (सभी रजवाड़ोंमें बात प्रगट हो गई) । 20 तब सभी भाटियोंने कहा—"अब आप आज्ञा दें सो करें ।" 21 तब रावलने पांच प्रमुख भाटियोंसे वचन मांगा । 22 यदि वचन दें तो मैं मेरे दिलकी बात कहूं । 23 तब सभीने वचन दिया ।

परा करो[1] ।" तरै भाटियां रावळ भेळा हुय लूंणकरणनूं कागद मेलियो[2] । थे वेगा आवो[3], खारींगरा घोड़ा उरा ल्यो[4] । म्हे आदमी ऊपर छै तिणांनूं कहि राखां छां, थांनूं घोड़ा देसी[5] ।" पछै लूंणकरण, करमसी सिंधसूं अजांणजकरा[6] अठीनूं आयनै[7] मांमा रावत भीमानूं सहेट माथै तेड़िया, सु आया[8] । अठीसूं वां आय घोड़ा लिया । पछै असवारांरो थंडो वांसै राखियो[9] । सै[10] असवार २० तथा २५ आगै म्हैल नै[11] जेसळमेर सहररी खबर लिराई । कूकवो पड़ियो[12] । तरै जैसिंघदे नरसिंघदास रावळ जैतसीनूं वडेरां भाटियांनूं पूछायो— "कासूं कियो चाहीजै[13]?" तरै कह्यो--"इणांरा दांत पाड़िया चाहीजै[14]।" तरै एकवर आपरो साथ लेनै वाहर चढिया[15] । वे आगै थंडो कर ऊभा रह्या था, देठाळो हुवो, तठै मांमलो हुवो[16] । जैसिंघदेरै पातळो काळजो थो सु सोह कूट पाड़ियो[17] । इणां सिरदारांरै लोह लागा[18] । अै नीसरिया[19] । लूंणकरण तो पाधरो[20] सहरनूं चलायो; नै वे तो डावा-जीमणा नीसरिया[21]। उणांरी मावां गढ मांहै हुती, तिणां गढरी प्रोळां आडी दिराई[22] । पछै रावळ जैतसी जिण भुरजां दिसा धरती नीचेरी थी, तिणां दिसा रांढू नखाय नै लूंणकरण करमसीनूं नै इणांरो साथ गढ ऊपर चाढियो[23] । रावळ जैतसीरी दुहाई फेरी[24] । नै

---

1 लूणकरणको बुलाओ और इनको निकाल दो । 2 तब भाटियों और रावलने मिल कर लूणकरणको पत्र लिख भेजा । 3 तुम शीघ्र आ जाओ । 4 खारींगमें जो घोड़े हैं उन्हें ले लो (खारींग=चरागाह) । 5 घोड़ोंकी रखवालीके लिये जो आदमी वहां पर हैं, उन्हें हम कह रखते हैं, वे तुम्हें घोड़े दे देंगे । 6 अचानक । 7,8 इधर आकर के अपने मामा रावत भीमाको सीमा (निश्चित स्थान) पर बुला लिया और वे वहां आये । 9 कुछ सवारोंकी टुकड़ी पीछे रख दी । 10 सभी । 11 भेज कर । 12 हल्ला हुआ । 13 क्या करना चाहिये ? 14 इनके दांत तोड़ देने चाहियें । 15 तब एकाएक चढाई कर दी । 16 आगे वे भी (लूणकरण और करमसी) अपना जत्था बना कर खड़े ही थे, आमने-साम्हने हुए और वहीं लड़ाई हुई । 17 जयसिंहदे कमजोर दिलका था, उसे और उसके सभी साथियोंको मार गिराया । 18 इधरके सरदारोंके भी घाव लगे । 19,20,21 ये दाहिने-बांयें (इधर-उधर) होकर निकल भागे और लूणकरण तो सीधा शहरकी ओर चला । 22 उनकी (जयसिंहदे. नरसिंहदास आदिकी) माताएं गढ़में थीं, उन्होंने गढके द्वार बंद करवा दिये । 23 लेकिन जो बुर्जें निचाई वाली भूमिमें थीं, जैतसीने उस ओर उन पर रस्सा डलवा कर लूणकरण और करमसीको तथा उनके साथियोंको गढ पर चढा दिया । 24 रावल जैतसीकी आन-दुहाई प्रवर्त कर दी ।

रावळ जैतसी आय सिंघासण वैठो। लूंणकरण, करमसी आय पगे लागा[1]।

रावळ जैतसीरा वेटा—

१६ रावळ लूंणकरण, वाहड़मेरी सीतावाई रो वेटो।

१६ रावत करमसी, वाहड़मेरीरो वेटो।

१७ किसनदास।

१८ वीरदास।

१९ नाथो।

२० सूरो। २० जोधो।

१९ जसवंत।

१८ कचरो।

१७ कांन्ह।

१८ भैरवदास।

१९ जोगीदास।

२० मोहण। २० मुकंददास।

१९ सुंदरदास।

२० मांनसिंघ। २० रांमचंद। २० गिरधर।

१९ सुदरसण।

१८ भांनीदास (भवांनीदास) कांन्हरो[2]।

१९ गोयंददास।

१६ महिरांवण।

१७ सुरतांण।

१८ प्रतापसी।

१९ सवळो। १९ अमरो।

१८ वीठळदास।

१९ राजसिंघ।

१८ केसोदास।

१९ रांमसिंघ।

१६ राजो, वाहड़मेरीरो वेटो[3]।

१७ जगो।

१८ वैरसल।

१९ दयाळ। १९ संकर। १९ सुंदर।

१८ लिखमसी।

१९ सवळो।

१६ मंडळीक, वाहड़मेरीरो वेटो[4]।

१७ वीरमदे।

१८ पतो। १८ अमरो।

१९ सवळो।

१८ रांमसिंघ।

१९ केसोदास।

१८ सांगो।

१९ नरहर।

१८ गांगो।

१९ अरजन। १९ मनोहर।

---

1 लूणकरण और करमसीने आकर जैतसीके चरण छुए। 2 कान्हका वेटा भानीदास (भवानीदास)। 3 राजा वाहड़मेरीका वेटा। 4 मंडलीक वाहड़मेरीका वेटा

१८ रासो ।
१९ दुरगो ।
१६ नरसिंघदास, राव बीकाजीरो दोहीतो[1] ।
१७ पुनसी ।
१८ वरजांग ।
१९ तिलोकसी ।
२० कांन्ह ।
१६ जैसिंघदे, ईडरचीरो बेटो । पछै इणानूं परो काढियो, तरै ईडरगयो । तिणरै वांसला ईडर छै[2] ।
१७ मालो ।

१८ पूंजो, राव कल्यांणमल सुरतांण गढिया ऊपर गयो तद कांम आयो[3] ।
१९ सुंदर ।
१९ राघोदास ।
१९ प्रथीराज, गढिया ऊपर गयो तद कांम आयो[4] ।
१९ भगवांन । १९ राघोदास । १९ मोहण ।
१६ रांम, राव वीकैजीरो दोहीतरो[5] ।
१६ तिलोकसी, राव वीकैजीरो दोहीतरो[6] ।

आंक १६—रावळ लूंणकरण जैतसीरो । जैतसी पछै टीकै बैठो । वरस २२ मास १० दिन ३ राज जेसळमेर कियो[7] ।

बेटा[8]—

१७ रावळ मालदे ।
१७ दुजणसल ।
१८ वाघ, वडो ठाकुर पातसाही चाकर हुवो । संमत १६५५ जोधपुर वसियो, गांव १०सूं साभतरो आउवो दियो थो । पछै छाड़नै पातसाहरै वसियो[9] ।

---

1 रावल जैतसीका वेटा नरसिंहदास, राव बीकाजी का दोहिता था। 2 ईडरची (रानी)का वेटा जयसिंहदे, जिसको (जैसलमेरसे) निकाल दिया था, तब वह ईडर चला गया था। इसके वंशज ईडरमें हैं। 3 राव कल्याणमल और सुरताण गढिया पर चढ कर के गये, वहां पूंजा काम आया। 4 पृथ्वीराज गढिया पर चढ कर गया तब काम आया। 5 राम राव बीकाजीका दोहिता। 6 तिलोकसी राव बीकाजी का दोहिता। 7 रावल लूणकरण जैतसीका वेटा, जैतसीके वाद गद्दी बैठा। इसने २२ वर्ष, १० मास और ३ दिन जैसलमेरका राज्य किया। 8 रावल लूणकरणके वेटोंका (वंशका) विवरण। 9 दुर्जनसालका बेटा वाघ, यह बादशाही चाकर बड़ा ठाकुर हुआ। सम्वत् १६५५में जोधपुर आकर बसा, जहां उसे सोजत परगनेके १० गांवोंके साथ आउवा जागीरमें दिया गया था और फिर छोड़ कर बादशाहके पास जाकर रहा।

१९ केसोदास वाघावत, जोधपुर चाकर, गांव भेटनड़ो पटै। संमत १६९६ सांवण सुदि ३ काळ कियो[1]।

२० देवीदास।

२१ करन। २२ सूरजमल।

२० दुरगदास। उजीण कांम आयो[2]।

२१ हरनाथ।

१९ दळपत।

२० रतन। २० दयाळदास तुरक हुवो[3]।

१९ रुघनाथ, वीरांणी पटै संमत १६९१ रै वरस हुती। संमत १६९५ राव महेसदास सूरजमलोतरै वास वसियो[4]।

१८ सादूळ दुजणसलरो[5]।

१९ मनोहर। १९ सुंदरदास।

१८ सिंघ।

१९ सुंदरदास, मोहबतखांनरै कांम आयो[6]।

१८ किसनदास दुजणसलरो, महेवै रैहतो। महेवचांरो भाणेज। रतनांदे वेटी[7]।

१७ सूरजमल लूंणकरणोत, मोटा राजारो सुसरो। सजन भटियांणीरो वाप[8]।

१८ जीवो।

१९ माधोदास, राव विक्रमादीत मालदेओत थोभ, खरड़ी पटै दी हुती[9]।

१९ वांको।

१७ महेसदास लूंणकरणोत[10]।

१८ नाथो।

१९ सांमदास। १९ नरहर।

१९ पीथो।

१७ हरदास लूंणकरणोत[11]।

१८ बळभद्र।

---

1 वाघाका वेटा केशोदास, जोधपुरका चाकर, जहां भेटनड़ो गांव उसके पट्टेमें। सम्वत् १६९६की सावन शु. ३ को मरा। 2 दुर्गदास उज्जैनमें काम आया। 3 दयालदास मुसलमान हो गया। 4 रघुनाथ, जिसको सम्वत् १६९१के वर्षमें वीराणी गांव पट्टेमें था। सम्वत् १६९५में राव महेशदास सूरजमलोतके यहां जा रहा। 5 सादूल दुर्जनसालका वेटा। 6 सुन्दरदास मोहवतखांके साथ लड़ाईमें काम आया। 7 दुर्जनसालका वेटा किशनदास, मेहवेमें रहता था। मेहवचोंका भानजा था। रतनादे उसकी लड़की थी। 8 लूणकरणका वेटा सूरजमल, यह मोटे-राजाका ससुर और सजन भटियानीका वाप था। 9 माधोदासको राव विक्रमादित्य मालदेओतने थोभ और खरड़ी गांव पट्टेमें दिये थे। 10 लूणकरणका वेटा महेशदास। 11 लूणकरणका वेटा हरदास।

१६ कीरतसिंघ, रावळै वास। संमत १६७४ ननेउ दी थी। संमत १६७७ जाळोररो ओडवाड़ो, जोगाउ दी थी। संमत १६८० लीनी[1]।

१६ गोपाळदास।

२० जगनाथ। संमत १६७६ भांणल गांव ४ दिया। संमत १६६६ छाडियो[2]।

१७ विजैराव लूणकरणरो[3]।

१८ जसवंत।

१६ वीरदास।

२० तेजमाल।

१६ मोहणदास।

२० भारमल।

१६ वाघ।

२० दुरगो।

१६ करमचंद।

आंक १७–रावळ मालदे लूंणकरणरो। लूंणकरण पछै जेसळमेर पाट बैठो। वरस १० मास ७ दिन २० राज कियो। रावळ मालदे राड़धड़ै रावतरै परणियो थो, नांव रांणीबाई। तठा पछै रावळ मालदे वेगो हीज मुंवो[4]।

1 कीरतसिंह, जोधपुर महाराजका चाकर। सम्वत् १६७४में नेनेऊ गांव दिया था और सम्वत् १६७७में जालोर परगनेके ओडवाड़ा और जोगाऊ गांव दिये गये थे, लेकिन सम्वत् १६८०में वापिस ले लिये। 2 जगन्नाथने सम्वत् १६६६में (जैसलमेर) छोड़ा और सम्वत् १६७६में भाणलने इसे चार गांव दिये (वि० एक प्रतिमें भाणलके स्थान भोपाल लिखा है।) 3 विजयराव लूणकरणका बेटा। 4 रावल मालदेव लूणकरणका बेटा। लूणकरणके बाद जैसलमेरकी गद्दी पर बैठा। इसने १० वर्ष, ७ मास और २० दिन राज्य किया। रावल मालदेवने राड़धरेके रावतके यहां विवाह किया था, जिसका नाम राणीबाई था। इस विवाहके बाद रावल मालदे जल्दी ही मर गया था।

पीढी[1]

१ जेसळ ।
२ काल्हण ।
३ चाचगदे ।
४ तेजराव ।
५ जैतसी वडो ।
६ मूळराज ।
७ देवराज ।
८ केहर ।
९ लखमण ।
१० वैरसी ।
११ चाचो ।
१२ देवीदास ।
१३ जैतसी ।
१४ लूंणकरण ।
१५ मालदे ।
१६ रावळ हरराज रा ॥ सिवराजोतांरो दोहीतो। पदमांरै पेटरो । राव मालदेरी बेटी सजनां परणाई थी[2] ।
१६ भांनीदास पदमांरै पेटरो। हरराजरो मगो भाई[3] ।
१७ गोपाळदास । संमत १६-६३ चांमूं लिखमेली थी।
१८ रुघनाथ, थळ में रहै[4] ।
१८ प्रथीराज, वीकानेर रहै ।
१६ नारणदास मालदेओत[5] ।
१७ रांमसिघ। संमत १६७० नवसर गांवां ५ सूं पटै[6] ।
१८ किसनचंद ।
१९ लालचंद ।
१८ स्यांमदास ।
१९ कुंभो । १९ पीथो ।
१८ अमरो । १८ वेणीदास । १८ सुजांण ।
१७ हरिसिंघ नारणदासोत ।
१८ रामचंद ।
१९ गरीबदास। १९ कांन्ह ।
१६ पूरणमल मालदेओत । गांव १२सूं रिणमलसर पटै[7] ।
१७ माधोदास ।
१६ उदैसिंघ मालदेओत ।
१६ डूंगरसी मालदेओत । महियड़ मांनै ईडर थकैनूं मारियो । पछै सहसमल उण दावै महियड़ मांनानूं मारियो[8] ।

---

1 वंशावली । 2 रावल हरराज शिवराजोतोंका दोहिता, पद्मांकी कोखसे उत्पन्न । राव मालदेवकी बेटी इसे व्याही थी । 3 भानीदास पद्मांकी कोखसे उत्पन्न, हरराजका सहोदर भाई । 4 रघुनाथ थल प्रदेशमें रहता है । 5 मालवदेका पुत्र नारायणदास । 6 रामसिंहको सम्वत् १६७०में पांच गांवोंके साथ नवसर पट्टेमें । 7 मालदेवका बेटा पूर्णमल, जिसे १२ गांवोंके साथ रिणमलसर पट्टेमें । 8 मालदेवका बेटा डूंगरसी, जिसे महियड़ मानाने जब वह ईडर रहता था तब मार दिया । बादमें इस शत्रुताके बदलेमें सहसमलने मानाको मार दिया ।

१७ गोपाळदास ।

१८ ·········· ।

१९ देवराज जेसळमेर ।

१७ सिंघ भांनीदासरो[1] ।

१८ रावळ रांमचंद । एक वार मनोहरदास पछै टीकै बैठो[2] ।

१९ सुंदरदास देरावर[3] ।

१९ दळपत ।

१८ आसो । १८ उदैकरण ।

१६ खेतसी मालदेओत, निपट वडो रजपूत हुवो । राव जैतसीरो दोहीतरो । मोटा राजाजीरी बेटी रंभावती परणाई हुती[4] ।

१७ ईसरदास । १७ पंचाइण ।

१७ दयाळदास ।

१७ सिंघ । १७ वाघ ।

१७ स्यांमदास ।

१७ सकतसिंघ ।

१७ धनराज ।

खेतसीरा बेटांरो परवार–

१७ दयाळदासनूं रावळ कलै मारियो, दूंणपुररी राड़[5] ।

१८ रावळ सबळसिंघ दयाळदासोत । संमत १७०७ रावळ मनोहरदास मुंवो, तरै पातसाह जेसळमेर दियो । संमत १७१७ श्रावण वदि ९ काळ प्राप्त हुवो[6] ।

१७ रावळ अमरसिंघ, वीका कल्यांणदासरो दोहीतरो[7] ।

१९ जसवंत । १९ पदमसिंघ । १९ स्यांमसिंघ ।

१९ रतनसी, करमसीयोतांरो दोहीतरो[8] ।

१९ भावसिंघ, वीकांरो दोहीतरो । मेवाड़ गयो थो उठै मुंवो[9] ।

१९ महासिंघ, वीकांरो दोहीतरो[10] ।

१९ राजसिंघ, कछवाहांरो दोहीतरो[11] ।

---

1 भानीदासका पुत्र सिंह । 2 रावल रामचंद्र मनोहरदासके वाद एक वार (थोड़े समयके लिये) गद्दी पर वैठा । 3 सुन्दरदास देरावर गांवमें । 4 मालदेका वेटा खेतसी, राव जैतसीका दोहिता वहुत वड़ा राजपूत हुआ । मोटा राजाजीकी वेटी रंभावतीसे इसका विवाह हुआ था । 5 दयालदासको रावल कल्लाने दूणपुर (द्रोणपुर) की लड़ाईमें मारा । 6 रावल मनोहरदासके सम्वत् १७०७में मरनेके वाद वादशाहने दयालदासके पुत्र रावल सवलसिंहको जैसलमेरका राज्य दिया । सवलसिंह सम्वत् १७१७की श्रावरा कृष्ण ९को मरा । 7 रावल अमरसिंह वीका कल्याणदासका दोहिता । 8 रतनसी करमसीओतोंका दोहिता । 9 भावसिंह वीकोंका दोहिता । मेवाड़ चला गया था और वहीं मर गया । 10 महासिंघ वीकोंका दोहिता । 11 राजसिंह कछवाहोंका दोहिता ।

वात

रावळ भीम वरस १० टीको नीसरियो, तरै सारी मदार खेतसी ऊपर थी। पछै रावळ भीम मोटो हुवो, तरै खेतसीनूं धरती बारै काढियो[1]। तरै एक वार तो भाटी घणा साथै काढिया था[2]; पछै फळोधी आया। पछै भीम जोर पतियो, पछै भाटी सारा उरा आया[3]। पछै भाटी खेतसी, सीहड़, वीरमदे, रांणो, भैंरवदास श्रै राजा रायसिंघजीरै चाकर रह्या[4]। पछै महाराज रायसिंघजी सोरठनूं मेलिया था, उठै वरस ४ रह्या[5]। पछै खेतसी सोरठमें हीज मुंवो[6]।

१८ प्रागदास दयाळदासरो, रा॥ जगमाल साथै कांम आयो[7]।
१८ विहारीदास दयाळदासोत।
१९ आसकरण। १९ कुसळसिंघ। १९ जसकरण।
१८ वलू, वीकानेररी सांढ लीवी थी, तद राव वीकैजी मारियो[8]।
१७ ईसरदास खेतसीयोत। संमत १६५५ जोधपुर वास। गुढो पटै[9]।
१७ द्वारकादास।
१९ सूरजमल। १९ भागचंद। १९ वलू।
१८ गोयंददास।
१८ मोहणदास ईसरदासोत जेसळमेर[10]।
१८ नरहर ईसरदासोत।
१८ जगनाथ ईसरदासोत।
१८ उदैभांण ईसरदासोत। करमसोतै मारियो[11]।
१८ रुघनाथ ईसरदासोत।
१८ मुकंद ईसरदासोत।

---

1 रावल भीम जब १० वर्षका था राज्यतिलक हो गया, तब राज्यका सभी दारोमदार खेतसी पर था। परन्तु जब रावल भीम बड़ा हुआ, तब खेतसीको उसने देशनिकाला दे दिया। 2 उस समय (एक बार तो) कई भाटियोंको भी उसके साथ निकाल दिया था। 3 बादमें जब भीमका प्रताप बढ गया, तब सभी भाटी लौट आये। 4 लेकिन उनमेंसे भाटी खेतसीके साथकं सीहड़, वीरमदे, राणा और भैंरवदास ये महाराजा रायसिहजीके यहां चाकर रह गये। 5 महाराजा रायसिहजीने इन्हें सोरठमें भेज दिया, जहां वे ४ वर्ष रहे। 6 खेतसी सोरठमें ही मरा। 7 दयालदासका बेटा प्रयागदास राव जगमालके साथ काम आया। 8 वलूने बीकानेरकी एक सांढ (ऊंटनी) ले ली थी इस पर राव बीकाजीने उसे मार दिया। 9 खेतसीका बेटा ईशरदास, सम्वत् १६५५में जोधपुर रहा और गुढा गांव जागीरमें पाया। 10 ईशरदासका बेटा मोहनदास जैसलमेरमें। 11 ईशरदासके बेटे उदयभान को करमसोतोंने मारा।

१८ महासिंघ ईसरदासोत ।
१७ पंचाइण खेतसीरो[1] ।
१८ रांमसिंघ ।
१९ दुरजो । १९ तेजमाल ।
१९ कांन्ह ।
१८ सुजांणसिंघ ।
१८ अमरसिंघ । जेसळमेर पीपळै गांव छै[2] ।
१९ प्रथीराज ।
१७ सिंघ खेतसीयोत ।
१७ वाघ खेतसीयोत, रा ॥ किसनसिंघजीरो साळो[3] । किसनसिंघजीरै वास । किसनसिंघजी साथै कांम आयो ।
१८ गोवरधन, राव करमसेन मारियो[4] ।
१९ गिरधर जेसळमेर छै ।
१७ सांमदास खेतसीयोत, मोटा राजारो दोहीतो । पांचाड़ी-भाहरो गांव ७ पटै[5] ।
१८ मांनसिंघ, दीवांणरै चाकर[6] ।
१८ हरिसिंह, चांदा महेवचारो चाकर ।
१८ गोपाळदास । लोलियांणै मारांणो[7] ।
१७ सकतसिंघ खेतसीयोत । संमत १६८५ खोखरो पटै हुतो । संमत १६८६ चैराई पटै । संमत १६८९ भेड़ गांव ५ सूं पटै । संमत १६९० भाटी अचळदास साथै कांम आयो[8] ।
१८ केसरीसिंघ । संमत १६९० गांव ५ सूं भेड़ पटै[9] ।
१८ रतन । १८ महेसदास ।
१८ हरिसिंघ । संमत १६९४ गांव ५ सूं भेड़ पटै ।
१९ पीथो । १९ अखो ।
१९ नाहर ।
१९ फतैसिंघ ।
१९ आणंद । १९ चांदो ।
१९ हिमतो । १९ सुंदर ।
१८ देवीदास । संमत १६९९ मोखेरी पटै[10] ।

---

1 खेतसीका बेटा पंचायन। 2 अमरसिंह जैसलमेरके पीपले गांवमें रहता है। 3 खेतसीका बेटा वाघ, राठोड़ किशनसिंहका साला और किशनसिंहके यहां उसका रहवास। किशनसिंहके साथ काम आया। 4 गोवर्धन जिसे राव कर्मसेनने मारा। 5 खेतसीका बेटा श्यामदास जो मोटा राजाका दोहिता और जिसे पांचाड़ी-भाहरो आदि ७ गांव जागीरमें मिले हुए हैं। 6 मानसिंह महाराणा उदयपुरका चाकर। 7 गोपालदास लोलियाणा गांवमें मारा गया। 8 खेतसीके बेटे सकतसिंहको संवत् १६८५में खोखरा गांव, सम्वत् १६८६में चैराई और सम्वत् १६८९में पांच गांवोंके साथ भेड़ गांव, पट्टेमें थे। सम्वत् १६९०में भाटी अचलदासके साथ काम आ गया। 9 केसरीसिंहको सम्वत् १६९० पांच गांवोंके साथ भेड़ जागीरमें। 10 देवीदासको सम्वत् १६९९में मोखेरी गांव जागीरमें।

१९ हरनाथ। १९ आईदांन।
१९ भींव।

१८ रुघनाथ।

१९ भोजो। १९ मुकुंद।
१९ सत्रसिंघ।

१८ अजवो। १८ ऊहो।
१८ सुजांणसिंघ।
१८ करमचंद।

१७ धनराज खेतसीयोत।
रावळ कलै मारियो[1]।

१८ वीरमदे। १८ जसवंत।

१६ नेतसी मालदेओत।
वीकानेरीरो बेटो, आंक
१६ खेतसीरो सागै भाई[2]।

१७ दुरगदास, रावळै वास।
संमत १६७५ जुट पटै[3]।

१८ जसवंत, पूनासर पटै।

१९ हरिसिंघ। १९ अजव-
सिंघ।

१८ करन।

१९ रांमसिंघ।

१६ सहसमल मालदेवोत,
वीकानेरीरो बेटो। मोटा
राजा इणनूं ···। राजा
श्रीसूरजसिंघजी पाखती
भटियांणी इणरी बेटी
परणिया हुता। रावळै
वास थो। गांव १४ सूं
ओयसां पटै। संमत १६-
५७ पछै देरावर ढीक-
लीसूं चढियो, तठै
मारियो[4]। आंक १६

सहसमलरा बेटा—

१७ वीठळदास। संमत १६-
८० गांव ५ सूं ओयसां
पटै[5]।

१७ गोयंददास। १७ अचळ-
दास।

१७ चांदो। संमत १६६२
रिणमलसर पटै[6]।

१८ मनोहर।

१९ किसोरदास।
१९ कल्यांणदास।
१९ कुंभकरण।

१७ माधोदास। सहसमल
साथै कांम आयो।

१७ रामदास। संमत १६७७
खटोड़ो पटै[7]।

---

1 खेतसीके पुत्र धनराजको रावल कल्लेने मारा। 2 मालदेका बेटा नेतसी, बीका-नेरीकी कोखसे उत्पन्न। ऊपर सं. १६ वाले खेतसीका सहोदर भाई। 3 दुर्गदास महाराजाके यहां चाकर। सम्वत् १६७५में जुट गांव जागीरमें। 4 मालदेका पुत्र सहसमल, बीकानेरीकी कोखसे उत्पन्न। इसको मोटा राजाने ··· । इसकी लड़की पार्वती भटियानीका राजा सूरज-सिंहजीके साथ विवाह हुआ था। राजाजीकी चाकरीमें था और १४ गांवोंके साथ ओयसां पट्टेमें था। फिर सम्वत् १६५७में ढीकलीसे देरावर पर चढ़ कर गया और वहां मारा गया। 5 विट्ठलदासको सम्वत् १६८०में ५ गांवके साथ ओयसां पट्टे। 6 चांदाको सम्वत् १६६२में रिणमलसर गांव पट्टे। 7 रामदासको सम्वत् १६७७में खटोड़ा गांव पट्टेमें।

१८ गोकुळदास।

१६ सबळसिंघ। १६ रतन।

१७ केसोदास सहसमलरो। संमत १६५६ ओयसां पटै[1]।

१८ रुघनाथ ओयसां पटै।

१७ किसनसिंघ सळीवै कांम आयो। बीकानेररो चाकर[2]।

१८ कल्यांणदास, सीळवै कांम आयो।

१८ प्रथीराज सीळवै कांम आयो। केसरीसिंघरो चाकर[3]।

१८ गिरधर।

१६ रावळ हरराज मालदेवरो। रावळ मालदे पछै टीकै बैठो। वरस १६ दिन १८ राज जेसळमेर कियो[4]। राड़धरै रावळ मालदे रावत पातारी बेटी परणी थी। पछै मालदे वेगोहीज मुंओ। नै वा पीहर थी। पछै वा गजनीखांन विहारीनूं दीवी थी जाळोररा धणीनूं[5]। तिण दावै रावळ हरराज भाटी खेतसीनूं मेल राड़धरो मारायो[6], कोट पाड़ायो, नै ईंटां जेसळमेर ले गया[7]। कोटड़ो जोधपुर वांसै थो सु रावळ हरराज जेसळमेर वांसै घातियो[8]। पोकरण अडांणी ली, राव चन्द्रसेण कन्हा[9]। कोटड़ा पगा रावळ मेघराजसूं वेढ हुई। मास ६ आंमां-सांमां अरवरिया, पछै बेटी परणाई[10]। गांव ७ कोटड़ारा लिया, कोटड़ो दियो[11]।

१ ओलो। १ वणाडो।

१ डोगरी। १ वींझोराई।

---

1 केशोदास सहसमलका बेटा। सम्वत् १६५६में ओयसां गांव पट्टेमें। 2 किशनसिंह बीकानेर राजाका चाकर, सोलवेकी लड़ाईमें काम आया। 3 केसरीसिंहका चाकर पृथ्वीराज सीलवेकी लड़ाईमें काम आया। 4 मालदेवका पुत्र रावल हरराज, मालदेवके बाद गद्दी पर बैठा और १६ वर्ष और १८ दिन जैसलमेरका राज्य किया। 5 रावल मालदेवने राड़धरेके रावत पाताकी बेटीसे विवाह किया था। विवाहके बाद मालदेव जल्दी ही मर गया था और तब उसकी पत्नी पीहरमें ही थी। पीहर वालोंने उसे जालोरके स्वामी विहारी गजनीखां पठानको देदी थी। 6 इस कुकृत्यके बदलेमें रावल हरराजने भाटी खेतसीको भेज कर राड़धरेका विध्वंस कराया। 7 वहांका कोट गिरवा दिया और उसकी ईंटें जैसलमेर ले गया। 8 कोटड़ा गांव जोधपुर राज्यका था जिसे रावल हरराजने जैसलमेर राज्यमें मिलाया। 9 राव चंद्रसेनके पाससे पोकरणको अपने यहां रेहन रखा। 10 कोटड़ाके लिये रावल मेघराजसे लड़ाई हुई। ६ मास तक परस्पर भिड़ते रहे। फिर अपनी लड़कीका विवाह कर पीछा छुड़ाया। 11 कोटड़ा तो दिया ही, पर कोटड़ाके ये ७ गांव उसने और ले लिये।

१ कोडियासर। १ भींवासर। १ खोडावळ।

रावळ हरराजरा बेटा—

१७ रावळ भीम। राव मालारो दोहीतरो[1]। संमत १६१८ मिगसर वदि ११ रो जनम। संमत १६७० जेसळरमेर काळ कियो। वाई सजनांरै पेटरो[2]।

१७ रावळ कल्यांणदास हरराजरो। रावळ भीम पछै टीकै बैठो। संमत १६६८ रावळ कलारी बेटी राजा गजसिंघजीनूं भीम परणाई[3]।

१७ भाखरसी हरराजरो। पातसाही चाकर फळोधी पटै

१७ सुरतांण हरराजरो, पातासाही चाकर। बीड़-मांहै रा॥ गोपाळ सुरतांणोत कांम आयो तिण वेढ कांम आयो[4]।

१८ भगवांनदास।

१७ अरजन, राव मालदेरो दोहीतरो।

आंक १७ रावळ भीम रावळ हरराजरो। रावळ हरराज पछै टीकै बैठो। वरस ३५ मास ११ दिन १२ जेसळमेर राज कियो[5]। वडो ठाकुर हुवो। वडो दातार, वडो जूझार, वडो मांणग, जबादि-जळहर[6]। पातसाह अकबर कनै घणा दिन चाकरी कीवी। उठै वडी-वडी अचड़ां कीवी[7]। रा॥ जगमाल प्रथीराजरानूं कोटड़ारै टीकै रावळ भीम वैसांणियो थो[8]। पछै रांणै भैंरवदास रतनसीरै जगमालनूं मारनै कोटड़ो लियो[9]। पछै जगमालरा उदैसिंघ, चांदौ रावळनूं पुकारिया[10]

1,2 रावल भीम, राव मालाका दोहिता, सजनांवाईकी कोखसे उत्पन्न। इसका जन्म सम्वत् १६१८की मिगसर कृ० ११ को हुआ और सम्वत् १६७०में मरा। 3 हरराजका वेटा रावल कल्याणदास जो रावल भीमके वाद गद्दी वैठा। सम्वत् १६६८में रावल कल्ले (कल्याणदास)की वेटी भीमने राजा गजसिंहको व्याही थी। 4 हरराजका वेटा सुरताण, वादशाही चाकर। सुरताणका वेटा वीड़की लड़ाईमें काम आया, उसी लड़ाईमें यह भी काम आया। 5 रावल हरराजका वेटा रावल भीम, रावल हरराजके वाद गद्दी वैठा। इसने ३५ वर्ष, ११ मास और १२ दिन जैसलमेरका राज्य किया। 6 यह वड़ा नामी ठाकुर हुआ। वड़ा दानी, वड़ा जूझार, वड़ा रसिक और सुरभित जल-क्रीड़ाओं का शौकीन हुआ। 7 इसने वादशाह अकवरके पास वहुत दिन तक चाकरी की और वहां इसने वड़े-वड़े महत्वके काम (युद्ध) किये। 8 पृथ्वीराजके वेटे जगमालको भीमने ही कोटड़ेकी गद्दी विठाया था। 9 रतनसीके वेटे राणा भैंरवदासने जगमालको मार करके कोटड़ा ले लिया। 10 पीछे जगमालके वेटे उदयसिंह और चांदाने सहायताके लिये रावलसे पुकार की।

पछै रावळ सिव आयो, नै भैरवदास पण आय मिळियो[1]। तरै गांव मांगिया। भैरवदास गांव दै नहीं। तरै रावळ भैरवदासनूं मारियो। गांव लूणोईरी तळाई सिवथा कोस ४, हड़वैसूं कोस १।। मांणस ७सूं कांम आयो[2]। भैरवदासनूं मारनै टीको रांणै किसनै भैरवदासरा बेटानूं दियो[3]। नै जेसो भैरवदासोत, भांण नारणोत हड़वारो धणी, भगवांन हरराजोत भालाही वाळो बाहिर नीसरिया[4]। इणे घणा विगाड़ किया[5]। रावळरै महेवै जाय रह्या[6]। वडो विगाड़ कियो। पछै वरसे ७ जेसानूं कोटड़ारो आधो दे पाछो आंणियो[7]।

वात

रावळ भीम जेसळमेर पाट छै। ऊहड़ गोपाळदासरै बेटै उरजन, भोपत, मांडण, पोकरणरा गांव घणा मारनै वित ले नीसरिया[8]। पोकरणरा थांणादार भा।। कलो जैतमलोत, भा।। पतो सुरतांणोत, भा।। नादो रायचंदरो, औ चढिया[9]। वाळसीसर आया। वांसै रातीवाहैरै मिस ऊहड़ै जायनै साथ कोढणाथी तेड़ायो[10], सु राते आयनै भेळो हुवो[11]। इणां सवारै वित टोळनै खड़िया[12]। नै पोकरणरो साथ आडो आयो। वेढ हुई[13]। तठै इतरो साथ भाटियांरो कांम आयो[14]—

एको कलो जैमलरो। एक नेतो जैमलरो।

---

1 रावल तब शिव गांवको गया और वहीं भैरवदास भी आ मिला। 2 लूणोई गांवकी तलाई, जो शिव गांवसे ४ कोस और हड़वे गांवसे १।। कोस पर है, सात आदमियोंके साथ (भैरवदास) काम आया। 3 पर भैरवदासको मारनेके बाद टीका भैरवदासके बेटे राणा किसनाको ही दिया गया। 4 विद्रोही होकर निकल गये। 5 इन्होंने लूट-खसोट आदिसे बहुत नुकसान किया। 6 मेहवे जाकर वहांके रावलके यहां रह गये। 7 सात वर्षोंके बाद जैसाको कोटड़ेका आधा भाग देकर वापिस बुला लिया। 8 पोकरणके कई गांवोंमें लूट-खसोट करके वहांकी मवेशी लेकर निकल गये। 9 ये लोग पीछे चढे। 10 पीछेसे रात्र्याक्रमणके मिस ऊहड़ोंने कोढणा जाकर आदमियोंको बुला लाये। 11 रातमें सब साथ इकट्ठा हो गया। 12 ये दूसरे दिन प्रातः मवेशी हांक कर रवाना हो गये। 13 तब पोकरण वालोंने आडे आकर मार्ग रोक लिया और लड़ाई हुई। 14 वहां पर भाटियोंका इतना साथ काम आया।

एक सिवो कैलवेचो अजारो। मेघो गांगावत ।
भा० नादो रायचंदरो । केल्हण घावै ऊवरियो[1] ।
केल्हण । भाटी प्रतापसिंघ सुरतांणोत
पेथड़ । घावै ऊगरियो[2] ।
मोकल सोभ्रमरो ।

पछै रावळ भीम भा।। गोयंददासनूं कह्यो–"गोपाळदास क्युं मांहरा कह्या मांहे न छै। थे गोपाळदास ऊहड़सूं समभ ल्यो[3] ।" पछै रावळ भीम सारो जेसळमेररो साथ देनै लोहड़ा-भाई[4] कल्यांणमलनूं कोढणा ऊपर मेलियो[5], नै कोढणो मारियो[6] । तद ऊहड़ गोपाळदासरै हवालै गढ जोधपुररी कूंची छै, राते वाहाऊ आयो[7] । गोपाळदास गढरी प्रोळ जड़ी उघड़ायनै[8], गांगाहै कटक ऊतरियो थो सु दिन-ऊगतै सांमो आपरो साथ ले धोळै-दिन आय वाजियो[9] । ऊहड़ गोपाळ-दास कांम आयो । भाटियांरो साथ कांम आयो[10]—

१ कोटड़ियो सुरतांण ।
१ भा ।। गांगो वीरमदेओत, रावळ जैतसीरो पोतरो, जैराइतरो धणी[11] ।

ऊहड़ गोपाळदास साथै इतरो[12] साथ कांम आयो—
१५ ऊहड़– १ करमसी। १ कंवरसी। १ महेस। १ गोयंद[13] ।
७ चहुवांण– १ संकर सिंघावत । १ वीसो[14] ।
६ देवड़ा– १ गोपो । १ गोयंद[15] ।

---

1 आहत केल्हण बच गया। 2 सुरताणका बेटा भाटी प्रतापसिंह भी आहत हो करके बच गया। 3 गोपालदास हमारी आज्ञामें नहीं है। तुम गोपालदास ऊहड़से निपट लो। 4 छोटा भाई। 5 आक्रमण करनेको भेजा। 6 और कोढणा पर अधिकार कर लिया। 7 उन दिनों जोधपुर दुर्गकी चाबी ऊहड़ गोपालदासके सुपुर्द थी, (अतः वह जोधपुरमें था) रातको दूत आया (और उसको इस आक्रमणकी सूचना दी)। 8 गोपालदासने दुर्गका बंद द्वार खुलवा कर। 9 गांगाहे गांवमें (जहां भाटियोंका) कटक ठहरा हुआ था, सवेरा होते ही अपने आदमियोंके साथ वहां आया और धौले दिन (दिन भर) लड़ा। 10 भाटि-योंका इतना साथ काम आया। 11 जैराइत गांवका स्वामी भाटी गांगा जो वीरमदेका बेटा और रावल जैतसीका पोता था। 12 इतना। 13 करमसी, कुंवरसी, महेश और गोयंद आदि पंद्रह ऊहड़। 14 सिंहका बेटा शंकर और वीसा आदि ७ चौहान। 15 गोपा और गोयंद आदि ६ देवड़े।

२ रांदा । २ बांभण[1] ।
२ ईंदा । १ मांगळियो

भाखड़ी रावळ भीमरी आसियो पीर कहै[2]—

भीम भलां भलो रावळ रायहरां दन खाग[3] दीपियो[4] ।
ऊपर अवरावां[5] नव धारणो परियां आपरां ॥
सेने साखती साजत सीधरां[6] नित गहमह नरां ।
हूकळ-हैमरां[7] धूसण-परधरा[8] गाहण-गिरवरां ॥ १
गिरवरां गाह सगाह गढपत वाह दे खग-वाह[9] ।
खत्र-राह-जांणग[10] राह खळ-दळ[11] दाह-दुबाह[12] ॥
पड़िगाह[13] थाट-अथाग[14] पोरस ग्राह जस गुण ग्राह ।
वह माह निय वप वडां विरदां वीरवै वँराह ॥ २
कळ[15] चाळ[16] नित छात्राळ[17] कंदळ[18] भीच[19] काळभुजाळ[20] ।
सुंडाळ[21] दरगह साबता वेगाळ[22] खैंग[23] वडाळ ।
किरमाळ[24] बळ रिण ताळ केता जीपणा-जमजाळ[25] ।
.... ॥ ३
खग-झाटमुं वह थाट-खेसण[26] वाट-दह[27] अवियाट[28] ।
भिड़ घाट[29] घय रिम-घड़ा-भांजण[30] दुयण वाळण दाट[31] ॥
रिपनाट[32] परमळ हाट रावळ धरण परघर घाट ।
पित-पाट-राखण[33] पाटपत[34] नृप काट[35] हूंत निराट ॥ ४

---

1 दो ब्राह्मण । 2 आसिया पीराका कहा हुआ रावल भीमके संबंधका भाखड़ी-छंद । 3 खड्ग । 4 शोभित हुआ । 5 अन्य राजाओंके । 6 हाथियोंको । 7 घोड़ोंकी हिनहिनाहट । 8 शत्रुओं की धराका नाश करने वाला । 9 खड्ग चलाने वाला । 10 क्षत्रियोचित मार्ग (कर्त्तव्य)को जानने वाला । 11 शत्रु दलके लिये राहु रूप । 12 वीरोंका संहार करने वाला (दुवाह=घोड़ा) । 13,14 अपार सेनाका विध्वंस करने वाला । 15 युद्ध (असुर, शत्रु) । 16 युद्ध । 17 राजा । 18 युद्ध । 19 शूर-वीर 20 योद्धा । 21 हाथी । 22 घोड़ा । 23 घोड़ा । 24 कृपाण, तलवार । 25 यम-राजको जीतने वाला । 26 सेनाओंको भगाने वाला । 27 नाश, नाश करने वाला । 28 वीर । 29 सेना । 30 शत्रुओंकी सेनाओंका नाश करने वाला । 31 शत्रुओंका संहार करने वाला । 32 शत्रुके आगे नहीं झुकने वाला । 33 पिताके राज्य की रक्षा करने वाला । 34 राजा । 35 क्रोध ।

सुरतांणसूं दीवांण संचित तांण सर[1] तुड़तांण[2] ।
दे पांण जमदढ[3] पांण दाखव रांण जिम रढरांण[4] ॥
आरांण[5] कज सभ डांण ऊभो मछर[6] अवळीमांण[7] ।
वाखांण प्रथी प्रमांण वाधै[8] भांण जिम कुळ-भांण ॥ ५
कंधार-साह जियार[9] कोपिय कीध मुख हलकार ।
तिण वार धर अहिकार[10] निय तन सभै भूपत सार[11] ॥
भुज भार भर जणियार[12] भाटी खार-खँध[13] वध खार[14] ।
हर हार हुव दरबार हूंता वळै थाट विडार ॥ ६
दळपत्त छत्रपत मालदे, गढपत्त गोत्र-गवाळ[15] ।
सतदत्त लूंणकरन्न समवड़[16] वडै विरद विसाळ ।
जैतसी देवीदास जग-पुड़[17] सत्रां-चांपण-सींव[18] ।
उज्जळै सोही कीध उज्जळ भूप परियां[19] भींव ॥ ७

आंक १७ रावळ कल्यांणदास हरराजरो[20], रावळ भींव मुंवां पछै[21] पाट बैठो । वरस १४ मास ६ दिन १५ जेसळमेर राज कियो। सुसतो सो ठाकुर हुवो । रजपूतां, परज-लोगसूं भली पर पाळी[22] । डील निपट जवरो हुतो[23] । पाट बैठां पछै एक वार अजमेर पातसाहरी हजूर गयो हुतो, बीजो गढ ऊपर बैठो रह्यो[24] । नै आप जीवतां दोड़ण-धावणरी सारी मदार कंवर मनोहरदास ऊपर हुई[25] । एक वार रावळ भीम जीवतां कोढणा ऊपर कल्यांणमलनूं मेलियो हुतो[26] सु ऊहड़ गोपाळदासनूं मारियो ।

---

1 वाण । 2 शीघ्र । 3 कटार । 4 हठी, प्रतिज्ञा-पालनके लिये मरने वाला वीर । 5 युद्ध । 6 चौहान क्षत्री (मत्सर, अभिमान)। 7 अभिमानी । 8 बढता है। 9 जिस समय । 10 अधिकार (अभिमान) । 11 तलवार । 12 जिस समय । 13 क्रोधी । 14 क्रोध । 15 अपने वंशकी रक्षा करने वाला । 16 समान । 17 पृथ्वीतल पर । 18 शत्रुओं (के देशों)की सीमाओं पर अधिकार करने वाला । 19 (१) श्रेष्ठ, (२) पूर्वज । 20 रावल कल्याणदास हरराजका पुत्र । 21 मरनेके बाद । 22 ढीला ठाकुर हुआ किन्तु राजपूतों और प्रजाजनों से अच्छी प्रीति पाली । 23 बहुत मोटे शरीरका था । 24 इसके सिवाय गढमें ही बैठा रहा । 25 अपने जीवनकालमें (युद्धादिमें) दौड़ने-भागनेका सारा आधार कुंवर मनोहरदास पर रहा । 26 भेजा था ।

आंक १६ रावळ मनोहरदास कल्यांणदासोत। रावळ कल्यांण काळ कियां पछै टीकै बैठो[1]। वरस २२ जेसळमेर राज कियो। वडो आखाड़सिध, अभंगनाथ[2]। कांमरो मांणस[3]। रावळ मनोहरदास घणी वेढ जीती। संमत १७०६ रा मिगसरमें काळ कियो[4]। बेटो को न हुतो[5]। पछै भाटियां, बीजैं, राजलोग, भाटी रांमचंद सिंघोतनूं टीको दियो[6]।

मनोहरदासरा प्रवाड़ा[7]—

एक वेढ कंवरपदै बलोचांसूं की, तठै बलोच अलीखां मारियो[8]। खाडाळरा गांव १० मारनै वित लीनो[9]। अलीखां मारियो, तठै रावळरो साथ कांम आयो, घायल हुवा[10]—

१ भाटी रायसिंघ भीमावत, सांवतसी[11]।

१ सीहड़ धनराज उधरणोत[12]।

१ भा॥ वांकीदास जसावत रूपसीयोत[13]।

१ सोढो जसो।

१ सांगो खडेर। इणरो गांव देवो, टेहिया कनैं। जसोल ऊपर आयो, तद जसोलिया घणा मारिया[14]।

पोकरण राठोड़ जगमाल मालावतरा धरती बारै नीसरिया था[15], सु मेहवै जाय रह्या, पोकरणरो काळमुधो मारियो। तरैं रावळ मनोहरदास जेसळमेरसूं चढियो। सु जेसळमेररो चढियो जेसळमेरसूं कोस

1 रावल कल्याणके मरने पर गद्दी बैठा। 2 बड़ा रण-विशारद और निर्भय व्यक्ति था। 3 उपकारी मनुष्य। 4 सम्वत् १७०६के मिगसरमें मरा। 5 बेटा कोई नहीं था। 6 फिर भाटियों और दूसरे लोगों तथा रानियों आदिने मिल कर सिंहके पुत्र भाटी रामचंद्रको टीका दिया। 7 मनोहरदासके महत्वपूर्ण युद्धोंका वर्णन। 8 कुंवर-पदमें इसने एक लड़ाई बलोचोंसे की, जिसमें बलोच अलीखांको मारा। 9 खाडाल प्रदेशके १० गांवोंको लूट कर उनकी मवेशी लेली। 10 अलीखांको मारा उस लड़ाईमें रावलका इतना साथ मारा गया या घायल हुआ। 11 भाटी भीमाका बेटा रायसिंह और सांवतसी। 12 उधरणका बेटा सीहड़ धनराज। 13 भाटी जसाका पुत्र वांकीदास रूपसीओत। 14 सांगा खडेर, इसका गांव टोहियाके पासका देवा। यह जसोल पर चढ कर आया, तब कई जसोलियोंको इसने मार दिया। 15 जगमाल मालावतके वंशज पोकरणके राठोड़ अपनी भूमिको छोड़ कर बाहिर निकल गये थे।

४० सोग्राऊ जेसळमेर मेहवारी गड़ासिंध ग्रापड़िया[1] । फळसूंडसूं कोस ६, कुसमळाथी कोस २॥, तठै वेढ हुई[2] । पोकरणरा भागा[3] । ग्रादमी १४० मारिया । इतरा सिरदार पोकरणांरा मारांणा[4]—

१ रा॥ सुंदरदास देवराजरो ।

१ रा॥ मुथरो रांणारो ।

१ रा॥ जगनाथ विजारो ।

मालो देवराजरो, मेघो रांणारो, मेघो महेसरो, भा॥ ग्रचळो सुरतांणरो, ग्रै ग्राय पगै लागा[5], पछै पाछा ग्रांणिया[6] । संमत १६६४रा पोस सुद ८ बलोच मुगलखांन इसमायलखांरो बेटो विकूंपुररै गांव भारमलसरमें मारियो[7] । तद रावळरा इतरा चाकर कांम ग्राया[8]—

१ सीहड़ देदो धनराजरो । धनराज, उधरण, हींगोळ ।

१ रा॥ देईदास भांनीदासोत । राखारै वसतौ[9] ।

रावळ रामचंद सिंघरो । रावळ मनोहरदास कलावत संमत १७०६ काळ कियो[10] । बेटो मनोहरदासरै न थो । तरै राजलोगसूं साजस करनै[11], के भाटी पण भीर करनै एक वार टीको लियो[12] । सु सीहड़ रुघनाथ भांणोत तिण वेळा हाजर न हुंतो[13] । सु जेसळमेर सीहड़ां माथै वडी मदार[14], सु इण मनमें खुणस राखी[15] । तिण समै भाटी सबळसिंघ दयाळदासोत, दयाळदास खेतसीरो, रा॥ रूपसिंघ भारमलोतरो चाकर थो; रु० ६०००) तथा १००००) रो चाकर हुतो[16] ।

---

1 जैसलमेर ग्रौर मेहवेकी सीमाके निकट, जैसलमेरसे ४० कोस सोग्राऊमें उनको पकड़ लिया । 2 फलसूंडसे ६ कोस ग्रौर कुसमलासे २॥ कोस पर लड़ाई हुई । 3 पोकरण वाले भाग गये । 4 पोकरण वालोंके इतने सरदार मारे गये । 5,6 ये ग्राकर पाँवों पड़ गये, तब इनको पीछा बुला लिया । 7 सम्वत् १६६४की पौष शुक्ल ८को इसमायलखांके वेटे मुगलखानको विकूंपुरके गांव भारमलसरमें मार दिया । 8 उस समय रावलके इतने चाकर काम ग्राये । 9 जो राखाके यहाँ रहता था । 10 कल्लाका पुत्र रावल मनोहरदास संवत् १७०६में मर गया । 11 तब रानियोंसे मिल करके (षड्यंत्र करके) । 12 ग्रौर कई भाटियोंको ग्रपनी ग्रोर करके एक वार तो गद्दी वैठ ही गया । 13 उस समय भाणका वेटा सीहड़ रघुनाथ वहां हाजिर नहीं था । 14 क्योंकि जैसलमेरकी सारी दारमदार सीहड़ों पर है । 15 इसलिये इसने ग्रपने मनमें इस वातकी खुनस रखी । 16 खेतसीका वेटा दयालदास ग्रौर दयालदासका वेटा सवलसिंह, राव रूपसिंह भारमलोतके यहां नौ-दस हजारके पट्टेकी एवजीमें चाकर था ।

तिण दिन राव रूपसिंघसूं पातसाह साहजिहां जोर मया करता[1]। पछै रूपसिंघ पातसाहजीसूं अरज सबळसिंघरी कीवी[2]। सबळसिंघनूं पातसाहरै पावै लगायो[3]। पछै पातसाहजी वात कबूल कीवी[4]। भाटी रांमसिंघ पंचाइणोत और ही भाटी खेतसीरा पोतरा[5] कितराहेक[6] सबळसिंघ कनै[7] आया। पछै तिण समै[8] महाराजा श्री जसवंतसिंघजी पातसाहसूं अरज कराई–"पोकरण इतरा दिन किणही सबब भाटियां हेठै दबी, नै छै मांहरी[9]। सु हजरत हुकम करो तो म्हे उरी ल्यां[10]।" तरै पातसाहजी फुरमांन कर दियो। श्री महाराजाजी संमत् १७०६रा वैसाख सुद ३ नै जहांनाबादसूं देसमें पधारिया[11] नै जेठमें जोधपुर पधारिया। जोधपुरसूं रा॥ सादूळ गोपाळदासोत, पं॥ हरीदासनूं फुरमांन देनै जेसळमेर मेलिया[12]। तरै रांमचंद पांच भाटी भेळा करनै इणांनूं जबाब दियो[13]–"पोकरण पांच भाटी मुंवां आवसी[16]।" तरै जोधपुर कटकरी तयारी हुई, नै उठै पातसाहजीनूं ही खबर हुई–"जु रांमचंद हुकम मांनियो नहीं[15]।" तिण समै सबळसिंघ रांमसिंघ माथै, पेसकसीरा पईसा ठैराय चाकरी कबूल कीवी नै जेसळमेररो फुरमांन करायो[16]। भाटी रुघनाथ, और ही भाटी कितराहेक सारा रांमचंदसूं फिरिया[17]। सगळांरा कागळ छांना सबळसिंघनूं आया।

---

1 खूब कृपा करते थे। 2 इसलिये सबलसिंहके लिये रूपसिंहने बादशाहसे अर्ज की। 3 सबलसिंहको बादशाहके पांवों लगवाया। 4 तब सबलसिंहको जैसलमेर दे देनेकी बात बादशाहने कबूल की। 5 भाटी खेतसीके पोते। 6 कितनेक। 7 पास। 8 उस समय। 9 पोकरण किसी कारणवश इतने दिन तक भाटियोंके अधिकारमें रहा, परन्तु वह है हमारा। 10 सो अब यदि हजरत आज्ञा करदें तो हम उस पर अधिकार करलें। 11 महाराजा जसवंतसिंहजी जहानाबादसे सम्वत् १७०६ की वैशाख सुदि ३ को मारवाड़में आये। 12 जोधपुरसे महाराजाने राव सादूल गोपालदासोत और पंचोली हरिदासको बादशाही फरमान देकर जैसलमेर भेजा। 13/14 तब रामचंद्रने पांच भाटियोंको इकट्ठा करके इनको उत्तर दिया कि पोकरण पांच भाटियोंके मरनेके बाद हाथ लगेगा। 15 तब जोधपुरमें सेनाकी तैयारी हुई और उधर बादशाहको भी यह खबर मिल गई कि रामचंद्रने हुक्म नहीं माना है। 16 उस समय सबलसिंहने जैसलमेरकी ओरसे पेशकशी देनेकी रकम निश्चित कर और चाकरी देना कबूल कर जैसलमेर पर अपने अधिकारका फरमान रामसिंहके (रामचंद्रके) ऊपर लिखवा लिया। 17 बदल गये।

कह्यो–"वेगा आवो, म्हे थांहरा चाकर छां[1] ।" पछै पातसाहजी जेसळमेररो टीको देनै सवळसिंघनूं विदा कियो[2] । साथ खरचरी मदत रा।। रूपसिंघ करी[3] । पछै सवळसिंघ जोधपुर आयो । महाराजाजी घोड़ा-सिरपाव, खरच दियो[4] । सवळसिंघ पछै फळोदी आयो । अठै साथ चाकर राखिया[5] । फळोधीरी कुंडळ मांहै भोजासर तळाव ऊपर डेरो छै[6] । आदमी ७०० तथा ८०० चढिया-पाळा सवळसिंघ साथै छै[7] । नै जेसळमेररो साथ सेखासर परै जवणारी तळाई, धारारी तळाई छै, तठै डेरो छै[8] । मांणस १५०० तथा १७०० छै । मांहै सिरदार भाटी सीहो गोयंदोत छै । और पोकरणरो साथ केल्हण सारा साथै छै । तिणां ऊपरा[9] रावळ सबळसिंघ चलायनै गयो; तरै इतरा सिरदार सबळसिंघ कनै छै[10]–

१ भा।। केसरीसिंघ सकतसिंघोत ।
१ भा।। द्वारकादास ईसरदासोत ।
१ भा।। हरिसिंघ सकतसिंघोत ।
३ भा।। मोहणदास, जगनाथ, उदैभांण ईसरदासोत ।
१ भा।। विहारीदास दयाळदासोत ।
१ भा।। अचळदास गोयंददासोत ।
१ भा।। गोयंददास ईसरदासोत ।
१ भा।। गिरधर गोवरधनोत ।
१ भा।। मोहणदास किसनदासोत ।
१ भा।। राजसिंघ भगवांनदासोत ।
१ भा।। रांमचंद गोपाळदासोत ।

---

1 सबके गुप्त पत्र सबलसिंहको मिले कि 'जल्दी आ जाओ, हम तुम्हारे चाकर हैं। 2 बादशाहने जैसलमेरका टीका देकर सबलसिंहको रवाना किया । 3 राव रूपसिंहने साथके आदमियोंके खर्चेकी मदद दी । 4 महाराजा जसवंतसिंहजीने घोड़ा, सिरोपाव और खर्चा दिया । 5 यहां इसने अपने आदमी और चाकरोंका संगठन किया । 6 फलोदीके कुंडल गांवमें भोजासर तालाव पर डेरा लगा रखा है । 7 सातसौ-आठसौ सवार और पैदल आदमी सबलसिंहके साथमें हैं । 8 और जैसलमेरकी सेना सेखासर गांवके परे जवणा और धाराकी तलाइयों पर डेरा डाले हुए है । 9 उनके ऊपर । 10 उस समय सबलसिंहके पास इतने सरदार हैं ।

१ रा।। हरिसिंघ भीमसिंघोत ।

जेसळमेररा साथमें इतराहेक नांवजाद सिरदार छै[1] ।

१ राव जैसिंघ मोहणदासोत ।

१ भा।। सीहो गोयंदोत ।

२ भा।। सांमदास सांवळदास गोपाळदासोत सिरड़िया।

१ भा।। रुघनाथ ईसरदासोत ।

१ भा।। दळपत सूरसिंघोत ।

१ भा।। किसन बळुओत ।

पछै धोळै-दिन वेढ हुई । रावळ सबळसिंघ वेढ जीती[2] । जेसळमेररो साथ भागों, तठै साथ कांम आयो[3] ।

विकूंपुररो साथ इतरो कांम आयो[4] –

२ भाटी नेतावत–
 १ जैमल रासावत ।
 १ रा।। जैतसी भांणोत।

४ सोळंकी–
 १ जगो ।
 १ देदो ।
 १ कमो ।
 १ ऊदो ।

२ सिंघराव–
 १ मनोहर ।
 १ देदो ।

२ जैतुंग[5]–
 १ हरदास। १ जगमाल ।

१ भुणकमळ–
 हाथी अजुरो[6] ।

१ खालत वीदो ।

१ भा।। खंगार नरसिंघरो सेखासरियो[7] ।

१ पाहु मेहाजळ ।

पोकरणरा साथ मांहै इतरा कांम आया[8] –

१ एक धनराज नेतावत ।

१ भाटी भोपत रायसिंघोत ।

१ रा।। सिरंग डूंगरसियोत ।

१ राहड़ वीदो ।

---

1 जैसलमेरकी सेनामें इतने प्रसिद्ध सरदार हैं । 2 फिर दिन-धौले लड़ाई हुई । रावल सबलसिंहकी युद्धमें जीत हुई । 3 जैसलमेरकी सेना भाग गई और उसके ये आदमी काम आये । 4 विकूंपुरका इतना साथ काम आया । 5 जयतुंग शाखाका भाटी । 6 भुणकमल शाखाका अजूका बेटा हाथी । 7 सेखासर वाला नरसिंहका बेटा भाटी खंगार । 8 पोकरण वालोंके इतने काम आये ।

तठा पछै वेगी हीज श्री महाराजाजीरी फोज पोकरण ऊपर आई[1]। रावळ सबळसिंघ खारैरा डेरां, आदमियां ७००सूं आय, श्रीजीरा साथ भेळो हुवो[2]। गढनूं संमत १७०७रा काती में कोस०।। तळाव डूंगरसर डेरो हुवो[3]। दिन ३ गढनूं ढोवो हुवो[4]। पछै गढ माहिलांरा प्रांण छूटा[5]। पछै रा।। गोपाळदास, रा।। वीठळदास, रा।। नाहरखांन विचै[6] रावळ सबळसिंघ, भाटी रांमसिंघ पंचाइणोतनूं फेरनै वात कीवी[7]। गढ मांहै साथ थो सु परो काढियो[8]। भा।। पतो सुरतांणोत कांम आयो। तठा पछै रा।। गोपाळदासजी, वीठळदासजी नाहरखांनजीसूं मिळनै रावळ सवळसिंघ सीख करनै रावळा साथरा डेरासूं कोस०।। गयो[9]। तठै जेसळमेर था खबर आई[10]। रावळ रांमचंद भाटियांसूं मिळनै कह्यो–"मोनूं क्युं माल वित ले परो नीसरण द्यो तो हूं देरावर जाऊं[11]।" तरै पांचै भाटियां सीहड़ रुघनाथ, दुरगादास, सीहै, देवीदांन, जसवंत सारै वात कबूल कीवी। कह्यो–"परो जा[12]।" तरै कितरोहेक ताजो माल घोड़ा, ऊंठ ले रांमचंद देरावर गयो[13]। भा।। जसवंत वैरसलोत, राजधरांरी साखरा रांमचंद साथै गया[14]। पछै रावळ सवळसिंघ आ खबर सांभळी, तरै सताब चलायनै जेसळमेर गयो[15]। उठै रावळ सबळसिंघ पाट बैठो[16]।

रावळ अमरसिंघ सवळसिंघरो, संमत १७१६ पाट बैठो[17]।

---

1 जिसके बाद महाराजा जसवंतसिंहजीकी सेना जल्दी-ही पोकरण पर चढ़ कर आ गई। 2 खारामें लगे महाराजाके सेना-शिविरमें, रावल सबलसिंह अपने ७०० आदमियोंके साथ आकर महाराजाकी सेनामें सम्मिलित हो गया। 3 वहांसे सम्वत् १७०७के कातीमें गढ़से आधे कोस पर डूंगरसर तालाव पर डेरा लगा। 4,5 तीन दिन तक गढ़ पर आक्रमण हुए, तब गढ वालोंकी हिम्मत टूटी। 6 वीचमें, परस्पर। 7 भेज कर वातचीत की। 8 गढ़के अंदर जो सेना थी उसको वहांसे निकाल दिया। 9 विदाईकी आज्ञा प्राप्त कर जब वह महाराजाकी सेनाके पड़ावसे आधा कोस गया। 10 वहां पर जैसलमेरसे खबर मिली। 11 मुझे कुछ धन और मवेशी आदि साथमें लेकर निकलने देओ तो मैं देरावर चला जाऊं। 12 चला जा। 13 तब कितनाक (बहुत-सा) ताजा माल (छांट कर अच्छे अच्छे) घोड़े और ऊंटोंको लेकर रामचंद देरावर चला गया। 14 भाटी जसवंत वैरसलोत और राजधर शाखाके अन्य भाटी रामचन्द्रके साथ चले गये। 15,16 जब रावल सबलसिंहने यह खबर सुनी तो तुरन्त चल करके जैसलमेर पहुंचा और वहां वह गद्दी पर बैठ गया। 17 सबलसिंहका बेटा रावल अमरसिंह सम्वत् १७१६ में गद्दी बैठा।

१ रावळ मालदे ।
२ खेतसी ।
३ दयाळदास ।
४ सबळसिंह जेसळमेर घेरियो[1] ।
५ अमरसिंघ ।
६ जसवंतसिंघ
७ जगतसिंघ कंवरपदै मुंवो। बुधसिंघ राज कियो[2] ।
८ अखैसिंघ ।
९ मूळराज, जेसळमेर पाट[3]।

रावळ जसवंतसिंघ अमरसिंघोत। कंवर जगतसिंघ जसवंतसिंघोत कंवरपदै थकांहीज आपरै हाथ कटारी पेट मार मुंवो[4] ।

रावळ बुधसिंघ जगतसिंघरो पाट बैठो। पछै बुधसिंघनै कहै छै सीतळा नोसरी थी, तिणमें विस हुवो[5] । तठा पछै रावळ तेजसिंघ जसवंतसिंघरो पाट बैठो। तिण ऊपर भाटी हरीसिंघ अमरसिंघोत सिंधसूं आयनै रावळ अखैराजरै कहै तेजसिंघनूं चूक कर मारियो[6] । रावळ अखैसिंघ उण वगत नीसर गयो[7] । नै तेजसिंघ घडी ४ जीवतै थकै आपरै बेटै सवाईसिंघनूं टीकै बैसांणियो[8] । ताहराँ अखैराज फोज करनै आयो[9] । उमराव, कांमदार, अखैसिंघसूं राजी था[10], नै हिसाबमें अखैसिंघनै ठोड़ आवै[11] । जो ओ[12] जगतसिंघरो बेटो नै बुधसिंघरो छोटो भाई, तिणसूं जेसळमेर अखैसिंघ पायो[13] । वडो परतापीक रावळ हुवो[14] । वरस ४० राज कियो ।

रावळ अखैसिंघ जगतसिंघोतरा इतरा बेटा नै बेटी हुई[15]–

---

1 सबलसिंहने जैसलमेरका घेरा डाला। 2 जगतसिंह कुमारपदमें मर गया तब उसके बेटे बुधसिंहने राज्य किया। 3 मूलराज जैसलमेरकी गद्दी पर। 4 जसवंतसिंहका बेटा कुंवर जगतसिंह अपने कुमारपदमें ही अपने ही हाथसे पेटमें कटारी मार कर मर गया। 5 कहा जाता है कि बुधसिंहको शीतला निकल गई थी और उसी बीमारीमें उसको (उसकी दादी द्वारा) विष दे दिया गया। 6 जिस पर भाटी हरिसिंहजी अमरसिंहोतने सिंधसे आकर, रावल अखैराजके कहनेसे तेजसिंहको धोखेसे मार दिया। 7 रावल अखैसिंह उस समय निकल कर भाग गया था। 8 लेकिन तेजसिंहने अपनी मृत्युसे चार घड़ी पूर्व अपने जीते जी अपने बेटे सवाईसिंहको गद्दी पर बैठा दिया। 9 तब अखैराज सेना लेकर आया। 10 उमराव और कामदार आदि अखैसिंहसे प्रसन्न थे। 11 और हिसाबमें भी यह पदाधिकार अखैसिंहको ही प्राप्त होना चाहिये। 12 यह। 13 इसलिये जैसलमेर अखैसिंहको मिला। 14 वड़ा प्रतापी रावल हुआ। 15 रावल अखैसिंह जगतसिंहोतके इतने बेटे और इतनी बेटियां हुईं।

रावळ मूळराज, जेसळमेर पाट ।

१ भाटी रतनसिंघ मूळराजरो सगो भाई, सोडांरो दोहीतरो[1] ।

१ भाटी पदमसिंघ, करमसोतांरो दोहीतरो[2] ।

बेटी ३ तीन हुई, तिणांरा नांम[3]—

१ चंद्रकुंवर, महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंघजी नै परणाया[4] ।

१ चितैकुंवर महाराजकंवार श्री राजसिंघजी नै परणाया[5] । अै दोय बेटी चहुवांणांरी दोहीती, सगी बैहनां । बीकानेर परणाई[6] ।

१ विजैकुंवर, महाराजा कंवार श्री फतैसिंघजी विजैसिंघजीरै कंवरनै परणाया । सु दखणियां नै रांमसिंघ अमैसिंघोत मारवाड़ फोज ले आया । नागोर जोधपुर घेरो हुवो । तिण समै माहाराज श्री विजैसिंघजीरो मोहल सेखावत नै कंवर जेसळमेररै गढमें रह्या[7] ।

पछै फोज ऊठी, ताहरां फतैसिंघजीनैं परणाया । विजैकंवर करम-सोतांरी दोहीती । पदमसिंघजीरी सगी बैहन[8] ।

राव केल्हण पूगळ, विकूंपुर, बरसलपुर, मोटासर, हासासर, सिगळी[9] आ धरती भोगवतो । पछै राव सेखो हुवो, तिणरै पेट धरती इण भांत वंटांणी[10]—

---

1 भाटी रतनसिंह, यह मूलराजका सहोदर भाई और सोढोंका दोहिता । 2 भाटी पद्मसिंह, करमसोतोंका दोहिता । 3 बेटियें ३ हुई, उनके नाम ये हैं । 4 चन्द्रकुँवरि, जो बीकानेरके महाराजा गजसिंहजीको ब्याही गई । 5 चित्रकुँवरि, जो बीकानेरके महाराज-कुँवर राजसिंहको ब्याही । 6 बीकानेरको ब्याही गई दोनों ये सगी बहिनें और चौहानोंकी दोहितियें हैं । 7 विजयकुंवरि, महाराजा विजयसिंहजीके कुँवर महाराजकुमार फतहसिंहजी को ब्याही गई । उस समय अभयसिंहका बेटा रामसिंह और दक्षिण वाले सेना लेकर मार-वाड़में आ गये और नागोर और जोधपुरका घेरा डाल दिया । तब महाराजा विजयसिंहजीकी शेखावत राणी और कुँवर जैसलमेरके गढमें रहे । 8 जब फौज उठी तब फतहसिंहजीका विवाह हुआ । विजयकुंवरि, पद्मसिंहजीकी सगी बहिन और करमसोतोंकी दोहिती । 9 सब । 10 पीछे राव शेखा हुआ, उसके वंशजोंमें इस प्रकार देश बँट गया ।

गांव ३६० पूगळ वांसै लागता[1] ।

१ हैसो पूगळ वांसै, गांव १५०[2] ।

१ हैसो विकूंपुर, गांव ७५ ।

१ हैसो वरसलपुर, गांव ८४ ।

१ हैसो किसनावत भाटियांनूं, गांव १४० हापासर वांसै[3] ।

आ ठोड़ पाहुवेरो कहावै[4] । कदीम तो जेसळमेर वांसै आ ठोड़ हुती[5] । पछै वीकानेररा धणियां जोरीदावै महाराजाजी श्री सूरसिंघजी दबायनै हापासर वीकानेर वांसै घातियो[6] । हापासर वीकानेरसूं कोस १२ । भाटी किसनावत वीकानेररा चाकर हुवा[7] । पैहली जेसळमेररी सींव डीवजाळ तांई हुती[8] । तिका डीवजाळ रांणैहरथा कोस १२ महाजन नजीक[9] ।

किसनावतांरै गांवांरी विगत[10]—

१ हापासर ।	१ सूरासर ।	१ चूहड़सर ।
१ मोटासर ।	१ वडेरण ।	१ मोरियांवाळो ।
१ खारबारो ।	१ लालावर ।	१ लाकड़वाळो ।
१ रांणैहर ।	१ पीठवाळो ।	१ बंध ।
१ रायमलवाळी ।	१ मोटेळाई ।	१ जगदेवाळो ।
१ वीझळवाळी ।	१ नगराजसर ।	१ भंडण ।
१ धवळासर ।	१ लाखासर ।	१ खोखरांणो ।
१ आकेवळो ।	१ अखासर ।	१ भाचाहर ।
१ राजासर ।	१ देदाहर ।	१ कळसकी ।

1. पहिले पूगलके पीछे ३६० गांव थे, (जिनके चार भाग किये गये) । 2 एक भाग पूगलका जिसके पीछे १५० गांव । 3 हापासरके १४० गांवोंका एक हिस्सा किसनावत भाटियोंका । (गांवोंकी संख्यायें ठीक नहीं प्रतीत होतीं । ३६० गांवोंको १५०, ७५, ८४ और १४०—इन चार भागोंमें बाँटनेसे योग ४४९ आता है) । 4 (हापासरका) यह प्रदेश पाहुवेरो कहलाता है । 5 शुरूसे तो यह जगह जैसलमेरके अधिकारमें थी । 6 परन्तु पीछे वीकानेरके स्वामी महाराजा सूरसिंहजीने जबरदस्ती दबा कर हापासरको वीकानेरके अधिकारमें ले लिया । 7 किसनावत भाटी वीकानेरके चाकर हो गये । 8 पहले जैसलमेरकी सीमा डीवजाल गांव तक थी । 9 वह डीवजाल महाजन गांवके समीप राणेहर गांवसे १२ कोस पर हैं । 10 किसनावतोंके गांवोंकी सूची ।

वात

भाटियां मांहै केल्हणांरी साख[1]—

राव केल्हण केहररो, केहर रावळ मूळराजरो पोतरो[2]। पैहली तो रावळ केहररै टीकानूं मुदायत बेटो केल्हण थो[3]। पछै रावळ केहरनूं विगर पूछियां कठैक सगाई कीवी। तरै रावळ केहर रीसायनै केल्हण वडा बेटानूं जेसळमेर थी परो काढियो[4]। टीकानूं लखमण लोहड़ा बेटानूं कियो[5]। सु केल्हण एक वार तो को[6] दिन ग्रासणीकोट रह्यो। पछै मन मांहै विचारियो "ग्रासणीकोट मोनूं पछैही जेसळमेररो धणी रहण नहीं दै।" तिण समै रावळ केहर रांम सरण हुवो[7]। तरै केल्हण विचारियो—"कोहेक ठोड़ खाटणी[8]।" तिण दिन विकूंपुर सूनो पड़ियो। तठै राव केल्हण ग्रांण गाडा छोड़िया[9]। ग्रागै कोट मांहै घणा झाड़[10] ऊगा था, तिणांरी घणी झंगी हुय रही थी[11], सु सारा झाड़-फूस बाळ दिया[12]। ग्राप कोट मांहै वास कियो[13]। तठा पैहली[14] रावळ घड़सी धरती वाळण वास्तै[15] विखा मांहै चाकरी की, तद जैतुंग केल्हारो बेटो महिपो विखा[16] मांहै साथै हुतो। इण विखा मांहै घणी चाकरी करी हुती[17]। इणै खरच घणो पूजवियो हुतो[18]। सु पछै रावळ घड़सी धरती वाळी[19], तरै सारां विखायतांनूं वधारिया[20]। तरै महिपानूं कह्यो—"थे मांहरी वडी चाकरी पोहता छो[21], सु थे मांगो तितरी धरती म्हे थांनूं दां[22]।" तरै इणै राणांरी तळाई

1 भाटियोंमें केल्हण-भाटियोंकी शाखा। 2 पौत्र। 3 पहिले तो रावल केहरका वड़ा वेटा केल्हण राज्याधिकारी था। 4 तव रावल केहरने क्रोधित हो करके वड़े वेटे केल्हणको जैसलमेरसे निकाल दिया। 5 छोटे वेटे लखमणको राज्याधिकारी वनाया। 6 कई। 7 उस समय रावल केहर मर गया। 8 कोई एक जगह प्राप्त करनी चाहिये। 9 वहां राव केल्हणने ग्रपने गाडोंको लाकर छोड़ दिया। (गाडा छोड़िया=मुकाम किया)। 10 वृक्ष। 11 उनकी घनी झाड़ी हो रही थी। 12 वृक्ष ग्रौर घास जला दिया। 13 निवास किया। 14 उससे पहले। 15 रावल घड़सीने ग्रपना राज्य वापिस लौटानेके लिये। 16 संकट काल। 17 इसने विखेमें वहुत सेवा की थी। 18 इसने ग्रपना खर्च करके भी वहुत सहायता पहुँचाई। 19 जव रावल घड़सीने ग्रपना राज्य लौटा लिया। 20 तव सभी संकटग्रस्तोंको उन्नत किया। 21 तुमने मेरी ग्रन्त तक वड़ी सेवा की है। 22 सो तुम जितनी धरती मांगो उतनी हम तुम्हें दें।

खरड़री पोकरण थी[1] कोस १६, फळोधीसूं कोस ८, उठाथी लेनै[2] वीठणोक सूधी[3] इण धरती मांगी। रावळ घड़सी इतरी[5] धरती जैतुंगनैं दीवी हुती। वीठणोक वीकानेरसूं कोस सतरै १७ छै। जोगीरा तळाव, देवाइतरा तळावसूं कोस ४ तथा ५ वीठणोक छै, तठा सूधी धरती जैतुंगरै रावळ घड़सीरी दीवी हुती[5]; सो विकूंपुर को दिन[6] जैतुंगरैही रह्यो। तठा पछै पूगळ ऊपर मुलतांनरी फोज आई; तिण पूगळ लियो। पछै वा फोज विकूंपुर आई; तरै जैतुंग कल्हैरै मरनै विकूंपुररो कोट दियो। गढ तुरके लियो। के दिन गढ तुरकांणै रह्यो[7]। तुरकै गढ मांहै मसीत[8] १ कराई छै। नै साह वीदा मुल-तांणरा वासीरो करायो कोट मांहै देहरो १ ज्यांनरो छै[9]। पछै तुरकांनूं खांण-पांणनूं जुड़ै क्युं नहीं[10], तरै तुरक कोट विकूंपुर छोड़ परा गया; सु विकूंपुर सूनो पड़ियो थो। मांहै घणा झाड़ ऊगा था[11], तिण समै रावळ केल्हण खाली ठोड़ देखनै आसणीकोटसूं विकूंपुर आयो, नै अठै रह्यो। कोट मांहिला झाड़-झंगी[12] बाळ दिया; तिके अजेस बळिया ठूंठ दीसै छै[13]। गढ रावळ केल्हण सझियो[14]। विकूंपुर ऊंचो थांब-माथैरो छै[15]। प्रोळ सखरी[16] छै। घर १ मांहै सखरो छै। देहरो १ एक साह वीदारो करायो सखरो छै। भींत तो गढरी पाखती इसी सी ही छै[17]। कोहर १ किडांणो प्रोळरी भींत हेठै छै,पांणी खारो छै, पुरसे ४०[18]। दोळो पांणी कोस ५ तथा ७ छै, नेड़ो कठै ही न छै[19]।

---

1 से। 2 वहांसे लेकर। 3 तक। 4 इतनी। 5 वहां तक रावल घड़सीकी दी हुई भूमि जयतुंगके पास थी। 6 कई दिन। 7 कई दिन गढ़ मुसलमानोंके अधिकारमें रहा। 8 मस्जिद। 9 मुलतान-निवासी शाह वीदाका बनवाया हुआ एक जैन मंदिर भी कोटमें है। 10 वहां जब तुर्कोंको खाने-पीनेको कुछ नहीं मिला। 11 भीतर बहुत वृक्ष उगे हुए थे। 12 वृक्षोंकी झाड़ी। 13 अभी तक जले हुए ठूंठ दिखाई देते हैं। 14 रावल केल्हणने गढ़को तैयार करवाया। 15 विकूंपुरका गढ़ स्तम्भकी भांति ऊंचा उठा हुआ है। 16 अच्छी। 17 गढ़के पार्श्वकी भींत तो ऐसी-ऐसी (साधारण) ही है। 18 किडाणो नामक एक कुंआं पौलकी भींतके नीचे है, जिसका पानी खारा है और वह ४० पुरुष गहरा है। (पुरुष वा पुरसा=खड़े होकर हाथ ऊंचे उठाने या दायें-बायें हाथ फैलानेके बराबरकी, अथवा १२० अंगुलकी गहराई नापनेकी एक माप)। 19 आजू-बाजू ५ या ७ कोस पर पानी हाथ आता है, निकट कहीं नहीं है।

लोक रहै छै सु सोह कोट मांहि रहै छै[1]। फळोधीसूं कोस २५ छै, जेसळमेरसूं कोस ७० छै। वीकानेरसूं कोस ४५ छै। देरावरसूं कोस ६० छै। पूगळसूं कोस ४४। वाप, विकूंपुरसूं कोस १६, फळोधीसूं कोस ८, किरड़ा निजीक, तिकोस वडो गांव छै[2]। ठाकुराईरी मंड वाप माथै छै[3]। बांभण-पलीवाळ घणा वसै छै[4]। वांणियांरा घर ५० तथा ६० वसै छै। वाप घणा सैंवज गोहूं सारी सींव काठा नीपजै छै[5]। मण १ गोहूं वायां मण ६० गोहूं हुवै छै[6]। घणी ज्वार हुवै। सखरी साख हुवै छै, ताहरां कण-नेपत गोहूं मण २००००० तथा ३००००० जाभेरा हुवै छै[7]। बीजाही सिरहड़ सारीखा रूड़ा गांव छै[8]। मांणस हजार २००० री जोड़ राव विकूंपुररै भले समा ऐ ठोड़ छै[9]। मारग देरावर मुलतांनरो वहै छै[10], तिणरी रूड़ी ओपत छै[11]। तिका ठोड़ रावळ केल्हण खाटी[12]। भली ठाकुराई जमी छै।

तिण समै राव रांणंगदे भाटी, रावळ लखणसेनरो वेटो पुनपाळ जेसळमेरसूं काढियो, तिणरो पोत्रो हुतो[13], सु कहै छै "राव चूंडैजी मारियो। तिणरै बेटो न थो, तरै राव रांणंगदेरी बैर राव केल्हणनूं कहाड़ियो[14]—"मोनूं थे घर आंणो तो हूं थांनूं गढ दूं[15]।" तरै केल्हण परपंच कियो, नै कहाड़ियो—"भली वात[16]।" पछै आप चढनै पूगळ

---

1 जो लोग वहां वसते हैं वे सव कोटमें रहते हैं। 2 वही एक वड़ा गांव है। 3 ठकुराईका सव आधार वाप गांव पर है। 4 वहां पर पल्लीवाल व्राह्मण अधिक रहते हैं। 5 वापकी सारी सीमा (भूमिमें) सैंवजके काठे-गेहूँ वहुत होते हैं। (सैंवज=वे गेहूँ, चने आदि जो आश्विनकी वर्षाकी आर्द्रता भूमिमें वने रहनेके कारण उत्पन्न होते हैं। इन्हें सिंचाईकी आवश्यकता नहीं रहती।) 6 एक मन वोनेसे ६० मन पैदा होते हैं। 7 जव फसल अच्छी होती है तो नाजकी पैदावारमें गेहूँ दो-तीन लाख मनसे भी अधिक पैदा हो जाते हैं। 8 सिरहड़के समान दूसरे भी अच्छे गांव हैं। 9 इन जगहोंमें यदि सुकाल हो तो विकूंपुर रावकी मददके लिये दो हजार मनुष्योंकी जोड़ उसके पास हो सकती है। 10 देरावर और मुलतानका मार्ग इधर हो करके चलता है। 11 जिसकी आमदनी अच्छी है। 12 ऐसी जगहको रावल केल्हणने प्राप्त की। 13 रावल लखणसेनके वेटे पुण्यपालको जेसलमेरसे निकाल दिया था, उसके एक पोता था। 14,15 जव राव राणंगदेकी विधवा पत्नीने राव केल्हणको कहलवाया कि मुझको घरमें डालदो तो मैं तुमको यह गढ देदूं। 16 तव केल्हणने छल किया और कहलवाया कि अच्छी वात है।

गयो, तरै रांणंगदेरी बैर कह्यो–"धारेचारो सासतर करो[1] ।" तरै राव केल्हण कह्यो–"आज तो रावाईरा सासतररो मोहरत छै[2], सवारै बीजो सासतर करस्यां[3] ।" सु पैहलै दिन बाजोट[4] मांडनै रावाईरो टीको कढायो, सासतर कियो[5] । सको राजी हाथरै, जीभरैं पांण किया[6] । पछै दिन २ आडा घातनै[7] राव केल्हण वागो पैंहरनै राव रांणंगदेरी दोढी ऊभै रहनै मांहै जुहार रांणंगदेरी वहूनूं कहाड़ियो[8] । तरै रांणंगदेरी रांणी कहाड़ियो–"थांहरो म्हांसूं कोल कासूं छै ? नै हमै थे कोल पाळो न छो[9] ?" तरै केल्हण कहाड़ियो–"इसड़ी वात कदै न हुई, सु क्युं कीजै[10] ? सवारैं संसार मांहै सगा-सोई सको हसै[11] । पछै कोई आंपांसूं सनमंध करै नहीं, नै रावरै बेटो को न छै । राव रांणंगदेरो वैर हूं लेईस[12] ।" तरै रांणी पण दीठो, वात मांहै सवाद को नहीं[13] । तरै रांणी कह्यो–"भली वात; म्हारे वैर वाळणसूं हीज कांम हुतो[14] ।" इण विध राव केल्हण पूगळ धणी हुवो । पछै रावळ केल्हण मुलतांन जायनै सलेमखांननूं नागोर ऊपर ले आयो । राव चूंडानूं मारियो । राव केल्हण घणूं तपियो[15] । इतरा कोट खाटिया[16]–

साखरो दूहो[17]

पूगळ वीकूंपुर पुणवि, मूंमणवाह मरोट ।
देरावर नै केहरोर, केल्हण इतरा कोट[18] ॥ १

---

1 तब रांणगदेकी स्त्रीने कहा कि पुनर्विवाहकी रीति करो । 2 आज तो रावाईकी (रावकी पदवीकी) रस्म कर लेनेका मुहूर्त्त है । 3 कल दूसरी रस्म भी कर लेंगे । 4 पाटा, पट्टा । 5 रस्म अदा की । 6 धन और मिष्ट-भाषण (मिष्ठान्न)से सबको राजी किया । 7 फिर दो दिनका बीच देकर । 8 राव केल्हण बागा पहिन करके राव राणंगदेकी ड्योढी पर खड़े रह कर राणंगदेकी स्त्रीको भीतर जुहार कहलवाया । 9 तुम्हारा मेरेसे क्या कौल है ? और अब तुम उस कौलका पालन नहीं कर रहे हो । 10 ऐसी बात कभी हुई नहीं, उसे क्यों करना चाहिये ? 11 कल संसारमें अपने सगे-संबंधी सभी हँसेंगे । 12 राव राणंगदेके वैरका बदला मैं लूंगा । 13 तब राणीने भी देखा कि अब इस बातमें कोई मजा नहीं । 14 मेरे तो वैरका बदला लेनेसे ही काम था । 15 राव केल्हणने बहुत वर्षों तक राज्य किया । 16 इतने गढ़ प्राप्त किये । 17 जिसकी साक्षीका दोहा । 18 केल्हणके पास इतने कोट थे—१. पूगल, २. विकूंपुर, ३. मूमणवाह, ४. मारोठ, ५ देरावर और ६. केहरोर ।

राव केल्हण देरावर लियांरी वात एक इण भांत सुणी–

सोम केहररो सगो भाई, तिको देरावरमें मुंवो। तरै केल्हण गोडो वळावणनूं मांणस ४००सूं आयो[1]। तरै सोमरो बेटो सहसमल मांहै आवण दे नहीं। तरै घणा सूंस-सपत देवाचा करनै कोट मांहै आयो[2]। दिन ५ तथा ७ रह्यो। इणे[3] केल्हणनूं कह्यो–"थे परा जावो[4]।" पण केल्हण जाय नहीं। तरै सहसमल रूपसी रीसायनै आपरा गाडा ले कोट छाड नीसरिया[5], सु सिंध गया। कोट देरावररो केल्हण लियो। तठा पछै राव केल्हण वेगो हीज मुंवो[6]।

राव केल्हणरा बेटा–

२ राव चाचो केल्हणरो पूगळ पाट।

२ रिणमल विकूंपुर पाट हुतो। तिणरा वांसला खरडवाळा भाटी[7]।

२ विक्रमादीत केल्हणरो। तिणरै वांसला खीरवारा धणो[8]।

२ अको केल्हणरो। तिणरा वांसला सेखासरिया-भाटी[9]। अकानूं रा॥ नाथू रिड़मलोत मारियो[10]।

२ कलिकरण केल्हणरो। तिणरै वांसला तणणै गांव[11]।

२ हरभम केल्हणरो। तिणरै वांसला हरभम-भाटी कहीजै। इणांरा गांव २– १ नाचणो। १ सरउपर।

आंक २. राव चाचो केल्हणरो पूगळ पाट बैठो। राव केल्हणरा कोट खाटिया मांहै कोट १ विकूंपुररो रिणमल केल्हणोतनूं दियो[12]।

---

1 तब केल्हण ४०० आदमियोंके साथ मातमपुर्सीके लिये आया। 2 तब सौगंध-शपथ और बोल-वचन दे करके कोटमें आ पाया। 3 इसने। 4 तुम अब चले जाओ। 5 तब सहसमल और रूपसीने नाराज हो कर कोट छोड़ दिया और अपने गाड़े ले करके निकल गये। 6 जिसके बाद राव केल्हण जल्दी ही मर गया। 7 रिणमल विकूंपुरकी गद्दी पर था। उसके वंशज खरड़वाले-भाटी कहलाते हैं। 8 केल्हणका बेटा विक्रमादित्य। उसके वंशज खीरवाके जागीरदार। 9 अक्का केल्हणका बेटा, इसके वंशज सेखासरिया-भाटी कहलाते हैं। 10 अक्काको राव नाथू रिड़मलोतने मारा। 11 कलिकर्ण केल्हणका बेटा। इसके वंशज तणणा गांवमें हैं। 12 राव केल्हणने जिन कोटोंको प्राप्त कर अधिकार किया था, उनमेंसे एक कोट विकूंपुरका चाचाने रिणमल केल्हणके बेटेको दे दिया।

इतरा कोट चाचै भोगविया[1]–

१ पूगळ, १ केहरोर, १ मरोट, १ मुंमणवाहण, १ देरावर।

चाचारी वडी ठाकुराई हुई। चाचो कटक करनै पोकरण राव वरजांग ऊपर आयो। पोकरण झूंबियों[2]। भूतड़ा महाजन महेसरियांरा कितराहेक गाडा सै उचाळै ले आयो[3]। सु वे भूतड़ा आज सूधा पूगळमें रहता[4]–

राव चाचारा बेटा—

३ राव वैरसल, पूगळ पाट हुवो। जिण नवो कोट वैरसलपुर करायो।

३ रावत रिणधीर चाचारो, तिणनूं देरावर। भाई वंटै वैरसल लियो थो। तिणरै वांसला नेतावत-भाटी[5]। विकूंपुररै देस, नोख-सेवड़ै[6]।

रावत रिणधीर रा बेटा–

४ वीरमदे। ४ लखमण। ४ मूळो। ४ अजो।

वीरमदेरा बेटा–

५ विजो वीरमदेरो।

६ नेतो, तिणरा नेतावत[7]।

३ कूंभो चाचारो। इणरै वांसै को नहीं[8]।

३ महिरांवण चाचारो[9]।

देरावर एकण भांत री ठोड़[10]। रिणधीर मची मुवो[11]।

बेटा–

४ वीरमदे, ४ लखमण, ४ मूळो, ४ अजो हुता।

पण ठोड़ एकण भांतरी, इणांसूं अठै रह्यो न जाइ[12], सारै सिंधरै

---

1 चाचाने इतने कोटोंका उपभोग किया। 2 चाचा सेना तैयार करके वरजांग ऊपर पोकरण चढ़ आया और पोकरणको लूटा। 3 वहांके भूतड़ा जातिके माहेश्वरी वनियोंको उचाला करा कर ले आया। (उचाळा=वहुत से परिवारों का एक साथ सामूहिक रूपसे अपने निवास स्थानका सदाके लिये त्याग करके अन्य गांवको किया जाने वाला प्रस्थान।) 4 वे भूतड़े आज तक पूगलमें रहते हैं। 5 जिसके वंशज नेतावत-भाटी कहलाते हैं। 6 विकूंपुर प्रदेशमें इनका गांव नोख-सेवड़ा। 7 नेता, जिसके वंशज नेतावत-भाटी। 8 चाचाका वेटा कुंभा, इसके वंशमें कोई नहीं। 9 महिरावण चाचाका वेटा। 10 देरावर एक ऐसी (खतरेकी) जगह। 11 रणधीर अपनी मौत मरा। 12 इनसे यहां रहा नहीं जाता।

मुंहडै देरावर छै[1]। तरै इणां गढ ऊभो मेलनै विकूंपुर उरा आया, नोख-सेवड़ै वसिया[2]। देरावररो गढ खाली पड़ियो थो, तरै रावळ लूणकरण वसियो। तठा पछै गढ जेसळमेर वांसै पड़ियो[3]। गाडण पसायत विखा मांहै सिधनूं जावतो थो दुकाळ मांहै[4]। बारहट खींदै कहिनै रखायो। इतरो देनै राखियो[5]।

साखरो कवित[6]

दुय गिरि चंदण अढार, वरै जळवंब मोताहळ[7]।
सेर एक सोव्रन्न[8], पंच रूपक झाळाहळ[9]॥
वारह जूथ नर-महिष[10], चादर खट चीरह[11]।
च्यार तुरी[12] चत्र ऊंठ[13], एकसो गाय सखीरह[14]॥
भाटियां राय हुवसी भुवण, लाभ ध्रम्म सोभाग तुव।
वैरसल हाथ मांडावियौ, चायइ एतै चाचगां सुव[15]॥ १

दूहो

खींदै समो न वारहट, वेरड़ समो न राय।
जातै जुग जासी नहीं, दूहो चवै पसाय[16]॥ १

वेटांरी साखरो दूहो

सेखो राव तिलोकसी, जोगाइत जगमल्ल।
वैरागररा दीकरा, एक-एक हूं भल्ल[17]॥ १

---

1 सारे सिंधके द्वार पर देरावर बसा हुआ है। 2 तब ये गढ़ छोड़ कर के विकूंपुर आ गये और नोख-सेवड़ेमें वस गये। 3 जिसके बाद गढ़ जैसलमेरके अधिकारमें आया। 4 दुष्कालजन्य संकटके कारण गाडण पसायत सिंधको जा रहा था। 5 इतना देकर के रखा। 6 साक्षीका कवित्त। 7 मोती। 8 सुवर्ण। 9 पांच सेर चमकती हुई चांदी। 10 बारह जोड़ी भैंसे। 11 छहों प्रकारके चादर आदि वस्त्र। 12 चार घोड़े। 13 चार ऊंट। 14 एक सौ दूध देती हुई गायें। 15 भाटी राव वैरसलने चारण पुत्रको (बारहट खींदेको) उसकी इच्छानुसार दान दिया। कवि कहता है कि हे भाटी राव! तेरा संसारमें सौभाग्य बढ़ेगा और तुझे धर्मका लाभ होगा। 16 गाडण पसायत कहता है कि खींदेके समान कोई बारहठ नहीं है और वैरसलके समान कोई राजा नहीं है। इसकी कीर्ति युगों तक नहीं मिटेगी। 17 वैरसलके बेटे एक-एकसे भले हैं।

४ राव सेखो, धणी पूगळ ।

४ जगमाल वैरसलरो । मुंमणवाहण धणी हुवो । क्युं वैरसलपुर मांहै पिण सीर हुतो[1] । पछै जगमाल मुंवो तरै तुरके मुंमणवाहण लियो[2] ।

५ जैतसी ।

६ पंचायण, राव वाघारी बेटी परणियो हुतो[3] ।

७ गोयंददास पंचाइणोत । इणरी बेटी राजा सूरज-सिंघ परणिया हुता, सुजांणदे[4] ।

८ जोगीदास गोयंददासोत, वडो रजपूत, जोधपुर वास । गांव ४सूं वीभ-वाड़ियौ पटै[5] । संमत १६६८ हाथी मारियो. दिखणनूं[6] ।

९ रुघनाथ । गांव ४सूं वीभ-वाडियो पटै । संमत १६-९१ मोहबतखांरै कांम आयो[7] ।

१० अचळदास ।

९ जगनाथ, चांदरख पटै । मोहबतखांरै दौलताबाद कांम आयो[8] ।

१० हरनाथ चांदरख पटै । मोहबतखांरै दौलताबाद कांम आयो ।

१० उरजन ।

९ कल्यांणदास ।

१० करन । १० भींव ।

९ केसोदास जोगीदासरो ।

१० हरिसिंघ ।

९ पतो जोगीदासरो ।

१० जसवंत ।

७ रांम पंचाइणरो । राव चंद्रसेणरो सुसरो । सोहद्रां भाटियांणी रांणीरो बाप[9] ।

८ सुरतांण, रावळै वास । मेड़तारो राजोद पटै[10] ।

---

1 कुछ वैरसलपुरमें भी उसका भाग था । 2 जब जगमाल मर गया तब तुर्कोंने मुमणवाहण पर अधिकार कर लिया । 3 पंचायण राव बाघाकी बेटी व्याहा था । 5 इसकी बेटी सुजानदेसे राजा सूरसिंहका विवाह हुआ था । 5 चार गांवोंके साथ वीभवाड़िया गांव जागीरमें । 6 सम्वत् १६६८में इसने दक्षिणमें हाथीको मारा । 7 सम्वत् १६९१में मोहबतखांके लिये काम आया । 8 जगन्नाथको चांदरख गांव पट्टेमे, दौलताबादमें मोहबतखांके लिये काम आया । 9 पंचायणका बेटा राम । यह राव चंद्रसेनका ससुर और सोहद्रां (सुभद्रा) भटियानीका बाप है । 10 सुरतान, महाराजाका चाकर । मेड़ते परगनेका राजोद गांव पट्टेमें ।

९ कुंभो ।

८ नेतसी रांमोत[1] ।

९ नरसिंघ ।

८ संकरदास रांमोत[2] ।

९ वेणीदास । ९ गोकळदास ।

९ कन्हीदास । ९ सबळसिंघ ।

८ नरहरदास रांमरो ।

९ मेघराज ।

८ तेजसी रांमावत ।

९ उदैसिंघ पंचाइणरो ।

८ मनोहरदास । ८ मोहणदास ।

९ द्वारकादास मनोहरदासोत ।

८ ईसरदास । ८ प्रागदास

जगमाल वैरसलोतरो पेट अठा वांसै[3]—

४ जोगायत वैरसलरो । तिणनूं भाईवंटै केहरोर आयो, नै वरसलपुर मांहै हैंसो हुंतो[4] । जोगायत वडो प्रळै-दातार हुवो । वडा-वडा दांन दिया[5] । पछै साथरैरी मौत मुंवो[6] । पछै केहरोर तुरकै लियो । इणरै वांसै इसड़ो को न हुवो[7] ।

दूहो—जोगायत जीआर, पांना ऊथळसी परम ।
तोनै बीजी त्यार, वेहरो होसी वैरउत ॥ १

४ तिलोकसी वैरसलरो । ५ सहसो । ६ अखैराज ।

५ भैरवदास, मरोट धणी हुतो । पछै भैरवदास मुंवो, अउत गयो[8] । तरै राव जैसै मरोट लीवी ।

४ राव सेखो वैरसलरो । पूगळ धणी । एक वार इणनूं मुगले मुलतांण दिस ले भालियो, तद रावजी श्री वीकैजी छोडायो[9] ।

५ राव हरो सेखारो, पूगळ धणी[10] । पूगळनूं गांव ३५० लागता, तिण मांहै हैसो ३ भाई[11] । वाघै सेखावत गांव हापासरसूं वंटाय गांव

---

1 रामका वेटा नेतसी । 2 रामका वेटा शंकरदास । 3 इसके बाद जगमाल वैरसलोतका वंश । 4 वैरसलका वेटा जोगायत, इसे भाईवंटमें केहरोर मिला और वरसलपुरमें भी भाग था । 5 जोगायत वड़ा जवरदस्त दानी हुआ । इसने वड़े-वड़े दान दिये । 6 अपनी मौत मरा । 7 इसके पीछेके वंशजोंमें ऐसा कोई नहीं हुआ । 8 फिर भैरवदास अपुत्र मर गया । 9 एक वार इसको मुलतानकी ओर मुगलोंने पकड़ लिया था तव राव वीकाजीने छुड़वाया था । 10 राव हरा शेखाका पुत्र, पूगलका स्वामी । 11 पूगलके पीछे ३५० गांव थे, जिनमें तीन भाईयोंका हिस्सा । (पृ० १११में शेखाके वंशजोंके वँटवाड़ेमें पूगलके गांव ३६० और उनके चार हिस्से किये गये, बताया गया है ।)

१४० लिया[1], तद गोपो रिणमलोत विकूंपुर धणी हुतो, कपूत सो ठाकुर हुतो। सु हरारा हेरू लागा हुता। ओ कठैके निवाळा खाण गयो हुतो, पछै हरै गोपा कना विकूंपुर लियो[2]।

राव हरा रा बेटा—

६ राव वरसिंघ। ६ वीदो रावत। ६ हमीर। ६ उधरण।

५ रावत खींवो सेखावत। वैरसलपुर धणी, तिणनूं तुरकै मारियो[3]।

६ रावळ जैतसी। ६ सांगो। ६ करन। ६ धनराज। ६ गांगो।

खींवा-भाटी—

६ जैतसीराव। वैरसलपुर धणी।

७ राव मालदे, वैरसलपुर धणी।

८ राव मंडळीक, वैरसलपुर धणी। मोटा राजासूं कुंडळ संमत १६२७ वेढ हुई तठै कांम आयो[4]।

९ राव नेतसी, वैरसलपुर धणी। समियांणै बळोचै मारियो[5]।

१० राव प्रथीराज, वैरसलपुर धणी।

११ राव दयाळदास।

१२ राव करन। १२ राव रुघनाथ।

११ रामचंद। ११ सबळो। ११ वीरमदे। ११ दळपत। ११ वाघ।

१० खेतसी मंडळीकरो।

६ सांगो खींवारो।

७ जगमाल।

८ अचळदास।

९ .... ।

१० केसोदास।

---

1 वाघा शेखावतने हापासर सहित १४० गांव वँटवा कर लिये। 2 हराके दूत पीछे लगे हुए थे, जब यह कहीं भोजन करनेको गया हुआ था तब हराने गोपासे विकूंपुर छीन लिया। 3 जिसको तुर्कोंने मार दिया। 4 वरसलपुरका स्वामी राव मंडलीक, कुंडल गांवमें मोटा राजा उदयसिंहसे सम्वत् १६२७में लड़ाई हुई उसमें काम आ गया। 5 वरसलपुरका स्वामी राव नेतसी, जिसे बलोचोंने समियाणामें (सिवानामें) मारा।

११ दुरगादास। जोधपुर मेहा-
कोर फळोधीरो पटै[1] ।
८ जीवो जगमालरो ।
९ करन खींवारो । खींवा
साथै कांम आयो ।
७ अमरो ।
८ रांमसिंघ ।
९ रांमचंद । ७ तिलोकसी।
१० वाघ ।
८ स्यांमदास अमरारो ।
करण, खींवो[2] ।

९ गोपाळदास ।
१० रावत चांदो ।
११ जगतसिंघ ।
८ लखो अमरारो ।
९ दौलतखांन ।
१० गिरधर, खजवांणो पटै ।
९ गांगो खींवारो ।
७ तेजसी ।
८ रांमसिंघ । ८ मांनसिंघ।
९ जसवंत ।
१० भांण । १० भगवांन ।

९ भाटी धनराज खींवारो । राव मालदेरै वास । विकूंकोहर घणा गांवांसूं पटै[3] । फळोधीरै थांणै रहतो । पछै राव जैसै पूगळरै धणी चाडी मारी[4], तठै आड-वाहर पीहलाप कनै आपड़िया[5] । जैसै रा ।। प्रथीराज भोजराजोतनूं चाडी मारियो[6] । अठै वेढ हुई[7] । वेढ जैसै जीती ।

७ गोपाळदास । ७ खेतसी । ७ ठाकरसी । ७ रायमल । ७ सीहो ।

राव धनराजरो परवार—

७ गोपाळदास, भटनेर
कांम आयो ।
८ नरहर, भटनेर कांम आयो।
९ उगरो । ९ राजसिंघ ।
७ रांमसिंघ । ७ खेतसी
धनराजोत ।

८ सिरंग ।
९ राघोदास ।
१० गोवरधन। १० हररांम,
जोधपुर वास ।
१० माधोदास । १० जग-
माल । १० गोयंददास ।
९ वाघ सिरंगरो[8] ।

---

1 दुर्गादासको जोधपुर राज्यके फलोधी परगनेका महाकोर गांव पट्टे में । 2 स्याम-दास, करण और खींवा अमराके बेटे । 3 कई गांवोंके साथ विकूंकोहर पट्टे में । 4 पीछे पूगलके स्वामी राव जैसेने चाडी गांव लूटा । 5/6 वहां जैसेने आड़ी चढ़ाई करके पीहलाप गांवके पास चाडीके पृथ्वीराज भोजराजोतको पकड़ करके मार दिया । 7 यहां लड़ाई हुई । 8 वाघ सिरंगका (श्रीरंगका) बेटा ।

१० विहारी। १० देवीदास।
८ आसकरण खेतसीरो।
सिरंग[1]।
९ कल्यांणदास, वीकानेर
वास। नाथूसर चाखू
पटै[2]।
१० कांन्ह।
९ हरदास। ९ मनोहर।
८ दुरगदास खेतसीरो।
९ नाथो। राव सत्रसाल
साथै कांम आयो।
८ महेसदास खेतसीरो।
७ ठाकुरसी धनराजरो।
८ जोगाइत।
९ भोपत।
१० गोवरधन, खींदासर पटै
१० दयाळदास, नाभासर।
१० गिरधर, सीहांणो पटै।
१० करमसेन। १० सुजांण।
९ रुघनाथ। गोयंददास।
८ किसनदास। ठाकुर-
सीयोत।
९ सूरजमल।
१० रायकरन।
८ रांम ठाकुरसीयोत।
९ प्रथीराज।

१० मुकंद। १० कुंभो।
१० तेजमाल। १० जैसिंघ।
१० माधोदास। १० गिर-
धर। १० अखैराज।
९ जगनाथ।
७ रायमल धनराजरो।
८ कांन्ह, रावळै वास।
मेहाकोर पटै[3]।
९ नरहर।
१० रांमसिंघ।
८ नारायण रायमलरो।
९ मुकंद। ९ मोटो।
९ रांमदास।
८ सांवळदास रायमलरो।
९ सुंदर, जांभेळाव पटै।
९ खंगार, रावळै वास।
वीमणवो पटै[4]।
९ ईसरदास।
९ जोगीदास।
८ उदयसिंघ रायमलरो।
८ चांदो रायमलोत।
८ वेणो रायमलोत।
७ सीहो धनराजरो। हड़फै
कांम आयो।
८ हेमराज। भटनेर कांम
आयो।

---

1 आसकरण और श्रीरंग खेतसीके बेटे। 2 कल्याणदास बीकानेरमें चाकर, जिसको नाथूसर और चाखू गांव पट्टेमें। 3 कान्ह, जोधपुर राजाजीका चाकर और महाकोर गांव पट्टेमें। 4 खंगार, जोधपुर राजाजीका चाकर और बीमणवो गांव पट्टेमें।

९ भागचंद । ९ रांमचंद ।
८ भगवांनदास सीहावत ।
९ जसवंत ।
१० रांमसिंघ ।
९ जगदे ।
१० हरिसिंघ ।
८ भांण सीहावत ।
८ सुरतांण ।
९ बलू । ९ देदो । ९ प्राग-दास ।
१० अखैराज ।
७ लिखमीदास धनराजरो । भटनेर कांम आयो ।
८ कल्यांणदास ।
९ लाडखांन, वीकानेर वास । सोवांणियो पटै[1] ।
८ दूदो ।
७ डूंगरसी धनराजरो ।
८ करमसी । ८ भैरवदास । ८ खींवो । (८ करमचंद ।)
५ वाघो सेखारो । इण राव हरा सेखावत क़नै हैसै ३ पूगळमें हापासर लारै गांव १४० वंटाय लिया[2] ।
६ भाटी किसनो वाघावत । इणरा वांसला किसनावत-भाटी कहावै छै[3] । वीका-नेर वांसै घोडो खड़ै[4] । फळोधी मोटा राजानूं थी तद मोटा राजारा वास[5] । कहावतनूं आधी फळोधी दीवी थी[6] ।
७ तेजमाल । ७ रायसिंघ । ७ मालो । ७ रायमल । तेजमाल किसनावत वडो घाट, वडो रजपूत हुवो[7] ।
८ ठाकुरसी तेजमालरो ।
९ अखैराज । ९ लाखणसी ।
८ भांण तेजमालोत ।
९ रतनसी ।
१० करमचंद टीकै[8] ।
९ प्रथीराज । ९ ययल (?) (दयाळदास)
८ रांणो तेजमालोत ।
८ खंगार तेजमालोत ।
९ सूरजमल । ९ भींवराज । ९ दयाळ ।

---

1 लाडखान, वीकानेरमें चाकर और सोवणिया गांव पट्टे में । 2 इसने हरा शेखावतके पाससे पूगल प्रदेशके १४० गांव हापासरके पीछे वँटवा कर ले लिये । 3 इसके वंशज किसनावत-भाटी कहलाते हैं । 4 वीकानेरके (महाराजाके) पीछे घोड़ा चलाता है । 5/6 जब फलोधी पर मोटा राजाका अधिकार था तब यह मोटा राजाका चाकर था और कहने मात्रको आधी फलोधी इसे दी गई थी । 7 तेजमाल किसनावत, सुंदर और बड़े कदका और बड़ा वीर राजपूत हुआ । 8 करमचंद गद्दी बैठा ।

९ नाथो, भलो रजपूत। खारवारै चूहड़सर वसै[1]।

१० कुंभो, खारवारै।

८ खंगार तेजमालोत, जोधपुर वसियो हुतो। संमत १६५६ गांवां ५सूं वीठणोक पटै दी हुती। राजा सूर(सिंघ) तेजमालनूं मारियो तद साथै मारियो[2]।

किसनावतांरो वडो धड़ो छै। मांणस १००० तथा १५०० जमीयत छै[3]।

८ कांन्ह तेजमालोत, रावळै वास थो। संमत १६८५ मेड़तारो मीठड़ियो पटै हुतो[4]।

रायसिंघ किसनावत, आंक ७—

८ भगवांनदास रायसिंघोत, संमत १६७२ रावळै वास। चांमूं, सावरीज पटै[5]।

९ माधोदास, रावळै वास। संमत १६७७ चांमूं पटै।

१० अचळदास।

८ सहसमल रायसिंघोत।

७ गोयंददास, किसनावतांमें मुदै। रायमलवाळी रांणेर वसै[6]।

८ वीरमदे रायसिंघोत, रावळै वास। संमत १६५६ कालांणो पटै गांव १४सूं[7]।

९ करन।

८ पूरणमल।

मालो किसनावत, आंक ७—

८ सांवळदास हापासर वसै[8]।

रायमल किसनावत, आंक ७—

---

1 नाथा, अच्छा राजपूत, खारवाके चूहड़सर गांवमें रहता है। 2 खंगार तेजमालोत जोधपुरमें वस गया था। सम्वत् १६५६में पांच गांवोंके साथ वीठणोक पट्टेमें दिया था। राजा सूरसिंहने इसके वाप तेजमालको मारा तब इसे भी साथमें मार दिया। 3 किसनावत-भाटियोंका बड़ा समूह है। इनकी १०००/१५०० आदमियोंकी जमीयत है। 4 कान्ह तेजमालोत जोधपुर राजाजीका चाकर था। सम्वत् १६८५में मेड़ता परगनेका मीठड़िया गांव उसके पट्टेमें था। 5 भगवानदास रायसिंहोत सम्वत् १६७२ जोधपुर राजाका चाकर और चामूं और सावरीज उसके पट्टेमें। 6 किसनावत-भाटियोंमें गोयंददास मुख्य व्यक्ति, रायमलवाली राणेर गांवमें रहता है। 7 वीरमदे रायसिंहोत जोधपुरका चाकर, सम्वत् १६५६में १४ गांवोंके साथ कालाणा पट्टेमें। 8 सांवलदास हापासरमें रहता है।

८ जगमाल, देहेरै-भाचाहर वसै[1] ।

राव केल्हण केहररो । पूगळ, विकूंपुर, वैरसलपुर इणांरी[2] ठाकुराई ।

पीढी–

१ राव केल्हण केहररो ।
२ राव चाचो केल्हणरो ।
३ राव वैरसल चाचारो ।
४ राव सेखो वैरसलरो ।
५ राव हरो सेखारो ।

हरारा बेटा–

६ राव वरसिंघ । ६ वीदो हरावत । ६ हमीर । ६ उद्धरण ।

राव वरसिंघ हरावत आंक ६ पूगळ, विकूंपुर दोनूं ठोड़ै धणी हुवो[3] । वरसिंघ वडा वडा प्रवाड़ा खाटिया[4] ।

साखरो कवित

पंच सहस मोगरै[5] सहस पंचह धसधारै[6] ।
पंच सहस पैसरै कीयै वंकड़ै-करारै[7] ।
रैवारी रत्तड़ी फिरै आगै पड़दारै ।
खड़ै[8] वाग[9] मोकळी[10] चीत भाटियां करारै ।
बाहड़गिर[11] खावड़[12] कोटड़ै[13] छाहोटण[14] सवाईयो ।
गोरहर[15] लगो जु मेहणो[16] त्यै[17] ऊतारण आवियो[18] ॥ १
कहकहिया-कणछिया[19] कच्छ लग्गी किरमाळां[20],
कम्माळां भारिया पूठ जिरहां[21] कम्माळां[22] ।

---

1 जगमाल देहेरे-भाचाहरमें रहता है । 2 इनकी । 3 पूगल और विकूंपर दोनों जागीरोंका स्वामी हुआ । 4 वरसिंहने बड़े-बड़े युद्धोंमें विजय और यश प्राप्त किया । 5 (१) गदाधारियोंको (२) गदाओंसे, मुद्गरोंसे । 6 नाश किया । 7 बांके और शक्तिशालियोंको । 8 चलाते हैं । 9 वाग, लगाम । 10 अधिक । 11/14 बाहड़मेर (बाड़मेर), खावड़, कोटड़ा और चौहटन—ये नगरोंके नाम हैं । 15 (१) जैसलमेरका किला । (२) जैसलमेर शहर । 16 कलंक । 17 उसको । 18 आया । 19 दीन होकर पुकारे, रोये । 20 तलवारें । 21 जिरहवस्त्रोंसे । 22 ऊंटोंको ।

खेड़ीतां[1] खूंदतां[2] धसै धर पायै हैमर[3],
घूघर रोळ रवद्द[4] रुघां वाजै रिण[5] पाखर[6] ।
सरणाय-साद[7] नीसांण सर कूंपिये ढोलारव किया,
त्रूटती-रात[8] हरभम-तणै[9] जग्गमाल जगाविया ।। २

राव वरसिंघरा बेटा, ग्रांक ६—

७ राव दुजणसल, विकूंपुर धणी। सोनगरा खींवारो दोहीत्रो[10] ।

७ राव जैसो, पूगळ धणी । सोनगरा खींवारो दोहीतरो। जैसारी बेटी राव चंद्रसेण परणियो हुतो, नांव प्रेमलदे। तिका विकूंपुर मुंई[11] ।

७ कलो वरसिंघरो, जको किरड़ा वाप वीच वसियो थो, तिका ठोड़ 'कलारी-कोटड़ी' कहीजै[12] । एकरसूं[13] राव जैसो कठीक[14] गयो हुतो, वांसै कलै पूगळ ली थी[15] । पछै कलो वेगोहीज मुंवो[16] । पछै टीको कलारा भाई पातळनूं हुवो ।

७ जाझण वरसिंघरो। इणरै वांसै को नहीं[17] ।

७ पातळ वरसिंघरो। तिणरै वांसला नोख सेवड़ै छै[18]। पातळ मास ६ पूगळ धणी हुवो । पछै जैसै पूगळ लीवी ।

७ सातळ वरसिंघरो । वांसै को नहीं[19] ।

७ करमचंद वरसिंघरो ।

८ कल्यांणदास किसनदासरो। किसनदास करमचंदरो ।

---

1 चलाते हुए, भगाते हुए । 2 रौंदते हुए । 3 घोड़े। 4 मुसलमान । 5 रण। 6 घोड़े और हाथियोंके कवच । 7 (१) शरणार्थियोंकी पुकार । (२) सहनाईका शब्द । 8 पिछली रातमें । 9 हराके पुत्रने । 10 खींवा सोनगरेका दोहिता । 11 सोनगरा खींवाका दोहिता । जैसेकी बेटी प्रेमलदे राव चंद्रसेनको ब्याही थी, वह विकूंपुरमें मर गई । 12 कल्ला वरसिंहका बेटा । यह किरड़ा और वापके बीचमें रहता था। वह जगह 'कलारी कोटड़ी' कही जाती है । 13 एक बार । 14 कहीं । 15 पीछेसे कल्लेने पूगल पर अधिकार कर लिया था । 16 फिर कल्ला जल्दी ही मर गया । 17 वरसिंहका बेटा जाझण । इसके वंशमें कोई नहीं । 18 इसके वंशके नोख और सेवड़ेमें रहते हैं । 19 वरसिंहके बेटे सातलके वंशमें कोई नहीं ।

९ रुघनाथ। ९ कल्यांणदास।

८ रांणो।

९ भगवांन। ९ अखैराज।

८ जगमाल।

९ राघवदास। ९ गोपाळदास। ९ भींवराज। ९ पीथो।

९ रुघनाथ किसनदासरो।

८ जोगाइत।

९ धनराज। ९ लिखमीदास।

७ राव दुजणसल वरसिंघरो, विकूंपुर धणी। मोटा राजारो सुसरो। पोहपावती दुजणसलरी बेटी परणिया हुता, सु जोधपुर (प)हुंतां पैहलीहीज मुंई[1]।

८ राव डूंगरसी दुजणसलरो।

८ सूरजमल रावळै चाकर। विकूंकोहर पटै।

सूरजमलरा बेटा–

गोयंददास, दयाळदास, कल्यांणदास, तेजमाल, रांमचंद।

९ जसवंत, रावळै वास। ननेऊ पटै। संमत १६९३ कांम आयो[2]।

९ लिखमीदास। ९ वलु। ९ किसनदास।

८ रायमल।

८ सुरतांण, मोटा राजारो चाकर। फळोधीरी गायां ली तठै कांम आयो[3]।

८ भांनीदास दुजणसलरो, सिरहड़ वसियो। पछै सोबतरै मांमलै मोटै राजा फळोधी थकां संमत १६२५ रै टांणै मारियो[4]।

९ सादूळ भांनीदासरो। राजा रायसिंघजीरै कांम आयो।

९ गोपाळदास, सिरहड़ वसियो। पातावते नाळ कनै मारियो[5]।

---

1 वरसिंहका वेटा दुर्जनसाल, विकूंपुरका ठाकुर, मोटा राजाका ससुर। मोटा राजाने दुर्जनसालकी वेटी पोहपावतीसे (पुष्पावतीसे) विवाह किया था, परंतु जोवपुर पहुँचनेके पहले ही वह मर गई। 2 जसवंत जोवपुर महाराजाका चाकर। नैनेऊ गांव पट्टेमें। सम्वत् १६-९३में काम आया। 3 सुरतान मोटे राजा उदयसिंहका चाकर। फलोधीकी गायें घेरी थीं वहां काम आया। 4 भानीदास दुर्जनसालका वेटा, सिरहड़ गांवमें रहा। सम्वत् १६२५में मोटे राजाने फलोधी रहते समय घोड़ोंके काफिलेके (महसूलके) निमित्त हुई लड़ाईमें मारा। 5 गोपालदास सिरहड़में वसा। इसको पातावतोंने नाल गांवके पास मारा।

१० मनोहरदास ।
१० सुंदरदास । १० जस-
वंत । १० सांमीदास ।
१० सांवळदास । ९ मांन-
सिंघ । १० भगवान-
दास । १० बलु ।
१० पूरो । १० रांमो ।
९ रतनसी ।

८ डूंगरसी दुजणसलरो, विकूंपुर धणी हुवो । वडो ठाकुर हुवो । तद मोटो राजा फळोधी वसै छै । तद दांण घणो धरती मांहै लागतो[1] । तद सोबत सोदागरांरी फळोधीनूं आवती हुती[2] । सु राव डूंगरसी आपरा भाई भांनीदासनूं सोबत सांम्हो मेल[3], सोबत तेड़ाय[4], दांण लेनै सोबत आघी चलाई[5] । नै मोटै राजा साथ सांमहो मेलियो हुतो[6], तिण(सूं) भाटी भांनीदास सोबत पोहचायनै पाछो मांडणसर उतरियो थो[7], तठै रावरै जैसावत और साथ जिणां भाटी भांनीदासनूं मारियो[8], तोही राव डूंगरसी गई करतो हुतो[9], पण मोटो राजा भाटियांसूं पगे-पड़ियो आवै[10], ऊपरा-ऊपर बुराई करै, वाळैसर मारियो[11] । तरै राव डूंगरसी सारा केल्हण भेळा करनै मांणस २५०० सूं कुंडळ मांहै रावरै तळाव आय उतरियो[12] । मोटो राजा चढनै आदमी ५०० तथा ७०० सूं भाटियां ऊपर गयो, तठै संमत १६२७ रा आसोज उतरतै, काती लागतां वेढ हुई[13] । वेढ भाटियां जीती । मोटै राजा वेढ हारी । राव मंडळीक वैरसलपुररो धणी इण वेढ कांम आयौ,

---

1 उस समय देशमें महसूल (राहदारी) बहुत लगता था । 2 उन्हीं दिनों सौदागरोंकी एक घोड़ोंकी सोहबत फलोधीको आ रही थी । 3,4,5 इसलिये राव डूंगरसीने अपने भाई भानीदासको सोहबतके सामने भेज कर सोहबतके सौदागरोंको बुलवाया और राहदारीकी चुंगी लेकर उस काफिलेको आगे जाने दिया । 6 इधर मोटे राजाने भी काफिलेके सामने अपने आदिमियोंको भेजा था । 7,8 भाटी भानीदास सोहबतको अपने मार्ग पर डाल और वहांसे रवाना होकर मांडणसर गांवमें ठहरा था, वहां रावके जैसावतों और दूसरे आदमियोंने भानीदासको मार दिया । 9,10 राव डूंगरसी तो तोभी गई कर रहा था, परन्तु मोटा राजा तो पांव पछाड़ता हुआ भाटियोंके पीछे लगा हुआ था, (छेड़खानियां करता ही रहता था ।) 11 बुराई पर बुराई (छेड़-छाड़) करता ही रहे, उन्हीं दिनों बालेसर गांवको भी लूट लिया । 12 तब राव डूंगरसीने सभी केल्हण-भाटियोंको इकट्ठा करके २५०० आदमियोंके साथ कुंडल गांवमें रावके तालाब पर आकर डेरा डाल दिया । 13 मोटा राजा भी अपने ५००/७०० आदमियोंके साथ भाटियों पर चढ़ कर आ गया । वहां सम्वत् १६२७के उतरते आसोज और कार्तिक मासके लगते लड़ाई हुई ।

भाटियांरी तरफ[1] । मोटा राजारो साथ कांम आयो । मोटो राजा आप नीसरियो फळोधी आयो, भाटी फळोधी सैहर ऊपर नहीं आया[2] ।

डूंगरसीरा बेटा—

९ राव उदैसिंघ विकूंपुर धणी । वळोच्च समै राव आसकरण पूगळरो धणी मारियो हुतो, सु उदैसिंघ समानूं घणा साथसूं मारियो, वडो दावो वाळियो[3] । नै मेहेवै तलवाड़ा ऊपर कँवरपदै उदैसिंघ गयो हुतो; तठै वेढ उदैसिंह कँवरपदै हारी थी, तठै घणा साथ मारियो हुतो[4] ।

९ देवोदास डूंगरसीरो ।

राव उदैसिंघरा बेटा, आंक ९–

१० राव सूरसिंघ ।

१० ईसरदास, सिरड़ वसियो थो। संमत १६८५ भा॥ वस्तै फळोधी थकै हाकम थकै मारियो[5] ।

११ रुघनाथ । ११ हाथी । ११ नाहरखांन । ११ लिखमीदास । ११ पूरो । ११ सहसो ।

१० करननूं राव अचळदास विक्रमादीयोत मारियो ।

१० रासौ उदैसिंघरो, वीकानेर चाकर । वीठणोक कनै जाय

---

1 भाटियोंकी तरफमें वरसलपुरका ठाकुर राव मंडलीक इस लड़ाईमें काम आया । 2 मोटाराजा भाग कर फलोधी आ गया, लेकिन भाटी उसका पीछा करके फलोधी शहर पर नहीं आये । 3 समा वलोचने पूगलके स्वामी राव आसकरणको मार दिया था इसलिये उदयसिंहने समाको उसके कई आदमियोंके साथ मार दिया, शत्रुता का बड़ा बदला चुकाया । 4 उदयसिंह कुँवरपदेमें मेहवेके तिलवाड़ा गांव पर चढ कर गया था, जहां बहुतसे आदमियोंको उसने मार दिया था, लेकिन इस लड़ाईमें वह हार गया था । (वि०–तिलवाड़ामें लूनी नदीके पाटमें भक्त रावल मल्लीनाथ और उनकी पत्नी रानी रूपांदेके नामसे प्रति वर्ष चैत्र कृ. ११ से चैत्र शु. ११ तक मारवाड़ का प्रसिद्ध व्यापारी मेला (चैत्री का मेला) लगता है । तिलवाड़ासे लूनी नदीके उस पार थान गांवके पास रावल मल्लीनाथजी का ऊंचा और बड़ा मंदिर बना हुआ है । वहांसे कुछ ही दूर मालाजाळ गांवमें रानी रूपांदे का मंदिर भी बना हुआ है । राठौड़ों की मारवाड़में सर्व प्रथम राजधानी खेड़पट्टन (क्षीरपुर) से तिलवाड़ा चार मील है और खेड़ प्रसिद्ध व्यापारिक-केन्द्र बालोतरासे पांच मील पश्चिममें है ।) 5 ईशरदास सिरहड़में वस गया था । सम्वत् १६८५में जब वह फलोधीमें हाकिम था, वस्ताने उसे मार दिया था ।

रयो, तिका ठोड़ रासारो-गुढो हमैंही कहीजै छै। वस्ती घर ५०० तथा ७०० सदा रहता[1]।

११ वाघ। ११ सबळसिंघ।

१० अरजन।

१० कचरो, बीकानेररो चाकर। मांडाळ वसियो[2]।

१० राव सूरजसिंघ उदैसिंघोत। विकूंपुर धणी हुवो। वडो ठाकुर अभंगनाथ हुवो[3]। वडा-वडा प्रवाड़ा खाटिया[4]। एक बार मोहबत-खांननूं नागोर[5], तद घणो साथ वीकानेर, नागोर फळोधीरो ले ऊपर आयो[6], तद राव आदमी २००० तथा २५०० केल्हण सारा भेळा कर पाधरो वाप जाय उतरियो[7]। पछै मुहतो जगनाथ फळोधीरै हाकम वीच फिरनै वात की[8]।

संमत १६६२ प्रथीराज, अखैराज दलपतोत राव उदैसिंघ वाघोतरै दावै हमीरां-भाटियां ऊपर दोड़िया हुता[9]। तिण दिन[10] राव सूरज-सिंघ नै कँवर बलू विरस[11] हुवो थो, सु बलू विकूंपुरसूं छाडनै कैर-डूंगररी पाखती आयो थो[12]। तठै पोकरणरा थांणारो साथ भा।। दुरगदास, मेघराजोत, भा।। द्वारकादास, एका हमीर बलूनूं मनावण सारा भाटी नै राव सूरसिंघ आया था। उठै वाहाऊ[13] आयो तठै राव सूरसिंघ, बलू, भा।। दुरगदास मेघराजोत, भा।। द्वारकादास ईसरदा-सोत, भा।। रुघनाथ ईसरदासोत, एको हमीर, सिगळो राहावणो

---

1 रामा उदयसिंह का बेटा, वीकानेर महाराजा का चाकर। वीठणोक गांवके पास जाकर रहा (नई वस्ती बसाई) वह स्थान अभी तक 'रासा-रो-गुढो' कहा जाता है। वहां ५००/७०० घरों की वस्ती सदा रहती है। 2 कचरा वीकानेर महाराजा का चाकर। मांडाळ गांवमें रहा। 3 बड़ा निर्भय और वीर ठाकुर हुआ। 4 बड़े-बड़े युद्ध जीत कर कीर्ति प्राप्त की। 5 एक बार नागोर जब मोहवतखांके अधिकारमें था। 6 चढ कर आया। 7 तव रावने दो-ढाई हजार सारे केल्हण-भाटियोंको इकट्ठा करके सीधा वाप जाकर डेरा डाला। 8 पीछे फलोधीके हाकिम मुहता जगन्नाथने बीचमें पड़ कर के सुलह करवा ली। 9 सम्वत् १६६२में राव उदयसिंह वाघोतकी शत्रुताका बदला लेनेके लिये पृथ्वीराज और अखैराज दलपतोत हमीर-भाटियोंके ऊपर चढ कर आये थे। 10 उस दिन। 11 वैमनस्य। 12 इसलिये बलू विकूंपुर छोड़ कर के कैर-डूंगरीके पास आकर रह गया था। 13 दूत।

जेसळमेर विकूंपुररो सारो वांसै दोड़ियो[1]। फळोधी परै कोसै १५ मुंडेळाई मांगळियांरो गांव[2], तठै राव खेतसी दुजणसलोत रहतो थो, तठै जाय नै डेरो कियो[3], सु राव खेतसी साथ आवतो दीठो तरै ढोल दिरायो[4]। तरै राव प्रथीराज अखैराज ही संभिया[5], तितरै साथ उणांरो आगै-पाछै आवतो गयो, त्यूं नै वेढ करता गया[6]। राव सूरसिंघ, बलू कँवर कांम आया[7]। नै भाटी द्वारकादास, भाटी दुरगदास, भा॥ रुघनाथ सारो पोकरणरो साथ नीसरियो[8]। राव सूरसिंघ, कंवर बलू आदमी २ हमीर, मुथरो, पतो आदमियांसूं कांम आया[9]।

विकूंपुररै धणियां नै राठोड़ै सगाई, तथा बीजां[10]–

१ रा॥ चंद्रसेन राव डूंगरसीरी बेटी परणियो।

१ मोटो राजा राव दुजणसलरी बेटी हरखां परणियो[11]।

१ मोटो राजा भाटी जैमल कलावतरै परणियो[12]।

१ मोटो राजा भाटी जगमाल खींवावतरै परणियो[13]।

केल्हणां नै बीकानेररा धणियां सगाई[14]–

१ राजा रायसिंघजी भाटी भांनीदासरी बेटी जसोदा परणियो[15]।

१ राव सूरजसिंघ राव आसकरणरी बेटी परणियो।

१ राव सूर(सिंघ) भाटी तेजमाल किसनावतरी बेटी परणियो।

१ राव करन भाटी सुदरसण मानसिंघोत सिरहड़ियांरी बेटी परणियो[16]।

---

1 जैसलमेर और विकूंपुरके सभी लोग एवं उनके सभी चाकर (गोले) पीछे चढ कर आये। 2 फलोधीसे परे कोस १५ पर मांगलियोंका मूंडेलाई गांव। 3 वहां जाकर उन्होंने डेरा डाला। 4 तब राव खेतसीने साथको आते देखा तो ढोल बजवा दिया। 5 तब राव पृथ्वीराज और अखैराज भी तैयार हो गये। 6 आगे पीछे ज्यों-ज्यों इनका साथ आता गया त्यों-त्यों ये लड़ाई करते गये। 7 राव सूरसिंह और कुंवर बलू काम आये। 8 निकल भागा। 9 हमीर, मथुरा और पता इन आदमियोंके साथ राव सूरसिंह और कुंवर बलू ये दोनों काम आये। 10 विकूंपुरके स्वामियोंका राठौड़ों और दूसरोंके संबंधोंका विवरण। 11 मोटा राजाका राव दुर्जनसालकी बेटी हरखांसे विवाह हुआ था। 12 मोटा राजा भाटी जयमल कलावतके यहां व्याहा। 13 मोटा राजा भाटी जगमाल खींवावतके यहां व्याहा। 14 केल्हण-भाटियों और बीकानेरके स्वामियोंके संबंधों का विवरण। 15 राजा रायसिंहजी भाटी भानीदासकी बेटी यशोदासे व्याहे। 16 राव करन सिरहड़िया भाटी सुदर्शन मानसिंहोतकी बेटीसे व्याहा।

भाटियां-केल्हणां नै कछवाहां सगाई[1]–

१ कछवाहो महासिंघ मांनसिंघोत राव ग्रासकरण पूगळियारी बेटी परणियो[2]।

१ कछवाहो माधोसिंघ राव डूंगरसी विकूंपुरियारी बेटी परणियो[3]।

राव सूरसिंघरा बेटा–

११ बलू राव साथै कांम ग्रायो संमत १६६२[4]।

१२ किसनसिंघ, संमत १७२१रा पोह वद २ ननेउरै चढियां राव विहारी मारियो। पछै जैतसी किसनानूं मारियो[5]।

१३ कुसळो।

११ पिरागदास।

१२ पतो।

११ मोहणदासनूं, सूरसिंघ बलू मारियां पछै विकूंपुर टीको हुवो[6]।

१२ राव जैतसिंघनूं मोहणदास मुंग्रां[7] एक वार टीको हुवो। पछै संमत १७११ विहारी कोट लियो[8]।

१३ मालदे।

११ राव विहारीदास सूरसिंघरो। के दिन तो वीकानेर चाकर हुतो[9]। पछै रावळरा हुकमसूं जैसिंघ कना[10] कोट लियो। विकूंपुर धणी हुवो। भलो सुसतो सो ठाकुर हुवो[11]। पछै संमत १७२१रा पोह बद २ बेटो बिहारीरो परणण गयो थो[12], वांसै साथ थोड़ासूं कोट

---

1 केल्हण-भाटियों और कछवाहोंके संबंध। 2 कछवाहा महासिंह मानसिंहोत पूगलिया-भाटी राव ग्रासकरणकी बेटीसे व्याहा। 3 कछवाहा माधोसिंह विकूंपुरिया-भाटी राव डूंगरसीकी बेटीसे व्याहा। 4 बलू अपने बाप राव सूरसिंहके साथ सम्वत् १६६२में काम ग्राया। 5 किशनसिंहने सम्वत् १७२१की पौष वदी २ को नैनेऊसे चढ कर राव विहारीको मारा, परन्तु जैतसीने पीछे किसनाको मार दिया। 6 सूरसिंह और बलूके मारे जानेके बाद विकूंपुरका टीका मोहनदासको हुग्रा। 7 मर जानेके बाद। 8 पीछे सम्वत् १७११में विहारीने कोट पर ग्रधिकार किया। 9 कई दिन तो वीकानेरमें चाकर रहा था। 10 पास से। 11 भला परन्तु सुस्त सा ठाकुर हुग्रा। 12 विवाह करनेको गया था।

थो[1]. ननेऊरैं चढियां आदमी १०सूं था।। किसनैं वलुवोत मारियो।

१२ राव जैतसी। १२ गर्जसिंघ। १२ चंद्रसेन। १२ जगरूप।

११ दळपत साहिवदेरो बेटो, जैतावतांरो भांणेज[2]।

११ खेतसी।

७ साहवखांन।

तळाई विकूंपुररै नजीक[3]–

१ तिलांणी–कोस १, मास १ पांणी रहै।

१ रांणीवाळो–नोख सेवड़ा विचै, पांणी मास ४[4]।

१ चंद्राव–भाटीरो, सेवड़ा थी कोस..., पांणी मास ४।

१ वह–सेवड़ा कनै, पांणी मास[5] २।

१ वरजांग–जैतुंग सेवड़ा वीच कोस ३, पांणी मास ४।

१ गोपाळी–नींवली कनै, पांणी मास ४।

१ हरख–जैसिंघरी सिरहड़, पांणी मास १०[6]।

१ गोधणली–सिरहड़ नजीक, पांणी मास ६, जूंनी छै[7]।

१ हरराजरी लोहड़ी–सिरहड़ कनै, पांणी मास ४।

सिरहड़ तळाई (१००) कुवा ३ मीठा, पुरसै २०[8]।

सिरहड़-लोहड़ी–कूवा १८ पांणी मीठो, तळाई घणी[9]।

जैतारी, पांणी मास ५।

भथरी, पांणी मास ४।

वावड़ी दळपतरी।

तळाव रांणाहळ, मास ८ पांणी। वेरा घणा[10]।

---

1 पीछे कोटमें थोड़े ही मनुष्य थे। 2 दलपत साहिवदेवीका वेटा और जैतावतोंका भानजा। 3 विकूंपुरके पासकी तलाइयोंका विवरण। 4 नोख और सेवड़ा गांवोंके वीच 'राणीवालो' नामक तालाव, जिसमें चार मास पानी रहता है। 5 सेवड़ाके पास 'वह' नामक तलाई, जिसमें पानी दो मास रहता है। 6 जयसिंहके सिरहड़ गांवके पास 'हरख' नामक तालाव, जिसमें १० मास पानी रहता है। 7 सिरहड़के नजदीक गोवणली नामक तलाई, जिसमें पानी ६ मास रहता है। गोवणली पुरानी तलाई है। 8 सिरहड़में (आसपास तलाईयां १०० हैं और) २० पुरुप गहरे मीठे पानी के तीन कुएँ हैं। 9 सिरहड़-लोहड़ीके (छोटी सिरहड़के) प्रदेशमें वहुतसी तलाईयां और मीठे पानीके १८ कुएँ हैं। 10 कुएँ वहुत।

पूनादेरी, विकूंपुर वरसलपुर विचै, कोस १२ ।

वीका सोळंकीरो (तळाव) कोस ३ उत्तरनूं, पांणी मास ४ ।

खेतपाळरो टोभो, कोस २, पांणी मास २ ।

वाखळवाळी, कोस २, पांणी मास ४ ।

तळाई विकूंपुररै देस–

१ अचलांणी–कोस १० रांणेरी कनै[1], पांणी मास ६ ।

१ नींबली–नींबा मुंहतारी, कोस १२[2], पांणी मास ४ ।

१ मांडाळ–मांडा मुंहतारी, कोस[3] ९ पांणी मास ४ ।

१ कांनड़ियारी–कांना सोढारी, कोस १०[4], रांणेरी कनै, पांणी मास २ ।

१ लूड़ी रांमसर–विकूंपुर था[5] कोस ̤̤, पांणी मास २ रहै ।

विकूंपुररै देसरी हकीकत ।

कोहर इण भांत[6]–

रजपूतां और लोगांरै वंट गांव[7]–

जसहड़ांरै–गांव नोख । कोहर २० ।

सिंघरावांरै–१ नारणसर, १ भारमलसर ।

बोडांणांरै–१ भीदासर ।

टावरियां मकवांणांरै भेळो–टावरियांवाळो[8] ।

गोगलियांरै–१ गोगलीसर ।

भुण-कमळांरै–१ गांव नोख, १ चारण वाळो ।

नेतावत-भाटियांरै–१ सेवड़ो । कोहर २० ।

गैहलोतांरै–गैंहलोतां वाळो ।

प्रोहितांरै–१ प्रोहित वाळो ।

---

1 पास । 2 नींबली नामक तलाई मुंहता नींबाकी बनवाई हुई है जो विकूंपुरसे १२ कोस पर है । 3 मांडाल तलाई मुंहता मांडाकी बनवाई हुई, विकूंपुरसे ९ कोस पर । 4 कानड़ियारी नामकी तलाई काना सोढाकी बनवाई हुई, विकूंपुरसे १० कोस । 5 से । 6 कुएँ इस प्रकार हैं । 7 राजपूत और दूसरे लोगोंके बँटवारेमें आये हुए गांवोंकी सूची । 8 टावरियोंवाला नामक गांव, टावरियों और मकवानोंका सम्मिलित ।

प्रोहितांरा धड़ा २–एक वडो, एक लोहड़ो[1] ।

सोळंकियांरै–सोळंकियांवाळो ।

सोमांरै–१ ग्रावधी, १ वजू, १ कूंपासर, १ पीथासर ।

मूळावत रिणधीररा पोतरांरै–१ जसूवेरो ।

डाहळियां–रजपूतांरो गांव नगररै कोहर किडांणै पीवै[2] ।

नायांरै–१ नायांरो-कोहर ।

सिरहड़-वडी–पैहली पाहुवांरै हुती[3], पछै राव सूरसिंघ ग्रापरा[4] भाई ईसरदासनूं दी ।

जैतुंगांरै–१ कोळियासर ।

१ गिरराजसर ।

१ नगराजसर ।

१ चिहु ।

१ वहदड़ो ।

१ जुढियो सेवड़ो ।

चारणांरै गांव ३[5]–

२ गाडणांरै–१ खंडोखळी, १ मेघांरो, १ देपांरो । (३)[6]

१ कन्हियांरै–वरजांगरो ।

१ रतनुंग्रांरै–बुढारो गांव ।

सिरहड़-वडी–पैहली पाहुवांरै हुती[7], पछै जसहड़ांनूं दी थी । हमैं भांनीदासरा बेटा वसै[8] । कोहर १८, तळाई घणी । वावडी[9] भा।। दळपतवाळी । वेरा[10] पुरसे ४ ।

पारमें पांणी घणो मीठो । वाय[11] २, पांणी पाररै वेरै पुरस ४, पांणी मीठो । तळावमें घड़ासर भरै तो पांणी वरस १ रहै[12] ।

---

1 छोटा । 2 डाहळियों राजपूतोंका गांव नगरके लोग किडाणा गांवके कुएँका पानी पीते हैं । 3 वड़ी सिरहड़ गांव पहले पाहुवा-राजपूतोंका था । 4 अपने । 5 चारणोंके तीन समूहोंके गांव । 6 गाडण-चारणोंके अधिकारमें सिरेमें दो गांव बताये हैं किन्तु पेटेमें उक्त तीन गांव दिये हुए हैं । 7 थी । 8 अब भानीदास के बेटे रहते हैं । 9 वापी, बावड़ी 10 कुएँ । 11 वापी । 12 तालावमें घड़ोंसे ही (केवल पीनेके लिये) पानी भरा जाय तो १ वर्ष तक पानी रहे ।

नींबली–तिण कोहर ६[1], सर बांभणांवाळो तळाव वडो[2], वेरा पार में ।

भरोसर–केई कहै विकूंपुररो, के कहै जुदो[3] । पारमें वेरां पांणी घणो । विकूंपुर था कोस १६, फळोधी था कोस २२, वीकानेर था कोस २५ ।

पूगळरा धणी–

१ राव केल्हण केहररो ।
२ राव चाच केल्हणरो ।
३ राव वैरसल चाचारो ।
४ राव सेखो वैरसलरो ।
५ राव हरो सेखारो ।
६ राव वरसिंघ हरारो ।
७ राव जेसो वरसिंघरो ।

राव जेसो वरसिंघरो पूगळ धणी हुवो । मरोट पिण ली हुती[4] । वडो अखाड़सिध-अभंगनाथ हुवो[5] । कहै छै राव जेसे बावीस वेढ जीती[6] । वडा-वडा बोल वाळिया[7] । आप मरोट पिण केहेक दिन रहतो[8] । पछै मुलतांणरी फोज ऊपर आई तठै राव जेसो कांम आयो[9] ।

वात एक–

राव मालदेव गांगावत घणूं तपियो[10], तरै सारां गढां, पाडोसियांनूं धकाया[11] । सु पूगळ ऊपर राव मालदेवरी फोज घणो साथ आयो हुतो[12], पण तिणांरा गांव इण कांठै नहीं[13], नै राव भांण

1 जिसमें कूँएँ ६ । 2 ब्राह्मणोंवाला-सर नामक तालाब बड़ा है । 3 भरोसर गांवको कई तो विकूंपुरका कहते हैं और कई कहते हैं कि वह जुदा है । 4 मारोठ भी इसने ले लिया था । 5 बड़ा रण-कुशल और अजेय वीर हुआ । 6 कहते हैं कि राव जैसेने २२ लड़ाईयां जीतीं थीं । 7 बड़ी-बड़ी प्रतिज्ञाओंका पालन किया । (शत्रुओंका प्रतिशोध किया) 8 कई एक दिन (कभी-कभी) मारोठमें भी रहा करता था । 9 फिर जब मुलतानकी सेना चढ कर आई उसमें राव जैसा काम आ गया । 10 राव मालदेव गांगावतने बहुत समय तक और जबरदस्त शासन किया । 11 उस समय सभी गढ (गढ़पतियों) और पाड़ोसियोंको परास्त किया । 12 राव मालदेवकी बहुत बड़ी सेना पूगल पर चढ कर आई थी । 13 लेकिन इस ओरकी सीमा पर इनका कोई गांव नहीं ।

भोजराजोत चाडीरो धणी कटक साथै हुतो[1], तिणसूं असखेओ करनै चाडी ऊपर आयो[2]। तठै तीन वेढ जीती[3]। एकतो रा।। प्रथीराज भोजराजोत चाडी गांवरै खेड़ै कांम आयो[4]। कलो रतनावत गांव करणूंरो धणी, पातावत कितराइ साथसूं वाहर रिणमलसर कनै आपड़ियौ[5], तठै वेढ हुई। कलानूं कूट लोहड़ै पड़ियो[6], कलारी आंख गई। वेढ जेसै जीती। आघा खडिया[7] तठै[8] पोकरणरो साथ रावरै थांणैरो रा।। भोजराजरो बेटो रांणगदे हुतो, सु साथ लेनै आपड़ियो[9], नै[10] फळोधी थांणै रावरै भाटो धनराज खींवावत कलेण हुतो, तिके वेऊं[11] साथ गांव लाखासर वीकानेररै आपड़ियो, तठै वेढ हुई; राव रांणगदे भोजराजोतरा आदमी १७ कांम आया। आप पूरे घावै पड़ियो, ऊबरियो[12]। भाटी धनराजनूं भाटीए राख लियो[13]। वेढ आही जेसै जीती[14]। यूं तीने ही वेढ जीती[15]।

केहीक यूं पण कहै छै[16]—राव जेसो केईक दिन जोधपुर राव मालदेरै वास हुतो[17]। परगनै मेड़तैरो गांव रांयण पटै थो। पातावतांरो भांणेज हुतो[18]। केईक दिन चोटीलै रह्यो थो, तद पातावते घणा हीड़ा किया[19]।

गीतरो द्वाळो राव जेसारो[20]—

> अणभागो कळह सील सत इधकै,
> असुर घड़ा चोरंग चढ एम।

---

1 और चाडीका स्वामी राव भाग भोजराजोत सेनाके साथमें था। 2 जिससे झगड़ा करके चाडीके ऊपर चढ आया। 3 वहां पर तीन लड़ाईयोंमें विजय प्राप्त की। 4 चाडी गांवमें (के बाहरी प्रदेशमें) काम आया। 5 वाहर (पीछे) चढ कर के रिणमलसरके पास पकड़ा। 6 कलाको मार कर घायल कर दिया। 7 आगे चलाये। 8 वहां। 9 पकड़ा। 10 और। 11 दोनों। 12 स्वयं पूर्ण आहत होकर गिर पड़ा, किन्तु वच गया। 13 भाटी धनराजको भाटियोंने वचा लिया। 14 यह लड़ाई भी जैसेने जीत ली। 15 इस प्रकार इसने तीनों ही लड़ाईयोंको जीत लिया। 16 कई लोग इस प्रकार भी कहते हैं। 17 चाकरीमें था। 18 पातावतोंका भानजा था। 19 तब पातावतोंने इसकी वहुत सेवा की। 20 राव जैसाके संवंधमें कहे हुए गीत (छंद)का एक पद्यांश।

जो जीवीजै तो जेसा जिम,
जे मरजै तो जैसा जेम[1] ॥ १

आंक ८, राव कांन्ह जेसारो । पूगळ धणी हुवो । जेसानूं मुगले मरोटमें मारियो, तद कान्ह बंद पड़ियो हुतो[2] । पछै महाराजाजी रायसिंघजी, महाराजा मांनसिंघजी पातसाजीसूं अरज कर छोडायो ।

राव कांन्हरा बेटा–

९ राव आसकरण कांन्हरो, पूगळ धणी हुवो । समो बलोच पूगळ ऊपर आयो, राव कोट छोड पाधर में वेढ की, तठै घणा साथसूं कांम आयो[3] ।

९ रांमसिंघ कांन्हरो ।

९ मांनसिंघ कांन्हरो । नागोर राजा रायसिंघजी नै दलपत वेढ हुई तरै कांम आयो[4] ।

१० सूरजमल ।

आंक ९, राव आसकरण कांन्हरो, पूगळ धणी हुवो ।

बेटा आसकरणरा–

१० जगदेव आसकरणरो । १० नारणदास । १० सुरतांण ।
१० किसनसिंघ । १० गोयंददास । १० किसनदास ।

आंक १०, राव जगदेव आसकरणरो पूगळ धणी हुवो ।

राव जगदेवरा बेटा–

११ राव सुदरसण जगदेवरो । रा॥ मांन खींवावतरो दोहीत्रो[5] । जगदेव मुंवो, एक वार टीकै बैठो पूगळ । पछै संमत १७२२ राजा करण पूगळ मारनै इणांनूं परा काढिया[6] ।

---

1 अधिक शील और सत्यका पालन करने वाला राव जैसा शत्रुओंकी चतुरंगिनी सेनाके सम्मुख चढ कर गया और युद्धमें पीछे पांव नहीं दिया । (संसारमें) यदि जिया जाय तो जैसाके समान और मरा जाय तो जैसाके समान । (जीने और मरनेका जैसेने आदर्श उपस्थित किया) । 2 तब कान्ह कैदमें पड़ा था । 3 रावने कोट (का आश्रय) छोड़ कर मैदानमें लड़ाई की, जहां कई मनुष्योंके साथ काम आ गया । 4 कान्ह मानसिंहका बेटा, नागोरमें राजा रायसिंहजी और दलपतके परस्पर लड़ाई हुई तब मानसिंह काम आया । 5 खींवाके पुत्र राव मानका दोहिता । 6 फिर सम्वत् १७२२में राजा करणने पूगलको लूट कर के इनको निकाल दिया ।

११ महेसदास जगदेवरो। वीकानेररै साथ मारियो, संमत १७२२[1]।

११ जसवंत। ११ गोकळ। ११ खंगार। राजसिंघ।

वात गाडाळां-केलणांरी–

आगै आ खरड़, इणनूं कहवत मांहै गांव १४० लागै[2]। आ ठोड़ पैहली तो भाटियां-बुधां, रांणै राजपाळरा पोतरांरै हुती[3]। पछै बुधां कनै पड़िहार रांणै रूपड़ै ली[4]। तठा पछै विकूंपुरथा रिणमल केलणोत नीसरियो सु पड़िहारांरो भांणेज थो, पछै एक वार भांणेज थको आप रह्यो हुतो[5]। पछै पड़िहार दिन दिन गळता गया[6]। भाटी धरती दबावता गया। मुदै गांव बारू, तठै कोहर १२, वडो कोहर हेमराज-सर पड़िहार हेमराजरो करायो[7]।

बुध रांणा राजपाळरो।

राजपाळ, सांगो, मंझमराव, मंगळराव, विजैराव–रावळ वछुरो[8]।

तिण रांणा राजपाळरा बुधरो बेटो कमो, तिणरा धाराधार कहांणा[9]। वापसूं कोस १ वावड़ी तठै उणरी वडी ठाकुराई हुई।

रांणा राजपाळरी तो ठाकुराई मुथरा हुती। उठै मुगले रांणा राजपाळनूं मारियो; तरै राजपाळरो बेटो वुध मुथरा छोडनै इण खरड़ आय वसियो[10]। सु खरड़रो नांम बुधरो अजेस कहीजै छै[11]। बुधरा बेटा कमांनूं रांणै रूपड़ै पड़िहार बेटी परणाय[12], चूक कर मारनै[13] आ[14] धरती ली थी, तठा पछै[15] राव केल्हण विकूंपुर वसियो[16]। पछै राव केल्हण मुंवो[17]। टोको रिणमल केल्हणोतनूं हुवो। पछै रिणमल ही मुंवो।

---

1 सम्वत् १७२२ में वीकानेर वालोंने मार दिया। 2 पहले ऐसा कहा जाता है कि इस खरड़ प्रदेशमें १४० गांव माने जाते थे। 3 यह प्रदेश पहले राणा राजपाल के पोते वुध-भाटियोंके अधिकारमें था। 4 फिर वादमें वुध-भाटियोंसे पड़िहार राणा रूपड़ा ने (खरड़) ले ली। 5 फिर एक बार भानजेकी स्थिति में ही आकर रहा था। 6 फिर पड़िहार तो दिन-दिन कमजोर होते गये। 7 बड़ा कुआं हेमराजसर जो पड़िहार हेमराज का बनवाया हुआ है। 8 ये रावल वछूके वेटे। 9 उस राणा राजपाल का वेटा वुध और जिसका वेटा कमा, जिसके वंशज धाराधार कहलाये। 13 तव राजपाल का वेटा वुध मथुरा छोड़ कर इस खरड़ प्रदेशमें आकर रह गया। 11 उस खरड़ प्रदेश का नाम अभी तक 'वुधेरो' कहा जाता है। 12 व्याह कर के। 13 कपटसे मार कर के। 14 यह। 15 जिसके वाद। 16 निवास किया। 17 मर गया।

विगत–

१ राव केल्हण केहररो ।

२ राव रिणमल केल्हणोत ।

३ गोपो रिणमलोत, विकूंपुर पाट हुतो[1] । गोपा कनो[2] राव हरै विकूंपुर लियो । गोपो एक वार फळोधीरी लोहड़ी आयो हुतो[3], पछै मोत मुंओ[4] ।

३ जगमाल रिणमलरो । कहै छै एक वार रिणमल मुंवै टीको हुवो थो[5] । पछै अचळो रिणमलोत मुलतांण जाय तुरकांरो कटक आंण[6] जगमालनूं मरायनै वडा भाई गोपानूं विकूंपुर रै पाट बैसांणियो[7], नै जगमालरा बेटानूं परो काढियो[8] ।

४ जैतो पड़िहारांरो भांणेज थो, सु वाहिण मांमा कनै जाय वसियो[9] । पछै पड़िहार दिन दिन गळता गया[10], धरती सारी केल्हणे क्युं दे-लेनै दबाई[11] । खरड़री धरती सारीरा धणी केल्हण हुवा । पण पड़िहार अजेस इणां गावां मांही छै[12] । आ खरड़ विकूंपुरसूं जुदी जेसळमेर वासै[13], जुदी चाकरी करै[14] ।

जैतो जगमालरो । जगमाल रिणमलरो ।

५ ऊदो जैतारो ।

६ अभौ ऊदारो ।

७ हाथी अभारो ।

८ रांम महेवै कांम आयो, राव उदैसिंघ वेढ हारी तद[15] ।

९ खेतसी रांमरो ।

---

1 विकूंपुरकी गद्दी पर था । 2 से । 3 था । 4 जिसके बाद अपनी मौत मरा । 5 कहा जाता है कि रिणमल मरनेके बाद एक वार इसे टीका हुआ था । 6 लाकर । 7 बिठाया । 8 और जगमालके बेटेको निकाल दिया । 9 वह बाहिणमें अपने मामाके पास जाकर बस गया । 10 जिसके बाद पड़िहार दिन-दिन निर्बल होते गये । 11 कुछ दे-लेकर सारी धरती केल्हणोंने अपने अधिकारमें कर ली । 12 लेकिन पड़िहार अभी तक इन गांवोंमें रहते हैं । 13 यह खरड़-प्रदेश जैसलमेर राज्यमें है; विकूंपुरका खरड़-प्रदेश इससे अतिरिक्त है । 14 ये चाकरी भी जुदी करते हैं । 15 मेहवेकी जिस लड़ाईमें राव उदयसिंह हारा उसमें राम काम आ गया ।

१० जैसो । १० भागचंद ।

९ पंचाइण । ९ मालो । ९ चांदो । ९ मुथरो ।

केल्हणांरी खरड़रा इतरा कोहर[1] (१२)

बारू–१ वडो कोहर हेमराजसर, हेमराज पड़िहाररो । पुरसै २५, पांणी मीठो[2] ।

१ आकळी ।
१ गीधळो ।
१ चाडी ।
१ नरसिंघवाळो ।
१ खीचियांवाळो ।
१ तोळाऊ बीजो[3] ।

१ अवाह, पुरसै १७ पांणी मीठो ।
१ नांदड़ो ।
१ मीठड़ियो ।
१ नाचणो ।
१ लीकणो ।
१ भडळो ।

गांव–

१ बारू ।
१ सेखासर, कोहर नहीं ।
१ खीरवो, कोहर नहीं ।
१ नाचणो, हरभम-केल्हणोतरांनूं[4] ।
१ अवाह ।

१ अंतरगढो । १ लीकणो ।
१ घंटियाळी । १ सति-आहो । १ झाड़हर ।
१ बालांणो । १ कैरू ।
१ तांणांणो ।

तळाई खरड़ वांसै[5]—

१ रांणारी, मास ८ पांणी, रांणा रूपड़ारी खणाई[6] ।

१ रावरो तळाव, मास ८ पांणी रहै ।

१ खेतूरी । १ मेलूरो । १ जग मालरी । १ देवीदासरी ।

१ जवणीरी, सोहड़ रजपूतांणीरी खणाई[7] ।

१ अचलांणी, पांणी मास ६ रहै ।

१ सेखासर, सेखारो करायो वडो तळाव[8] ।

---

1 केल्हण-भाटियोंके खरड़-प्रदेशमें इतने कुएँ हैं । 2 बारू गांव में हेमराज पड़िहार का वनवाया हुआ वड़ा कुआं हेमराजसर है, जो २५ पुरस गहरा है और पानी मीठा है । 3 दूसरा । 4 नाचणा गांव हरभम-केल्हणोतोंको । 5 खरड़-प्रदेशको लगने वाली तलाइयां । 6 राणा रूपड़ाकी खुदवाई हुई 'राणारी तलाई,' जिसमें ८ महीने पानी रहता है । 7 'जवणीरी तलाई,' जिसे सोहड़ नामकी राजपूतानीने खुदवाया । 8 सेखाका खुदवाया हुआ 'सेखासर' नामक वड़ा तालाव ।

१ खीरवो। १ मेरारो। १ वैरोलाई। १ वैगण।

१ धारारी। १ देरांणी। १ जेठांणी। १ नींबलियो।

२ आको केल्हणोत। अै सेखासर धणी, अका कहावै[1]। फळोधीसूं कोस ६।[2] गांवमें कोहर नहीं। तळाव निपट वडो। सर-गोहूं घणा हुवै[3]। अका केल्हणोतनूं नाथू रिणमलोत मारियो[4]।

३ सेखो, जिण आपरै नांव सेखासर तळाव करायो[5]।

४ रतो।

५ किसनो।

६ अणंद।

७ मांनो।

३ खींवैरा बारू[6]।

४ वरसिंघ।

५ जांझण।

६ नादो।

७ धरमो।

८ बलू।

२ हरभम केल्हणोत। इणांरै खरड़में गांव नाचणो[7]।

३ नापो।

४ जाळप।

५ मांडण।

६ केसो। ६ सहसमल।

७ नारण।

८ कचरो।

२ विक्रमादीत केल्हणरो। इणांरै खरड़रो गांव खीरवो[8]।

३ रायमल।

४ रूपो।

५ सिवो।

६ रावत।

७ सुरतांण।

८ रायसिंघ।

९ जीवो।

३ वीदो।

४ खेतो।

५ तोगो।

६ भांण।

७ कलो।

---

1 सेखासरके ये स्वामी 'अक्का' (अकाके वंशज) कहलाते हैं। 2 सेखासर फलोधीसे ६ कोस पर है। 3 तालावकी सींचाई द्वारा गेहूँ बहुत उत्पन्न होते हैं। 4 केल्हणके बेटे अकाको नाथू रिणमलोतने मारा। 5 सेखा जिसने अपने नामसे 'सेखासर तालाब बनवाया। 6 खींवेके वंशज बारू गांवमें रहते हैं। 7 केल्हणके बेटे हरभम के वंशजोंको खरड़-प्रदेशमें नाचणा गांव। 8 केल्हणके बेटे विक्रमादित्यके वंशजोंको खरड़-प्रदेशका खीरवा गांव।

३ देवो विक्रमादीतरो, तिणरा भरोसरिया-भाटी[1] ।

२ कलकरन केल्हणरो, इणांरै गांव तांणांणौ[2] ।

३ चांपो ।

४ सांगो ।

५ ईसर, तणांणौं वसै[3] ।

भाटियांरी साख मांहै साख हमीरांरी कहीजै[4]—

हमीर रावळ देवराजरो । देवराज मूळराजरो, चाकर जेसळमेररा ।

नरो अजावत । अजो किसनावत । किसन चूंडावत । आगली खबर नहीं[5] ।

जैसळमेर च्यार परधांन भाटी साख-साखरा[6] । तिणां मांहै एक परधांनगी हमीरांरी भाटियांरै पोकरण हुती[7] । तद घणा हमीर कैरडूंगर-वाहळा ऊपर रैहता । जेसळमेररै देस गांव १ मछवाळो इणांरै, जेसळमेर था कोस ४ जैसुरांणा कनै[8] ।

मुथरो रायमलोत, मुथरो हरावत, मांनो सिवदासोतरो गूढो कैरडूंगर कनै हुतो[9], तठै रा॥ प्रथीराज अखैराज दलपतोत रा॥ उदैसिंघ वाघावतरै वैर इणांरा गूढा मारनै संमत १६९२ गायां १००० लीवी[10] । वांसै पोकरणरो साथ, राव सूरसिंघ वलू नै हमीर, मुथरो, पतो, मांनो, वाहरू हुवा[11] । मुंडेळाई मांगळियांरै डेरो कियो[12], ऊपर आया, वेढ हुई[13] । राव सूरसिंघ, वलू कांम आया । तठै मुथरो, पतो कांम आया । पतो पूरे घावै उपाड़ियो[14] ।

---

1 जिसके वंशज भरोसरिया-भाटी । 2 इनके पास ताणाणा गांव । 3 ईशर ताणाणामें रहता है । 4 भाटियोंकी शाखाओंमें एक शाखा हमीरांकी कहलाती है । 5 इसके आगेका पत्ता नहीं । 6 जैसलमेरमें अलग-अलग शाखाओंके चार भाटी प्रधान हैं । 7 उनमें एक प्रधान पद हमीर-भाटियोंका पोकरनका था । 8 जैसलमेरसे चार कोस पर जैसुराना गांवके पास । 9 गुढा (रक्षा-स्थान) कैरडूंगर नामक पहाड़ीके पास था । 10 उदयसिंह वाघावतकी शत्रुताका वदला लेनेके लिये सम्वत् १६९२ में इनके गुढोंको मार कर के इनकी १००० गायें लेलीं । 11 वाहर चढने को तत्पर हुए । 12 मूंडेलाई गांवमें मांगलियोंके यहां डेरा दिया । 13 चढ कर आये और लड़ाई हुई । 14 पूर्ण आहत पताको उठा कर ले जाया गया ।

मुथरा हरावतरा बेटा—

२ जोगी। २ रतनो।

कांधळ सिवदासोतरा बेटा—

२ देवराज।

रायमलरा बेटा—

२ सकतो। २ पतो। २ हरचंद। २ रूपसी।

भाटी दुरगादास मेघराजोत। मेघराज वीरदासोत।

हमीरार बेटा पोता—

२ लूणकरण हमीर रो। इणरै बेटा पोतरा जोधपुररै दरबार चाकर।

३ सत्तो लूणकरणोत, राव रणमल साथै चीतोड़ कांम आयो। सत्तारो राव रिणमलसूं बोल हुतो—"थां वांसै हूं नहीं जीवूं[1]।"

४ उरजन सत्तावत। राव वीकैजीरै मोहिलांरी लड़ाई कांम आयो[2]।

५ सांवत उरजनरो। वीकानेर रावजी श्री लूणकरणजीरै कांम आयो।

६ सीहो सांवतरो, मीच मुंवो[3]।

७ रायपाळ सीहावत, राव मालदेरै वास। खींवसर पटै। नागोर-रो गांव अटबड़ो, खेजड़लो। पछै राव चंद्रसेनरै वास थो। पछै राव चंद्रसेन मोटा राजा ऊपर फळोधी गयो तठै कांम आयो[4]।

८ आसो रायपाळोत। राजा भगवांनदास कछवाहारै वास थो। उठै ही मुंवो[5]।

९ गोपाळदास आसावत। वडो रजपूत, पातसाही चाकर थो। पछै संमत १६६६ खेजड़लो वसी राखणनूं दियो थो[6]। पछै संमत

---

1 राव रिणमलके साथ सत्ताकी यह प्रतिज्ञा थी कि तुम्हारे मरने के बाद मैं भी नहीं जीऊंगा। 2 मोहिलोंके साथ राव बीकाजीकी लड़ाईमें काम आया। 3 अपनी मौत मरा। 4 पीछे जब राव चंद्रसेन मोटाराजा पर चढ कर के फलोधी गया वहां काम आया। 5 उधर ही मर गया। 6 पीछे सम्वत् १६६६ में खेजड़ला गांव बसीके रूप में दिया था।

१६६९ राजाजी दिखण थी गुजरात मांहै हुय देस पधारिया, तद साथै हुवौ आयौ[1]। पिण पातसाहजी बुरो मांनियो[2]। पछै संमत १६७१ रावळै वसियो। दूधवड़रो पटो वळै दियो[3]।

१० दयाळदास गोपाळदासोत। संमत १६६७ रावळै वसियो। ओळवी पटै[4]। पछै संमत १६७८ भाद्राजणरो पटो गांव २४सूं दियौ। पछै संमत १६८२ भाद्राजणरो पटो छाडनै ओळवीरो हीज पटो राखियो[5]। भाद्राजण छीतरदास रै हतो[6]। गोपाळदासजी चाकरी न करै। पछै वळै संमत १६९० जाळोररो फोजदार कियो[7], उठै राव रायमल उदैसिघोत महेवचानूं पकड़ियो; रोकियो, पछै छोड़ियो। पछै संमत १६९१ जाळोररी हाकमी उतरी[8]। पटो उतरियो[9]। पछै दूधवड़ था वसी छाड़नै बारै गूढो कियो थो[10]। संमत १६९१ जेठ सुदि ११ रै दिन राव चांद वाघोत महेवचो मेवाड़ रांणाजीरै वास थो, सु साथ कर ऊपर आयो, दयाळदासनूं मारियो[11]।

११ छीतरदास दयाळदासोत। पैहली गोपाळदासजीरी विजाई चाकरी करतो[12]। पछै संमत १६९० दूधवड़रो पटो दयाळदासनूं दियो, तद ओळवीरो पटो दियो थो। पछै संमत १६९२ छाड़नै अमरसिंघजी साथै गयो थो। पछै वळै पाछो आयो, तरै संमत १६९५ भाद्राजणरो पटो राजसिंघ था भेळो दियो[13]। राजसिंह जसवंतोत नूं भाद्राजण पटै थो, सु मोहा-मांही छीतर नै राजसिंघ जसवंतोत उपाव हुवो[14], तठै रा॥ राजसिंघ जसवंतोत छीतरदासनूं भाद्राजणरै कोट मांहै मारियो।

---

1 तब यह भी साथमें होकर आ गया। 2 लेकिन बादशाहने बुरा माना। 3 फिर सम्वत् १६७१ जोधपुरमें चाकर हो गया। तब दूधवड़ गांवका और पट्टा कर दिया। 4 ओलवी गांव पट्टेमें। 5 लेकिन बादमें सम्वत् १६८२में भाद्राजुनका पट्टा छोड़ कर केवल ओलवीका पट्टा ही रखा। 6 भाद्राजुन छीतरदासको मिला हुआ था। 7 बादमें फिर सम्वत् १६९०में जालोरका फौजदार नियुक्त किया। 8 तब सम्वत् १६९१में जालोरकी हाकमी उतर गई। 9 गांवोंका पट्टा भी उतर गया (जागीरी भी खोस ली गई)। 10 फिर दूधवड़की बसीको छोड़ कर बाहिर गुढा करके रहा था। 11 मेहवचा राव चांद वाघोत मेवाड़ राणाजी का चाकर था, वह सम्वत् १६९१ जेठ सुदी १ को अपने आदमियोंके साथ चढ कर आया और दयालदासको मार दिया। 12 पहले गोपालदासजीकी विजाईमें चाकरी करता था। 13 तब सम्वत् १६९५ राजसिंहके साथमें भाद्राजुनका पट्टा कर दिया था। 14 सो छीतर और राजसिंह जसवंतोतके परस्पर झगड़ा हो गया।

११ राजसिंघ दयाळदासोत। पैहली भाद्राजणरो पटो छीतरदास भेळो थो[1]। पछै संमत १६६६ समदोळाव गांव ४ सूं पटो दियो[2]।

११ केसरीसिंघ दयाळदासोत। संमत १६६२ खेजड़लारो पटो गांव ४ सूं।

११ भगवांनदास दयाळदासोत। दयाळदास भेळो कांम आयो[3]।

११ तेजसिंघ दयाळदासोत।

६ नराइणदास आसावत। राजा मांनसिंघजीरो चाकर। पछै राजा रांम कह्यो, तद रावळै वसियो थो[4]। संमत १६७३ मेड़तारी कुड़कीरो पटो थो[5]। संमत १६७६ मेड़तारो पटो उतरियो तद पाछो राजा भावसिंघरै वसियो[6]।

६ रूपसी आसावत। संमत १६४१ वोपारी सोझतरी गांव ३ सूं दी थी[7]। पछै संमत १६५१ गूढो जोधपुररो पटै[8]। वडो रजपूत थो।

१० सिंघ रूपसीयोत। संमत १६६७ रिवड़ी सोझतरी पटै[9]। संमत १६७७ मल्हार पटै थो[10]।

११ रांमदास। ११ प्रथीराज।

१० जगनाथ रूपसीयोत। पैहली दयाळदासजीरै चाकर थो। पछै संमत १६७३ दोढोळाई मेड़तारी दी थी[11]। संमत १६८५ आगरै थी आवतां मारांणो[12]।

---

1 राजसिंह दयालदासोतको भाद्राजुनका पट्टा पहिले छीतरदासके शामिल था। 2 बादमें सम्वत् १६६६में समदोलाव गांवका चार अन्य गांवोंके साथ पट्टा कर दिया। 3 दयालदासके साथ काम आया। 4 राजा मानसिंहजीका चाकर था। जब राजाजी मर गये तब वहीं रह गया था। 5 सम्वत् १६७३में मेड़ते परगनेके कुड़की गांवका पट्टा था। 6 सम्वत् १६७६में जब मेड़ताका यह पट्टा उतर गया तब वापिस राजा भावसिंहके यहां बस गया। 7 सम्वत् १६४१में सोजत परगनेका वोपारी गांव तीन अन्य गांवोंके साथ पट्टेमें दिया था। 8 फिर सम्वत् १६५१में जोधपुर परगनेका गुढा गांव पट्टेमें था। 9/10 सम्वत् १६६७में सोजत परगनेका रिवड़ी गांव और सम्वत् १६७७में मल्हार पट्टेमें थे। 11 फिर मेड़ते परगनेका दोढोलाई गांव सम्वत् १६७३ में दिया था। 12 सम्वत् १६८५में आगरासे आता हुआ मारा गया।

१० पंचाइण रूपसीयोत। संमत १६७२ वेरावस खींवसररो पटै। संमत १६८४ धारणवाय चौकड़ी पटै[1]।

१० मोहणदास रूपसीयोत, राव दळपतसिंघजीरै वास थो। सु दळपतजी नै पातसाह वेढ हुई, दळपतजी कांम आया, तद हाथी गोपाळदासोत साथै कांम आयो[2]।

१० जसवंत रूपसीयोत।

११ बलू जसवंतोत। संमत १६७४ जाळोर रा खारो नरसांणो था[3]। संमत १६७७ तुवरां पटै थी। चोखावसणी मेड़तारी थी[4]।

१० महेसदास रूपसीयोत। संमत १६७४ जाळोररो सेरांणो थो, संमत १६७७ नीलावो जैतारण रो। संमत १६८० चौकड़ी मेड़तारी[5]।

९ डूंगरसी आसावत।

१० राघोदास डूंगरसीयोत। संमत १६७७ जाळोर रो साहेलो गांवां ५ सूं थो। सं० १६७८ तिमरणीरी मुंहम कांम आयो[6]।

११ जगनाथ राघोदासोत। संमत १६७८ मेड़तारो घोड़ाहड़ नै गांव ३ जाळोररा था[7]।

९ ठाकुरसी आसावत।

१० वेणीदास ठाकुरसीयोत। संवत १६६७ चोपड़ो गांव ५ सूं थो पटै। संमत १६७६ पटो तागीर कियो। पछै साहिजादा खुरमरै वसियो। पूरवमें रांम कह्यो[8]।

---

1 सम्वत् १६७२में खींवसरका वेरावस गांव और सम्वत् १६८४में धारणवाय और चौकड़ी गांव पट्टेमें। 2 तब हाथी गोपालदासोतके साथ यह भी काम आ गया। 3 सम्वत् १६७४में जालोर परगनेके खारो और नरसाणो गांव पट्टेमें थे। 4 सम्वत् १६७७में तुवरां गांव और मेड़ता परगनेका चोखावासणी गांव पट्टे में थे। 5 सम्वत् १६७४ में जालोर परगनेका सिराणा, सम्वत् १६७७में जैतारनका नीलाव्रा और सम्वत् १६८०में मेड़ताका चौकड़ी गांव पट्टेमें थे। 6 सम्वत् १६७७ में जालोर परगनेका साहेला गांव पांच गांवोंके साथ पट्टेमें था। सम्वत् १६७८में तिमरणी के युद्धमें काम आया। 7 सम्वत् १६७८में मेड़ते परगनेका घोड़ाहड़ गांव और तीन गांव जालोर परगने के पट्टेमें थे। 8 सम्वत् १६६७में पांच गांवोंके साथ चौपड़ा गांव पट्टेमें था। सम्वत् १६७६में पट्टा तागीर हुआ। फिर शाहजादा खुर्रमके यहां बस गया और पूर्वमें मरा।

९ सुरजन आमावत । सं. १६७२ चांपासर थो । संमत १६७४ महेसियो जैतारणरो । संमत १६८० मांणकियावस मेड़तारो थो । पछै रांम कह्यो[1] ।

१० कांन्ह सुरजनोत । संमत १६८४ नागोररा गांव ३ पटै[2] ।

८ जेसो रायपाळोत । पैहली जेसो रा॥ प्रथीराज पातावतरै वास थो । पछै संमत १६४१ मोटा राजाजीरै वसियो । दांतीवाड़ो वसीनूं दियो थो[3] । जेसोजी परधांनांमें पूछीजण जोगा था[4] । संमत १६४९ लाहोरमें रांम कह्यो[5] ।

९ गोपाळदास जेसावत । राजा रायसिंघजीरै रावळै वसियो[6] । संमत १६५२ दांतीवाड़ो[7] । संमत १६५५ चंडावळ सोभतरी[8] । संमत १६५६ खेजड़लो गांव ३ सूं दियो थो[9] । वडो डील थो[10] । पातसाही दरबार उकील थको रैहतो[11] ।

१० माधोदास गोपाळदासोत । वडो रजपूत । खेजड़लो पटै । संमत १६६६ ओळवी, भागेसर पटै । पातसाही दरबार उकील रैहतो । संमत १६८७ रांम कह्यो[12] ।

११ मुकंददास माधोदासोत । संमत १६८७ भागेसर[13] ।

१२ मुरारदास ।

११ दयाळदास माधोदासोत ।

१२ वेणीदास ।

११ गिरधरदास माधोदासोत ।

११ अचळदास माधोदासोत ।

---

1 फिर मर गया । 2 सम्वत् १६८४में नागोर परगनेके तीन गांव पट्टेमें । 3 दांतीवाड़ा गांव वसीके रूपमें दिया था । 4 प्रधान सरदारोंमें जैसोजी पूछे जाने योग्य (बुद्धिमान) व्यक्ति था । 5 सम्वत् १६४९में लाहोरमें मरा । 6 राजा रायसिंहजीके यहां जाकर वसा । 7/8/9 सम्वत् १६५२में दांतीवाड़ा, सम्वत् १६५५में सोजत परगनेका चंडावल और सम्वत् १६५६में खेजड़ला तीन अन्य गांवोंके साथ पट्टेमें दिये गये थे । 10 (१) भरकम शरीरका था । (२) वड़े परिवार वाला था । 11 बादशाही दरबारमें वकीलकी हैसियतसे रहता था । 12 वड़ा (शूरवीर) राजपूत । खेजड़ला गांव पट्टेमें था, फिर सम्वत् १६६६में ओलवी और भागेसर गांव पट्टेमें मिले । बादशाही दरबारमें वकीलकी हैसियतसे रहता था । सम्वत् १६८७में मरा । 13 सम्वत् १६८७में भागेसर गांव पट्टेमें ।

१२ वीठळदास गोपाळदासोत। संवत १६६७ कूंपड़ावस बीलाड़ारो पटै। संमत १६७४ रेवत जाळोररो[1]। संमत १६७७ नांदियो लवेरारो[2]। पछै छाड़ियो। भावसिंघ कांन्होतरै वसियो[3]।

९ रायसिंघ जेसावत। संमत १६६० वाड़ो पीपाड़रो पटै। संमत १६६२ मांडवै कांम आयो[4]।

१० सुरतांण रायसिंघोत। संमत १६६९ सूरजवासणी पटै। संमत १६८० सिणली धवारी पटै[5]।

११ राघोदास सुरतांणोत।

११ बलू सुरतांणोत। संमत १६८९ जुड़ली पटै।

९ गोयंददास जेसावत। सं० १६५२ जैतीवास बीलाड़ारो पटै। संमत १६७१ भाटी गोयंददासजी साथै कांम आयो।

१० नरहरदास गोयंददासोत। संमत १६७१ गोयंददासजी कांम आयो तद लोहड़ै पड़ियो थो। संमत १६७२ जैतीवास (ब)रकरार। सं० १६९२ रांम कह्यो[6]।

११ रतनसी नरहरदासोत।

१० सुंदरदास गोयंददासोत। सं० १६८० भांभेळाई पटै। संमत १६९२ जैतीवास पटै दियो[7]।

१० महेसदास गोयंददासोत। सबळसिंघ राजावतरै वास थो। पछै रांम कह्यो।

११ कल्यांणदास।

९ भांण जेसावत। संमत १६५० राजलो-तेजारो पटै थो[8]। पछै संमत १६५६ विजियावासणी[9]। सं० १६६१ छाड़ियो। मेड़तै

1 सम्वत् १६७४ जालोरका रैवत गांव पट्टेमें। 2 सम्वत् १६७७में लवेराका नांदिया गांव पट्टेमें। 3 पीछे छोड़ कर भावसिंह कान्होतके यहां वस गया। 4 सम्वत् १६६०में पीपाड़का वाड़ा गांव पट्टेमें। सम्वत् १६६२ मांडवेमें काम आया। 5 सम्वत् १६८०में धवाका सिणली गांव पट्टेमें। 6 सम्वत् १६७१में गोयंददासजी काम आये तब यह आहत हुआ था। सम्वत् १६७२में जैतीवास गांव बरकरार रहा। सम्वत् १६९२में मरा। 7 सम्वत् १६८०में भांभेलाई गांव पट्टेमें था और सम्वत् १६९२में जैतीवास भी पट्टेमें दिया। 8 सम्वत् १६५०में तेजाका-राजला नामक गांव पट्टेमें था। 9 फिर सम्वत् १६५६में विजियावासणी गांव पट्टेमें।

भांण नै रा ॥ वेणीदास पूरणमलोतरै फोजदार थको थो[1] । पछै कांन्ही-दासरै लोगै खोडो काढियो, तिण दिनसूं राजाजी रीसांणा[2] । पछै राजाजी देस पधारिया, तद दरबार बैठां मैंहदली कना कहाड़ियो—अै बेऊं ठाकुर आवै तरै गुदरावै—"वेणीबाई नै भांणीवाई जुहार करै छै[3] ।" पछै अै बेऊं ठाकुर छाड़नै किसनसिंघजीरै वसिया[4] । पछै सं० १६७७ वळै पाछा आंणनै भांणनूं कुहड़ गांवां ३ सूं दीवी ।[5] । संमत १६७८ जोधपुर सिकदार[6] ।

१० नरसिंघ भांणोत । संमत १६७७ कुहड़ पटै । सं० १६७२ सीवळतो, कपूरियो पटै दिया था ।

११ हररांम । ११ सिवदास । ११ भींव ।

८ रांणो रायपाळोत ।

९ पतो रांणावत । माधोसिंघ कछवाहेरो चाकर । अजमेर में कांम आयो ।

१० सूजो पतावत । संमत १६७२ गांव ५सूं भांडोळाव पटै । सं० १६७३ गागडांणो मेड़तारो पटै । सं० १६७८ गजसिंघपुरो पटै । सं० १६८७ वीझवाड़ियो गांव ४ सूं पटै ।

११ लूणो सूजावत । ११ कांन्ह सूजावत ।

९ ईसरदास रांणावत । रांणाजीरै वास । पुररो परगनो पटै[7] ।

१० आईदांन ईसरदासोत । रांणाजीरै वास ।

९ रायमल रांणावत ।

१० पंचाइण ।

---

1 सम्वत् १६६१में छोड़ दिया तब मेड़तेमें भाण और राजा वेणीदास पूरणमलोत-के यहां फौजदारकी नौकरीमें था । 2 पीछे कान्हीदासके लोगोंने मुसलमानी डाढ़ी(?)बनवाई उस दिनसे राजाजी नाराज हो गये । 3 फिर राजाजी जब देशमें पधारें तो दरबारमें बैठे ही महदअलीसे कहलवाया कि जब ये दोनों ठाकुर आवें तब गुजारिश की जावे कि 'वेणीवाई और भाणीवाई जुहार कर रही हैं ।' 4 फिर ये दोनों ठाकुर छोड़ कर के किशनसिंहजीके यहां बस गये । 5 पीछे सम्वत् १६७७ फिर वापिस बुला कर भाणको तीन गांवोंके साथ कुहड़ गांव पट्टेमें दिया । 6 सम्वत् १६७८में जोधपुरमें सिकदार नियुक्त हुआ । 7 राणाजीके यहां चाकरी और पुर परगना पट्टेमें ।

९ सादूळ रांणावत । ९ नाथो रांणावत । ९ वैरसल रांणावत ।

८ अखैराज रायपाळोत ।

९ भगवांनदास अखैराजोत ।

१० सुंदरदास भगवांनदासोत ।

११ गोपाळदास सुंदरदासोत । खुरमरी वेढ कांम आयो[1] ।

१० स्यांमदास भगवांनदासोत । करमसेनरै वास । पंवार झूंविया तठै कांम आयो[2] ।

१० पंचाइण भगवांनदासोत । करमसेनरै वास ।

९ केसोदास अखैराजोत ।

९ मनोहरदास अखैराजोत । कछवाहा प्रतापसिंघजीरै वास । पूरव-में कांम आयो ।

९ राघोदास अखैराजोत । कछवाहा प्रतापसिंघरै वास थो । पूरबरी मुंहम कांम आयो[3] ।

८ भाखरसी रायपाळोत ।

९ सुरतांण भाखरसीयोत ।

१० सलैदी सुरतांणोत ।

९ रामदास भाखरसीयोत ।

९ नरसिंघदास भाखरसीयोत ।

८ किसनदास रायपाळोत ।

९ जेतमल सीहावत । राठोड़ जसवंत डूंगरसीयोतरै वास थो । जसवंत साथै कांम आयो ।

वात—

भाटी जेसो कलिकरनरो । कलिकरन केहररो । तिण जेसाथी जेसांरी-साख कहांणी[4] । जेसै जेसळमेर छाडनै एक वार फळोधीरै गांव किणही रह्या नहीं[5] । किरड़ारै जोड़ मांहि आय रह्या[6], तठै

1 खुर्रमसे लड़ाई हुई उसमें काम आया । 2 करमसेनके यहां चाकर । पंवारोंने लड़ाई की उसमें काम आया । 3 पूर्वमें लड़ाई हुई उसमें काम आया । 4 उस जैसासे भाटियोंमें एक शाखा जैसा-शाखा कही जाने लगी । 5 जैसा-शाखाके भाटी जैसलमेर छोड़ कर फलोधी प्रदेशके किसी भी गांवमें एक वार भी नहीं रहे । 6 किरड़ा गांवकी जोड़में आकर रहे जहां मूला नक्षत्रमें राणी लिखमी (लक्ष्मी) का जन्म हुआ ।

रांणी लिखमी मूळै जाई, तरै हरभमरै नांनांणै मेली[1]। नै जेसोजी भाउंडै नागोररै गांव गया[2]। उठै कोट करायनै मांणस राखनै रांणा कनै चीतोड़ गया[3]। उठै गांव १४० तांणो मला सोळंकीवाळो दियो[4]। तठै रांमदास माल्हणरो बाप मारियो[5]। रांणा कुंभा थकां आयां पछै ओ पटो वेहतो थो[6]। दीवांणनूं कह्यो – 'कहो तो एक वार दरगाह जावां; जेसळमेरनूं धको दां[7]।' पछै सीख दीवी[8]। मास २ दिल्ली रह्या। उठै मुंवा[9]। पछै रांणै पटो भैरवदास जेसावतनूं रावाई देनै गांव १४० तांणो दियो[10]। वसी नागोररै गांव भाउंडां हीज हुती[11]। भैरवदासरी वसीरा बलोचे वित लिया[12]। भैरवदास आदमी ४०सूं आपड़ कांम आयो[13]। तरै रांणै पटो अचळदास भैरवदासोतनूं तांणैरो दियो। नै वसी भाउंडै रहि न सकै[14]। तरै रांणी लिखमी राव सूजासौं अरज करनै गांव चोपड़ां वसीनूं दिरायो[15]। वसी अचळारी चोपड़ै रही। आप मेवाड़ रह्या।

जेसारा बेटा–

२ अणंद राव सूजारै वास। भैरवदास जेसावतनूं सूर-माल्हण मारियो, तरै अणंद सूरनूं गोढवाड़री अहिलांणी मारियो[16]।

२ जोधो। २ भैरवदास। २ वणवीर।

---

1 तब उसे हरभमकी ननिहाल भेज दिया। 2 और जैसाजी नागोर परगनेके भाउंडे गांवको चले गये। 3 वहां कोट बनवा कर और उसमें आदमी रख कर राणाके पास (सेवामें) चित्तोड़ चला गया। 4 वहां (राणाने) उसे १४० गांवोंके साथ मल्ला सोलंकी वाला ताणा गांव पट्टे में दिया। 5 वहां माल्हणके बाप रामदासको मार दिया। 6 यहां आनेके बाद राणा कुंभाके काल तक इनका पट्टा चालू (कायम) था। 7 इसने दीवान (राणाजी)को कहा कि यदि आप आज्ञा दें तो एक बार बादशाहकी सेवामें जाऊँ और जैसलमेरको धक्का लगाऊँ। 8 पीछे आज्ञा दे दी। 9 वहीं मर गया। 10 जिसके बाद राणाने जैसाके बेटे भैरवदासको रावकी पदवी देकर १४० गांवोंके साथ ताणाका पट्टा दिया। 11 वसी नागोर परगनेके भाउंडा गांवमें ही थी। 12 बलोच लोगोंने भैरवदासकी वसीका वित्त (गाय-भैंस आदि चौपायोंका समूह) ले लिया। 13 भैरवदासने अपने ४० आदमियोंके साथ पीछे भाग कर उनको पकड़ लिया और लड़ाई की जिसमें वह काम आ गया। 14 और वसी भाउंडेमें रह नहीं सके। 15 तब रानी लक्ष्मीने राव सूजासे अर्ज करके वसीके लिये चोपड़ा गांव दिलवाया। 16 तब आनंदने सूरको गोढवाड़के अहिलाणी गावमें मार दिया।

भाटी अणंद जेसावतरो परवार, आंक २–

३ नींबो आणंदोत । ३ दूदो आणंदोत । ३ परबत आणंदोत ।
३ पीथो आणंदोत ।

नींबो आणंदोत, आंक ३ । राव मालदेरै वास । लवेरो पटै । लवेरै राजथांन कियो[1] । लवेरै कढाई, दीवडो, भूंजाई, वडो पळो[2] । पछै सूर पातसाहरी वडी वेढ घावै पड़ियो[3], तरै चाकर उपाड़ ल्याया, घरै आयां पछै कांम आयो[4] ।

नींवैरा बेटा–

४ मांनो नींबावत । ४ पतो नींबावत । ४ रिणमल नींबावत । ४ गांगो नींबावत । ४ किसनो । ४ मूळो । ४ भोजराज ।

मांना नींबावतरो परवार, आंक ४ । मोटो राजा फळोधी, तद मांनो चाकर हुतो, कुंडळरी वेढ मांही हुतो[5] ।

५ गोयंददास मांनावत । ५ सुरतांण मांनावत ।

भाटी गोयंददास मांनावत वडो रजपूत हुवो । संमत १६४० मोटै राजारै वास थो । लवेरैरी वासणी पावता[6] । पछै एक वार मोटै राजा दरगाह मेलियो सु कांम कर आयो, तरै मोटै राजा रीझनै मांगळो सिवांणारो वधारै दियो[7] । पछै सं० १६४३ वास ४ लवेरो

1 लवेरेमें अपना राजस्थान (राजधानी) बनाया । 2 इसके समयमें कड़ाही, दीवड़ी, भुंजाई और बड़े पळे के लिये लवेरा प्रसिद्ध था (भोजन बनानेके बड़े परिमाणके इन साधनोंसे अपरिमित भोजन सामग्री बनती ही रहती थी) । दीवड़ी=(१) पाथेय, (२) अजाचर्म या कपड़ेका बना एक जलपात्र । भुंजाई=अधिक परिमाणमें बनाई जाने वाली मिष्टान्नादि भोजन-सामग्री । पळो=(१) तैल घी आदि लेने-निकालने एवं नापनेका एक उपस्कर; (२) शरण । 3 फिर बादशाह शेरशाह सूरके साथ (राव मालदेवकी) बड़ी लड़ाईमें घायल होकर गिर गया । 4 तब चाकर उठा कर ले आये और घर आनेके बाद मर गया । 5 मोटा राजा जब फलोधीमें था तब माना मोटे राजाका चाकर था और कुंडलमें जो लड़ाई हुई उसमें वह मौजूद था । 6 भाटी गोयंददास मानावत बड़ा वीर राजपूत हुआ । सम्वत् १६४०में यह मोटा राजाके यहां चाकर था । लवेरेके वासणी गांवका हासल पाता था (उपभोग करता था) । 7 फिर एक बार मोटे राजाने गोयंददासको बादशाही दरगाहमें जिस कामके लिये भेजा था वह करके आ गया, तब मोटे राजाने प्रसन्न हो कर सिवाने परगनेका मांगला गांव और दे दिया ।

पायो[1]। पछै मोटो राजा संमत १६५१ काळ कियो[2]। पछै सं० १६५२ राजा सूरजसिंघ लवेरा वासै गांव २५ दिया, तठा पछै परधांनगी दी[3]। पछै सं० १६६३ लवेरारै पटै ऊपर आसोपरो पटो। पातसाही मांहै हेटरो जैतवार हुवो[4]।

संमत १६७१रा जेठ सुद ८ अजमेर रा।।० किसनसिंघ उदैसिंघोत राजाजीरा डेरां ऊपर गोयंददासनूं मारणनूं आयो। तठै भाटी गोयंददास, रा।। किसनसिंघ, करन सकतसिंघोत घणा साथसूं कांम आयो। पातसाह जहांगीररी तणावां मांहै[5]।

भा।। गोयंददासरा बेटा, आंक ५—

६ मोहणदास। ६ नरहरदास। ६ रामसिंघ। ६ वेणीदास। ६ प्रथीराज।

भाटी मोहणदास गोयंददासोत। संमत १६६३रै वरस कंवर गजसिंघ तोडै राजा जगनाथरै परणिया। उठै कंवर गजसिंघनूं सीतळा नीसरी। कंवरजीरो डील रूड़ो नहीं, तरै भाटी गोयंददास मोहणदास नूं कंवरजी ऊपर वारियो। कंवरजीरै डील समाध हुई, मोहणदास रांम कह्यो[6]।

६ नरहरदास गोयंददासोत। संवत १६७२ डांवररो पटो गांव सातसूं राजा सूरजसिंघजी दियो थो। पछै संमत १६७६ वैसाख मांहै रा।। नरहरदास ईसरदासोतनूं वैर मांहै मारियो, तरै छाड़ायो[7]। पछै

1 फिर सम्वत् १६४३में लवेराके चारों वास प्राप्त किये। 2 संवत् १६५१में मोटा राजा मरा। 3 फिर राजा सूरजसिंहने लवेराके पीछे २५ गांव दिये और जिसके वाद अपना प्रधान बनाया। 4 पीछे लवेराके पट्टे के ऊपर (अतिरिक्त) आसोपका पट्टा दिया। और वादशाही दरवारमें भी निम्न श्रेणीसे बढ़ कर ऊपरका रुतबा (प्रतिष्ठा) पानेमें विजयी हुआ। 5 सम्वत् १६७१के जेठ सुदी ८ को अजमेरमें राजाजीके डेरोंके ऊपर राव किशनसिंह उदयसिंहोत गोयंददासको मारनेके लिये आया। बादशाह जहांगीरके संबंधकी इस लड़ाईमें भाटी गोयंददास, राव किशनसिंह और करण सकतसिंहोत कई आदमियोंके साथ काम आये। 6 सम्वत् १६६३में कुंवर गजसिंहका टोडेके राजा जगन्नाथके यहां विवाह हुआ। वहां कुंवर गजसिंहको शीतलाकी बीमारी हो गई। कुंवरजीका शरीर स्वस्थ नहीं। तव भाटी गोयंददासने अपने पुत्र मोहनदासको कुंवरजी पर वार दिया जिससे कुंवरजीको तो आराम हो गया और मोहनदास मर गया। 7 पीछे सम्वत् १६७६के वैशाखमें राव नरहरदास ईशरदासोतको शत्रुतावश मार दिया तव डांवरका पट्टा जब्त हो गया।

साहजादा खुरमरै विखा मांहै चाकर रह्यो हुतो[1]। पछै उठाथी छाड़ियो[2]। को दिन सींघलै जाय कवळै रह्यो[3]। सांनरो झोलो हुवो[4]। पछै वळै राजा गजसिंघ पगे लगायो[5]। मेवरो पटै दियो[6]। संमत १६९५ मुंवो[7]।

७ अखैराज।

८ जीवो।

७ सूरजमल, श्रीजीरै वास। तिलांणेस खेतासर पटै।

७ दूदो। संमत १६९६ नरहरदास ऊपर भाटी······मालदेओत, गोयंददास सहसमलोत नागोर था आया। नरहरदास अठासूं नीसरियो[8]। दूदो कांम आयो।

७ नाहरखांन, श्रीजीरै चाकर। धवो जोधपुररो पटै हुतो, संमत १७२१[9]।

६ रांमसिंघ गोयंददासोत, महेवची पूरांरो वेटो[10]। संमत १६७२ भाटी गोयंददासजी कांम आयां लवेरो रांमसिंघ प्रथीराजनूं भेळो दियो[11]। संमत १६७७ ब्रहांनपुर रांमसिंघसूं छाडायो। लवेरो प्रथीराजनूं दियो। पछै रांमसिंघ साहिजादै सहरियालरै चाकर रह्यो[12]। पछै कासमीर जातां रा॥ ईसरदास कल्यांणदासोतरै चाकर रांमसिंघ जगमालरै पैसार पैसनै रातै मारियो[13]। संमत १६७२ एक वार आसोप लीवी। राजा गजसिंघ आसोप १६७६ रा॥ राजसिंघनूं दियो, तिणरै वदळै भेटनड़ैरो पटो दियो[14]।

---

1 फिर शाहजादा खुर्रमके विखेमें उसका चाकर रहा था। 2 फिर वहांसे छोड़ कर आ गया। 3 कई दिनों तक सिंघलोंके यहां कवले गांवमें जाकर रहा। 4 वहां उसे लकवा मार गया। 5 बादमें फिर राजा गजसिंहने पाँवों लगाया (अपने पास बुला लिया)। 6 मेवरा गांव पट्टेमें दिया। 7 सम्वत् १६९५में मर गया। 8 सम्वत् १६९६में नरहरदास पर भाटी······मालदेओत और गोयंददास सहसमलोत नागोरसे चढ़ आये। नरहरदास वहांसे निकल गया और उसका बेटा दूदा वहां काम आ गया। 9 नाहरखान श्रीमहाराजाका चाकर, सम्वत् १७२१में जोधपुर परगनेका धवा गांव पट्टेमें था। 10 पूरांबाई महेवचीका बेटा। 11 सम्वत् १६७२में भाटी गोयंददासके काम आ जाने पर रामसिंह और पृथ्वीराज दोनोंको लवेरा शामिल दिया। 12 फिर रामसिंह शाहजादे शहरयारके पास चाकर रहा। 13 फिर कासमीर जाते हुए मार्गमें जगमालके डेरेमें घुस कर ईसरदास कल्याणदासोतके चाकरने रामसिंहको मार दिया। 14 उनके बदलेमें भेटनड़ा गांवका पट्टा कर दिया।

६ वेणीदास गोयंददासोत। संमत १६७२ रड़ोद आसोपरो गांवां ३ सूं पटै दी थी[1]। सं० १६७८ रड़ोद राजसिंघजीनूं दी, तरै घरै आयो[2]। पछै सं० १६८० अणवांणो गांवां ३ सूं दियो थो। सं० १६८५ गहलो हुवो, पछै रांम कह्यो[3]।

७ राजसिंघ वेणीदासोत। अणवांणो पटै हुतो।

८ रतन। ८ दळपत।

६ प्रथीराज गोयंददासोत, पूरांबांई महेवचीरो बेटो[4]। सं० १६७२ आसोप, लवेरो बेहूं[5] पटै। रांमसिंघ भेळो[6] पटो दियो थो। पछै आसोप राजसिंघजीनूं दियो, तद[7] लवेरारो पटो प्रथीराजनूं हीज दियो थो। सं० १६७७ पछै अमरसिंघजी साथै गयो। पछै वळै आय वसियो, तरै लवेरारो पटो दियो[8]। राजा जसवंतसिंघजी पण घणी मया कीवी। सं० १७०४ प्रधांन कियो। रुपिया ४००००) रो पटो दियो थो[9]। पछै वास छूटो[10]। सं० १७०६ पातसाहजीरै वसियो[11]। सं० १७२० मुंवो[12]।

७ सबळसिंघ प्रथीराजोत भलो रजपूत थो। संमत १७१६ रा॥ इंद्रभांण केसरीसिंघोत गांव डेह वसी ऊपर आयो, तद सांम्है जाय वेढ कीवी। आदमी ८० थी कांम आयो[13]।

८ जैसिंघ।

भाटी सुरतांण मांनावत, आंक ५, वडो रजपूत हुवो। दातार, जूंझार, कांमरो मांणस[14]। मोटै राजा केलावो पटै दियो थो। संमत १६६२ सूधो रह्यो[15]। केलावो, लवेरो, विकूंकोहर गांव २०सूं पटै थो।

---

1 सम्वत् १६७२में आसोपका रड़ोद तीन गांवोंके साथ पट्टेमें दिया था। 2 तब घर पर आ गया। 3 संवत् १६८० अणवाणा तीन गांवोंके साथ पट्टेमें दिया था। संवत् १६८५में वह पागल हो गया और मर गया। 4 पूरांबाई महेवचीका बेटा। 5 संवत् १६७२में आसोप और लवेरा दोनों पट्टेमें। 6 शामिल। 7 तब। 8 बादमें फिर आकर चाकरीमें रहा तब लवेराका पट्टा दिया। 9 राजा जसवंतसिंहजीने भी उस पर बड़ी कृपा रखी, सम्वत् १७०४में उसे प्रधान बनाया और रुपये चालीस हजारका पट्टा दिया था। 10/11 फिर नौकरी छूट गई तब संवत् १७०६मे बादशाहकी चाकरीमें रहा। 21 सम्वत् १७२०में मर गया। 13 ८० मनुष्योंके साथ काम आया। 14 दातार, जूझार और उपकारी मनुष्य। 15 सम्वत् १६६२ तक रहा।

पछै संमत १६६२ गुजरातसूं सीख दी तद गांव २५सूं भाद्राजण पटै दियो थो[1] । पछै संमत १६६४ भाद्राजणरो पटो तागीर कर आगलो हीज पटो राखियो[2] । पछै संमत १६६८ श्री हजूर गयो[3] । पछै मुहतो केसो सुरतांणजीरो थो सु गोयंददासजी रावळै राखियो तरै दिखण था छाडि आयो[4] । पछै केसानूं मार आयो[5] । तद गोयंददासजी धरती मांहिथी परो काढियो, तरै नागोर जाय रांणा सागररै वसियो[6] । गांव भांउंडा वसीनूं दियो थो[7] । रांणै सागररै उठै जाय वसियो । पछै रा।। नरसिंघदास कल्यांणदासोत नै रा।। सूरजसिंघ नै सुंदरदास, रांमदास चांदावतरांसूं माहो-मांहि उपाव हुवो[8] । अै[9] ठाकुर चढ ऊपर आया । संमत १६६६ जेठ सुदि ८ भांउंडा वेढ हुई[10] । सुरतांणरै हाथ नरसिंघदास, सूरसिंघ, सुंदरदास रह्या[11] । सुरतांण ही खेत रह्यो[12] । वडो मांमलो हुवो[13] ।

६ रांमचंद सुरतांणोत । संमत १६५७रा मिगसर सुदि १२ जन्म । सं० १६७० केलावैरो पटो दे, साथ सांमो जाय घणा आदर कर आंणियो[14] । चीतोड़ रांणा सागररै वास थो । सं० १६७८ ब्रहांनपुरथा छाड़नै राव रतनरै वास वसियो[15] । सं० १६८० वळै मनाय नै पाछो आंणनै केलावैरो पटो दियो[16] । सं० १६८१ वळै छाड बैठो[17] ।

---

1 जब सम्वत् १६६२में गुजरातसे (मारवाड़को) आनेकी आज्ञा मिली तब २५ गांवोंके साथ भाद्राजुन पट्टे में दिया था । 2 फिर सम्वत् १६६४में भाद्राजुनका पट्टा जब्त करके पहलेका पट्टा ही बहाल रखा । 3 पीछे सम्वत् १६६८में श्री हजूर (महाराजा)की चाकरीमें गया । 4 सुरताणजीके मुहते केसेको गोयंददासजीने अपने रावलेमें रख लिया तब (सुरताण) दक्षिणको छोड़ कर आ गया । 5 तब (सुरताण) केसाको मार कर आ गया । 6 तब गोयंददासजीने (सुरताणको) धरती (जागीरी)में से निकाल दिया, तब नागोरमें राना सागरके यहां जा बसा (यहां नागोर भूलसे लिखा है, चित्तौड़ होना चाहिये) । 7 भांउंडा गांव बसीमें दिया था । 8 परस्पर झगड़ा हुआ । 9 ये । 10 सम्वत् १६६६ जेठ शु० ८ को भाउंडा गांवमें लड़ाई हुई । 11 सुरताणके हाथसे नरसिंहदास, सूरसिंह और सुंदरदास काम आये । 12 सुरताण भी काम आया । 13 बड़ी लड़ाई हुई । 14 सम्वत् १६७० कैलावेका पट्टा देकर और कई आदमियोंके साथ सामने जाकर बड़े आदरसे उसको लिवा लाये । 15 सम्वत् १६७८ बुरहानपुरसे (को) छोड़ कर राव रतनकी सेवामें रहा । 16 सम्वत् १६८०में फिर मना करके वापिस लाये और कैलावेका पट्टा कर दिया । 17 सम्वत् १६८१ पुनः छोड़ कर बैठ गया ।

चाकरी न करे । तरै केलावौ १ वसीनूं दियो[1] । पछै राव सत्रसालरै वसियो थो । पछै काबलनूं जातां रा॥ किसोरदास गोपळदासोतरै चाकर मारियो ।

७ किसनसिंघ रांमचंदोत ।

८ भारमल ।

७ भगवांनदास रांमचंदोत । जूढ पटै[2] ।

७ विसनसिंघ रामचंदोत ।

७ करन रांमचंदोत । श्रीजीरै वास । विमळोखो पटै[3] ।

७ आसो रांमचंदोत ।

६ अजळदास सुरतांणोत । संमत १६७० विकूंकोहर सुरतांणजीरा पटारो गांवां १७सूं दियो[4] । पछै सं० १६७८ राव रतनरै वास वसियो । सं० १६८० वळै पाछो आंण विकूंकोहररो पटो दे राखियो । सं० १६९० फळोधीरै थांणै राखियो थो । बलोचे गायां लीवी, तठै वाहर आपड़ कांम आयो[5] ।

७ महेसदास अचळदासोत । सं० १६९० विकूंकोहर गांवां १५सूं दियो । सं० १७१४ उजेण कांम आयो ।

८ किसोरदास महेसदासोत । विकूंकोहर, मतोड़ो पटै[6] ।

७ जगतसिंघ अचळदासोत । थबूकड़ो पटै ।

७ केसरीसिंघ अचळदासोत । संमत १६९० डाभड़ी ओईसांरी पटै । सुंदरदासरै वैर सोढां मारियो[7] ।

७ सुंदरदास सुरतांणोत । जोधपुर मेवरो पटै । पछै लवेरारी सांडां सोढै ली, तठै वाहर आपड़ सोढांसूं वेढ हुई, कांम आयो[8] ।

---

1 तब कैलावा बसीमें कर दिया । 2 जूढ गांव पट्टेमें । 3 श्रीमहाराजाजीकी सेवामें और विमलोखा गांव पट्टेमें । 4 सम्वत् १६७०में सुरताणजीके पट्टेका विकूंकोहर १७ गांवोंके साथ दे दिया । 5 बलोच लोग गायें घेर कर ले गये, वहां उनका पीछा करके काम आ गया । 6 विकूंकोहर और मतोड़ा गांव पट्टेमें । 7 सम्वत् १६९०में ओईसांका डाभड़ी गांव पट्टेमें । सुंदरदासकी शत्रुतामें सोढोंने इसे मारा । 8 जोधपुरका मेवरा गांव पट्टेमें । जब लवेरेकी सांढें (सांड़नियाँ, ऊंटनियाँ) सोढोंने घेर लीं, तब वाहर करके सोढोंको पकड़ा और उनसे लड़ाई हुई, सुंदरदास उस लड़ाईमें काम आ गया ।

७ हरीदास सुरतांणोत । संमत १६७५ मैहकर रांमरी मुंहम रांम कह्यो[1] ।

६ रुघनाथ सुरतांणोत । संमत १६८० मेवरो पटै । पछै संमत १६९१ चांमू पटै थो । पछै अमरसिंघजी साथै गया था, संमत १६९५ पाछा आंणिया[2] । चांमू नै साथांणो मेड़तारो, जेसलां फळोधीरी दिया था[3] । संमत १६९६ डांवर पटै दी थी । पछै संमत १७०४ देसरी खिजमत दी । संमत १७१४ उजेणरी वेढ पूरै लोहै पड़ियो, पैले उपाड़ियो[4] । पछै श्रीजी घणो आदर कर वडो पटो रु० ८०००) रेख लवेरो घणां गांवांसूं । भोवाळ वधारै दी[5] ।

७ भींव रुघनाथोत । श्रीजीरै वास ।

६ मुकंददास सुरतांणोत । संमत १६७१ गोपीसरियो, वारणाऊ पटै । संमत १६८८ नागड़ी खींवसररी । संमत १६९३ वींझवाड़ियो पटै[6] ।

७ उदैभांण ।

५ सादूळ मांनावत । संमत १६४० लवेरारी वासणी थी । संमत १६४० राजाजी साथै गुजरात, सोरसूं बळ मुंवो[7] ।

४ पतो नींबारो । नींबाजी पछै पतो ठाकुर हुवो[8] ।

५ भोपत पतावत । वसी नींबाजीरी सगळी भोपतजीरै हीज रही । पछै विखा मांहै गूढा ऊपर रांणाजीरो साथ आयो तठै कांम आयो[9] ।

६ ईसरदास भोपतोत । संमत १६४० लवेरारी वासणी गंगा-

---

1 सम्वत १६७५में महकरमें रामकी मुहिम (युद्ध)में काम आया । 2 सम्वत १६९५मे पीछा बुलवाया । 3 मेड़ते परगनेके चामू और साथाणा और फलोधी परगनेका जेसलां गांव पट्टेमे दिये थे । 4 सम्वत् १७१४में उज्जैनकी लड़ाईमें पूर्ण आहत हुआ शत्रु उसे उठा ले गये। 5 पीछे महाराजाने बड़े सम्मानके साथ रु. ८०००) की रेखका कई गावोंके साथ लवेराका बड़ा पट्टा कर दिया और अतिरिक्तमें भोवाल गांव दिया । 6 सम्वत् १६७१में गोपीसरिया और वारणाऊ गांव, सम्वत् १६८८में खींवसरका नागड़ी गांव और सम्वत् १६९३मे वींझवाड़िया पट्टेमें दिये गये । 7 सम्वत १६४०में राजाजीके साथमे गुजरात गया था और वहां बारूदसे जल कर मर गया । 8 नींबाके मरनेके बाद पता ठाकुर (जागीरदार) हुआ । 9 नींबाजीकी सब वसी भोपतजीके ही अधिकारमें रही । विखेमें जब राणाजीका साथ उसके गुढ़े पर चढ कर आया उसमें भोपत काम आ गया ।

वाळो थी। संमत १६५८ भोवादो, ढीकाई दोवी। सिवांणैरो गढ हवालै[1]।

७ मनोहरदास। ७ वरसिंघ। ७ नरसिंघदास। ७ गोपाळदास। ७ अखैराज।

७ लिखमीदास। उजेण कांम आयो[2]।

७ सांवळदास।

६ जगमाल भोपतोत। दिखण में रांम कह्यो।

६ कान्ह भोपतोत। गोयंददासजीरै वास। साथै कांम आयो[4]।

४ किसनो नींबारो। फळोधी राव मालदेजीरै कांम आयो।

४ रिणमल नींबारो। जोधपुर गढरोहै राव चंद्रसेणरैं रांमप्रोळ भिळी तठै कांम आयो[5]।

५ माधो रिणमलोत। संमत १६६५ राजगियावास सोभतरो पटै। सुरतांणजीरै वास। अचळदास साथै कांम आयो।

५ वाघ रिणमलोत।

६ लिखमीदास वाघोत।

४ गांगो नींबारो। राव चंद्रसेणरै विखैमें जोधपुर गढरी प्रोळ हाथो दे कांम आयो[6]।

५ कलो गांगावत। संमत १६४० मढली लवेरारी थी। संमत १६४१ रोहणवो, लवेरारी वासणी थी[7]।

६ हरीदास कलावत। संमत १६७१ वेठवासरो पांनो प्रथीराजरा चाकर थकानूं[8]। सं० १६८६ हथूंडियो पटै। संमत १६८७ छाड

---

1 सम्वत् १६४० में लवेराकी वासणी और गंगावाळी गांव पट्टे में थे। सम्वत् १६५८ में भोवादी और ढीकाई गांव दिये गये और सिवानेका किला हवाले किया गया। 2 लिखमीदास उज्जैनमें काम आया। 3 दक्षिणमें मरा। 4 गोयंददासके यहां चाकरीमें और उसके साथ काम आया। 5 जोधपुरके गढ़ पर राव चंद्रसेनके गढरोहे (गढके द्वारमें शत्रु सेनाका प्रवेश रोकनेके लिये एवं गढकी रक्षार्थ गढके द्वार पर नियुक्त चुने हुए वीरोंकी सैनिक टुकड़ी) की लड़ाईमें जब गढकी रामपौल पर शत्रुओंका अधिकार हो गया, उसकी रक्षार्थ लड़ाईमें यह काम आया। 6 राव चंद्रसेनके विखेमें जोधपुर गढकी पौलमें हाथा देकर काम आया। 7 सम्वत् १६४० में लवेराका मढली गांव पट्टे में था। सम्वत् १६४१ में रोहणवा और लवेराका वासणी गांव पट्टे में थे। 8 सम्वत् १६७१ में वेठवास गांवका एक भाग पृथ्वीराजका चाकर होते हुए उसके पट्टे में था।

अचळदास सुरतांणोतरै वसियौ । पछै अचळदास साथै कांम आयो ।

७ जसवंत हरीदासोत ।

६ माधोदास कलावत । ६ जगनाथ कलावत ।

६ सांवळदास कलावत ।

६ प्रागदास कलावत । गोयंददासजी साथै कांम आयो, अजमेररै[1] ।

४ मूळो नींबारो । राव मालदेजीरै कांम आयो, जेसळमेररो साथ आयो तद[2] ।

४ भोजराज नींबारो । छाकियो थको पेट मार मुंवो[3] ।

३ परबत आगंदोत ।

४ तिलोकसी परबतोत । मेडतै रा॥ देईदास जैतावत साथै कांम आयो । राव मालदेवजीरो चाकर ।

५ वाघ तिलोकसीयोत ।

६ रांमचंद वाघावत । संमत १६६७ रांमावट पटै थो । पछै छाडनै[4] भाटी अचळदासरै वास रह्यो थो, अचळदास साथै कांम आयो ।

६ नरसिंघ वाघावत ।

६ लाडखांन वाघावत ।

६ लिखमीदास वाघावत ।

५ महरांवण तिलोकसीरो ।

६ नेतसी, अचळदास साथै कांम आयो ।

७ दयाळदास ।

५ जैमल तिलोकसीरो । मोटै राजाजी रै चाकर थो । लोहावटरी वेढ कांम आयो ।

५ राघोदास तिलोकसीरो । ५ सांईदास तिलोकसीरो ।

३ दूदो आगंदरो ।

४ मेघराज दूदारो ।

५ नारणदास । संमत १६५२ सरनावड़ो पटै[5] ।

---

1 अजमेरकी लड़ाईमें गोयंददासके साथ काम आया । 2 जैसलमेरकी सेना आई तब मालदेवजीके लिये काम आया । 3 नशेमें पेटमें कटारी मार कर मर गया । 4 छोड़ कर । 5 सम्वत् १६५२में सरनावड़ा गांव पट्टे में था ।

६ कलो नारणदासोत ।

३ पीथो आणंदोत । राव मालदेवरै चाकर । मेड़तै रा।। देईदास जैतावत साथै कांम आयो ।

४ रायसिंघ पीथावत । संमत १६४० चांपासर दियो थो । सं० १६४३ नापावस सोभतरो । पछै बांधड़ो पटै[1] ।

५ केसोदास रायसिंघोत । बांधड़ौ पटै ।

६ माधोदास केसोदासोत । संवत १६७२ रूंदियो पटै । पछै अमरसिंघजी साथै गयो । पछै वळै रह्यो । रूंदियो पटै । संमत १७१४ उजेण कांम आयो[2] ।

७ जगनाथ माधोदासोत ।

६ वीठळदास केसोदासोत । रूंदियो पटै । चाकर पोहरै ऊभो थो, तिण पांतरै मारियो[3] ।

५ करमसी रायसिंघोत । रूंदियो पटै । अजमेर गोयंददासजी साथै कांम आयो ।

६ प्रागदास करमसीयोत । संमत १६८२ जालेली बेऊं थी, पछै फळोधीरो छीलो दियो[3] ।

४ सांकर पीथावत । राव चंद्रसेणरै विखैमें भाद्राजण गयो, तठै कांम आयो[5] ।

४ रतनो पीथावत । मोटै राजारै फळोधी भाटी भांनीदास मारियो, तिण वेढ कांम आयो[6] ।

५ अमरो रतनावत । गुजरात कांम आयो[7] ।

---

1 सम्वत् १६४० में चांपासर गांव पट्टेमें दिया था। सम्वत् १६४३ सोजत परगनेका नापावस गांव और बादमें बांधड़ा गांव पट्टेमें दिये गये थे। 2 सम्वत् १६७२ में रूंदिया गांव पट्टेमें था। फिर वह अमरसिंहजीके साथ चला गया (तो रूंदिया नहीं रहा) लेकिन जब वह फिर आकर रहा तो रूंदिया वापिस पट्टेमें दे दिया। सम्वत् १७१४में उज्जैनमें काम आया। 3 पहरे पर चाकरके खड़े होनेके भ्रमसे इसे मार दिया। 4 सम्वत् १६८२ दोनों जालेली गांव और फिर फलोधी परगनेका छीला गांव, पट्टेमें दिये थे। 5 राव चंद्रसेनके विखेमें भाद्राजुन गया था वहां काम आया। 6 मोटे राजाने फलोधीमें भाटी भानीदासको मारा उस लड़ाईमें यह काम आया। 7 गुजरातकी लड़ाईमें काम आया।

५ सुंदरदास । ५ सूरदास ।

४ जैतसी पीथावत । संमत १६५६ सोझत राव सकतसिंघनूं हुई तद विसनदासजीरा डेरां ऊपर सकतसिंघरै साथ रातीवाहो दियो तरै कांम आयो[1] ।

५ मोहणदास जैतसीरो । संमत १६८३ बांधड़ो पटै ।

२ जोधो जेसावत ।

३ रांमो । ३ नारण । ३ दुजण । ३ आसो । ३ भोजो । ३ पंचाइण ।

रांमो जोधावत, आंक ३ । राव मालदे गांव १५ सूं वालरवो पटै दियो हुतो[2] । पूछणै मांहै हुतो, पछै रा॥ जैसा भैरवदासोतनूं भांगेसररा थांणा ऊपर मेलियो तरै साथै विदा कियो हुतो[3], तठै रांमो पूरै लोहड़ै पड़ियो, उपाड़ियो हुतो, पछै डेरै आयां काळ कियो[4] ।

४ किसनो रांमावत । ४ रांणो रांमावत । ४ ऊदो रांमावत । ४ वीरमदे रांमावत ।

किसनो रांमावत । मोटा राजारो चाकर थो । आंक ४ । रांमो कांम आयो तरै राव वालरवो वीरमदे रामावतनूं दियो, तरै किसनो छाड़ वीकानेर गयो[5] । पछै मोटै राजानूं फळोधी हुई तरै मोटा राजा कनै आयो[6] । पछै मोटो राजा समावळी गयो, तरै साथै हुतो[7] । पछै मोटा राजानूं जोधपुर हुवो तद धरती मांहै आयो[8] ।

५ कांन किसनावत । मोटै राजा कुंडळ मांहै भाटियांसूं वेढ की तद पूरै लोहड़ै पड़ियो[9] । पछै समावळी साथै हुतो । पछै संमत १६४०

---

1 सम्वत् १६५६ में राव सकतसिंहको सोजतका पट्टा दिया गया तव विसनदासके डेरों पर सकतसिंहके साथने रात्रि-आक्रमण किया तव काम आया । 2 राव मालदेवने १५ गांवोंके साथ वालरवाका पट्टा दिया था । 3 जव वह पूछणे गावमें था उस समय जव राव जैसा भैरवदासोतको भांगेसरके थाने पर भेजा था तव इसको भी उसके साथ भेज दिया था । 4 वहां रामा पूर्ण आहत होकर गिर गया, उठा कर ले जाया गया और डेरे पर आते ही मर गया । 5 तव किसना छोड़ कर वीकानेर चला गया । 6 फिर जव मोटा राजाको फलोधी मिली तव वह उनके पास आ गया । 7 फिर जव मोटा राजा समावलीको गये तव भी साथ था । 8 फिर जव मोटा राजाको जोधपुर मिल गया तव वह देशमें (मारवाड़में) आया । 9 मोटे राजाने कुंडलमें भाटियोंसे लड़ाई की तव खूव घायल हो कर गिर गया ।

जोधपुर आवता था, भावी डेरो हुवो, तद गांव ४सूं वालरवो, कूड़ी दिया। गढ़ ऊपर रैहता। संमत १६६६ रांम कह्यो[1]।

६ हरदास कांनावत। सं० १६६६सूं वालरवैरो पटो गांव ७सूं बरकरार[2]। सं० १६८९ जोधपुर गढ़ ऊपर था तागीर कियो तद अमरसिंघजी साथै गयो[3]। संमत १६९६ काबलथा फिर आवतां वळै वालरवो दियो[4]। गढ़ ऊपर किलैदार कर राखियो[5]।

७ वीठलदास हरदासोत। संमत १६९३में मोखेरी पटै। संमत १६८७ सावरीज गांवां २सूं[6]। संमत १६९१ अमरसिंघजी साथै गयो। संमत १६९५ वळै पाछो आयो। चोहड़ां, मुंडवाय पटै दिया[7]।

८ जगनाथ। ८ जैतमाल। ८ जेसो।

७ मोहणदास हरदासोत।

८ राजसिंघ। ८ उदैसिंघ। ८ आसो। ८ प्रथीराज।

७ मुकंददास हरदासोत।

८ रांमसिंघ।

७ सकतसिंघ हरदासोत।

८ दूदो। ८ सत्रसाल।

७ डूंगरसी हरदासोत।

६ देईदास कांनावत। संमत १६५६ सोझत सकतसिंघजीनूं हुई, तद भाटी सुरतांण रावळै साथ जाय सोझत घेरी थी[8]। तद किसनसिंघजीनूं तेड़ण देईदासनूं सुरतांणजी मेलियो थो[9]। सु सुरतांणजी

---

1 इसके बाद वह समावलीमें मोटे राजाके साथमें था। जब वहांसे जोधपुर आ रहे थे, मार्गमें भावी गांवमें डेरा हुआ उस समय चार गांवोंके साथ वालरवा और कूड़ी गांव पट्टेमें दिये। (मोटे राजाके साथ) गढ़ ऊपर ही रहता था। सम्वत् १६६६में मरा। 2 सम्वत १६६६से ७ गांवोंके साथ वालरवेका पट्टा कायम। 3 सम्वत् १६८९में जब (मोटे राजा द्वारा) जोधपुरके गढ़ परसे जब्तीका हुक्म हुआ तो अमरसिंहके साथ चला गया। 4 सम्वत् १६९६में काबुलसे आने पर फिर वालरवा दिया। 5 गढ़ पर किलेदार बना कर रखा। 6 दो गांवोंके साथ सम्वत् १६८७में सावरीजका पट्टा। 7 चोहड़ां और मुंडवाय गांव पट्टेमें दिये। 8 सम्वत् १६५६में सोजत नगर सकतसिंहजीको इनायत हुआ उस समय भाटी सुरताणने और महाराजाकी सेनाने जाकर सोजतको घेर लिया था। 9 तब सुरताणने किशनसिंहजीको बुलानेके लिये देवीदासको भेजा था।

जांणियो किसनसिंघ पाली छै[1] । नै किसनसिंघजीरै सांहणी लालो वास थो[2] । सु लालैरै वैर रा॥ भाखरसी सादूळोतसूं थो, तिण ऊपर वाली-सांरी धरतीमें रहतो[3] । तठै गांव जाय भूंबियो; तठै वेढ हुई[4] । सु भाटी देईदासनै सांहणी लालो मेहावत कांम आया । नै उरजन, ऊहड़, नै भींवो साहणी किसनसिंघजीनूं ले नीसरिया[5] ।

७ करन देईदासोत । संमत १६७२ हीरादेसर, रांमावट पटै, लिखमीदास भेळो[6] ।

७ लिखमीदास देईदासोत । संमत १६७२ हीरादेसर, रांमावट पटै, करन भेळो । पछै संमत १६८३ तांबड़ियो पटै[7] । पछै छाड़नै भींव कल्यांणदासोतरै वसियो[8] ।

८ नाथो लिखमीदासोत । संमत १६६० नादियो पटै । संमत १६६१ अमरसिंघजी साथै गयो । पछै संमत १६६६ वळै वसियो । काठसी पटै[9] ।

९ विहारीदास नाथावत ।

८ भोपत लिखमीदासोत । ८ अखैराज लिखमीदासोत ।

७ दयाळदास देईदासोत । संमत १६८० वरजांगसर फळोधीरो पटै[10] ।

८ सहसो दयाळदासोत ।

५ सूरजमल किसनावत । मोटै राजाजीरै लोहावटरी वेढ कांम आयो[11] ।

---

1 सुरताणने जाना था कि किशनसिंह पालीमें है । 2 और किशनसिंहके यहां साहनी लाला रहता था । 3 लालाकी राव भाखरसी सादूलोतसे शत्रुता थी, इसलिये वह इसकी ताकमें वालीसोंकी भूमिमें रहता था । 4 उसने उसके गावमें जाकर उत्पात मचाया और वहां लड़ाई हुई । 5 भाटी देवीदास और साहनी लाला मेहावत इस लड़ाईमें काम आये । और अर्जुन, ऊहड़ और भीमा साहणी किशनसिंहको लेकर निकल गये । 6 सम्वत् १६७२में हीरादेसर और रामावट दोनों गांव लिखमीदासके शामिल पट्टेमें । 7 सम्वत् १६७२में हीरादेसर और रामावट करणके साथ पट्टेमें । लिखमीदासको सम्वत् १६८३में तांवड़िया गांव अलग पट्टेमें मिला । 8 फिर छोड़ कर भीम कल्याणदासोतके यहां जाकर रह गया । 9 सम्वत् १६६६में पुनः आकर वसा तव काठसी गांव पट्टेमें मिला । 10 सम्वत् १६८०में फलोधीका वरजांगसर गांव पट्टेमें । 11 मोटे राजाजीके लिये लोहावटकी लड़ाईमें काम आया ।

५ गोयंददास किसनावत। संमत १६४० ढीकाई पटै। संमत १६४६ भगतावासणी। संमत १६५७ आंनावस पटै[1]।

६ मनोहरदास गोयंददास जीवतां हीज अजमेर गोयंददासजी साथै कांम आयो[2]।

७ कूंभो मनोहरदासोत। संमत १६८८ आंनावस थो[3]। पछै अमरसिंघजी साथै गयो थो, पाछो आयो तद नांदियो पटै दियो।

८ ....नांदियो पटै।

८ अखैराज। ८ रतन। ८ मेघराज।

७ भांण मनोहरदासोत, उजेण कांम आयो।

८ पतो। ८ द्वारकादास।

५ गांगो किसनावत। संमत १६४३ आंनावस पटै। संमत १६५७ दिखण कांम आयो[4]।

५ तोगो किसनावत।

४ वीरमदे रांमावत, वालरवो पटै।

५ रायसिंघ वीरमदेश्रोत। राव चंद्रसेनरै विखा मांहे भाद्राजण थो, तद रा॥ वैरसल प्रथीराजोत, गोपाळदास मांडणोत, ऊहड़, जैमल इणां च्यारां ठाकुरांनूं सोबत लूंटण मेलिया था, तठै कांम आयो[5]।

६ केसोदास रायसिंघोत। संमत १६४० चोपड़ो पटै। पछै चांमू पटै। पछै छाड़नै किसनसिंघजीरै वसियो[6]। पछै वळै आयो। संमत १६७४ कराड़ी पटै दीवी[7]। पछै सं० १६७५ भंवरांणी गांव ४सूं

---

1 सम्वत् १६४०में ढीकाई गांव, सम्वत् १६४६में भगतावासणी गांव और सम्वत् १६५७में आनावस पट्टेमें मिले। 2 मनोहरदास गोयंददासके जीते-जी ही अजमेर चला गया और गोयंददासके साथ काम आया। (मूल पाठ—'मनोहरदास गोयंददासोत। अजमेर गोयंददासजी साथै कांम आयो' एक जीर्ण प्रतिमें ऐसा पाठ प्रतीत होता है।) 3 सम्वत् १६८८में आनावस पट्टेमें था। 4 सम्वत् १६५७में दक्षिणकी लड़ाईमें काम आया। 5 रायसिंह राव चंद्रसेनके विखेमें भाद्राजुन डेरेमें साथमें था, तब राव वैरसल पृथ्वीराजोत, गोपालदास मांडणोत, ऊहड़ और जैमल—इन चारों ठाकुरोंको घोड़ोंके काफिलेको लूटनेके लिये भेजा था। इस लड़ाईमें रायसिंह भी काम आया। 6 पीछे छोड़ कर के किशनसिंहजीके यहां रह गया। 7 फिर वापिस आया तब सम्वत् १६७४में कराड़ी गांव पट्टेमें दिया।

दी थी[1]। संमत १६८० धाधोळाव पटै मेड़तारो[2]। संमत १६८३ रांम कह्यो[3]।

७ वेणीदास केसोदासोत। संमत १६६१ छाड़ अमरसिंघजी साथै गयो। उठै काबलसूं आवतां अटकमें डूब मुंवो[4]।

८ राजसिंघ वेणीदासोत।

८ वींजो वेणीदासोत। ८ भैरवदास। ८ उगरो।

७ कलो केसोदासोत।

८ रुघनाथ।

७ अमरो केसोदासोत। संमत १६८३ मेड़तारो सीहार पटै[5]।

८ भूधर।

६ लूंणो रायसिंघोत। संमत १६५६ किसनसिंघजीरै कांम आयो। भाटी देईदास भेळो सांहणी लालारै दावै खेतसी सादूळोत ऊपर गयो, तठै सेपटावास गोढ़वाड़रै गांव मांमलो हुवो[6]।

६ रूपसी रायसिंघोत।

७ अचळो। ७ मोहणदास।

५ भांनीदास वीरमदेओत। राव चंद्रसेणरै वालरवै थो। थोरियांसूं मांमलो हुवो तठै कांम आयो[7]।

६ भाखरसी भांनीदासरो। चैराई पटै। संमत १६७७ बैरू पटै। संमत १६६३ अमरसिंघजीरै गयो, उठै हीज मुंवो[8]।

७ जगनाथ भाखरसीयोत। संमत १६६५ गोलाहसनी (गोलावासणी) थाहरी पटै[9]।

---

1 फिर बादमें सम्वत् १६७५में ४ गांवोंके साथ भवराणी पट्टेमें दिया गया था। 2 सम्वत् १६८०में मेड़ते परगनेका धाधोलाव पट्टेमें दिया गया। 3 सम्वत् १६८३में मर गया। 4 सम्वत् १६६१में छोड़ कर अमरसिंहजीके साथ काबुल चला गया और वहांसे लौटते हुए अटक नदीमें डूब कर मर गया। 5 सम्वत् १६८३में मेड़ते परगनेका सीहार गांव पट्टेमें था। 6 भाटी देवीदासके साथ साहनी लालाकी शत्रुताका बदला लेनेके लिये खेतसी सादूलोतके ऊपर चढ कर गया, तब गोढवाड़ परगनेके सेपटावास गांवमें लड़ाई हुई, (उसमें लूणा काम आया।) 7 राव चन्द्रसेनके साथ बालरवेमें था तब थोरी लोगोंसे लड़ाई हुई उसमें काम आया। 8 सम्वत् १६६३में अमरसिंहजीके साथ गया और वहीं मर गया। 9 सम्वत् १६६५ गोलावासणी और थाहरी (?) गांव पट्टेमें।

८ लखो जगनाथोत ।

७ अमरो भाखरसीयोत । ७ सादूळ भाखरसीयोत ।

८ सबळो । ८ भावसिंघ ।

७ जैतमाल भाखरसीयोत ।

६ सांवळदास भांनीदासोत । संमत १६६१ त्रिगठी पटै दीवी थी । सं० १६६५ अमावासणी दी थी । संमत १६६६ सांवत-कूवो[1] । संमत १६७० कंवर श्री गजसिंघजी भा।। गोयंददासजी कूंभळमेर लियो तठै रांणारै साथसूं वेढ हुई, तठै कांम आयो[2] ।

७ वाघ सांवळदासोत । संमत १६७० त्रिगंठी पटै थी ।

६ नरहरदास भांनीदासोत । संमत १६६३ भांहरो पटै । सं० १६७३ चांवड़ियाख सोझतरो पटै । सं० १६७४ बोळ सोझतरी पटै[3] । सं० १६८१ जूढ पटै । सं० १६८४ गढी कांम आयो । भगवांनदासजी भेळो[4] ।

७ रांमचंद नरहरदासोत । संमत १६८४ जूढ बरकरार । सं० १६६१ अमरसिंघजी साथै गयो[5] ।

८ करन रांमचंदोत ।

७ रुघनाथ नरहरदासोत । ७ करमचंद नरहरदासोत ।

५ ईसरदास वीरमदेओत । राव चंद्रसेण सोवत ऊपर साथ विदा कियो, तठै रायसिंघ भेळो कांम आयो[6] ।

५ भगवांनदास वीरमदेओत । राव चंद्रसेण विखा· · · ·था आयो, सवराड़ वेढ़ की तठै कांम आयो[7] ।

---

1 सम्वत् १६६१में त्रिगठी गांव पट्टेमें दिया था, सम्वत् १६६५ में अमावासणी और सम्वत् १६६६में सांवत-कूआ पट्टेमें दिये थे। 2 सम्वत् १६७० में कुंवर गजसिंहजी और भाटी गोयंददासजीने कुंभलमेर पर अधिकार किया, वहां राणाकी सेनासे लड़ाई हुई उसमें काम आया। 3 सम्वत् १६६३में भोंहरा गांव, सम्वत् १६७३में सोजत परगनेका चांवड़ियाख गांव, सम्वत् १६७४में सोजत परगनेका बोळ गांव और सम्वत् १६८१में जूढ गांव पट्टेमें थे। 4 सम्वत् १६८४में गढीमें भगवानदासके साथ काम आया। 5 सम्वत् १६८४में जूढ कायम। सम्वत् १६६१में अमरसिंहजीके साथ गया। 6 राव चंद्रसेनने बोहोंके काफिले को लूटनेके लिये जो आदमी भेजे थे, उनमें रायसिंहके साथ काम आया। 7 राव चंद्रसेनके विरोमें· · · · ·से आया उससे सवराड़ गांवमें लड़ाईकी, जिसमें काम आया।

जसवंत वीरमदेश्रोत। संमत १६४० चैराई दीनी। वीरमरो टीकाई, पण जसूंत भलो रजपूत। संमत १६८६ रांम कह्यो तद उतरी[1]।

६ पीथो जसूंतोतनूं चैराईमें हैंसो १ जसूंत भेळो। संमत १६७७ ब्रहांनपुरथा निबाब दिखण गयो तठै राहमें दिखणियांसूं मांमलो हुवो, तठै कांम आयो, बांण लागो[2]।

६ मनोहरदास जसूंतोत। संमत १६८३ चैराईमें हैंसो १ जसूंत भेळो। संमत १६९० रांम कह्यो[3]।

७ देईदास मनोहरदासोत। संमत १६९५ भाखरी, उदीवस पटै[4]।

७ ऊरजन मनोहरदासोत।

६ भोपत जसूंतोत।

७ लिखमीदास। ७ वीको।

६ सूजो जसूंतोत। सं० १६७० वींगांणो पटै। सं० १६८८ वैराई पटै थी[5]

७ रामसिंघ। ७ स्यांमसिंघ।

६ भोजराज जसूंतोत। संमत १६७२ सबळसिंघ राजावतरै रह्यो[6]।

७ मुकंददास।

५ सकतो वीरमदेश्रोत। संमत १६४१ पांचलो गांवां २सूं पटै[7]।

६ माधोदास।

७ संहसो।

६ मांडण। ६ दयाळदास।

७ मांनसिंघ।

६ मेघराज।

---

1 सम्वत् १६४०में चैराई गांवका पट्टा दिया। जसवंत अच्छा राजपूत और वीरमका उत्तराधिकारी (टीकायत)। सम्वत् १६८६में मरा तब चैराई जब्त हुई। 2 पीथा जसवंतोतको चैराईका एक भाग जसवंतके साथ। सम्वत् १६७७में बुरहानपुरसे नवाब दक्षिणमें गया, वहां मार्गमें दक्षिणियोंसे लड़ाई हुई, उसमें पीथाके बाण लगा और वह मर गया। 3 सम्वत् १६८३में जसवंतके साथ एक हिस्सा चैराई गांवका। संवत् १६९०में मरा। 4 सम्वत् १६९५ भाखरी और उदीवस गांव पट्टेमें। 5 संवत् १६७० वींगाणा गांव और सम्वत् १६८८में वैराई गांव पट्टेमें थे। 6 सम्वत् १६७२ सबळसिंह राजावतके यहां रहा। 7 सम्वत् १६४१में दो गांवोंके साथ पांचला गांव पट्टेमें।

७ सुंदरदास ।

५ पिरागदास वीरमदेवोत । सं० १६४० खूंटलो लवैरारो पटै । पछै वदळै सोयलो दियो थो । पछै छाडनै बूंदी राव भोजरै वसियो । पछै उठै हीज परणियो थो । सासरै गयो थो; उठै उणांरै वैरायतां मारियो[1] ।

६ मनोहरदास पिरागदासोत । किसनगढ रैहतो[2] ।

६ वीठलदास प्रागदासोत । किसनगढ रैहतो ।

५ राघोदास वीरमदेवोत ।

६ जैतसी । संमत १६६८ चंडाळियो ओयसांरो पटै[3] ।

७ सबळो । ७ रांमसिंघ ।

४ रांणो रांमावत ।

५ पतो रांणावत । संमत १६४० ढीकाई पटै । पछै खुडियाळो पटै । सं० १६६० सांवत-कूवो । सं० १६६३ मांडवारी वेढ कांम आयो[4] ।

६ कूंभो पतावत । संमत १६६३ खुडियाळो पटै थो । सं० १६७१ अजमेर गोयंददासजी साथै कांम आयो[5] ।

७ जगनाथ ।

६ नाथो पतावत । संमत १६७२ खुडियाळो पटै ।

६ द्वारकादास पतावत । संमत १६८१ खुडियाळो पटै ।

६ रुघनाथ पतावत ।

५ सुरतांण रांणावत । संमत १६४० उदीवस बहेलवारो पटै[6] ।

६ भींव सुरतांणोत, वडो रजपूत थो । किसनसिंघजी घणी मया कीवी । साथै कांम आयो[7] ।

---

1 संवत १६४०में लवेराका खूंटला गांव पट्टेमें । फिर इसके वदलेमें सोयला गांव दिया था । पीछे छोड़ कर बूंदीके राव भोजके यहां रहा और वहीं विवाह किया । ससुराल गया था, जहां उनके (बूंदी वालोंके) शत्रुओंने उसे मार दिया । 2 किशनगढ रहता था । 3 सम्वत् १६६८में ओयसोंका चंडालिया गांव पट्टेमें । 4 संवत् १६४०में ढीकाई गांव पट्टेमें । वादमें खुडियाला गांव भी पट्टेमें दिया । संवत् १६६०में सांवत-कुआ दिया गया । संवत् १६६३ मांडवाकी लड़ाईमें काम आया । 5 सम्वत् १६७१में अजमेरमें गोयंददासजीके साथ काम आया । 6 संवत् १६४०में वहेलवाका उदीवस गांव पट्टेमें । 7 भीम सुरताणोत वड़ा राजपूत था । किशनसिंहजीने उस पर वड़ी कृपा की । उन्हींके साथ काम आया ।

७ सुंदरदास भींवोत । ७ रामसिंघ भींवोत ।

६ हींगोळदास सुरतांणोत । संमत १६५१ गांघड़वास पटै । ईडरथा आंणियो । सं० १६५८ वडलो, आचीणो दियो थो । पछै रांम कह्यो[1] ।

६ माधोदास सुरतांणोत ।

७ हरीदास माधोदासोत, किसनगढ रैहतो ।

५ पूरो रांणावत । मांडणजीरै वास थो । संमत १६४३ मांडणजीनूं आसोप पातसाहजी दीवी । देसमें आया, तद कमरसोतांसूं वेढ हुई, तठै कांम आयो[2] ।

६ बळिकरन पूरावत । संमत १६६४ चिनड़ी आसोपरी पटै । पछै उदैसिंघ भगवांनदासोत मेड़तियारै वसियो[3] ।

५ ठाकुरसी रांणावत । सं० १६— रोहणवो ओईसांरो पटै[4] । पछै चंगावड़ो पटै दियो । पछै दिखणनूं रांम कह्यो[5] ।

५ मेदो रांणावत । संमत १६४० वैराही मांहै वरजांगरो पांनो थो, सु दियो । सं० १६४२ बुखटो ओईसांरो दियो । संमत १६५१ चंडाळियो दियो[6] ।

६ जोगीदास मेदावत । संमत १६७४ चांगावड़ो पटै । पछै संमत १६७७ इंछापुररी दोड़ ब्रहानपुरथा निबाब दोड़ियो तठै कांम आयो, वांण लागो[7] ।

---

1 इसे ईडरसे बुला लिया । संवत् १६५१में गांघड़वास गांव पट्टेमें दिया । संवत् १६५८में वड़ला और आचीणा गांव दिये गये । पीछे मर गया । 2 यह मांडणजीके यहां नौकर था । सम्वत् १६४३में बादशाहने मांडणजीको आसोपका पट्टा इनायत किया । मांडणजी देश में (मारवाड़) आया तब करमसोतोंसे लड़ाई हुई, पूरा उसमें काम आया । 3 संवत् १६६४में आसोपका चिनड़ी गांव पट्टेमें । पीछे मेड़तिया उदयसिंह भगवानदासोतके यहां वस गया । 4 संवत् १६……में ओइसोंका रोहणवा गांव पट्टेमें । 5 फिर चंगावड़ा गांव पट्टेमें दिया । पीछे दक्षिणमें मर गया । 6 संवत् १६४०में वैराही गांवका जो भाग वरजांगके पास था, वह इसे दिया । संवत् १६४२में ओइसोंका बुरवटा गांव और संवत् १६५१में चंडालिया गांव दे दिया था । 7 सम्वत् १६७४ चंगावड़ा गांव पट्टेमें । सम्वत् १६७७में जब इच्छापुरीकी लड़ाईमें बुरहानपुरसे नवाव चढ कर के गया जिसमें जोगीदास वाण लगनेसे काम आया ।

५ गोपाळदास रांणावत । संमत १६६६ चंडाळियो पटै ।

४ ऊदो रांमावत । जोधपुररै गढरोहा मांहै रांम कह्यो[1] ।

५ खेतसी ऊदावत । कल्यांणदास रायमलोतरो चाकर थो । संमत १६४५ कल्यांणदासजी सिवांणै कांम आया तद लोहड़ै पड़ियो । पछै कांन किसानवत उपाड़ियो । साजो हुवो तद सं० १६४६ रावळै जाटीवास पटै दियो[2] ।

६ वीको खेतसीयोत । जाटीवास पटै ।

७ रांमसिंघ वीकावत । संमत १६८६ प्रथीराज बलुवोतरै कांम आयो । पठांणरी वेढ चांबळ नदी ऊपर हुई तठै[3] ।

७ करमसी वीकावत । जेसावस नै टीबडी पटै[4] ।

७ सांवतसी वीकावत ।

७ धनराज वीकावत । जाटीवास पटै ।

६ वरसिंघ खेतसीयोत । संमत १६७१ भगतावासणी पटै । सं० १६८९ सीहारो मेड़तारो पटै[5] ।

७ कूंभो वरसिंघोत । ७ आसो वरसिंघोत ।

६ सेखो खेतसीयोत । संमत १६८९ जोधड़ावास मेड़तारो पटै[6] ।

७ महेस सेखावत । ७ रुघनाथ सेखावत ।

५ मांनसिंघ ऊदावत । खेतसीरा गूढा ऊपर तुरक आया तठै कांम आयो[7] ।

५ नरसिंघ ऊदावत । खेतसीरै गूढै कांम आयो, मांनसिंघ भेळो[8] ।

३ नराइण जोधावत ।

४ कलो नारणोत ।

---

1 जोधपुरके गढरोहेमें मरा । 2 यह कल्याणदास रायमलोतका चाकर था । सम्वत् १६४५में कल्याणदासजी सिवानामें काम आगये उस समय यह (खेतसी) घायल हो गया था तब कान्ह किसनावत इसे उठा कर ले गया । जब स्वस्थ हुआ तब महाराजाने जाटीवास गांव पट्टेमें दिया । 3 सम्वत् १६८६में पृथ्वीराज बलुओतकी चंबल नदीके किनारेपर पठानोंसे लड़ाई हुई उसमें रामसिंह काम आया । 4 जैसावास और टीवड़ी गांव पट्टमें । 5 सम्वत् १६७१में भगतावासणी गांव और सम्वत् १६८९में मेड़ते परगनेका सीहारा गांव पट्टेमें । 6 सम्वत् १६८९ मेड़ते परगनेका जोधड़ावास गांव पट्टेमें । 7 खेतसीके गुढे पर तुर्क चढकर आये उसमें काम आया । 8 मानसिंहके साथ खेतसीके गुढे पर काम आया ।

५ सांवळदास कलावत । कीभरी ओईसांरी पटै । सं० १६७१ अजमेर गोयंददासजी कांम आया तद पूरै लोहड़ै पड़ियो । पछै संमत १६८३ पूरबसूं आवतां रांम कह्यो[1] ।

६ मांनसिंघ सांवळदासोत ।

७ जसवंत । ७ लाडखांन । ७ वीको ।

६ भोजराज सांवळदासोत । ६ नरसिंघदास सांवळदासोत ।

६ भोपत सांवळदासोत । ६ मुकंददास सांवळदासोत ।

४ मेहाजळ नारणोत, वीरांणी पटै[2] ।

५ किसनो मेहाजळोत । वीरांणी पटै । संमत १६६२ मांडवांरी वेढ कांम आयो[3] ।

७ नरहरदास । ३ बलू ।

५ कचरो मेहाजळोत । संवत १६५२ सूरजवासणी पटै । पछै किसनसिंघजीरै वसियो । पछै संमत १६७२ वळै पाछो आयो, तद काभड़ो पटै दियो । पछै विकूंकोहर पांणीरी तोण वेई माहोमांह बोला-चाली हुई तद भाटी अचळदास मारियो[4] ।

६ प्रथीराज कचरावत । ६ मोहणदास । ६ मुकंददास कचरावत ।

६ जोगीदास कचरावत । ६ आसो कचरावत ।

५ रांमसिंघ मेहाजळोत । संमत १६६२ खारी लवेरारी पटै[5] ।

४ सारंग नारणोत ।

५ नेतसी । ५ गोपो । ५ सकतो । ५ रिड़मल ।

६ गोकळ । ६ किसनो ।

३ दुजण जोधावत । राव मालदेजी नागोर लीवी तद कांम आयो[6] ।

---

1 ओईसांका कीभरी गांव पट्टेमें । संवत् १६७१में अजमेरमें जब गोयंददासजी काम आये तब यह पूर्ण घायल होकर गिर गया था । पीछे संवत् १६८३में पूर्वसे आते हुए मर गया । 2 मेहाजलको वीराणी गांव पट्टेमें । 3 संवत् १६६२में मांडवोंकी लड़ाईमें काम आया । 4 संवत् १६५२में सूरजवासणी गांव पट्टेमें । पीछे किशनसिंहजीके यहां रहा । फिर संवत् १६७२में जब वापिस आगया तो काभड़ा गांव पट्टेमें दिया । पीछे विकूंकोहरमें पानी और कुआं-चरसके लिये परस्पर विवाद हो गया तब भाटी अचलदासने कचराको मार दिया । 5 संवत १६६२में लवेराका खारी गांव पट्टेमें । 6 राव मालदेवजीने नागोर पर अधिकार किया उस समय दुर्जन काम आया ।

४ नेतसी दुजणोत । राव रायसिंघ चंद्रसेणोत साथै सीरोही कांम आयो।

५ कचरो नेतसीयोत । हरीसिंघ किसनसिंघोतरै वास[1] ।

६ अमरो । ६ पीथो ।

३ आसो जोधावत । राव चंद्रसेणरा विखामें जोधपुर कांम आयो[2] ।

४ डूंगरसी आसावत । संमत १६४० बैराही आसारो पांनो थो। संमत १६५१ चांमूंरी वासणी पटै। पछै चांमू दीवी। पछै चांपासर थो[3] ।

५ सांवळदास डूंगरसीयोत । संमत १६४० मांणेवी पटै। पछै चांपासर दियो[4] ।

दयाळदास । ६ मोहणदास ।

५ गोयंद डूंगरसीयोत । संमत १६७३ चांमू पटै। संमत १७६५ वारणाऊ पटै[5] ।

६ रायमल गोयंददासोत । संमत १६६१ चांमू उतरी नै गांवमें वसता सु ऊंठ चढ रवणिये कांम गया था, सु मेहवचो देईदास पतावत बारोटियो थो सु पांचला कनासूं सांढ छवीस लीवी, सु रायमल चढियो आवतो थो सु वाहर दोड़ियो, वेढ हुई तठै कांम आयो[6] ।

७ हरीदास रायमलोत ।

६ रामचंद गोयंददासोत । ६ सादूळ गोयंदोत ।

---

1 कचरा नेतसीओतका हरिसिंह किशनसिंहोतके यहां बास । 2 राव चंद्रसेनके विखामें जोधपुरमें काम आया । 3 सम्वत् १६४०में बैराही गांवका आसाका पाना (भाग) इसको मिला हुआ था । संवत् १६५१में चामूंकी बासणी गांव पट्टेमें था । फिर चामूं गांव दिया गया और उसके बाद चांपासर भी दिया गया था । 4 संवत् १६४०में माणेवी गांव पट्टेमें, बादमें चांपासर दिया गया । 5 सम्वत् १६७३में चामूं गांव और संवत् १६५५में वारणाऊ पट्टेमें दिये गये । 6 संवत् १६६१में चामूं जब्त हो गया और गांवमें रहता था । एक बार किसी कामके लिये ऊंट पर चढकर रवणिये गांवको गया था । मेहवचा देवीदास पतावत लुटेरा हो गया था । उसने पांचला गांव के पाससे छव्वीस सांड़नियां घेर लीं । रायमल अपने ऊंट पर चढा हुआ आ रहा था, वह देवीदासके पीछे वाहर दौड़ा । देवीदाससे लड़ाई हुई, रायमल उसमें काम आया ।

६ सांगो गोयंदोत ।

४ हमीर आसावत । मोटा राजाजीरै फळोधीरी वेढ भाटियांरै मांमलै कांम आयो[1] ।

५ मेघराज हमीरोत । संमत १६४६ खेतासर पटै दियो । संमत १६५२ गुजरात पधारतां कोळियांसूं वेढ हुई तठै कांम आयो[2] ।

५ केसोदास हमीरोत । मेघराज पछै खेतासर पटै । संमत १६५४ उतरियो[3] ।

६ नरहरदास केसोदासोत ।

४ रतनसी आसावत ।

५ ठाकुरसी रतनसीयोत । मेड़तियांरै कांम आयो[4] ।

५ वाघ रतनसीयोत ।

३ भोजराज वाघोत । ६ हरीदास वाघोत ।

५ सिंघ रतनसीयोत । रा।। दासा पातलोतरो दोहीतो । राड़धड़ै दासाजीरै कांम आयो[5] ।

६ सादूळ सिंघोत । ६ कांन्हो । ६ मनोहर । रूपसी ।

५ सांईदास रतनसीयोत ।

६ नारणदास सांईदासरो । चांमूं पटै ।

६ मैहरांवण सांईदासोत । हरदास भाटीरै कांम आयो ।

६ भांण सांईदासोत । ६ मांनो सांईदासोत ।

६ महेस सांईदासोत ।

४ जैमल आसावत । जोधपुर गढ आसा साथै कांम आयो[6] ।

४ जोगो आसावत । जोधपुर गढ आसा साथै कांम आयो ।

५ वेणीदास जोगावत ।

---

1 मोटे राजाजीकी फलोधीमें भाटियोंसे जो लड़ाई हुई उसमें काम आया । 2 संवत् १६४६में खेतासर गांव पट्टे दिया । संवत् १६५२में (महाराजाकी) गुजरातको पधारते हुए कोली लोगोंसे लड़ाई हुई उसमें मेघराज काम आया । 3 मेघराजके मरनेके बाद केशोदासको खेतासर गांव पट्टेमें मिला जो संवत् १६५४में जब्त हो गया । 4 मेड़तिया राठौड़ोंके लिये काम आया । 5 रतनसीका बेटा सिंह, राव दासा पातलोतका दोहिता । दासाजीके लिये राड़धरामें काम आया । 6 जोधपुरके गढ़ पर आसाके साथ काम आया ।

४ धनो आसावत । राव मालदेजीरै फळोधी कांम आयो ।

३ भोजो जोधावत । संमत १६०० सईके सूर पातसाह आयो तद जोधपुर गढरी प्रोळ हाथो दे तुरकांसूं विढ मुंओ[1] ।

४ वैरसल भोजावत ।

५ गोपाळदास वैरसलोत । संमत १६६९ बूटेळाव सोझतरो पटै[2] ।

६ राघोदास । महेसदास दलपतोतरै वास थो ।

४ वीरो भोजावत ।

५ देईदास वीरावत ।

४ राजधर भोजावत ।

५ पतो राजधररो ।

६ केसोदास पतावत ।

५ कल्यांणदास राजधररो । वीकानेररै देस[3] ।

३ पंचाइण जोधावत । वडी वेढ कांम आयो[4] ।

४ जगमाल पंचाइणोत । राव मालदेवजी फळोधीरै साथसूं वेढ हुई तद कांम आयो[5] ।

५ केसोदास जगमालोत । द्वारकादास मेड़तियैरै वास[6] ।

३ मालो जोधावत ।

४ आंबो मालावत । झझूरी वेढ कांम आयो[7] ।

५ कांन्हो आंबावत ।

६ भगवांन ।

७ सुंदर । ७ वरजांग । ७ जोधो ।

६ करन कांन्हावत ।

७ वरसिंघ । ७ अमरो ।

६ बलू कांन्हावत ।

---

1 सम्वत् १६०० शतीमें सूर बादशाह चढ़ कर आया तब जोधपुर किलेकी पौल पर अपने हाथका चिह्न देकर तुर्कोंसे लड़ कर मरा । 2 संवत् १६६९में सोजत परगनेका बूटेलाव गांव पट्टे में । 3 राजधरके बेटे कल्याणदासका बीकानेरके देशमें निवास । 4 वडी लड़ाईमें काम आया । 5 राव मालदेवजीकी फलोधीके साथसे लड़ाई हुई उसमें जगमाल काम आया । 6 द्वारकादास मेड़तियाके यहां निवास (नौकर) । 7 झञ्झूकी लड़ाईमें काम आया ।

४ बछो मालारो ।

५ भाखरसी

४ नाथू मालारो । झभूरी वेढ कांम आयो ।

५ हरराज ।　५ वीको ।

४ रतनसी मालारो ।

५ ईसर ।　५ भींवराज ।

६ पूरो ।　६ हदो ।

२ भैरवदास जेसावत । राव सूजाजी धवळैरो सोभतरो भैरवदासनूं दियो थो, सु धवळैरै वसता[1] । नैं सूरमालण रावजीरो चाकर थो, तिणनूं चोपड़ो पटै थो । सु सींव ऊपर उपाव हुवो, वेढ हुई तठै सूरमालण भैरवदासनूं मारियो[2] । पछै सूरमालण नासनै रांणाजीरी धरतीमें गयो[3] । पछै भैरवदासरै वैर आणंद जेसावत जेसळमेर था साथ लेनै आयनै ओहलांणी इंद्रवड़ै सूरनूं मारियो[4] ।

भैरवदासरा बेटा–

३ सूरो ।　३ अचळो ।　३ देदो ।　३ वरजांग ।

करमेतीबाई भैरवदासरी रा॥ मेहराज अखैराजोतनूं परणाई तिणरै पेटरा कूंपोजी मेहराजोत[5] ।

३ सूरो भैरवदासोत ।

४ डूंगरसी सूरावत ।

५ हरदास डूंगरसीयोत । वडो रजपूत । राठोड़ भोजराज मालदेओतरै वास । पछै भोजराजजी नै तुरके वेढ हुई, तठै हरदास कांम आयो[6] ।

---

1 राव सूजाजीने सोजत परगनेका धवलेरा गांव भैरवदासको पट्टे में दिया था, अतः भैरवदास धवलेरेमें रहता था । 2 और रावजीका चाकर सूरमालण जिसको चौपड़ा गांव पट्टे में था । सीमा ऊपर झगड़ा हुआ और लड़ाई हो गई जिसमें सूरमालणने भैरवदासको मार दिया । 3 सूरमालण भाग कर के राणाजीकी धरती में (मेवाड़में) चला गया । 4 पीछे भैरवदासकी इस शत्रुताका बदला लेनेके लिये जैसलमेरसे आनंद जैसावतने अपने साथियोंके साथ आ कर ओहलाणी और इन्द्रवड़ा गांवोंके पास सूरमालणको मार दिया । 5 करमेतीबाई भैरवदासकी बेटी, राव मेहराज अखैराजोतको व्याही, जिसकी कोखसे कूंपाजी मेहराजोत पैदा हुआ । 6 फिर भोजराजजी और तुर्कोंके आपसमें लड़ाई हुई उसमें हरदास काम आया ।

६ ईसरदास हरदासोत । पैहली मोटै राजारो चाकर । मांणेवी जोधपुररी पटै । पछै मांणकळाव दियो । वडो रजपूत हुवो[1] ।

७ कूंभो ईसरदासोत । देवराजांरो भांणेज । संमत १६८० सांवड़ाऊ, काळियाठड़ो पटै । संमत १६८८ देसमें रांम कह्यो[2] ।

८ रांम कूंभावत । सं० १६८८ सांवड़ाऊ गांव २सूं वरकरार[3], ईसरदासजी भेळो[4] हीज थो । पछै संमत १६६४ जुदो पटो करायो सं० १६६७ मांणकळावसूं विसांइण रांमपुरै जुदो वसियो[5] ।

६ केसरीसिंघ । ६ जैसिंघ ।

८ स्यांम कूंभावत ।

६ नारणदास ।

७ लखमण ईसरदासोत ।

५ सांवळदास डूंगरसीयोत । बहेळवांरो सतावतांरो-वास थो[6] ।

६ नरहरदास सांवळदासोत । संमत १६६७ कांगळ पटै थी[7] ।

६ बलू सांवळदासोत । संमत १६७० गीघालो पटै[8] ।

६ जैतो सांवळदासोत । संमत १६७२ आंबलो पटै[9] ।

६ नारणदास सांवळदासोत । राजसिंघजीरै वास । ईडवै रैहतो[10] ।

६ भोजराज सांवळदासोत ।

५ मांनो डूंगरसीयोत ।

६ सुरतांण मांनावत । ६ भोपत मांनावत ।

५ ऊदो डूंगरसीयोत ।

६ सहँसो ऊदावत ।

७ भोपत सहँसावत । ७ सुंदर सहँसावत । ७ भांण सहँसावत ।

७ रांणो सहँसावत ।

---

1 ईशरदास बड़ा राजपूत हुआ । वह पहले मोटे राजाका चाकर था । जोधपुर परगनेका माणेवी गांव पट्टेमें था और पीछे माणकलाव गांव भी दिया । 2 कूंभा देवराजोतोंका भानजा । संवत् १६८०में सांवड़ाऊ और कालियांठड़ा गांव पट्टेमें । सम्वत् १६८८में देशमें मरा । 3 कायम । 4 शामिल । 5 सम्वत् १६६७में माणकलावसे बिसांइण और रामपुरेमें अलग बस गया । 6 वहेलवोंवाला 'सत्तावतांरो-बास' गांव पट्टेमें था । 7 सम्वत् १६६७में कांगल गांव पट्टेमें था । 8 सम्वत् १६७० गीघाला गांव पट्टेमें था । 9 सम्वत् १६७२में आंवला गांव पट्टेमें । 10 राजसिंहजीके यहां नौकर, ईडवे गांवमें रहता था ।

४ सांकर सूरावत । वडो रजपूत राव मालदेवरो[1] । सांकररै हवालै अजमेररो गढ थो[2] । पछै सूर पातसाह आयो तद कांम आयो[3] । जोधपुरमें गढ ऊपर छत्री छै[4]

पाज ऊपर छत्री तीन छै[5]–

१ भाटी सांकर सूरावतरी ।

१ तिलोकसी वरजांगोतरी ।

१ अचळै सिवराजोतरी ।

५ हमीर सांकरोत । फळोधी मोटै राजाजीरै भाटियांरी वेढ कांम आयो ।

६ गोयंददास हमीरोत । वूंटेची पटै[6] ।

७ धनराज गोयंददासोत । वूंटेची, भालेसरियो पटै । सं० १६४० रांमड़ावास पटै[7] ।

८ रासो धनराजोत । संमत १६६२ वोड़ानड़ो पटै[8] ।

७ कचरो गोयंददासोत ।

८ मुकंद ।

७ नरसिंघ गोयंददासोत । घीघाळियो पटै[9] ।

७ लिखमीदास गोयंददासोत ।

८ दयाळदास लिखमीदासोत । उजेण कांम आयो ।

९ सगतो ।

८ दलपत लिखमीदासोत ।

६ कांन्हो हमीरोत । संमत १६४१ सूरांणी पटै । संमत १६४२ आकड़ावस पालीरो पटै । पछै वोड़वी थी । कांन्हो नाथा धाय भाईरो जमाई[10] ।

---

1 राव मालदेवका बड़ा राजपूत । 2 अजमेरका गढ शंकरको सुपुर्द किया हुआ था । 3 पीछे सूर बादशाह चढ कर आया तब काम आ गया । 4 जोधपुरके गढ़में इसकी छतरी (स्मारक) बनी हुई है । 5 पाजके ऊपर तीन छतरियें बनी हुई हैं। 6 बूंटेची गांव पट्टेमें। 7 बूंटेची और भालेसरिया गांव पट्टेमें । संवत् १६४०में रामड़ावास पट्टेमें । 8 सम्वत् १६६२में बोड़ानड़ा (बोड़ानाडा) पट्टेमें । 9 घीघालिया गांव पट्टेमें । 10 सम्वत् १६४१में सूराणी गांव और संवत् १६४२में पाली परगनेका आकड़ावास गांव पट्टेमें । फिर बोड़वी गांव भी पट्टेमें था । कान्हा, नाथा धाभाईका दामाद ।

७ पीथो कान्हावत । बोडवी, सांवतकूवो पटै थो । पछै राजसिंघजीरै वसियो[1] ।

७ दूदो कान्हावत ।

६ कमो हमीरोत ।

५ वैरसल सांकरोत । मोटै राजाजीरै फळोधी, लोहावटरी वेढ कांम आयो ।

३ अचळो भैरूंदासोत । रांणारै चीतोड़ चाकर हुतो[2] । गांव १४० तांणो पटै हुतो[3] । नै वसी सोझतरै चोपड़ै हुती[4] । तठै रांमदास मालणरो बाप जेसैजी मारियो हुतो[5], तिण दावै अचळानूं रांमदास आदमियां ६सूं चोपड़ै मार गयो[6] ।

४ संसारचंद अचळावत । रा॥ मांडण कूंपावतरै वास थो । संमत १६२४ रा॥ पतो नगावत रांणाजीरो गांव भूंठाड़ियो मारियो[7], तद मांडणजी रांणाजीरै वास था, सु मांडणजीरा पटारा गांवां आगै पतो नीसरियो[8], तद रांणैजी मांडणजीनूं कहाड़ियो[9]– "आंपणा गांव मारनै पतो थांहरै आगै हुय नीसरियो, नै थे भूंबिया नहीं[10] । हिमै थे पिण जाय एक गांव मारो[11] ।" तरै मांडणजी चावळो भाद्राजणरो मारियो[12] । सु चावळामें अभो सांखलो रैहतो, तिणसूं वेढ हुई तठै संसारचंद ही कांम आयो ।

५ सांवळदास संसारचंदरो । सांखलां संसारचंदनूं मारियो, तिण वैरमें सांवळदासनूं सांखलां बेटी परणाई, वैर भागो[13] । तिण सांखलीरै

1 बोड़वी और सांवतकूवा गांव पट्टेमें थे। पीछे राजसिंहजीके यहां रह गया। 2 चित्तौड़में राणाजीका चाकर था। 3 १४० गांवोंके साथ ताणा गांव पट्टेमें था। 4 और सोजत परगनेके चौपड़ा गांवमें उसकी बसी थी। 5 जहां रामदासके बाप मालणको जैसाजीने मार दिया था। 6 उस शत्रुताके बदलेमें रामदास, अचलाको ६ आदमियोंके साथ चौपड़ा गांवमें मार कर चला गया। 7 सम्वत् १६२४में पत्ता नगावतने राणाजीका भूंठाड़िया गांव लूट लिया। 8 मांडणजीके पट्टेके गांवोंके आगे (पासमें) हो कर पत्ता निकला। 9 कहलवाया। 10 अपने गांवों को लूट करके पत्ता तुम्हारे आगे होकर निकल गया और तुम उससे लड़े नहीं। 11 अब तुम भी जाकर उसका एक गांव लूट लो। 12 तब मांडणजीने भाद्राजुनके पट्टेके चावला गांवको लूट लिया। 13 सांखलोंने संसारचंदको मारा, उस शत्रुताको मिटानेके लिये सांखलोंने संसारचंदके बेटे सांवलदासको अपनी बेटी व्याह दी, शत्रुता मिट गई।

बेटो धनराज । संमत १६४० छडांणी पटै । पछै संमत १६४९ सांवरला दियो[1] । संमत १६६२ गुजरात दांतीवाड़ारा कोळियांसूं वेढ हुई तठै कांम आयो[2] ।

६ धनराज सांवळदासोत । संमत १६५८ कूंपावस सिवांणारो मनोहरदास कलावत भेळो । सं० १६६३ सांवरला दियो । पछै कीटणोद दीवी । संमत १६९२ झांवर दीवी । संमत १६९५ कीटणोद दियो[3] ।

७ रूपसी । ७ करन । ७ प्रथीराज ।

पीढी तीन दीवांणरै वास रह्या[4]–

१ जैसो । २ भैरवदास । ३ अचळो । ४ संसारचंद मांडणजीरै वास ।

भाटी सांवळदास संसारचंदोत, वैरसी रायमलोत, ईसरदास रायमलोत, कलो रायमलोत ऐ च्यारै ही मोटा राजारै वास आया, तरै नोळ उवेड़ो दरबार आवतां आयो[5] । तरै राव नींबो महेसोत सवणी थो, तिण कह्यो– "थे जोधपुर घणा दिन चाकरी रहसो । थांसूं प्रोळ कदै छूटै नहीं । नै वैरसी नै सांवळदास दूजा पण ठाकुर, मोटा राजारै बैटांरै कांम आवस्यो[6] ।"

६ नरसिंघदास सांवळदासोत । संमत १६६२ कूंपावस मनोहरदास भेळो । सं० १६६७ भुडहड़ सिवांणारी पटै । संमत १६८४ दहीपड़ो पटै[7] । पछै राजसिंघ खींवावतरै वसियो । सं० १६७७ वाला-

---

1 उस सांखलीका बेटा धनराज, जिसे सम्वत् १६४०में छडाणी गांव और सम्वत् १६४९में सांवरला गांव पट्टेमें दिये थे । 2 संवत् १६६२में गुजरातमें दांतीवाड़ाके कोलियोंसे लड़ाई हुई वहां काम आया । 3 संवत् १६५८में मनोहरदास कलावतके साथ सिवाना परगनेका कूंपावस गांव पट्टेमें । संवत् १६६३में सांवरला गांव दिया और फिर कीटणोद दिया । संवत् १६९२में झंवर गांव और सम्वत् १६९५में कीटणोद गांव पुनः पट्टेमें दिये । 4 तीन पीढी तक दीवान (राणा) की चाकरीमें रहे । 5 तब दरबार में आते हुएको नेवला आड़ा आया । 6 तब राव नींबा महेशोत जो शकुनी था, उसने कहा– "तुम जोधपुर बहुत दिन तक चाकरीमें रहोगे । तुमसे पौल पर पहरा देनेकी चाकरी कभी छूटेगी नहीं । और वैरसी और सांवलदास तथा दूसरे ठाकुर भी मोटा राजाके बेटोंकी सेवामें काम आवोगे ।" 7 संवत् १६६२में कूंपावसका पट्टा मनोहरदासके सम्मिलित । सम्वत् १६६७में सिवाना परगनेका भुडहड़ गांव और सम्वत् १६८४ दहीपड़ा गांव पट्टेमें ।

पुररी मुंहम लात लागी तिणसूं खोड़ावतो[1] ।

७ रामचंद नरसिंघदासोत । संमत १६८६ दहीपड़ो पटै ।

७ रासो नरसिंघदासरो । ७ बलीरांम नरसिंघदासोत ।

८ हरीदास रांमचंदोत । ८ लाडखांन । ८ महेस ।

७ मुकुंददास नरसिंघोत ।

६ प्रागदास सांवळदासोत । संमत १६७२ मोकळनड़ी पटै । संमत १६७९ बालां सोभतरी पटै । संमत १६८२ सूरपुरो, मोकळनड़ी सिवांणारी पटै[2] । सं० १६९२ अमरसिंघजीरै गयो[3] । पछै संमत १६९६ वळै पाछो आयो[4] । सांमरला नैं भुडहड़ पटै[5] ।

७ भींव प्रागदासोत । संमत १६९१ अमरसिंघजीरै गयो थो । पाछो आयो । सांमरला नै भुडहड़ पटै[6] ।

८ रतनसी भींवोत । उजेण कांम आयो ।

८ लखमीदास ।

९ हरीसिंघ रतनसीयोत ।

८ गोयंददास ।

७ सबळसिंघ प्रागदासोत । सूरपुरो, मोकळनड़ी पटै[7] ।

७ सूजो प्रागदासोत । संमत १७१६ कीटणोद पटै[8] ।

७ दूदो प्रागदासोत । तांबड़ियो पटै[9] ।

७ केसोदास प्रागदासोत । कूंपावस पटै । कूंडांणै गढ ढोवो हुवो, तद भलो हुवो, पोकरणरो कोट राखियो[10] ।

८ सुंदरदास । ८ वेणीदास । ८ कूंभो ।

---

1 पीछे राजसिंह खींवावतके यहां बस गया । सम्वत् १६७७में बालापुरकी मुहिममें लात लग गई जिससे लंगड़ाता हुआ चलता था । 2 सम्वत् १६७२में मोकलनड़ी गांव, सम्वत् १६७९में सोजत परगनेका बालां गांव और सम्वत् १६८२में सिवाना परगनेके सूरपुरा और मोकलनड़ी गांव पट्टेमें । 3 सम्वत् १६९२ अमरसिंहजीके यहां चला गया । 4 सम्वत् १६९६में वापिस आ गया । 5 सांमरला और भुडहड़ गांव पट्टेमें । 6 सम्वत् १६९१में अमरसिंहजीके यहां चला गया था, किन्तु वापिस आ गया । सांमरला और भुडहड़ गांव पट्टेमें । 7 सूरपुरा और मोकलनड़ी गांव पट्टेमें । 8 सम्वत् १७१६ कीटणोद गांव पट्टेमें । 9 तांबड़िया गांव पट्टेमें । 10 कूंपावस गांव पट्टेमें । कूंडाणे गढ पर आक्रमण हुआ तब यह शुभचिंतक रहा, पोकरणके कोटको बचा लिया ।

७ आसो प्रागदासोत । ७ विहारी प्रागदासोत ।

६ वीठळदास सांवळदासोत आंधो थो[1] ।

७ नाथो ।

५ कलो संसारचंदरो । मांडणजीरै वास थो, पछै रावळै वसियो । संमत १६४३ कूंपावस सिवांणारो गांवां २सूं दियो। पछै संमत १६५७ दिखणमें अहमदनगरमें मुंवो[2] ।

६ मनोहरदास कलावत । सं० १६५७ कूंपावस धनराज भेळो दियो । पछै सं० १६६३ नरसिंघदास भेळो । संमत १६६७ माधोदास भेळो[3] ।

६ माधोदास कलावत। संमत १६६७ कूंपावस मनोहरदास भेळो। पछै रांमदास भेळो[4] ।

७ उदैसिंघ ।

८ महेसदास ।

६ महेसदास कलावत ।

७ नाथो ।

५ कचरो संसारचंदरो ।·वडो रजपूत। मांडणजीरै वास। पूरबमें कांम आयो[5] ।

६ सादूळ कचरावत । रा।। खींवाजीरै वास थो । पछै राजसिंघजीरै वास[6] ।

७ मोहणदास ।

६ सुरजन कचरावत। राजसिंघजीरैसूं छाड़नै भावसिंघ कांना-

---

1 विट्ठलदास सांवलदासोत अंधा था। 2 पहिले मांडणजीके यहां रहा था फिर जोधपुर महाराजाके यहां रहा। सम्वत् १६४३में सिवाना परगनेका कूंपावस गांव अन्य दो गांवोंके साथ पट्टेमें दिया था। फिर संवत् १६५७में अहमदनगर, दक्षिणमें मरगया। 3 संवत् १६५७में कूंपावस गांवको धनराजके शामिल, सम्वत् १६६३में नरसिंहदासके शामिल और संवत् १६६७में माधोदासके शामिल पट्टेमें दिया था। 4 संवत् १६६७में कूंपावस गांव मनोहरदासके शामिल और फिर रामदासके शामिल। 5 वड़ा वीर राजपूत। मांडणजीके यहां नौकर। पूर्वमें काम आया। 6 राव खींवाजीके पास पहले रहा था, फिर राजसिंहजीके यहां रहा।

वतरै रयो। पछै रावळै वसियो। सं० १६६० मलाररी पाडरी पटै दीवी[1]।

७ बळू सुरजनोत। संमत १६६१ मलार पटै[2]।

७ गिरधरदास सुरजनोत। मलार पटै।

६ भोपत कचरावत। राजसिंघजीरै वास।

६ उरजन कचरावत।

७ खेतसी।

४ संसारचंद अचळावत।

४ रायमल अचळावत।

५ वैरसी रायमलोत। लालांणो सिवांणारो पटै। पछै जाजीवाळ पटै। सं० १६५८ दिखणमें आंबाररी लड़ाई बांण लागो[3]।

६ जोगीदास वैरसीयोत। सं० १६५८ जाजीवाळ वरकरार। पछै छाडनै रांणाजीरै गयो। सं० १६६४ वळै आयो, तद जाजीवाळ दीवी। सं० १६७८ रांम कह्यो। भलो चींधड़ थो[4]।

७ हरीदास जोगीदासोत। सं० १६५८ जाजीवाळ पटै। संमत १६६२ रांम कह्यो[5]।

८ रुघनाथ।

७ चुतरभुज जोगीदासोत। मेहळी सिवांणारी पटै[9]।

८ मोहणदास चुतरभुजोत। ८ लिखमीदास।

९ गिरधरदास।

७ सांमदास जोगीदासोत। सं० १६६२ जाजीवाळ पटै[7]।

८ रतनसी।

---

1 राजसिंहजीके यहांसे छोड़ करके भावसिंह कान्हावतके यहां रहा। फिर महाराजाके यहां रहा। संवत् १६६०में मलारका पाडरी गांव पट्टेमें दिया। 2 संवत् १६६१में मलार गांव पट्टेमें। 3 सिवाना परगनेका लालाणा गांव पट्टेमें और फिर जाजीवाल गांव पट्टेमें। सम्वत १६५८में दक्षिणमें आंबारकी लड़ाईमें बाण लगा। 4 सम्वत् १६५८में जाजीवाल गांव पट्टेमें कायम रहा। फिर छोड़कर राणाजीके यहां चला गया। सम्वत् १६६४में वापिस आया तब जाजीवाल गांव पुनः पट्टेमें दिया। सम्वत् १६७८में मर गया। यह अफीमची पर अच्छा राजपूत था। 5 सम्वत् १६५८में जाजीवाल गांव पट्टेमें। संवत् १६६२में मरा। 6 सिवाना परगनेका मेहली गांव पट्टेमें। 7 संवत् १६६२में जाजीवाल पट्टेमें।

५ ईसरदास रायमलोत । वडो रजपूत । कांमरो मांणस । राव रायसिंघ चंद्रसेणोत साथै सीरोही पूरै लोहड़ै पड़ियो[1] । पछै करम-सेनजीरै वसियो । चांदो खीची करमसेन मारियो, तद रांणारै वास थको मांहैसूं ईसरदास बरछीरी दीवी[2] । पछै सं० १७६१ गोयंददासजी मारांणा, तद छाडियो[3] । रावळै वसियो । गांव ४सूं वीठू दीवी[4] । पछै वळै छाडियो[5] ।

६ सबळसिंघ ईसरदासोत । ६ आसकरण ईसरदासोत ।

६ नारणदास ईसरदासोत ।

७ मनोहरदास ।

५ भांण रायमलोत । पूरणमल मांडणोतरै वास । संमत १६४० पूरणमलजी साथै सीरोही कांम आयो[6] ।

६ अमरो भांणोत । रांमड़ावास जोधपुररो पटै । दिखणमें रांम कह्यो[7] ।

७ तेजमाल अमरावत । संमत १६७८ सांवतकूवो पटै । संमत १६८६ भाहरो पटै । सं० १६६० खारी लवेरारी पटै[8] ।

५ घड़सी रायमलोत । राव चंद्रसेणजीरै गूढो फुलाज थो, तठै तुरक आया, तठै कांम आयो[9] ।

६ महेस घड़सीरो । संमत १६......वीनावास पीपाड़रो पटै । सं० १६७२ पांचपदरो भाद्राजणरो दियो थो । पछै करमसेनजीरै गयो, उठै रांम कह्यो[10] ।

---

1 वड़ा वीर राजपूत और उपकारी मनुष्य । राव रायसिंह चंद्रसेणोतके साथमें सिरोहीकी लड़ाईमें पूरा घायल हो कर गिरा । 2 फिर करमसेनजीके यहां जाकर रहा । करमसेनने जब चांदा खीचीको मार दिया, तब राणाके यहां रहते थके ईशरदासने भीतरसे फेंक कर बरछीकी मार दी । 3 पीछे संवत् १६७१में जब गोयंददासजी मारा गया तब छोड़ दिया । 4 फिर जोधपुर महाराजाके यहां रहा । महाराजाने ४ गांवोंके साथ वीठू गांव पट्टे में दिया । 5 परन्तु फिर छोड़ दिया । 6 पूर्णमल मांडणोतके यहां नौकर । संवत् १६४०में पूर्णमलजीके साथ सिरोहीमें काम आया । 7 जोधपुर परगनेका रामड़ावास गांव पट्टेमें । दक्षिणमें मरा । 8 संवत् १६७८में सांवतकुआ गांव, संवत् १६८६ भाहरा गांव और संवत् १६६०में लवेराका खारी गांव पट्टे में दिये गये । 9 राव चंद्रसेनजीका गुढ़ा फुलाजमें था, वहां तुर्क चढ़ कर आये जब घड़सी वहां काम आया । 10 वहां रामशरण हुआ ।

७ दलपत । ७ नाथो ।

४ मेरो अचळावत । कूंपाजीरै वास । वडी वेढ कूंपाजी साथै कांम आयो[1] ।

५ अखैराज मेरावत । मांडण कूंपावतरै वास । सीहो सींधळ मारियो तठै कांम आयो[2] ।

६ किसनदास अखैराजोत । सं० १६६४ पांचलो पटै । सं० १६६४ वीझवाड़ियो पटै बीलाड़ारो। सं० १६७२ वळै पांचलो दियो। पछै रांम कह्यो[3] ।

७ खेतसी किसनदासोत । सं० १६८० जेसावस मेड़तारो पटै । सं० १६८८ थाहरवसणी सोझतरी जगनाथ भेळी । सं० १६८९ छाछोळाई पटै । सं० १६९१ कमारो-वाड़ो । पछै खांडप रा।। सिंघ जैतमालोतनूं थी । सींव वेई उपाव हुवो, तठै मारांणो[4] ।

८ हररांम ।

७ जगनाथ किसनदासोत । महेव आधी पटै[5] ।

७ कूंभो किसनदासोत ।

६ जोगो अखैराजोत । सं० १६४२ रांवणियांणारी कणवार दी थी । संमत १६६४ पांचनड़ो सोझतरो पटै । सं० १६५२ महेव सोझतरी दीवी । भलो डील थो[6] ।

७ जैतो जोगावत । भगवांनदास नारणदासोतरै वास ।

८ लखो । ८ रूपसी ।

---

1 कूंपाजीका चाकर बड़ी लड़ाईमें कूंपाजीके साथ काम आया । 2 सिंघल सीहाको मारा तब अखैराज भी काम काया । 3 संवत् १६६४में पांचला और बिलाड़ेका वीझवाड़िया पट्टे में । सम्वत १६७२ फिर पांचला गांव दिया । फिर मर गया । 4 संवत् १६८०में मेड़ते परगनेका जैसावास, संवत् १६८८में जगन्नाथके शामिलमें सोजत परगनेका थाहर-वासणी गांव पट्टेमें, सम्वत् १६८९में छाछोलाई गांव, संवत् १६९१में कमारो-वाड़ो गांव पट्टेमें थे । उस समय खांडप गांव रा।। सिंह जैतमालोतको पट्टेमें मिला हुआ था, उससे सीमाके लिये झगड़ा हुआ जिसमें खेतसी मारा गया । 5 महेव गांव जगन्नाथको आधा पट्टेमें । 6 जोगाको संवत् १६४२में रावणियाणा गांवकी कणवारका काम दिया गया था । संवत् १६६४ सोजत परगनेका पांचनड़ा गांव और सम्वत् १६५२में सोजत परगनेका महेव गांव पट्टेमें दिये गये थे । अच्छे रिवार वाला था ।

६ केसोदास अखैराजोत । सं० १६५० राय-कोहरियो लवेरारो पटै[1] ।

७ रांमदास केसोदासोत । सं० १६६४ हींगोळांरी-वासणी सोझतरी पटै । पछै सिघावासणी[2] ।

८ रुघनाथ । ८ लमखण । ८ राघोदास ।

७ मांनो केसोदासोत । सं० १६७३ उंमरळाई सिवांणारी । सं० १६७९ लालांणो सिवांणारो पटै[3] ।

८ जोध मांनसिंघोत । ८ द्वारकादास । ८ स्यांमदास ।

७ बलू केसोत । अमरसिंघजी साथै कांम आयो ।

नारणदास अखैराजोत । कांझरी ओयसांरी पटै । पछै महेव सोझतरी पटै[4] ।

७ भादो नारणदासोत । सूरांणी पटै । पछै महेव दीवी । संमत १६७१ अजमेर गोयंददास साथै कांम आयो[5] ।

८ उदैसिंघ भादावत । सं० १६७१ महेव पटै ।

९ मनोहरदास उदैसिंघोत ।

८ आसकरण भादावत ।

७ माधोदास नारणदासोत । सं० १६७३ महेव आधी उदैसिंघ भेळी[6] ।

८ मेघराज । ८ देईदास । ८ रतनसी ।

७ वीठळदास नारणदासोत ।

८ नाहरखांन ।

५ गोपाळदास मेरावत । सं० १६४१ वाघावास सोझतरो पटै ।

---

1 सम्वत् १६५०में लवेराका राय-कोहरियो गांव पट्टेमें था । 2 संवत् १६६४में सोजत परगनेका हींगोलांरी-वासणी नामक गांव पट्टेमें, फिर सिहावासणी गांव दिया गया । 3 सम्वत् १६७३में सिवाना परगनेका ऊमरलाई गांव और संवत् १६७९में सिवाना परगनेका लालाणा गांव पट्टेमें थे । 4 ओयसांकी जागीरीका कांझरी गांव और फिर सोजत परगनेका महेव पट्टेमें । 5 भादोको सूराणी गांव पट्टेमें और फिर महेव गांव दिया । सम्वत् १६७१में अजमेरमें गोयंददासके साथ काम आया । 6 सम्वत् १६७३में उदयसिंहके साथ महेव गांव आधा ।

पछै राव मांडण कूंपावत सीहो मारियो तद कांम आयो[1] ।

६ सूरजमल गोपाळदासोत । सं० १६६२ बंधड़ो पटै ।

७ केसोदास सूरजमलोत ।

७ सुंदरदास सूरजमलोत । सं० १६८० इटावो मेड़तारो; भोजु दौलतखांन भेळो[2] ।

७ गोयंददास ।

८ आसो । ८. दलपत ।

७ रांमसिंघ सूरजमलोत ।

६ पूरणमल गोपाळदासोत । ६. कांनो गोपाळदासोत ।

७ रांमदास ।

८ गोवरधन ।

६ भगवांनदास गोपाळदासोत ।

३ मेरै अचळावतरा[3] ।

४ जैतसी अचळावत ।

५ रतनसी जैतसीरो ।

६ सुरतांण रतनसीयोत ।

७ मेघराज । ७ सूरो । ७ सुंदरदास । ७ भोजराज ।

४ करमसी अचळावत ।

५ ठाकुरसी करमसीयोत ।

६ सहसो ठाकुरसीयोत । संमत १६५९ बुरवटो लवेरारो । सं० १६६७ मांडावरो मेड़तारो पटै[4] ।

६ सिंघ ठाकुरसीयोत । सं० १६५९ मांडावरो मेड़तारो पटै । सं० १६६५ तिघरी पटै । सं० १६६६ मांणकियावास मेड़तारो पटै[5] ।

---

1 मेराके पुत्र गोपालदासको सोजत परगनेका वाघावास गांव पट्टेमें । राव मांडण कूंपावतने सीहाको मारा तब गोपालदास भी काम आया । 2 सुंदरदासको संवत् १६८०में भोजू दौलतखानके शामिल मेड़ते परगनेका इटावा गांव पट्टेमें । 3 अचलेके पुत्र मेरेका परिवार । 4 सहसाको सम्वत् १६५९में लवेरेका बुरवटा गांव और सम्वत् १६६७में मेड़ते परगनेका मंडावरा गांव पट्टेमें । 5 सिंहको सम्वत् १६५९में मेड़ते परगनेका मडावरा गांव, सम्वत् १६६५में तिघरी गांव और संवत् १६६६में मेड़ते परगनेका माणकियावास गांव पट्टेमें ।

५ हरराज करमसीरो ।

६ सांईदास हरराजोत ।

७ राघो । ७ रायसिंघ ।

३ देदो भैरवदासोत ।

४ वैणो देदावत ।

५ सूजौ वैणावत । आसरानड़ो पटै[1] ।

६ नारणदास सूजावत । आसरानड़ो आधो, पछै साबतो पटै[2] ।

६ रांमदास सूजावत ।

५ मूळो वैणावत ।

६ पतो मूळावत । आसरानड़ो आधो पटै ।

७ स्यांमदास । ७ नरसिंघ । ७ मुकंददास ।

६ पंचाइण मूळावत । आसरानड़ो आधो पटै ।

४ पीथो देदावत ।

५ कचरो पीथावत । वैणीदास पूरणमलोतरै वास[3] ।

५ सांगो पीथावत । रा ।। लखमण नारणोतरै साथै कांम आयो[4] ।

३ वरजांग भैरूंदासोत । राव मालदेजी सूर पातसाह कनै एक प्रोहत नै एक वरजांग दोनूं ही नूं परधांनै मेलिया था, सु पातसाह पकड़ बंदीखांनै दिया । पछै सूर पातसाह मुंवो जदी छूट आया[5] । भा।। वरजांग भैरवदासोतनूं जोधपुररै वास वैराई, महेव पटै दी[6] । वरजांगरो करायो वैराईमें तळाव वरजांगसर छै । कोहर १ वरजांगसर छै[7] । महेवमें जोगीरो आसण वरजांग करायो[8] ।

---

1 सूजे वैणावतको आसरानडो (आसा-रो-नाडो ?) गांव पट्टेमें । 2 नारायणदासको पहले आसरानडो आधा और फिर सम्पूर्ण पट्टेमें । 3 कचरा पीथावत, वैणीदास पूर्णमलोतके यहां नौकर । 4 नारायणके बेटे रा।। लखमणके साथ सांगा पीथावत काम आया । 5 राव मालदेवजीने सूर बादशाहके पास एक पुरोहितको और एक वरजांग, दोनों ही को अपनी ओरसे प्रधानके (प्रतिनिधिके) रूपमें भेजा था, लेकिन बादशाहने उन्हें पकड़ कर जेलमें डाल दिया । जब सूर बादशाह मर गया तब वे छूट कर आये । 6 वरजांग भैरवदासोतको, जब वह जोधपुरमें चाकरीमें रहा तब वैराही और महेव गांव पट्टेमें दिये । 7 वैराही गांवमें वरजांगके बनवाये हुए वरजांगसर नामका एक तालाव और वारजांगसर नामका ही एक कुंआ है । 8 महेव गांवमें वरजांगने एक जोगीका आसन बनवाया ।

४ वीरमदे वरजांगोत । वागड़ में कांम आयो ।

५ लखो वीरमदेवोत । चौहवांणांरा वैर मारांणो[1] ।

६ राजसिंघ लखावत । उजेण कांम आयो[2] ।

७ अमरसिंघ । ७ जैतसी ।

६ मांनसिंघ लखावत ।

७ करन मांनसिंघोत ।

६ गोयंददास लखावत ।

७ नाथो, गोड़ै मारियो[3] ।

६ वीठळदास लखावत । ६ जगमाल लखावत ।

६ महेसदास लखावत, गोड़ै मारियो ।

४ भांनीदास वरजांगरो । वागड़ कांम आयो[4] ।

५ सांवळदास । ५ विजो भांनीदासरो ।

६ जैतसो वागड़ छै[5] ।

४ जगमाल वरजांगोत ।

५ किसनो जगमालोत ।

६ भगवांन किसनावत । रा।। मांन खींवावतरै वास[6] ।

७ हरीदास भगवांनोत ।

५ रांम जगमालोत ।

६ राघोदास रांमोत । रा।। जसवंत सादूळोतरै वास[7] ।

७ राजसिंघ ।

६ सूजो रांमावत ।

७ ईसरदास सूजावत ।

८ आसो ।

९ माधोदास ।

७ सहसो सूजारो ।

---

1 चौहानोंकी शत्रुतामें मारा गया । 2 उज्जैनकी लड़ाईमें काम आया । 3 नाथाको गौड़ोंने मारा । 4 वागड़की लड़ाईमें काम आया । 5 जैतसी वागड़में रहता है । 6 भगवान किसनावत रा।। मान खींवावतका चाकर । 7 रामाका पुत्र राघोदास सादूलके बेटे रा।। जसवंतका चाकर ।

८ सुंदरदास। ८ मांनसिंघ। ८ रासो।

५ ठाकुरसी जगमालोत। संमत १६६४ भोवाद पटै।

६ कलो ठाकुरसीरो। ६ सुरतांण ठाकुरसीरो।

७ हरदास। ७ वीको। ७ तिलोकसी।

५ सूजो जगमालोत।

६ ईसरदास सूजावत। भाटी अचळदास सुरतांणोत मारियो गांव कांभड़ै[1]।

७ अखैराज ईसरदासोत।

८ मेघराज अखैराजोत। अचळदास सुरतांणोत साथै कांम आयो।

६ सहसो सूजावत।

४ खींवो वरजांगोत, वागड़ कांम आयो[2]।

४ गांगो वरजांगोत। कूंपाजीरै वास थो। पछै सूर पातसाह कनै परधांन कूंपैजी मेलियो। पछै पातसाह सहरवांद थको हीज आप कनै राखियो थो। पछै वेढ-हुई तद कूंपाजी साथै कांम आयो। गांगो, कूंपा मैहराजोतरो मावळियाई-भाई हुवो[3]।

५ वरजांग भैरूंदासोत।

४ भैरूंदास जेसावत।

२ वणवीर जेसावत। खैरवो पटै।

३ तेजसी वणवीरोत। राव मालदेजीरै वास। खैरवो पटै। भांगेसररी वेढ राव मालदे की, तठै पूरै लोहड़ै पड़ियो, पछै उपाड़ियो। बाहतर वड-गूजरांवाळी फोजदार कर मेलियो हुतो[4]।

---

1 कांभड़ा गांवमें भाटी अचलदास सुरताणोतने ईसरदास सूजावतको मार दिया। 2 वरजांगका बेटा खींवा वागड़की लड़ाईमें काम आया। 3 वरजांगका बेटा गांगा कूंपाजीके यहां रहता था। कूंपाजीने इसे अपना प्रधान (प्रतिनिधि) बना कर सूर बादशाहके पास भेजा। बादशाहने गांगाको शहरबंद करके (कैदीके रूपमें) अपने पास रख लिया था। जब लड़ाई हुई तब कूंपाजीके साथ गांगा भी काम आ गया। गांगा, कूंपा मेहराजोतका धर्म भाई (?) हुआ था। 4 तेजसी वणवीरोतको राव मालदेवने बड़-गूजरोंवाली-बाहतर गांवमें फौजदार बना कर भेजा था। राव मालदेवने भांगेसरमें लड़ाई लड़ी उसमें तेजसी पूर्ण आहत हो कर गिर गया और उठा कर ले जाया गया। राव मालदेव का यह नौकर था और खैरवा गांव इसको पट्टे में दिया गया था।

४ कांन्हो। भोजराज मालदेवोतरो चाकर। भोजराज साथै कांम आयो।

५ प्रथीराज कांन्हावत। सं० १६६७ बालो गूंदोचरो पटै। संमत १६७० अरटियो पीपाड़रो। पछै गोधावस दियो। संमत १६७१ अजमेर भाटी गोयंददासजी साथै कांम आयो[1]।

६ सांकर प्रथीराजोत। संमत १६७२ अरटियो गांव २ सूं वरकरार। संमत १६८४ पूनासर। संमत १६८७ सांवळतो। संमत १६९२ अमरसिंघजीरै गयो[2]।

६ दूदो प्रथीराजोत।

७ भींव दूदावत। ७ केसरीसिंघ दूदावत।

६ जगनाथ प्रथीराजोत।

५ सिंघ कांन्हावत।

६ भोपत सिंघोत। ६ भोजराज सिंघोत। ६ भांण सिंघोत।

५ वाघ कांन्हावत। कांन्ह साथै कांम आयो।

४ मैहकरण तेजसीयोत। डूंगरपुर कांम आयो।

५ मांनसिंघ मैहकरणोत। माळवा दिसी थो। संमत १६७५ आयो तद गोघेळाव दियो[3]।

६ परतापसिंघ मांनसिंघोत। सं० १६८६ जाल्हणारी मुंहम कांम आयो[4]।

६ स्यांमसिंघ मांनसिंघोत। काठासी पटै।

६ ईसरदास मांनसिंघोत।

५ सांवळदास मैहकरणोत। खटोड़ो पटै। पछै छाडनै करम-सेनजीरै वसियो। पछै उठै घोड़ारी लात लागी तिणसूं मुंवो[5]।

---

1 सम्वत् १६६७में गूंदोचका बाला गांव, सम्वत् १६७०में पीपाड़ परगनेका अरटिया गांव और फिर गोधावस गांव पट्टे में दिये थे। सम्वत् १६७१में भाटी गोयंददासजीके साथ अजमेरमें काम आया। 2 सम्वत् १६७२में दो और गांवोंके साथ अरटिया कायम। सम्वत् १६८४में पूनासर, सम्वत् १६८७में सांवलता गांव पट्टे में दिये। सम्वत् १६९२में अमरसिंहजीके यहाँ चला गया। 3 मालवाकी ओर था। संवत् १६७५में आया तब गोघेलाव गांव पट्टे में दिया। 4 संवत् १६८६ जालनाकी लड़ाईमें काम आया। 5 खटोड़ा गांव पट्टे में था उसे छोड़कर करमसेनके यहां जाकर रहा। वहां घोड़ेकी लात लगी जिससे मर गया।

६ मनोहरदास । ६ मांनसिंघ ।

४ मेहो तेजसीयोत । भलो ठाकुर थो । राव चंद्रसेणजी मेहारी बेटी परणिया था । विखामें राव चंद्रसेणरै कांम आयो[1] ।

४ किसनो तेजसीयोत ।

५ पातळ किसनावत । सं० १६४१ तांवड़ियो पटै । पछै संमत १६६४ करमसीसर । दोनूं पटै था[2] ।

६ मनोहरदास पातळोत । करमसीसर पटै ।

६ अखैराज पातळोत ।

५ सादूळ किसनावत । मोटै राजाजी वड़लो पटै दियो, वागड़सूं आयो तरै[3] ।

६ वलू सादूळोत ।

३ वीसो वणवीरोत । राव मालदेरा विखामें भांगेसररी वेढ कांम आयो, ऊगा महेवचा भेळो[4] ।

४ रायसिंघ वीसावत ।

५ भांण रायसिंघोत । भाटेर कांम आयो । नागोररा साथसूं वेढ हुई तठै[5] ।

६ सांमदास भांणोत । ६ हरीदास भांणोत ।

५ नरहरदास रायसिंघोत । भाटेर कांम आयो ।

५ चतुरभुज रायसिंघोत । भगतावासणी जोधपुररी पटै । पछै सं० १६७१ कुंवर गजसिंघ गोयंददासजी रांणारी धरती कुंभळमेर लियो तठै कांम आयो[6] ।

५ लाडखांन रायसिंघोत ।

४ पीथो वीसावत ।

---

1 मेहा तेजसीओत अच्छा ठाकुर था । राव चंद्रसेनजी मेहाकी बेटी व्याहे थे । राव चंद्रसेनके संकट-कालमें काम आया । 2 सम्वत् १६४१में तांवड़िया गांव और सम्वत् १६६४में करमसीसर दोनों गांव पट्टेमें थे । 3 वागड़से आया तब मोटे राजाजीने वड़ला गांव पट्टेमें दिया । 4 राव मालदेवके विखेमें ऊगा महेवचाके साथ भांगेसरकी लड़ाईमें काम आया । 5 नागोरवालोंसे लड़ाई हुई तब भाटेर गांवमें काम आया । 6 जोधपुर परगनेका भगतावासणी गांव पट्टेमें । सम्वत् १६७१में कुंवर गजसिंह और गोयंददासजीने राणाके देशका (मेवाड़का) कुंभलमेर लिया वहां काम आया ।

५ केसोदास पीथावत । बांधड़ो पटै ।

६ दळपत केसोदासोत । सं० १६७६ गोपाळदास भींवोत भेळो कांम आयो[1] ।

।। इति जेसा भाटियां री ख्यात-पीढियां संपूर्णम् ।।

---

1 सम्वत् १६७६में गोपालदास भींवोतके शामिल काम आया ।

रूपसी-भाटियां री साख

भाटियां मांहै साख १ रूपसियांरी। रूपसी लखमण रावळरो वेटो[5]।

१ रूपसी लखमणरो।

२ विजो रूपसीरो। २ नाथो रूपसीरो। २ पतो रूपसीरो। जूझै। विजा रूपसिग्रोतरो परवार[2]।

३ सांगो विजावत।

४ मेळो सांगावत।

५ भैरवदास मेळावत। संमत १६५१ रांमदास चांदावतरै वास थो। पछै रावळै वसियो। संमत १६७० मेड़ते सिकदार थो। संमत १६७७ मादळियो पटै[3]।

६ रायसिंघ भैरवदासोत। कांभड़ो पटै[4]।

६ सूजो, भाटी गोयंददास साथै कांम ग्रायो[5]।

७ कूंभो। ७ ग्रासो।

६ नरहरदास भैरवदासोत। ६ रांमसिंघ भैरवदासोत।

७ कीरतसिंघ। ७ सकतसिंघ। ७ हरदास।

६ लाडखांन भैरवदासोत।

७ ग्रखैराज। ७ भोजराज।

६ उदैसिंघ भैरवदासोत।

७ वीठळ। ७ मुकंद।

६ जगनाथ भैरवदासोत। ६ राजसी भैरवदासोत।

५ भींवराज मेळावत।

६ वेणीदास।

---

1 रावल लखमणका वेटा रूपसी जिससे भाटी राजपूतोंमें एक शाखा रूपसी-भाटियोंकी ग्रथवा रूपसियोंकी प्रचालित हुई। 2 रूपसीके वेटे विजैका (विजय का) परिवार। 3 मेलेका वेटा भैरवदास, संवत् १६५१में रामदास चांदावतके यहां रहता था, फिर जोधपुरमें राजाजीके यहां रहा। संवत् १६७०में मेड़तेका सिकदार था। संवत् १६७७में मादलिया गांव पट्टेमें था। 4 भैरवदासके वेटे रायसिंहको कांभड़ा गांव पट्टेमें मिला। 5 सूजा, भाटी गोयंददासके साथ ग्रजमेरमें काम ग्राया।

नाथू रूपसीरो, आंक २, तिणरा बेटा[1] ।

३ राघो जेसळमेर छै[2] ।

३ रांमो, सिवदास, रिणधीर जेसळमेर छै[3] ।

३ सिवदास नाथूरो ।

४ जाळप सिवदासोत । कँवर रांम मालदेग्रोतरो चाकर । देसोटै रांम साथै गयो[4] ।

५ रायसिंघ जाळपोत ।

६ गोपाळदास, राव जगनाथरै वास[5] ।

७ दयाळदास । ७ द्वारकादास ।

६ मोहणदास ।

४ नींबो सिवदासरो ।

५ दूदो नींबावत ।

६ सुरतांण ।

७ महेस ।

६ कांन्ह दूदावत ।

७ प्रथीराज । ७ देवीदास ।

६ सादूळ दूदावत ।

७ तेजसी ।

६ भाखरसी दूदावत ।

७ चांदो । ७ हरी । ७ स्यांमदास । ७ अचळो ।

भाटी पतो रूपसिग्रोत, आंक २—

३ हरदास पतावत ।

४ नरबद, भांगेसर रा।। जेसो भूंबियो तद कांम आयो[6] ।

५ रांणो नरबदरो ।

---

1 संख्या २ पर, ऊपर अंकित नाथू रूपसिग्रोत, जिसके बेटों (पोतों का) वर्णन। 2 राघो जैसलमेर रहता है । 3 रामा, शिवदास और रणधीर तीनों जैसलमेरमें रहते हैं। 4 शिवदासका बेटा जालप, यह मालदेवके पुत्र कुंवर रामका चाकर। रामको जब देश-निकाला हुआ तब यह भी साथमें गया । 5 गोपालदास राव जगन्नाथके यहां नौकर। 6 गांव भांगेसरमें रा।। जैसाने लड़ाई की तब नरबद काम आया ।

६ गोयंददास ।

७ वीठळदास ।

६ गोपाळदास रांणावत । वाघावस पटै । सं० १६४१ गुजरात कांम आयो[1] ।

७ हरीदास गोपाळदासोत ।

८ जगनाथ ।

९ अखैराज ।

३ राघो नाथूरो । इणरै वांसला जेसळमेररै गांव काछै[2] ।

४ चंद्रराव ।

५ भाखर काछै रहै[3] ।

६ सेखो । ६ सुरतांण । ६ अमरो ।

७ देवीदांन ।

५ वरजांग ।

६ सादूळ ।

७ पीथो ।

८ मनोहर काछै[4] । ८ मोहणदास ।

६ नापो वरजांगरो ।

६ सहसो । सोढांरै मांमलै कांम आयो[5] ।

७ डूंगरसी, जगनाथ कनै[6] ।

७ स्यांमदास सोरठ कांम आयो[7] ।

३ रिणधीर नाथूरो ।

४ मूळो ।

५ दूदो ।

६ गंगादास । ६ नेतो ।

---

1 राणाके बेटे गोपालदासको वाघावस गांव पट्टेमें। संवत् १६४१में गुजरातमें काम आया। 2 नाथूका बेटा राघो, इसके वंशज जैसलमेर परगनेके काछे गांवमें रहते हैं। 3 भाखर काछै गांवमें रहता है। 4 मनोहर काछै गांवमें रहता है। 5 सहसा सोढोंकी लड़ाईमें काम आया। 6 डूंगरसी जगन्नाथके पास रहता है। 7 स्यामदास सोरठकी (सौराष्ट्रकी) लड़ाईमें काम आया।

७ सुंदर काछै रहै[1] ।

६ जेठो ।

२ नाथू रूपसीरो ।

३ सिवदास ।

४ रांमो । ४ राघो। ४ रिणधीर ।

४ रांमो नाथूरो ।

५ नरबद ।

६ देवराज ।

७ जैमल । जोधपुर गढ कांम आयो[2] ।

८ कलो ।

९ भाखरसी ।

१० जीवो ।

११ महेस ।

९ डूंगरसी कलारो ।

१० भोपत । १० सांवळ । १० जसो ।

९ वेणीदास । पोकरण कांम आयो[3] ।

८ नेतो जैमलोत ।

९ रांमदास । पोकरणरी वेढ कांम आयो[4] ।

१० नाथो ।

११ आसो । ११ भींवो । ११ कूंभो ।

१० पांचो ।

११ भांनो ।

१० सीहो रांमदासोत ।

११ रतनो । ११ जगमाल ।

९ दळपत नेतावत । पोकरणरी वेढ कांम आयो ।

१० खींवो ।

११ हेमराज ।

---

1 सुंदर काछै गांवमें रहता है । 2 जोधपुरके गढ़की लड़ाईमें जैमल काम आया । 3 वेणीदास पोकरणकी लड़ाईमें काम आया । 4 रामदास पोकरणकी लड़ाईमें काम आया ।

९ धनराज जैतावत । रावळ रांमचंदरै साथ सबळसिंघसूं वाप वेढ की, तठै कांम आयो[1] ।

१० रायमल ।

११ सूजो रायमलोत ।

१० जैतो ।

११ भागचंद जैतावत ।

१० सुरतांण । १० किसनो ।

८ पतो जैमलरो ।

९ लिखमीदास ।

१० नरहर ।

११ विजो ।

१० भैरवदास ।

११ आईदांन ।

१० वीठळदास ।

११ रांमचंद ।

१० दुरगो ।

११ सांमो । ११ सुंदर ।

१० रासो ।

११ कांनो ।

९ जेसो पतावत । करमसोतांरी वेढ कांम आयो[2] ।

१० नरसिंघ ।

११ सादूळ ।

९ ईसर पतारो ।

१० अखैराज । १० सहसो ।

९ गोकळ पतावत । पोकरणरी वेढ कांम आयो[3] ।

---

1 धनराज जैतावतने रावल रामचंदके साथमें रह कर सबलसिंहसे वाप गांवमें लड़ाई की, वहां काम आया । 2 पत्ताका बेटा जैसा करमसोतोंकी लड़ाईमें काम आया । 3 पत्ताका बेटा गोकुल पोकरणकी लड़ाईमें काम आया ।

१० मूळो ।

११ करमचंद ।

१० मेघराज ।

११ लाडखांन ।

७ मांनो देवराजरो ।

८ जगनाथ मांनावत ।

९ वांकीदास ।

८ वीरदास मांनारो ।

९ वाघो ।

१० भागचंद । ११ कूंभो ।

७ धीरो देवराजरो । मेड़तियांरै वास थो । प्रथीराज जैतावतरी वेढ कांम आयो सं० १६१०[1] ।

८ राघोदास धीरावत । राठोड़ गोपाळदासरै वास रैयां छै[2] ।

९ उदैसिंघ ।

---
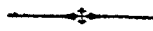
1 देवराजका बेटा धीरा मेड़तियोंके यहां रहता था । संवत् १६१०में पृथ्वीराज जैतावतकी लड़ाईमें काम आया । 2 राघोदास धीरावत, रींयां गांवमें राठौड़ गोपालदासके यहां रहता है ।

अथ सरवहियांरी पीढी, जादव[1]

१ राव खंगार (राव खेंगार)

२ गहर (राव गहर, राव गाहर, गाहरियो, राव गारियो)

३ दयाच* (दयाळ, द्यास)

४ कवाट (कहवाट, कैवाट)

५ नवघण° ।

६ जैमल ।

७ मंडळीक ।

८ रायसिंघ ।

९ प्रथीराज । चोरवाड़ वसै । राजा जसवंतसिंघजीरो सुसरो[2] । वात सरवहियांरी ।

ऐही जादवै भिळै[3] । सरवहिया आगै गिरनाररा धणी[4] । राव मंडळीक वडो रजपूत हुवो । असवार २००००री ठाकुराई हुती[5] । जेसो सरवहियो मंडळीकरो लोहड़ो भाई हुवो[6] । राव मंडळीक कहै छै, रोज एक नवो तळाव खणावतो[7] । सासतो गंगाजीरै पांणी सांपड़तो[8] । गंगाजळ पीवतो । तिणरै प्रोळ-वारट रवो-सुरतांणियो हुतो[9] । तिणरै वैर चारण नागही देवी हुती[10] । तिणरै पेटरो बेटो १ खूंट हुवो[11] । तिणनूं परणायो[12] । उणरै घरै वैर पदमणी आई[13] । तिणरो वेटो नागारजन, तिको अहमंदावाद पातसाह महमंद वेगड़ा

---

1 सरवहिया यादवोंकी वंशावली । (यह वंशावली अशुद्ध प्रतीत होती है; किन्तु अन्य इतिहासकार भी एकमत नहीं हैं । क्रम और कालमें भी अंतर है ।) 2 पृथ्वीराज चोरवाड़में रहता है । यह राजा जसवंतसिंहजीका ससुरा है । 3 ये (सरवहिये) भी यादवोंमें मिलते हैं । 4 सरवहिया पहिले गिरनारके स्वामी थे । 5 बीस हजार सवारोंका आधिपत्य था । 6 जैसा सरवहिया राव मंडलीकका छोटा भाई था । 7 कहा जाता है कि राव मंडलीक नित्य एक नया तालाव खुदवाता था । 8 निरंतर गंगाजलसे स्नान करता था । 9 उसका पौल-वारहट रवा-सुरताणिया नामका चारण था । 10 उसकी पत्नी चारणी नागही देवी थी । 11 उसकी कोखसे खूंट नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ । 12 उसका विवाह किया । 13 उसको पद्मिनी पत्नी मिली ।

*कच्छ, काठियावाड़ और गुजरात आदिके इतिहास-ग्रंथोंमें 'रा' दयास नाम भी लिखा है ।

°'रा' नोंघण ।

कनै मांगणी गयो हुतो[1]। तिणनूं पातसाह महमंद रीझनै घोड़ी २ लाछ नै लिखमी दीनी[2]। तिकै नागारजन घरै ले आयो। तिणरै पेटरा बछेरा २ हुवा, उचासरो नै अमोलक[3]। तिकै वडा घोड़ा हुवा। उणांरी[4] राव मंडळीक तारीफ सुणी, तरै चारण कनै घोड़ा मांगिया। चारण न दिया। राव मंडळीक घोड़ा मांगण इणांरै घरै आयो। इणे उजर कियो तरै परो गयो[5]।

तठा पछै कितरैहेक दिने राव मंडळीकरो नाई १ नागहीरै गांव गयो हुतो[6]। तिण कना[7] नागही बेटारी वहु पदमणीरा नख लिराया। सु उण जायनै[8] पदमणीरी वात राव मंडळीकनूं कही। तरै मंडळीक पदमणी देखणनूं नागहीरै गांव जाण लागो। तरै मंडळीकरी बैर सीसोदणी रावनूं घणोही वरजियो, पिण राव मांनै नहीं[9]।

दूहो— चारण वड्डो खूंटियौ, चक्रवत जेहै चाव।
वालोवळ वीसळ धणी, मोदळ रावो राव॥ १

तठा पछै[10] मंडळीक नागहीरै घरै आयो। तरै नागही सारा सोरठरा लसकरनूं नांनी सी कोठी मांहिसूं सीधो दियो[11]। तरै सारै चाकरै नागहीरा देवातनरी वात राव कनै कही, पण मंडळीक मांनै नहीं[12]। वाद लागो[13]। पछै राव जिण वड़ हेठै बैठौ थो, सु वड़ लोही वूठो, तोही समझै नहीं[14]। नागहीनूं कहण लागो— "म्हांनूं

---

1 उसका बेटा नागार्जुन अहमदाबादके बादशाह महमूद बेगड़ाके पास मांगनी करनेके लिये गया था। 2 बादशाह महमूदने प्रसन्न हो कर उसे लाछ और लिखमी नामकी दो घोड़ियां इनाममें दीं। 3 उनको नागार्जुन अपने घर ले आया। उनके पेटसे दो बछेरे उत्पन्न हुए जिनके नाम उचासरो और अमोलक रखा। 4 उनकी। 5 राव मंडलीक घोड़े मांगनेके लिये स्वयं इनके घर गया, लेकिन इन्होंने उज्र कर दिया, तब यह लौट कर चला गया। 6 जिसके कितने ही दिनोंके बाद राव मडलीकका एक नाई नागही देवीके गांवको गया था। 7 जिससे। 8 सो उसने जा करके। 9 तब मंडलीककी पत्नी शिशोदनीने राव मंडलीकको बहुतेरा मना किया, परन्तु रावने नहीं माना। 10 जिसके बाद। 11 तब नागहीने सोरठकी सारी सेनाके लिये एक छोटी-सी कोठीमेंसे भोजन-सामग्री निकाल कर दी। 12 तब रावके सब ही चाकरोंने नागहीकी दैवी-शक्तिकी (दैव्यांशी होनेकी) बात रावको जा कर कही, परंतु मंडलीक इस बातको नहीं मानता। 13 वह हठ पर चढ़ा रहा। 14 राव जिस बड़-वृक्षके नीचे बैठा था, उस बड़-वृक्षसे रुधिर-वर्षा हुई, तब भी वह (उसके दैवी-चमत्कारको) नहीं समझता।

थांहरी वहू दिखावो[1] ।" तरै नागही वहूनूं सिणगार ल्याई । वहूरा पग धरती लागै नहीं । वहू देवरूप हुई[2] । राव वहूनूं हाथ घातियो[3] । तरै देवी रावनूं कोप कियो । रावनूं सराप[4] दियो । कह्यो–"थांहरो गढ जाजो । थांरी मत भ्रष्ट हुई, गढ तुरकांनूं देईस । तूं तुरकांरी (वहू)नूं सेवीस, अखत पढीस, धूड़ खातो फिरीस[5] ।" औ श्राप हुवो । रावरो मुंहडो विगड़ियो । राव घरै गयो । पदमणी जाय केदार गळी[6] । देवी नागही पातसाह महमंद वेगड़ा कनै गई । जायनै कह्यो–"म्हे थांनूं गिरनार दियो[7] ।" तरै पातसाह कह्यौ–"तिका वात क्युं जांणीजै[8] ?" तरै देवी नागही कह्यो–"थे सवाररा सूता ऊठो, तरै थांहरी पाघ मांहैसूं चावळ रंगिया नीसरै तो साच कर जांणीजो[9] ।" तरै सवारै चावळ नीसरिया । तरै पातसाह गिरनार ऊपर चढियो, गढ घेरियो । मंडळीक गैहलो हुवो[10] । गढरी कूंची राव पातसाहनूं आंण दी[11] । आप गढसूं उतरियो । पातसाहसूं मिळियो । पछै मंडळीकनूं पातसाह तुरक कियो । गाय खवाड़ी । तुरकां भेळो वैठो, खराव हुवो[12] । रजपूत १००० मंडळीकरा वाज मुंवा[13] । गढ गिरनार पातसाह लियो । पठांणांनूं गिरनार थांणै राखिया, नै पातसाह परो गयो[14] । तठा पछै पातसाह महमंद वेगड़ो वेगो ही मुंवो[15] । तठा पछै

---

1 वह नागहीको कहने लगा कि मुझे तुम्हारी पुत्रवधूको दिखलाओ । 2 तब नागही अपनी पुत्रवधूको शृंगार करके ले आई । 3 पुत्रवधूके पांव भूमिको स्पर्श नहीं करते, वह दैवी-रूप हो गई । 4 शाप । 5 उसने कहा—'तेरी मति भ्रष्ट हो गई अतः तेरा गढ़ तेरे अधिकारसे चला जाये, उसे मैं तुर्कोंको दूंगी । तू तुर्कोंकी (स्त्रीकी) सेवा करेगा, म्लेच्छ वाणी पढ़ेगा और धूल चाटता फिरेगा ।' 6 पद्मिनी केदारनाथ जा कर हिमालयमें गल गई । 7 नागही देवी बादशाह महमूंद बेगड़ाके पास गई और जा कर कहा कि हमने तुमको गिरनार दिया । 8 इसका पता कैसे लगे ? 9 तब नागही देवीने कहा कि प्रातः जब तुम सोते हुए उठो उस समय तुम्हारी पगड़ीमें रंगे हुए चावल निकलें तो इस बातको सच जानना । 10 प्रातःकाल वैसे चावल निकल गये, तब बादशाह गिरनार पर चढ़ कर के गया और गढ़को घेर लिया । मंडलीक पागल हो गया । 11 गढ़की चावी रावने बादशाहको ला दी । 12 स्वयं गढ़से नीचे उतरा और बादशाहसे मिला । बादशाहने मंडलीकको मुसलमान बनाया और गाय खिला दी । मुसलमानोंके शामिल खाना खाया और भ्रष्ट हुआ । 13 एक हजार राजपूत मंडलीकके लड़ कर मर गये । 14 गिरनारका गढ़ बादशाहने अपने अधिकारमें किया । पठानोंको गिरनारके थाने पर रखा और फिर बादशाह लौट गया । 15 इस घटनाके बाद बादशाह तो जल्दी ही मर गया ।

वे पठांण गिरनाररै थांणैवाळा पातसाहरै बेटैसूं फिर बैठा[1]। सारी सोरठ इणै खाधी[2]। गुजराती पातसाह महमंदरै वांसै इसड़ो को जोरावर हुवो नहीं[3]। तठा पछै पीढी ४ तथा ५ इणै पठांणै सोरठ खाधी[4]।

पछै संमत १६२९ काती सुदी १५ अकबर पातसाह गुजरात लीवी। तठा पछै वरस १० तथा १५ नवाब अजमखांननूं गुजराररै सूबै मेलियो, तद पठांण अमीखांन गिरनार धणी छै। अमीखांन नै जांम सतै माहोमांहै एको छै[5]। पछै अजमखांन गिरनार, नवानगर ऊपर असवारी की, वेढ हुई[6]। जांम सतो नै अमीखांन बेहूं हारिया[7]। तठा पछै जांम अमीखांनरी ऊपर छोड़ी[8]। अमीखांन उठाथी नासनै गिरनार आयो[9]। अजमखां वांसै लागो आय गढ गिरनार घेरियो[10]। वरस ३ विग्रह हुवो। अमीखांन गढरोहा मांहै मौत मुंवो[11]। अमीखांनरा बेटानूं टीको हुवो। बेटारो दिन फिरियो[12]। आपरो परधांन थो तिणसूं बेदबी की[13]। पछै परधांन, रजपूत माहोमांहि फाटा। तरै गढ़ उतारनै अजमखांननूं दियो[14]।

राव मंडळीकरा चाकर ऐ[15] भला रजपूत हुवा–१ अपर डोडियो। १ चावोड़ो ईलियो। १ चांपो बालो।

---

1 इसके बाद गिरनारके थाने वाले पठान बादशाहके बेटेसे बदल गये। 2 समस्त सोरठ देशका उपभोग इन्होंने किया। 3 इस गुजराती बादशाह महमूंदके पीछे कोई ऐसा शक्तिशाली नहीं हुआ। 4 इसके बाद चार-पांच पीढी तक सोरठका शासन-उपभोग पठानोंने ही किया। 5 जिसके दस या पन्द्रह वर्ष बाद नवाब आजमखांको गुजरातके सूबेका शासक (सूबा) बना कर भेजा, उस समय पठान अमीखां (अमीरखां) गिरनारका स्वामी था। अमीखां और जाम सत्ताके परस्पर मेल था। 6 आजमखांने गिरनार और नवानगर पर आक्रमण किया और युद्ध हुआ। 7 जाम सत्ता और अमीखां दोनों हार गये। 8 जामने जिसके बाद अमीखांकी सहायता करनी छोड़ दी। 9 अमीखां वहांसे भाग कर गिरनार आ गया। 10 आजमखांने उसका पीछा किया और गिरनारके गढ़को घेर लिया। 11 अमीखां गढ़रोहेमें अपनी मौतसे मर गया। 12/13 बेटेका दिन प्रतिकूल आया। उसने अपना प्रधान था उससे कुछ बेअदबी कर ली। 14 फिर प्रधान और राजपूत अंदर ही अंदर उसके विरुद्ध हो गये और तब अमीखांके बेटेको गढ़से वंचित करके उसे आजमखांको दे दिया। 15 ये।

वात सरवहिया जेसारी

राव मंडळीक तो गैहलो हुवो। तरै जेसो मंडळीकरो लोहड़ो भाई, तिण सारो धरतीरो भार संभायो[1]। धरतीरा सारा रजपूत लेनै भाखरै पैठो[2]। धरतीरो विगाड़ घणो करै छै। गढ गिरनार मांहै पातसाहरो वडो थांणों छै। धरती मांहै थांणा ठोड़ ठोड़ राखिया छै, पण धरती भोग पड़ सकै नहीं[3]। पातसाह धरतीनूं राह हुय लागो छै, पण सरवहियो जेसो हाथ आवै नहीं[4]। पातसाह घणो ही उपाव करै छै। तिण समै किणहीक[5] कह्यो पातसाहनूं–'चारण वीरधवळ लांगड़ियो, ओ पातसाही मुलकमें रहै छै। इणसूं जेसो घणी मया करै छै। ओ वडो कवीसर छै[6]। इणसूं जेसो निपट कावो छै[7]। सु इणरा मांणस बेटा बंद करो, नै कहीजो–"जेसानूं आंण दै तो थारी बंद छोडां।" ओ जेसानूं कहस्यो तठै आंण देसी[8]। तरै चारण वीरधवळरो कबीलो पातसाह सरब पकड़ायो, तरै चारण वांसै हुवो आयो[9]। माल उण घणोही धांमियो[10], पण पातसाह चारणरो कबीलो छोडै नहीं। चारणनूं पातसाह कह्यो–"माल कितरोही दीयै, थारो कबीलो छूटै नहीं[11]। तूं जेसा सरवहियानूं अठै ल्यावै तो थारो कबीलो छूटै।" तरै इण चारण तो घणोही उजर कियो, पण पातसाह हठ पड़ियो कहै– "एक वार जेसो म्हांनूं आंखियां दिखाव[12]।" तरै चारण वीरधवळ जेसा सरवहिया कनै गयो। सारी वात मांड जेसानूं कही[13]। तरै जेसै कह्यो–"भली वात, थांहरा मांणस छूटसी सु करस्यां[14]।" पछै

---

1 तब मंडलीकका छोटा भाई जैसा जिसने देशका सारा भार सम्हाला। 2 देशके सभी राजपूतोंको लेकर पहाड़ोंमें घुस गया। 3 लेकिन देश आबाद होकर राजस्व-साधनके योग्य नहीं हो सका। 4 बादशाह राहु होकर देशके पीछे लगा है, पर सरवहिया जैसा हाथ नहीं आता। 5 किसी एकने। 6 जैसा इसके साथ बड़ी कृपाका व्यवहार करता है और यह बड़ा कवीश्वर है। 7 जैसा इससे बहुत ही दबा रहता है। 8 इसका जनाना और बेटोंको बंद करदो और इसको कहो कि जैसेको लादे तो तेरे बंदी छोड़ दें। यह कहोगे वहीं जैसाको ला देगा। 9 तब चारण उनके पीछे आया। 10 उसने बहुतेरा धन-माल ले लेनेका आग्रह किया। 11 माल कितना ही दे देने पर तेरा कबीला नहीं छूटे। 12 एक बार जैसाको मुझे आंखोंसे दिखा दे। 13 अथसे इति तक जैसाको सब बात कह सुनाई। 14 अच्छी बात है, जिस बातसे तुम्हारा कुटुंब छूटेगा वही करेंगे।

जेसो वडे घोड़ै १ चढनै चारणरै साथै हुवो[1]। अहमंदावादरी वाड़ी एकण मांही आय उतरियो[2]। चारण वीरधवळनूं जेसै कह्यो–'तूं जायनै पातसाहनूं खवर दै।" तरै जाय खबर दी। पातसाह वात सुण वोहत राजी हुवो। नकीब फेरनै सारो लसकर भेळो करायनै आप चढनै वाड़ी घेरी[3]। हाथाजोड़ी करी, नै कह्यो–"सको हुसियार हूजो। जिण मांहै हुय जेसो जासी तिणनूं हूं मारीस[4]।" चारण वीर-धवळनूं पातसाह कह्यो–"तूं वाड़ी मांहै जायनै जेसानूं ले आव।" तरै चारण वाड़ी मांहै गयो। आगै देखै तो सरवहियो जेसो भर नींद सूतो घोरावै छै[5]। तिण वेळा चारण वीरधवळ दूहो कहै[6]—

'नीधसता नीसांण, सुणै नहीं सुरतांणरा।
जेसा थयो अजांण, कै फूटा कैवाटउत[7]॥ १'

वात

सरवहियो जेसो जागियो। ऊठनै आंख छांटी। घोड़ारा तंग लेनै घोड़ै चढ़ियो। वाग वीच आय ऊभो रह्यो[8]। चारण सारी वात जेसानूं कही। जेसै सारी वात सुणी। पछै वीरधवळनूं पूछियो–"पातसाह किसो? मोनूं ओळखाव[9]।" तरै चारण वीरधवळ जेसानूं कह्यो–"ओ हाथी चढियो पातसाह ऊभो।" तरै जेसै चारणनूं कह्यो–"तूं पातसाह कनै जायनै मोनूं दिखाव दे। कोई थारै मांणस छुडावणारो साजीवंध कर[10]।" तरै चारण पातसाहनै आयनै कह्यो–"ओ जेसो

---

1 फिर जैसा एक वड़े घोड़े पर चढ़ कर चारणके साथ रवाना हो गया। 2 अहमदा-वादकी एक वाड़ीमें आ कर ठहर गया। 3 नकीवको फिरा सारी सेनाको इकट्ठा करवा कर स्वयं उसके साथ चढ़ करके वाड़ीको घेर दिया। 4 हाथाजोड़ी की और कहा–'सभी होशियार रहना। जिसके पासमें हो कर जैसा निकल जायेगा उसको मैं मार दूंगा।' 5 आगे जा कर देखता है कि सरवहिया जैसा भर नींदमें सोया हुआ खुर्राटे खींच रहा है। 6 उस समय चारण वीरधवल दोहा कहता है। 7 हे कैवाटके पुत्र जैसा सरवहिया! वादशाही सेनाके वाजे वज रहे हैं, तू क्या सुन नहीं रहा है? तेरे कान फूट गये हैं या तू अनजान हो गया है? 8 वागके वीचमें आकर खड़ा रहा। 9 वादशाह कौनसा है? मुझे उसकी पहिचान करादे। 10 तव जैसाने चारणको कहा—'तू वादशाहके पास जा कर उसको दिखला कर मेरी पहिचान करवा दे और तेरे कुटुंवको छुड़वानेका प्रवन्ध पहिले करले।

मैं आंणणों कबूलियो थो सु आंणियो[1] । हमैं पातसाहजी ! म्हारा मांणस छोड़ो । पातसाहरो कवल छै[2] ।" तरै पातसाह कह्यो–"मैं छोड़िया । थारो कौल पोहतो[3] ।"

तिण समै सको देखै छै[4] । सरवहियो जेसो पातसाह ऊभो छो तठी नांखिया सु घोड़ै हाथीरै दांतूसळां पग टेकिया[5] । जेसै पातसाहरी कड़ियांनूं हाथ घालियो[6] । पातसाह तो होदो पकड़ रह्यो । जेसो पातसाहरै कड़ियांरो कटारो ले गयो[7] । पातसाहरै किणही सिपाही जेसानूं लोह लगाय सकिया नहीं[8] । तिण वेळा चारण वीरधवळ दूहो कहै[9]–

'ओ जो जेसो जाय, पाड़ नहीं पतसाहरै ।
आयो ऊंडळ मांय, सरवहियो सुरतांणरै[10] ॥ २'

वात

सरवहियो जेसो इण भांत परो गयो[11] । पातसाह चारणरा मांणस परा छोडिया । जेसै जीवतां धरती पातसाहरै रस पड़ी नहीं[12] । जैसारै वांसै विजो पण भलो रजपूत हुवो । धरतीरी चांटी भली दीवी । जेसारै आध हेक हुवो[13] ।

---

1 तब चारणने बादशाहको आकर कहा कि यह जैसा सामने खड़ा है । मैंने उसे लाना कवूल किया था । सो ले आया हूं । 2 अब बादशाह ! मेरे कुटुंबको छोड़िये । बादशाहका कौल है । 3 तब बादशाहने कहा — 'मैंने तेरे मनुष्योंको छोड़ा । तेरा कौल पूरा हुआ । 4 उस समय सभी ताकमें हैं । 5 जिस ओर बादशाह खड़ा था उस ओर सरवहिया जैसाने अपना घोड़ा उठाया सो उस घोड़ेने बादशाहके हाथीके दांतोंके ऊपर जाकर अपने पांव टिकाये । 6 जैसेने बादशाहकी कमरमें हाथ डाला । 7 जैसा बादशाहकी कमरका कटार लेकर भाग गया । 8 बादशाहका कोई भी सिपाही जैसे पर शस्त्र नहीं चला सका । 9 उस समय चारण वीरधवल दोहा कहता है । 10 सरवहिया जैसा बादशाहकी सेनाके घेरेमें आया हुआ सकुशल निकल भागता है ! बादशाहका कोई वश नहीं चलता । 11 इस प्रकार सरवहिया जैसा वहांसे भाग गया । 12 जैसेके जीवित रहते देश बादशाहके वशमें नहीं हो सका 13 जैसाके पीछे विजय भी अच्छा राजपूत हुआ । देशकी अच्छी सेवा की । जैसाका एक आधा भागीदार हुआ ।

वात जाड़ेचांरी

अै जाड़ेचा जदुवंसी छै[1]। यांनूं गीतां-गुणां मांहै स्यांमा कहै छै[2]। सु श्रीकृष्णजीरो बेटो स्यांम नै प्रदुमन वडा नांमजाद हुआ[3]। जिण स्यांमरा तो स्यांमा-जाड़ेचा* कहीजै नै प्रदुमनरा जेसा भाटी कहीजै[4]।

जाड़ेचांरी पीढी[5]।

१ गाहरियो। २ ओढो। ३ ढाहर। ४ छाहर। ५ फूल। ६ लाखो। ७ महर। ८ मोकळसी। ९ खेतसी। १० दलो। ११ वडो हमीर। १२ रायधण नै हालो हमीररा[6]। १३ फूल। १४ अलैदीयो। १५ जनागर। १६ लोदी। १७ भींव। १८ दलो। १९ साहिब। २० राहिब। २१ वडो भीम। २२ वडो हमीर। २३ अमर। २४ भोजराज। २५ वीसो। २६ ओठो। २७ हमीर बीजो[7]। २८ खंगार। २९ भारो। ३० मेघ। ३१ रायधण। ३२ तमाइची।

वात १ रायधण भुजरा धणियांरी[8]

इण भांत रायधणियांरै काछरी धरती आई[9]। आगै काछरी धरतीरा धणी धोधा हुता[10], सु लाखड़ी नगर धोधो करन राज करै छै। तठै जोगी गरीबनाथ धूंधळीमलरो चेलो वडी कमाईरो धणी

---

1 ये जाड़ेचे यदुवंशी हैं। 2 इनको गीत, काव्य आदिमें स्यामा (सामा) कहते हैं। 3 श्रीकृष्णजीके पुत्र साम्ब और प्रद्युम्न बड़े ख्यातिवान हुए। 4 उस साम्बके वंशज तो स्यामा-जाड़ेचा (सामा-जाड़ेचा) कहलाते हैं और प्रद्युम्नके वंशज जैसा-भाटी कहलाते हैं। 5 जाड़ेचोंकी पीढियां इस प्रकार हैं। 6 रायधण और हाला हमीरके बेटे। 7 हमीर दूसरा। 8 रायधण शाखाके भुजके स्वामियोंकी बात। 9 रायधणियोंके अधिकारमें कच्छका देश इस प्रकार आया। 10 पहिले कच्छ देशके स्वामी धोधा क्षत्री थे।

* कच्छ-कलाधरके लेखकने लिखा है कि जाम नरपतकी रानी चांदवा सोढीकी कोखसे उत्पन्न जाम सामपतके नामसे, सामपतके वंशज 'समा' कहलाये।

छै[1] । तिण आप लाखड़ी आसण मांडियो[2] । तिण आंबा २२ आसणरी पाखती वाह्या[3] । तिके कितरैक दिने फळण लागा[4] । मु करनरै वैर दुहागण हुती, तिणसूं गरीबनाथ महर करता । बहन कहि बोलाई हुती[5] । तिणरो[6] बेटो गरीबनाथरै जेठ मास मांहै आसण आयो हुतो[7] । तरै नाथ चेलानूं कह्यो–"भांणेजनूं आंबा केहेक उतार दो[8] ।" तरै चेले चढनै आंबा ५० तथा ६० उतारिया । गरीबनाथ उण डावड़ा दुहागणरानूं दिया, सु आंबा ले डावड़ो घरे आयो[9] । तरै सुहागण वैर करनहै [रे] हुती, तिणरै छोरू वे आंबा दीठा[10] । वे जाय मा आगै मांगण लागा । तरै सुहागण वैर जांमनूं कहाड़ियो[11]–"जोगीरै आंबा हुवा छै, डावड़ानूं मंगाय दो ।" तरै जांम आंबा लेणनूं आदमी मेलिया[12], तिणे[13] जाय गरीबनाथनूं कह्यो–"जांम आंबा मंगावै छै, दो ।" तरै गरीबनाथ कह्यो–"म्हे जोगी किणनूं आंबा द्यां, मांहरा आंबा छै[14] ।" तरै जांमरै आदमियां कह्यो–"आसण थांहरो[15], पण आंबा धरतीरा धणियांरा छै ।" पछै जांमरा आदमी आपसूं आंबा उतारणनै चढिया । तरै गरीबनाथ कुहाड़ियो लेनैं आंबा वाढणनूं ऊठियो[16] । तरै चेले १ कह्यो–"हाथांरा पाळिया कांय वाढो[17] ? कांने मुद्रा छै, आंबांरो वरण फेरो[18] ।" तरै आ वात गरीबनाथरै दाय आई[19] । तरै कह्यो–"आंबांरी आंवली

1 वहां (कच्छमें) बूंबलीमलका शिष्य योगी गरीबनाथ एक बड़ा सिद्धि-प्राप्त महात्मा है । 2 उसने लाखड़ी नगरमें आकर अपना आसन जमाया । 3 उसने अपने आसनके पास २२ आमके वृक्ष लगाये । 4 कितनेक दिनोंके बाद वे फल देने लगे । 5 धोधा कर्णकी एक उपेक्षिता पत्नी थी, उसपर गरीबनाथ कृपा रखते थे, उसको बहिन कह कर बतलाते थे । 6 उसका । 7 था । 8 तब नाथने अपने चेलेसे कहा–भानजेको कुछ आम वृक्षों परसे उतार दो ।' 9 गरीबनाथने उस उपेक्षिता । (अणमानेतीके) पुत्रको आम दिये सो वह लड़का उन आमोंको ले कर घर पर आया । 10 तब कर्णके जो मानेती स्त्री थी, उसके लड़केने उन आमोंको देखा । 11 तब उस मानेती पत्नीने जामको कहलवाया । 12 भेजे । 13 उन्होंने । 14 तब गरीबनाथने कहा–आम हमारे हैं, हम योगी लोग किसीको क्यों आम दें । 15 तुम्हारा । 16 तब गरीबनाथ कुहाड़ा लेकर आमोंके वृक्षोंको काटनेके लिये उठा । 17 अपने स्वयंके पाले हुए हैं, क्यों काटो ? 18 आप कानोंमें मुद्रा धारण करने वाले सिद्ध हैं, आमके वृक्षोंका रूप-रंग बदल दें । 19 तब यह बात गरीबनाथके भी मनमें भाई ।

हुवो ।" सु वचन कहतां सँवी ग्रांबांरी ग्रांबली हुई[1], सु ग्रांबली ग्रजेस छै[2]। ग्रांबांरो ग्रांबली करनै बीजै[3] दिन एक चेलो ग्रासणरी ठोड़ गाडियो, नै बदवा दीनी[4]; कह्यो-"मांहरी ठोड़ उपाड़ी छै, त्यौं नाथ करै तो थांहरी ठोड़ उपड़ज्यो[5] ।" लाखड़ी था[6] कोस १२ धीणोद छै, तठै धूंधळीमल धीणोदरै भाखर ग्रजेस रहै छै[7], सु गरीबनाथ उठै गयो । तठा पछै दिनां १० तथा १२ धीणोदरा भाखरसूं धूंधळीमल गरीबनाथ उतरै छै। वरसातरा दिन छै। सु ग्रागै रायधण बाप हमीर नै बेटो भीम हळ खड़ै छै, सु भींव सूड़ करै छै[8] । तिणे दीठो, भींव ! "ग्रो तो गरीबनाथ गाडियो थो सु व्है[9] ।" तरै भींम सांमो जाय पगे लागो । ग्रापरो डेरो नींबड़ी हुतो, तठै साथै तेड़नै ल्यायो[10] । तितरै घरसूं भातो ग्रायो, तरै भातो पत्तर मांहै पुरसनै ग्राप मांखी राखण लागो[11] । तरै पत्तर मांहैं जीमतां थकां धूंधळीमल बचको १ खीचरो भरनैं भीमनूं दियो[12] । कह्यो-"तूं जीम ।" कह्यो-"हां बाबाजी ! जीमूं ।" भींव तो ग्रैंठो जांण टाळो करै[13] । नाथ वार दोय तीन कह्यो । तरै ग्रापरी मा कनै बीजो खीच पुरसायो[14] । गुर दियो थो सु खीच पाखती[15] राखै, बीजो[16] खीच जीमै । तरै गुर दीठो[17] "ग्रो खीचरो टाळो करै ।" तरै गुर भीमरी थाळी मांहैसूं उरो लियो[18],

---

1 सो वचन कहनेके साथ ही उन ग्रामके वृक्षोंकी इमलियाँ हो गई। 2 वे इमलियाँ ग्रभी तक हैं। 3 दूसरे। 4/5 ग्रौर श्राप दिया कि जिस प्रकार तुमने हमारे स्थानको छुड़ाया है उसी प्रकार (गुरु गोरख) नाथजी करें तो तुम्हारा स्थान भी तुमसे छूट जाये। 6 लाखड़ीसे। 7 वहां धूंधलीमल धीणोदके पहाड़में ग्रभी तक रहता है। 8 सो ग्रागे रायधण-जाड़ेचा हमीर ग्रौर भीम, बाप-बेटा दोनों खेतमें हल चला रहे हैं। भीम सूड़ कर रहा है। (सूड़ करणो = नाज बोनेके पहले खेतमें उगे हुए घास ग्रौर झाड़ ग्रादि को काट करके खेतको बोने योग्य बनाना।) 9 उन्होंने देखा ग्रौर हमीरने कहा-'भीम ! यह तो वही गरीबनाथ हो जिसने जीवित समाधि ले ली थी। 10 ग्रपना डेरा जिस नीम वृक्षके नीचे था, वहां पर ग्रपने साथमें बुला लाया। 11 इतनेमें घरसे भाता ग्रा गया, तब नाथजीके भोजनके लिये पात्रमें परोस कर खुद मक्खियाँ उड़ाने लगा। (भातो = घरसे दूर काम करने वाले कृषक, मजदूर ग्रादिके भोजन करनेके लिये घरसे लाई हुई रोटी ग्रादि रंधी हुई भोजन-सामग्री।) 12 तब भोजन करते हुए धूंधलीमलने पात्रमेंसे एक लौंदा खीचका भर करके भीमको दिया। 13 भीम जूठन समझ कर टालता रहा। 14 तब ग्रपनी माँसे खीच परोसाया। 15 पासमें। 16 दूसरा। 17 तब गुरुने देखा। 18 ले लिया।

ले नै आपरा पत्तर मांहे घालियो, पांणी भेळो नांईनैं पी गयो[1]। नैं भींवनूं कह्यो–"खीच तैं ओ खावो हुतो तो तूं अमर हुवत। म्है तोनूं इण धरतीरी साहिबी दी[2]।" माथै हाथ दिया[3]। कह्यो–"काछरी साहिबी म्हे तोनूं दी, पण जोगियांरी सेवा घणी करीजै, ज्यूं घणा दिन राज रहै।" तरै भींव कह्यो–"राज कहस्यो ज्यूं करीस[4]।" तरै जोगिये इतरो कर वतायो–"थारी साहबी राजथांन लाखड़ी करै नै जोगियांरो आसण धीणोद करै। देस सिगळै दसे घोड़ियें घोड़ी, दसे भैंसे भैंस, दसे सांढे सांढ, कर कियो। हाट १ महमूंदी वरस १ री लागै। जाअै, परणियै महमूंदी २ लागै। देस सिगळै हळ १ सेई। इतरो कर धूंधळीमल नै गरीबनाथ वतायो। नैं कह्यो–"जोगियांरी विसेस सेवा करस्यो तो दिन-दिन सवाई ठाकुराई हुसी। सेवा मिटसी तरै ठाकुराई जासी[5]।" यूं करनै भींवनूं निवाजिया[6]। तरै भींव जोगियांनूँ कह्यो–"धरती मांहै धोधा धणी छै, इणां आगै म्हे साहवी किण भांत लेस्यां[7]?" तरै जोगी कह्यो–"इणांनूं मांहरो सराप हुवो छै। इणां माथै अजांणकरी कठाहीरी फोज आय पड़सी[8]। इणांनूं मारिया सुणो, तरै थे साथ करनै जाजो[9] थांहरै वांसै मांँहरा हाथ छै[10]। साहवी आसांन हाथ आवसी[11]। थां आगै कोई टिकसी नहीं।

---

1 पानीके साथ मिला कर पी गया। 2 यह खीच यदि तूंने खा लिया होता तो तू अमर हो जाता। हमने इस देशका राज्य तुमको दिया। 3 सिर पर हाथ रखे। 4 आप कहेंगे वैसा करूंगा। 5 तव योगियोंने कहा–'तेरे राज्यकी राजधानी लाखड़ीमें वनवाना और योगियोंका आसन धीणोदमें वनवाना और इतना कर लगाना–सारे देशमें दस घोड़ियोंमें एक घोड़ी, दस भैंसोंमें एक भैंस और दस सांढ़ोंमें (ऊंटनियोंमें) एक सांढ़, यह कर निश्चित किया। प्रति दुकान प्रति वर्ष एक महमूंदी और जन्म और विवाह पर दो महमूंदी और सारे देशमें प्रति हल एक सई अनाज। इतना कह कर धूंधली-मल और गरीबनाथने वताया और कहा कि योगियोंकी विशेष सेवा करोगे तो दिन प्रति दिन ठकुराई सवाई होती रहेगी। सेवा मिटेगी तव ठकुराई चली जायेगी। 6 इस प्रकार भीमके ऊपर कृपा की। 7 देशके स्वामी धोधा हैं, इनसे हम किस प्रकार राज्य लेंगे? 8 इनको हमारा शाप लगा है। इनके ऊपर अचानक ही कहींकी सेना चढ़ आयेगी। 9 इनको मार दिया सुनो तव तुम अपनी सेना वना कर चले जाना। 10 तुम्हारे पीछे हमारे हाथ हैं। (हमारा दिया हुआ वरदान तुम्हारे साथ है।) 11 राज्य सरलतासे हाथ आ जायेगा।

धोधांरी साहबी, भार-भरत, माल, वित सूधी हाथ आवसी[1] ।" गुर चेला यूं कहि ऊठिया, नै कह्यो[2]–"म्हे भाखर चढां छां, जठै मांहरा पग भाखर मां कळिया देखो, तठै हमार भाठा भेळा कर राखो[3] । नै साहबी पावो तरै उठै देहुरो करावज्यो[4] ।" यूं कहि गुर चेलो रमिया, नै कह्यो–"तूं वात मांनीस नहीं, पण तिण वातरो ओ सहनांण छै–जो थारो बाप आजसूं पनरै दिनै मरै तो सोह साच मांनै । म्हेजांमनूं श्राप दियो छै । तूं उण ठोड़ बैसै, तरै राव कहाड़ै[5] ।" पछै दिन १५ हुवा तरै भींवरो बाप हमीर मुंवो[6]; तरै भींव साच जांणियो[7] । तरै भींव किणहीनूं क्युं दियो, किणहीनूं क्युं दियो; मांणस ४००, पांच (सौ) भाई-बंध भेळा किया[8] । तठा पछै धोधै मोरबीरो विगाड़ कियो हुतो, सु मोरबी, वीरमगांमरा थांणारो साथ अजांणजकरो धोधां माथै तूट पड़ियो[9], मांणस हजार तीन, तिण मांणस ७०० मारिया, बीजा लाटू-पाटू हुता सु नास गया[10] । तुरक पण मांणस घणा कांम आया, सु तुरक पाछा वळिया; लूट काई न की[11] । मोरबीरी हदमें पाछा जाय पागड़ा छोड़िया[12] ।

भीम आ वात सुणी तरै आपरो साथ ले जाय साहबी ली । माल-वितरो धणी हुवो । रावाईरो टीको काढियो । धोधा वांसै रह्या हुता तिणे सुणियो, भींव ठाकुराई ली[13] । तरै धोधा भेळा हुय भींव ऊपर

---

1 सभी सामान, धन और मवेशी इत्यादि सहित धोधोंका राज्य तुम्हारे हाथ लगेगा । 2/3 गुरु और चेला यों कह करके उठे और कहा–'हम पहाड़ पर चढ़ रहे हैं, पहाड़ पर जिस जगह हमारे पांवोंके पंकिल चिन्ह देखो वहां अभी तो पत्थर इकट्ठे करके रख देना । 4 और जब तुम्हें राज्य मिल जाय तब वहां मंदिर बनवा लेना । 5 यों कह करके गुरु और चेला रवाना हुए और तब कहा–'तू हमारी बात मानेगा नहीं, परंतु उस बातकी सच्चाईका यह निशान है कि आजसे पन्द्रहवें दिन तेरा बाप मर जाय तो हमारी भविष्यवाणीकी सभी बातें सच मानना । हमने जामको श्राप दिया है, तू उसकी जगह बैठना और तब राव कहलवाना । 6/7 फिर जब १५ दिन हो गये तो भीमका बाप हमीर मर गया तो भीमने सभी बातोंको सच माना । 8 किसीको कुछ और किसीको कुछ दे दिवा कर अपने भाई-बंधुओंमेंसे ४००, ५०० मनुष्य अपने पास इकट्ठे कर लिये । 9 सो मोरबी और वीरमगामके थानोंके सैनिक अचानक धोधों पर टूट पड़े । 10 दूसरे जो कायर थे वे भाग गये । 11 तुर्क वापिस लौट गये, कोई लूट उन्होंने नहीं की । 12 मोरबीकी सीमामें जा कर ही घोड़ोंसे उतरे । (पागड़ा छोड़णो=घोड़ेकी रकाबमेंसे पांव निकालना, घोड़ेसे उतरना) 13 जो धोधा लोग पीछे रह गये थे उन्होंने सुना कि भीमने राज्य पर अधिकार कर लिया है ।

आया[1]। इणनूं सिद्धां दी सु धोधा वेढ हारिया[2]। धोधो हेक भाई काठियां मांहै मोरबीरै सेढै[3] गयो, सु उणरै केड़रा[4] मोरवी हळोद्र विचै छै। नै बीजा[5] पारकर नै सांतळपुर विचै, अठै[6] आया। अठै कांथड़नाथ जोगी छै। तिणरै पगै लागा[7]। कह्यो–'म्हांनूं गरीबनाथ श्राप दियो, राज गयो। हमैं[8] राजरी[9] मैहर हुवै तो म्हे अठै टिकां। तरै कांथड़नाथ कह्यो–"महारी पादुका ऊपर करावो, नै नीचे कोट कराय नै थे रहो।" सु कांथड़री पादुका कराई। नांव लारा कांथड़कोट* करायो[10]। उठै रया सु अजेस छै[11]। गांवां ३०० मांहै अमल छै[12]। यांरी धरती मांहै कंथड़रै केड़रा जोगियांरो कर लागै छै[13]।

भींव ठकुराई ली, काछरो धणी हुवो[14]। गरीबनाथनूं कोल दियो थो सु सोह[15] पाळियो[16] नै अजैलग कर जोगियांनूं दीजै छै[17]। धीणोद वां पादुका ऊपर देहुरो करायो। पाखती[18] गढ करायो। उठै जोगियांरो आसण बंधायो। भींवरै वंसरा हमैं भुजनगर राव काछरा धणी छै[19]।

---

1 तब धोधे इकट्ठे हो कर भीम पर चढ़ आये। 2 इनको सिद्धोंने सहायता दी अतः धोधा लड़ाई हार गये। 3 सीमा पर। 4 वंशके। 5 दूसरे। 6 यहां। 7 उसके चरण स्पर्श किये। 8 अब। 9 आपकी, श्रीमान्‌की। 10/11 कांथड़नाथके नाम पर कांथड़कोट बनवाया और वहां रह गये सो अभी तक वहां पर हैं। 12 तीनसौ गांवोंमें उनका शासन है। 13 इनकी धरतीमें कांथड़नाथके वंशके योगियोंका कर लगता है। 14 कच्छ देशका स्वामी हुआ। 15 सब। 16 पालन किया। 17 और अभी तक योगियोंको कर दिया जाता है। 18 पार्श्वमें, पासमें। 19 इस समय जो भुजनगरके राव कच्छ देश के स्वामी हैं वे भीमके वंशके ही हैं।

* कंथड़कोटकी स्थापनाके संबंधमें श्री दुलेराय काराणी अपने 'कच्छ-कलाधर' नामक ग्रंथमें लिखते हैं कि कंथकोट की नींव जाम मोडने रखी थी। वह दिन में जितना बन जाता था, योगी कंथड़नाथ अपने योगबलसे रातको गिरवा देता। मोड उसको बनवा नहीं सका। मोडके मरनेके बाद उसके बेटे जाम साडने योगीको प्रसन्न करके किलेको बनवानेकी आज्ञा प्राप्त की। कंथड़नाथके नाम पर उसने किलेका नाम कंथडकोट (कंथकोट) रखा। साडने किलेके पास कंथड़नाथका एक मंदिर भी बनवाया जो अद्यापि स्थित है।

पीढी

१ भींव ।	७ भोजराज ।	१३ भींव
२ लाखो ।	८ रायधण ।	१४ हमीर।
३ हमीर ।	९ हमीर ।	१५ खंगार ।
४ राघो ।	१० कमो ।	१६ भारो ।
५ कांहियो ।	११ मूलवो ।	१७ भोजराज ।
६ अलइयो ।	१२ महड़ ।	१८ खंगार ।

गीत कुंवर जेहा भारावतरो

दियण छात्र वड गात्र जग बंभेसर दूसरो,
अवर दातार नह कोय एहो ।
हेक ऊनड़ पछै जांम रावळ हुवो,
जांम रावळ पछै एक जेहो ।। १
सिधपत पखै[1] कुण दियै दत[2] सांमई,
अवर पत सिंधपत विगत अनेक ।
सिंधपत समवड़ी[3] हेक हालो समथ[4],
हालारो समवड़ी रायधण हेक ।। २
बांदणी गोठ आहूर लग बगसतै,
सुतन बंभ वंस-खट-तीस[5] सोढो ।
सुतन बंभ वंस सम मीढजै[6],
माल सुत लखण सुत समो मोढो ।। ३
लखण दर हाथ निज लेख आहूठ लख ।
धवळहर सहँस बांवनै ढळियो ।
हेतुवां अलेखै खैंग[7] देखै गहर वडो,
लोहड़ां[8] वडम[9] आंक वळियो[10] ।। ४

---

1 अतिरिक्त, बिना । 2 दान । 3 समान । 4 समर्थ । 5 छत्तीस क्षत्री कुल । 6 समानताकी जा सकती है । 7 (१) घोड़ा । (२) खड्ग । 8 शस्त्रोंसे (युद्धों द्वारा) । 9 वड़ा । 10 दिन फिरा, भाग्य पलटा ।

गीत दूजो

साहिव दूसरो खंगार सवाई, दावो सिर दातारां ।
जेहो कवी दियंतो जंगम, हसियो वेचण हारां ।।१
भूलो नहीं अंजण मायाभ्रम, जिण कीरत हित जांणी ।
सोदागर चेहरिया सामै, मोटेरा मालांणी ।।२
दीपाविया सुदन पर दीपै, रायजादे वड राजां ।
भारमलोत तिके नव दै भड़, है चाडै जेहाजां ।।३
ओ ऊनड़ लाखां अहिनांणै, वसुह उवारणवारां ।
घोड़ा दे घमड़ोह घातिया, हेड़ाऊ हेकारां ।।४

वात लाखैरी

भाद्रेसर ता कोस ४ किलोकोट छै[1] । तठै वडी ठाकुराई हुई[2] । लाखै पछै कितरीहीक पीढियां हालो नै रायधण बे[3] भाई हुआ । त्यांरां छोरू हाला नै रायधण कहांणा[4] । निवळा पड़िया[5], तरै धोधांरी ठाकुराई मांहै मुकाती थका रैहता[6] । रायधणां विचै हालांरै क्युं पांच-दस गांव इधकेरा[7] था । दस मांणसांरी जोड़ इधकी थी[8] । भींव हमीरोत लाखड़ोरी साहवो ली, तरै हाले जांणियो । भींव ठाकुराईरो धणी हुवो तो म्हे काईक ठोड़ ओटहां तो रूड़ा[9] । तरै धाधासूं धरती छूटो तरै जांणियो–भाद्रेसर भाद्रावळ जोगीरै नांवै[10] वसियो थो, सु भाद्रेसर खाली देखनै जाय ओटहियो[11] । धोधै आयनै कह्यो–'थे

---

1 भाद्रेसरसे किलाकोट चार कोस की दूरी पर है। 2 जहाँ लाखाकी बड़ी ठकुराई हुई। 3 दो। 4 उनके (पुत्र) वंशज हाला और रायधण–इन दो शाखाओंमें प्रसिद्ध हुए। 5 निर्बल हो गये। 6 तब धोधोंकी ठकुराई में मुकातीकी हैसियतसे रहते थे। (मुकाती = गांव या खेतकी कर के रूपमें निश्चित रकम (मुकाता) देने वाला। 7 विशेष। 8 दस जोड़ी मनुष्योंकी भी विशेष थी (यह दसके समाहार अर्थमें एक मुहावरा है।) 9 हम भी किसी जगहको दवा दें तो ठीक है। 20 नाम पर। भाद्रेसरको खाली देख वहां जा कर के अधिकार करने का विचार किया।

* इसका पुराना नाम कपिलकोट है। कहा जाता है कि यहां कपिल मुनिने तप किया था, इससे इसका नाम कपिलकोट प्रसिद्ध हुआ और कालान्तरमें किलाकोट और फिर केराकोट कहा जाने लगा। यह भी किम्वदंती है कि लाखाकी रानी केर(वा)की स्मृतिमें इसका नाम केराकोट रखा गया था।

मांहरी मदत करो तो भींव आगा[1] मांहरी ठोड़ ल्यां, नै थांनै[2] गांव २०० तथा ३०० एक कोररा दां[3] ।' औ मदत करणनूं तैयार हुवा; भींव सांभळियो[4], तरै हालांनूं कहाड़ियो–"धोधांरी मदत काई करो[5] ? हूं छूं तो आंपणै घरे साहबी छै[6] । थे धरती दाबी छै सु थांहरी, नै म्हां हेठै छै सु मांहरी छै[7]; इण वातरो सील-कोल करो[8] ।" तरै हालां हेठै ही घणी धरती आई थी नै निज थी (?) तरै हालां नै भीम माहोमांही सील-कोल कियो । देवी आसापुरा विचै दीवी । यौं करनै धोधानूं धरती मांहैसूं परा काढिया[9] । पछै वे राव कहीजै । हाला जांम कहीजै । माहोमांही घणो सुख[10] ।

पीढियां १२ तथा १४ रै जांम लाखो हुवो । रायधणांरै हमीर हुवो । एक दिन हमीर थोड़ै से साथसूं असवार २५ सूं, घोड़ी ढळ गई, त्यां वांसै आयो[11] । नैड़ो आयो थो सु जांणियो[12]–"लाखैसूं मिळता जावां ।" सु अठै आयो । लाखै घणी आगता-सागता[13] कीवी । भगत कीवी[14] । लाखैरै रावळ बेटो मोटियार[15] । रावळनूं सांमै काठियां कह्यो जु–" लाखैरी तो अकल गई, और हमीर थांहरै[16] घरै आयो, परो कूट मारो[17], डावड़ा नांना छै, उड़ जासी[18] । काछरी साहबी परमेसर थांनूं[19] दी ।" सु दोपाहरैरो हमीर पड़वै[20] मांहै सूतो छै, तठै रावळ आयनै पग चांपण लागो । तरै हमीरनूं नींद आई, तरै तरवार काढ़नै वाही[21] सु हमीररो माथो तूट पड़ियो । मारनै रावळ नाठो[22] । कळळ हुई[23], लाखैरो भेद नहीं । लाखो वांसै तूटो तीर वाहै[24] । एक काठियांरै वास[25] थो, तठै रावळ वाड़ मांहै कूद पड़ियो । लाखै दीठो–जुजु जाइ (?) तरै पाळसेट तरवार वाही, सु

1 से । 2 तुम्हारेको । 3 एक किनारेके दें । 4 सुना । 5 धोधोंकी मदद क्यों करते हो ? 6 मैं हूँ तो अपने ही घरमें राज्य है । 7 तुमने जो धरती दाब ली है वह तुम्हारी, और मेरे नीचे है वह मेरी है । 8 परस्पर इस वातका कौल-वचन कर लो । 9 निकाल दिये । 10 परस्पर बहुत प्रीति बढ़ी । 11 एक दिन एक घोड़ी गुम हो गई, हमीर पचीसेक सवारोंके साथ उसके पीछे गया । 12 नजदीक आया था तब विचार किया । 13 आगत-स्वागत । 14 पहुनाई की । 15 जवान । 16 तुम्हारे । 17 मार डालो । 18 बच्चे छोटे हैं, सब समाप्त हो जायेगा । 19 तुमको । 20 पड़शाला । 21 प्रहार किया । 22 भाग गया । 23 कोलाहल मचा । 24 तीर चलाता है । 25 मोहल्ला ।

गुदड़ी मांहै आंगळ वे[1] वैठी। लाखो पाछो वळियो[2] । रावळ काठियां मांमां मांहै गयो। लाखो वां असवारां मांहै हुयनै भुज आयो। टीकैरा घोड़ा देनै खंगाररै टीको काढियो। लाखो घणा दिन अठै रयो[3] । जांणियो, कदाच खंगार मोनूं मारै तो म्हारै माथैरी उतरै[4] । तरै खंगार कह्यो–" काकाजी ! घरै पधारो। राज जांणो सु म्हे न करां[5] । वा रावळसूं हीज व्है[6] । रावळा आसापुरा जांणै[7], थां थकां क्युं न जांणां[8] । रावळ टीकै वैठे, तरै म्हां नै रावळ वात[9] ।

पछै रावळनूं लाखो जीवियो तां (सूधो) पगे न लगायो[10] ।

पछै कितरांहेकां दिनां[11] लाखो किणही कांम गयो थो, सु थोडै साथसूं थो, सु धोधा ऊपर आयनै लाखानूं मारियो। तरै रावळ टीकै बैठो। तरै खंगार कह्यो–"हमैं हमीर मांगां[12] ।" खंगार पण मोटो हुवो। वरस २० तथा २२ मांहै हुवो। साहवी संभाही[13] । तरै साथ करनै रावळ नै यां विचै सीप नदी छै, तठै आयो[14] । पैली कांनीसूं[15] रावळ मांणस हजार सात-आठसूं आयो। हजार आठ-नवांसूं खंगार आयो। पखालद हुई (?) नैड़ा आया[16] । दीहां वेढ व्है[17] । रात आप-आपरै सको गाडै जाय मांणसां मांहै सूवै[18] । मांहोमांहि पैलांरा उलांरा डेरां जावै-आवै[19] । सवार हुवै वळै वेढ हुवै[20] । यूं वारै वरस वेढ कीवी। आसापुरा देवी विचै दी नै लोपी, तिणसूं दिन-दिन रावळनूं हार आवती जाइ। पैला जोर चडता जाय। तरै रावळ वजीर

---

1 दो। 2 लाखा पीछा लौटा। 3 लाखा बहुत दिन तक यहीं रहा। 4 मनमें ऐसा विचार कर के वहां रहा कि यदि खंगार मुझे मार दे तो मेरे पर चढ़ा हुआ कलंक उतर जाये। 5 आप जो जाने हुए हैं वह मैं नहीं करूंगा। 6 ऐसा तो रावलसे ही हो सकता है। 7 मैं आपकी और आशापुरा देवीकी शपथ खा कर कहता हूं। 8 मैं आपके प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखता। 9 तव मेरे और रावलके बीचमें वात है। 10 लाखा जिया तव तक रावलको अपने पांवों नहीं लगने दिया। 11 कितनेक दिनोंके वाद। 12 तव खंगारने कहा 'अव हमीरको मारने का वदला लेना मांगता हूं'। 13 राज्य सम्हाला। 14 वहां पर आया। 15 उस ओरसे। 16 निकट आये। 17 दिनमें लड़ाई होवे। 18 रातको सभी अपने-अपने गाडों और अपने मनुष्योंमें जाकर सो जावे। 19 परस्पर इधरके उधरके शिविरोंमें आते जाते हैं। 20 प्रभात होते ही फिर लड़ाई लड़ते हैं।

लाडकनूं कह्यो–" बीजूं तो सर पावां नहीं[1], तूं बूढो पण हुवो छै। तूं मरण तेवड़नै[2] खंगारनूं मारै तो पोहचां, नै थारा बेटा धणी-धोरी छै ईज[3], नै वळै घणा वधारीस[4]।" यों कह्यो, तरै लाडक पण आरै हुवो[5]। तरै तोत करनै रावळ नै लाडक चड़भड़िया[6]। रावळ लाडकनूं खांसड़ो वाह्यो[7]। लाडक रीसायनै खंगार कनै[8] गयो। दिन ४ तथा ५ रह्यो। एक दिन किणीकैरै दीवैसूं गाडै लाय लागी[9]। रजपूत सोह[10] लाय बुझावणनूं गया। राव कनैं लाडक ऊभो छै[11]। मन मांहे चूक[12]। लाडकरो हाथ धूजियो, तरै राव पूछियो–'थारो हाथ क्युं धूजियो ?' कह्यो–'यूंही।' यूं कहिनै राव बीजी कांनी जोयो[13]। तरै लाडक रावनूं पाछासूं झटको वाह्यो[14]। रावरै मोरै लागो[15]। घणो वूहो[16]। सु राव लाडकनूं गाबड़सूं[17] झालनै[18] नीचै दियो। नीचै दे हाथ मरोड़ तरवार ले राव झटकारी दी। माथो तूट पड़ियो। रावरै पाटो बांधियो। राते कोहेक मुंवो थो, तिणनूं दाग दियो[19], सु रावळ जांणियो–"राव मुंवो छै, युंही छांनो राखै छै[20]।" सवार हुवो[21], तरै रावळ आपरो[22] साथ हलकनै[23] तूट पड़ियो। पैली कांनी सूं रावरो साथ आयो[24]। वडी वेढ हुई। झीक पड़ी[25]। बीजै दिन[26] वेपोहर तांई वेढ हुई तो। तिण दिन सवाररा वाजिया था सु दिन घड़ी ४ रह्यो तोही पाछा न वळै[27]। तरै राव कह्यो–"मोनूं मांचै ऊपर ऊभो करो[28]।" तरै ऊभो कियो। रावळरै साथ दीठो[29] –"जु

1 अब एक इस बातके सिवाय जीतना संभव नहीं रहा। 2 इरादा कर के। 3 तेरे बेटे और वारिश वगैरा हैं ही। 4 और फिर मैं उनको बहुत बढाऊंगा। 5 तब लाडकने भी स्वीकार कर लिया। 6 तब छल कर के रावल और लाडक परस्पर लड़ पड़े। 7 जूता मारा। 8 पास। 9 एक दिन किसीके दीपकसे एक गाडे में आग लग गई। 10 सभी। 11 रावके पास लाडक खड़ा है। 12 उसके मनमें दगा है। 13/14 यों कह कर के रावने जब दूसरी ओर देखा, त्योंही लाडकने राव पर पीछे तलवार का प्रहार कर दिया। 15 प्रहार रावकी पीठमें लगा। 16 बहुत रक्त बहा। 17 गर्दनसे। 18 पकड़ कर। 19 रातको कोई मर गया था, उसको जलाया। 20 राव मर गया है परंतु बातको छिपाये रखते हैं। 21 प्रभात हुआ। 22 अपना। 23 ललकार कर के। 24 दूसरी ओरसे रावकी सेना आई। 25 खूब तलवार चली। 26 दूसरे दिन। 27 उस दिन प्रभातसे ही लड़ाई शुरू हो गई थी, चार घड़ी दिन शेष रहा तो भी पीछे नहीं लौटते हैं। 28 मुझको खाटके ऊपर खड़ा करो। 29 रावलकी सेनाने देखा।

राव जीवै छै।" वेढ हुतां पण घणी वेळा हुई थी[1]। माहोमांही हीचिया था[2]। रावळरो साथ पाछो लियो, डेरै गया, तरै रावळ कह्यो–"म्हे देवी लोपी, तरै आंपांसूं आसापुरा अरूठ[3]। धरती छोड़ो।" तरै धरती छोड़नै कोस तीस ३० तथा ३५, जेठवां, काठियां, वाढेलां कोसां ६० तथा ७० मांहै सोरठरी धरती खाली थी, अठै रावळ जांम संमत १५९६ नवोनगर वसायनै रह्यो[4]। नागनय ऊपर वास कियो। भाद्रेसर वांसै खंगार ली[5]। तिका अजै भुजरा धणीरै दाखलै छै[6]।

रावळ गिरनाररा धणी चीगसखां[7] गोरीसूं मिळियो[8]। उणसूं मेळ हुवो। उण कह्यो–"तूं गुजरातरै पातसाहसूं मेळ मत करै। म्हारै कांम अरथ म्हारो थको रहै[9]। थांरी पाखती[10] जेठवा केलवै रहै छै, सु त्यांनूं[11] मार लो। उण हुकम दियो हीज थो, नै जेठवै काठियां भेळा हुयनै[12] कह्यो–"ओ आंपणी धरती मांहै मांडो आय पैठो[13]। पछै ही अठै टिकसी तो आपांनूं मारसी[14] तो आवो आंपे[15] उणसूं एक वेढ करां।" तरै ऐ मांणस हजार दस चढियो-पाळो भेळो हुयनै आया[16]। रावळ पण आपरो साथ हजार छव करनै गयो। परगनै बरड़ै वेढ कीवी। रावळरै भाई हरधवळ असवार १००० टाळनै पैलां उपर तूट पड़ियो। पैलांरा सरदार सोह कूट मारिया[17]। उठै हरधवळ कांम आयो। वेढ रावळ जीती। पैला हारिया। पैलांरा सरदार तीने ही जेठवो, भीम, काठी, हाजो, वाढेल, भांण, मांणस ७०० सूं कांम आया। पैला भागा। रावळ यांनूं धकायनै धरती आप हेठै

---

1 लड़ाई होते हुए भी बहुत समय हो गया था। 2 परस्पर भिड़ंत हुई थी। 3 हमने देवीको वीचमें दे कर के भी वचनका पालन नहीं किया, इसलिये आशापुरा अपनेसे रूठ गई। 4 यहां पर रावल जाम नवानगर नामक नगर बसा कर रहा। 5 भाद्रेसर पीछेसे खंगार ने ले लिया। 6 वह अब तक भुजके स्वामीके अधिकारमें है। 7 चंगेजखां 8 मिला। 9 मेरे कामके लिये मेरे अधिकारमें ही रहना। 10 पासमें। 11 उनको। 12 इकट्ठे हो कर के। 13 यह अपने देशमें जबरदस्ती आ कर घुस गया। 14 पीछे यदि यहां टिक गया तो अपनेको मारेगा। 15 अपन। 16 तब वे दस हजार पैदल और सवार इकट्ठे कर के चढ़ आये। 17 दुश्मनोंके सभी सरदारोंको मार डाला।

लीवी। जेठवा उठारा छूटा समंदररी तीर छाइयै जाय रह्या[1] । उठै जेठवो खींवो वडो रजपूत।

रावळ जांम लाखावत नवी धरती खाटी[2]—जेठवां, वाढेळां, काठियांरी। सु गांव ४००० हालार हिमैं कहीजै[3]। नवोनगर रावळ वसायो तठै आगै जेठवा वसता। गांव ४५०० = एक हजार १००० वाढेलांरा, २००० काठियांरा। अजेस पिण इणां गांवां चोथ काठी लै छै[4]। १५०० जेठवांरा। अठै रावळरी वडी ठकुराई। गांव हजार ४००० दाबिया[5]। रावळ जोरै वहण लागो तरै रजपूतांनूं कह्यो[6]—"आंपै सपूत हुवा नै घणी नवी धरती खाटी, पण आंपांनूं वापीकां खेतां मांहीसूं खंगार काढिया, आंपां एक धको खंगारनूं दां[7]।" तरै वरसातरा दिन था। काचैखड़ै पखालद थको राव धीणोदरी पाखती थो। बेटो ऊमरकोट परणीजण मेलियो थो[8] सु साथ सोह बेटा साथै मेलियो थो। आप छड़वड़ै हीज साथ थो, सु रावळ हेरो करायो[9]। हेरो कराय थोड़ा देखनै असवार ५०० खंगार ऊपर आयो। खंगार धोणोदरी भाखरी मांणस ५० सूं वैठो थो। घोड़ी, सांढ, भैंस, गाय मुंहड़ै आगै चरती थी। दूध भैंसियां, सांढियां, गायां, घोड़ांरै साथरै वास्तै माटा भरिया था। पीवणरी तयारी हुई, तितरै तोर बोलियो[10]। तरै सोढै नदै कह्यो—"रावजी! उठो, साथ आयो।" सु राव तो उठासूं चढनै भाखरी[11] गयो। वांसै रावळ उठै आयो, तरै दीठो—"हमार हीज अठासूं ऊठिया दीसै छै[12]।" रावळ ताका करण लागो[13]। जांणियो—"जु खंगार गयो।" तरै रिणधीर गाजणियो, पैहला खंगार कनै रहतो, सु रिणधीर कह्यो—"यूं काहूं जोवो[14]? आवो

1 जेठवे वहांसे छूटे, समुद्रके किनारे छाईये गांवमें जा कर रहे। 2 प्राप्त की। 3 सो ये चार हजार गांव अब हालार कहे जाते हैं। 4 अभी तक इन गांवोंमें काठी चौथ (चौथा भाग) लेते हैं! 5 चार हजार गांवोंके ऊपर अधिकार किया। 6 रावल जब अपनी शक्तिसे शासन करने लगा तब उसने अपने राजपूतोंसे कहा। 7 अपन एक धक्का खंगारको दें। 8 बेटेको ऊमरकोट व्याहनेको भेजा था। 9 स्वयंके पास छुटपुटा साथ ही था अतः रावलने पीछा करवाया। 10 इतनेमें एक तीरका शब्द हुआ। 11 पहाड़ी। 12 अभी ही यहांसे उठ कर चले गये मालूम होते हैं। 13 रावल इधर-उधर देखने और विचार करने लगा। 14 यों क्या देख रहे हो?

सांढियां ल्यां । खंगार विण आपड़ियो नहीं रहै।" तरै फेरनै सांढि ली नै हळवै-हळवै[1] जांण लागा । रावळ पाछो-पाछो फिर जोवतो जाय। जो खंगार अजै आपड़ियो नहीं[2] । अठै खंगार असवार ५० सूं चढियो। कांईकां[3] मनै कियो—"जु साथ थोड़ो छै।" तरै खंगार कह्यो—" न करै श्री ठाकुर । रावळ सांढियां ल्ये नै हूं ऊभो रहूं !" सु भाखर बारै फेर ऊपरवाड़ै हुयनै कोसै १६ सांमो आयी[4] । अटी रिणधीर थूंब[5] चढनै पाछो जोयो, जु खंगार नायो[6] । आगै देखै तो सांमो साथ झळकियो[7] । तरै रावळनूं कह्यो—"आपरै साथनूं पैला थोड़ा दीसै छै[8] । खंगार म्हारै डील आयां विगर नहीं रहै[9] ।" तरै वीच आप ऊभो रयो नै साथ अढाई सौ ओळ रुखा[10] डावी कांनी[11] नै अढाई सौ जीमणी वाजू ऊभा राखिया । कह्यो—"विच में आवै तरै एक-एक भालो सको वाहिजो[12] । पांच सै भाला लागसी तरै मार लेस्यां ।" सु पैली कांनी खंगाररो भाई साहिवनै पीतरयाई फूल, यां कह्यो[13]— "आंपै खंगारनूं मरतो न देखां । आवो पैहली मरां ।" उतावळा[14] देखनै खंगार कह्यो—'जु आंहचो[15] मत करो । थे जांणो छो जु म्हे मरण द्यां ।" युं कही नै पचास असवार जीनसालिया नख-चख सूधा था त्यांरो गोळ करनै उपाड़ नांखिया[16] । सु ओळ रुखा ऊभा हुता, तिके केई भाला वाही सकिया कै न वाही सकिया, नै आय अै भेळा हुवा। तरवारियां झीक दी । रावळरो वजीर आप खंगार पाड़ियो । वीजो पण साथ घणो पाड़ियो[17] । रावळरो साथ भागो । तरै रावळ निपट भलो हुवो । तीन वेळा उपाड़-उपाड़ खंगाररै साथमें नांखिया[18] ।

---

1 धीरे-धीरे । 2 खंगारको अभी तक पहुंच नहीं पाये (पकड़ा नहीं गया) । 3 कुछ लोगोंने । 4 सो पहाड़से बच कर निकटके मार्गसे १६ कोस चल कर (रावलके) सामने आया । 5 टेकरी पर । 6 खंगार नहीं आया । 7 दिखाई दिया । 8 आपके मुकाबिलेमें वे कम दिखते हैं । 9 खंगार सीधा मेरे पर आये विना नहीं रहेगा । 10 पंक्तिबद्ध । 11 बायीं तरफ । 12 बीचमें आ जावे तब एक-एक भाला सभी मार दें । 13 उस ओरमें खंगारके भाई साहिब और पितृव्य फूल, इन्होंने कहा । 15 आतुर । 16 शीघ्रता, आतुरता । 17 इस प्रकार कह कर के जो पचास सर्वांगावृत कवचधारी अश्वारोही थे, उन सबने अपना एक गोल (समूह) बना कर अपने घोड़ोंको एक साथ उठाया । 18 दूसरे भी कई मनुष्योंको मार डाला । 19 तीन बार अपने घोड़ेको उठा-उठा कर खंगारकी सेनामें डाला ।

साहिबनूं झटको वाह्यो[1] सु टोप लाग टळियो। साथ भागो नै रावळ उपाड़-उपाड़ नांखै। तरै खंगार आपरांनूं कह्यो[2]–"रावळनूं मत मारो।" रावळरा रजपूतांनूं कह्यो–"थांहरो बाप परो काढो[3]।" तरै सोढै नदै रावळरै बूड़ोरी[4] दी, तरै किणीके कह्यो[5]–'भूलै वाही[6]।' तरै कह्यो–"भूलो न छूं, सांड आंकिया कह्या, मारणा न कह्या[7]।" रावळ फूलनूं बरछी वाही, सु भेवड़ै लागी, सु भागी। तरै रजपूते रावळनूं कही–"आज पाधरो नहीं[8]।" तरै ले नीसरिया। मांणस २५ रावळरा खेत पड़िया। बीजा डोळिये उपाड़िया[9]। रावळ पाछो आयो, तरै जिकै वरछी वाहि सकिया न था, त्यां बरछीरो फळ, वूड़ी भांज नै पाहोरा मांहै घाती थी। सु रावळ घोड़ांनै धांन देणरै मिस पाहोरा मंगाया, तरै मांहिसूं १२० बरछियांरा फळ बूड़ी नीसरिया। तरै रावळ कह्यो–"यांनूं आहीज सभा जु यांरी घोड़ियांरी बछेरी व्है सु यांरी नै बछेरा व्है सु रावळा[10]।" सु यां रजपूतांरा केड़ायतां आगै अजेस बछेरा लीजै छै[11]। तठा पछै रावळ फेर खंगारसूं वारी न नांखी[12]। रावळरी नवैनगर वडी साहबी हुई। वडा-वडा दांन किंया। बावन हजार घोड़ा जाचिगांनूं दिया[13]। ईसर वारहटनूँ कोड़ि दीनी[14]। खंगाररी ठाकुराईसूं सवाई-दोढी की[15]।

दूहा दोय वीठू खंगारनूं कहै[16]—

> ओ खांगो अवियाट[17], तुरकां ही नूं तेवड़ै[18]।
> झालां ही नूं झाट[19], हालां ही नूं हेकड़ी[20]॥ १

1 साहिबके ऊपर तलवारका प्रहार किया। 2 तब खंगारने अपने सैनिकोंको कहा। 3 तुम्हारे बापको (स्वामीको) निकाल दो। 4 बरछीका बांस। 5 तब किसीने कहा। 6 भूलसे बांसका प्रहार किया। 7 भूला नहीं हूँ, यह कहावत है कि 'सांड दागे जाते हैं, मारे नहीं जाते। (घाट-घाव नहीं किया जाता, चेतावनीके लिये उन पर सफल वार कर के उन्हें लज्जित करना पर्याप्त होता है)। 8 आज तुम्हारा दिन तुम्हारे अनुकूल नहीं है। 9 अन्य आहतोंको डोलियोंमें डाल कर उठा ले गये। 10 इन लोगोंको यही सजा दी जाये कि इनकी घोड़ियोंसे जो बछेरियां उत्पन्न हों सो तो ये खुद रख लें और बछेरे उत्पन्न हों जो राज्यको दें। 11 सो इन राजपूतोंके वंशजों से अभी तक इस दंडके रूप में बछेरे लिये जाते हैं। 12 जिसके बाद रावलने खंगारसे अड़नेका फिर साहस नहीं किया। 13 याचकोंको बावन हजार घोड़े दानमें दिये। 14 बारहठ ईशरदासको एक करोड़का दान दिया। 15 रावलने अपना राज्य खंगारसे सवाया-डचोढ़ा बढ़ा लिया। 16 चारण वीठूने खंगारके संबंधमें दो दोहे कहे हैं। 17 वीर। 18 निपट लेता है। 19 प्रहार। 20 हठ, युद्ध।

खंगड़ै किया खड़ाक[1], सींगाळै[2] सुरतांणसूं।
छोहियां[3] उतरी छाक[4], मीरां मिलकां ऊमरां[5] ॥ २

पीढी

जांम लाखो।
२ रावळ।
३ वीभो।
४ सतो।
५ अजो[6]।
६ लाखो। जांम लाखो अजारो[7]।
७ रिणमल जांम।
८ सतो। जांम एक वार हुवो। पछै रायसिंघ साहवी ली[8]।
७ जांम रायसिंघ लाखारो। कुतवखांनसूं लड़ मुंवो। नवैनगरसूं कोस ३ सेखपाट।
८ जांम तमाईची। ८ वंभणियो।
७ जेसो लाखारो। एक वार तो कुतवखांन तोत कर मारनै सता रिणमलोतनूं नवैनगर वैसांणियो[9]। नै रायसिंघरो वेटो तमाईचो बाहिर नीसरियो[10]। पछै नवानगर ऊपर आयो। जोरावरी तमाईची धरती ली। जांम तमाईची हुवो[11]।

गीत लाखै अजैरो

निस-दीह[12] न थाकै क्युंहि नांखतो,
अस[13] गज कनक सुनग अतर,

---

1 सीधा। 2 वीर। 3 क्रोध वालोंका, घमंडियोंका। 4 नशा, उन्मत्तता। 5 उमरा, उमराव। 6 कई प्रतियोंमें जैसा लिखा है। 7 अजाका वेटा जाम लाखा द्वितीय। 8 सत्ता एक वार तो जाम पद पर अभिषिक्त हो गया, पर पीछे रायसिंहने राज्य छीन लिया। 9 एक वार तो कुतुवखांनने कपटसे जैसा को मार कर के सत्ता रिणमलोतको नवानगरकी गद्दी पर विठा दिया। 10 और रायसिंहका वेटा तमायची भाग कर वाहिर निकल गया। 11 पीछे तमायची नवानगर ऊपर चढ़ कर के आया और बलात् देश पर अधिकार किया। जाम पद पर तमायची अभिषिक्त हुआ। 12 रात-दिन। 13 घोड़ा।

सिर तो साख साच कहि सामंद्र
लाखैरी किसड़ी[1] लहर[2] ॥ १
द्वारामती रहंतै दीठा[3],
मिळै महल चक्र दीठा मेळ ।
वधै घणूं तोही वेळावळ[4]
वीभाहर ज्यूं नांखै वेळ[5] ॥ २
है[6] हाटक[7] हाथी नग हेकै
संख ता दिसि सीपनी सही
अम्ह-दिस[8] नांख लहर अजावत,
इसड़ी[9] नांखीजै उवही[10] ॥ ३

बात

जाड़ेचो फूल धवळरो । तिको[11] केलाकोट राज करै छै । भुजसूं कोस ८ तथा ६ दिखणनूं छै । तिका ठोड़ हमार[12] सूंनी छै । कोट घरांरी दीवांणरी ठोड़ अनांमत सारा आरिख[13] छै । समंदथा कोस ५ छै । तिण दिन फूल राज करै छै । तिण समै धरती मांहै ऊपरा-ऊपरी[14] सुगाळ[15] हुआ छै । सु वांणियांरै धांन पारपखै[16] भेळो[17] हुओ छै । सु वांणिया निपट तोटै गया[18] । तरै वरतियां[19] कना मेह बंधावणरो तलास कियो । तरै वरतिये कह्यो–"एक हिरण मंगावो ।" तरै हिरण १ आंणनै[20] कागळ १ में जंत्र लिखनै वरतिये कोरनै हिरणरै सींग मांहै घातनै कोस २ भाखर थो[21] तठै हिरणरै सहनांण कर छोड़ दियो । मेह बंधियो । वांणियांनूं कह्यो–"ओ कागळ भींजसी तरै मेह आसी[22] । बीजूं मेह नहीं आवै[23]" । कह्यो–"भली बात ।"

---

1 कैसी । 2 तरंग, दान देनेमें उदार वृत्ति । 3 देखा । 4 समुद्र । 5 दानकी लहर, उदारता । 6 घोड़ा । 7 सोना । 8 हमारी ओर । 9 ऐसी । 10 समुद्र, महादानी । 11 वह । 12 इस समय । 13 समान । 14 एक के ऊपर एक, वर्ष प्रति वर्ष । 15 सुभिक्ष । 16 अपार । 17 इकट्ठा । 18 सो बनियोंको बहुत हानि हुई । 19 मंत्र, यंत्र और टोना करने वाले, मंत्रवादी । 20 लाकर के । 21 पहाड़ । 22 यह कागज भीगेगा तब वर्षा होगी । 23 अन्यथा वर्षा नहीं होवे ।

वरस १ हुवो, केलाकोटरी धरती गांव ४००० मांहैं छांट न पड़ै, वांणियांरो धांन सारो विकियो[1]। वांणिया वरतिया हिरणरी खबर लेता रहै छै। युं करतां वरस ३ तथा ४ हुवा, मेह न हुवै। सारी परज[2], सोह[3] धांन वाळा सको[4] मरण लागा, तरै आ वात हूती-हूती[5] फूल सांभळी[6]। तरै वरतियां वांणियां नूं कह्यो–"काहूं वात सांभळीजै[7]" तरै कह्यो–"वात खरी छै।" पछै फूल कह्यो–"वडी वाट पाड़ी[8]। पण न जांणां ओ हिरण जीवै छै कै मुंवो।" तरै इणां कह्यो–"जीवै छै" तरै कह्यो–"ओ हिरण कठै छै?" तरै कह्यौ–"ओ सांमो भाखर छै तठै छै[9]। मांहरा आदमी दिन दूजैं-तीजै जाय जोइ आवै छै[10]।" तरै फूल उणांनूं साथ लेनैं असवार १००० जाय घेरियो। उणै हिरण दिखायो। तरै वांसै दोड़िया[11], तरै वरतिये कह्यो–"वरस ५ रो मेह बांधियोड़ो छै। थे उठै हिरणरा सींग मांहैं सूं चीठी मत काढीजो। पछै पाछो मेह आय न सकसी। हिरण मुंवो जीवतो मो कनैं लावज्यो। पण थे नांव मत लेजौ[12]।" फूल कह्यो–"भली वात।"

इण कोसों ५० तथा ६० वरड़ै, वीलेसर डूंगरै[13] जातो मारियो। मारनै सींग मांहीथा चीठी काढी[14]। वरजिया था, पण कह्यो मांनियो नहीं[15]। चीठी ले पांणी मांहै गाळी नै ऊपर आड़ंग तुरत मंडियो[16]। मूसळधार वरसण लागो। तरै इणां घरांनूं चलाया। तरै सारा तूट रह्या। फूलनूं मेह मारियो, सु बेसुध हुय गयो। सु जमलो अहीर खेरड़ी गांव छै तठै घोड़ो फूलनूं ले आयो, तरै वैर हेकण दीठो[17] तरै जमलानूं खबर हुई, कोई राजवी[18] छै। घणै ग्रहणैं

---

1 विक गया। 2 प्रजा। 3 सब। 4 सभी। 5 होती-होती, फैलती हुई। 6 सुनी। 7 क्या वात सुनी जाती है? 8 (१) खूब समय निकल गया। (२) वहुत बुरा हुआ। 9 यह सामा नामका पहाड़ है, वहां पर है। 10 हमारे आदमी दूसरे-तीसरे दिन देख आते हैं। 11 तब पीछे दौड़े। 12 परंतु तुम उसका नाम नहीं लेना (परंतु तुम उसको छेड़ना नहीं। 13 पहाड़ों पर। 14 मार करके सींग मेंसे चिट्ठी निकाली। 15 मना किया था, परंतु कहा हुआ माना नहीं। 16 चिट्ठी लेकर पानीमें गला दी और इधर तुरंत ही घटा छा गई। (आड़ंग=वर्षागम, वर्षागमकी ऊष्मा)। 17 तब एक स्त्रीने देखा। 18 राज-वंशका पुरुष।

पैहरियां घोड़ा ऊपर बेसुध हुवो छै। जमलो आय देखै तो "फूल छै।" तरै कह्यो–"ओ दुसमण छै। पण मरसी[1] तो सिगळा[2] जाड़ेचा आंपांसूं वैर करसी।"

तरै गांव मांहै स्यांणा आदमी था सु भेळा किया[3]। फूलनूं तपायो, सेकियो[4] घणूंही, पण सावधांन हुवै नहीं। तरै तबीबां[5] कह्यो–"और उपाव को नहीं, नै एक उपाव छै। काई वडकँवार ज्वांन इणनूं छातीसूं भींच सुवै तो उण आगरी तपतसूं ओ सावधांन हुवै[6]। तरै जमलै अहीर आपरै वडकंवार बेटी थी, तिणनूं कह्यो–"तूं फूलनूं छाती लगायनै भेळी सू[7]"। तरै इण कह्यो–"मोनूं दोस लागै; हूं पर-पुरस भेळी सूवूं नहीं।" तरै इणरै बाप घणो हठ कियो। तरै इण कह्यो–"हूं जो सोऊं तो इणनूं मोनूं परणावो। ओ तो मुंवो हीज छै, पण माहरै भागमें हूसी तो जोवसी[8]।" तरै फूलरै उसड़ै हीज डील उणनूं परणाई, नै भेळी सुवांणी[9]। पोहर २ दिन थकां छातीसूं भींचनै जमलारी बेटी सूती थी, सु रात आधीहेक[10] गई, तरै फूल सावधांन हुवो, आंख उघड़ी।

इणनूं पूछियो–"तूं कुण ? किसो विरतंत[11] ?" तरै इण सारी वात मांड कही–"इण भांत थे अचेत थका म्हारा बापरै गांव खेरड़ी आया जमला अहीर रै। तरै जमलै ओळखियो[12]। ओ फूल हुवै[13]। हमार ओ अठै आयो छै, कदाच मरसी तो आगै ही यांसूं असुख[14] छै नै वळै[15] माहोमांहि घणो असुख हुसी। कहसी–"ओ मुंवो, इणरा हीड़ा न किया[16]।" पछै आपनूं तपाया, सेकिया, चेतो बाहुड़ै नहीं[17]। तरै

---

1 मर जायगा। 2 समस्त। 3 तब गांवमें जो सयाने आदमी थे उनको बुला कर इकट्ठा किया। 4 सेंका। 5 हकीमोंने। 6 कोई वड़-कुमारी जवान लड़की इसको अपनी छातीसे भींच कर इसके साथमें सोये तो उस छातीकी अग्नि-तप्तसे यह सावधान हो। 7 तू फूलको छातीसे लगा कर इसके साथ शयन कर। 8 इसके साथ मुझे व्याह दो तो मैं इसके साथ सोऊं। यह तो एक प्रकारसे मर ही गया है, परंतु मेरे भागमें होगा तो जी जायेगा। 9 तब फूलके वैसे ही अचेत शरीरसे उसको व्याह दी और उसके साथ सुला दी। 10 आधीके लगभग। 11 तू कौन और यह सब क्या हकीकत है? 12 तब जमलेने पहिचाना। 13 यह फूल हो। 14 शत्रुता, वैमनस्य। 15 और, फिर। 16 यह मर गया, इसकी परिचर्या नहीं की। 17 चेतनता लौटी नहीं।

गांवमें स्यांणा था त्यांनूं पूछियो, कह्यो–"कोई उपाव करो, जिणसूं ओ जीवै।" तरै किणही कह्यो–"काइक वड़कंवार बेटी वरस १५ तथा १६ री बैर हुवै तिका जो च्यार पोहर छातीसूं लगाय सोवै तो वाहुड़ै। बीजूं तो जीवै नहीं[1]।" तरै मोनूं कह्यो–"बेटा! तूं इणनूं संभायनै सावचेत कर।" तरै म्हैं कह्यो–"यूं तो मोनूं दोखण[2] लागै, नै मोनूं इसड़ो थको ही परणावो तो हूं इणरै हाथ लगावूं[3], मुंवो तो छै हीज, जो कदाच जीवै तो माहरो भाग, ज्युंही हूणहार छै, त्युंही हुसी।" तरै इणहीज हवाल परणाया[4], नै मैं थांरी चाकरी कीवी। परमेसर आछी कीवी, आपरा दिन ऊभा[5], नै मोनूं जस आवणहार। रात पोहर १ रही तरै थांहरो[6] चेतो बाहुड़ियो। तरै थे मोनूं पूछियो– "तूं कुण ? तरै आ सारी हकीक़त मांडनै कही[7]।" तरै फूल उणसूं बहोत राजी हुवो।

जमलारी बेटीसूं अठै बोहत रंग-रास हुवो[8]। अठै इणहीज दिन इणरै पेट आसा रही[9]। सवारै फूल चढण लागो। तरै इण जमला अहीररी बेटी अरज कीधी–"माहरै पेट थांहरो कारण रह्यो छै[10]। मोनूं हेक रावळै हाथरी सहनांणी द्यो[11], सवारै लोग म्हारे माथै दोनो देसी[12]।" तरै फूल आपरै हाथरी मूंदड़ी[13] दीनी नैं लिखत कर दियो।

दिन २ रहिनै फूल चालियो, सु केलेकोट गयो। आगै फूलरी बैर धण पटरांणी छै, तिणसूं बोहत कारण छौ[14], सु वा बात फूल भूल गयो[15]। वांसै[16] इण जमला अहीररी बेटी रै पेट गरभ हुतौ, सु लाखो हुवो।

---

1 नहीं तो यह जीवे नहीं। 2 कलंक। 3 और मुझे इसकी ऐसी दशामें ही ब्याह दो तो मैं इसके हाथ लगाऊं। 4 तब ऐसी ही दशामें आपके साथ मेरा विवाह हुआ। 5 आपके दिन खड़े, आपकी आयु शेप। 6 तुम्हारा। 7 तब यह हकीकत विस्तारसे कही। 8 जमलाकी वेटीसे यहां बहुत परिणय-क्रीड़ा हुई। 9 यहां उसी दिन इसके पेट गर्भ रह गया। 10 मेरे पेटमें तुम्हारा गर्भ रहा है। 11 मुझे आपके हाथकी कोई निशानी दो। 12 कल मेरे पर लोग कलंक लगायेंगे। 13 अंगूठी। 14 जिससे बहुत प्रीति थी। 15 इसलिये फूल जमलेकी बेटीके साथ विवाहकी बातको भूल गया। 16 पीछे।

लाखो मोटो वरसां ८ तथा १० रो हुवो, तरै आपरी मांनै कह्यो[1]–"आंपां कुण छां[2] ? माहरो बाप कुण[3] ?" तरै लाखैरी मां कह्यो–"थे इण धरतीरा धणी, तू फूलरो बेटो।" तरै इण कह्यो–"तो आंपै अठै क्युं ? उठै हालां नहीं[4] ?" तरै इण वांसली[5] वात सोह[6] मांडनै कह्यो–"इण भांत अठै फूल आयो थो; इण भांत मोनूं परणाई; यूं थूं बेटो हुओ।" तरै लाखै कह्यो–"हूं फूल तीरै जाऊं छूं[7]। मोनूं सहनांण दे।" तरै वो लिखत नै फूलरै हाथरी सूंदड़ी दी। लाखो अठाथो[8] केलाकोट गयो। फूलसूं मिळियो। वे सहनांण दिखाया। फूल घणो उछाह कियो। घणो आदर कर मांहै लियो। लाखो जिको अवतारीक मरद, नांन्हो ही सारी साहबीरो मदार हुवो[9]। फूलरै और बेटो कोई न थो। लाखा ऊपर हीज मुदो हुवो[10]।

सु कितरांएक दिनां[11] फूल तो वांगै बलोचां दिसी[12] थांणै रहै नै लाखो घरे रहै। सु लाखो एकलो। जिको रूप-गुणरो निधांन। तिणनूं[13] देखनै फूलरी बैर[14] रांणी धण लाखानूं मांहै बुलायो नै कह्यो–"तूं आ वात मोसूं कर[15]।" तरै लाखै कह्यो–"तूं तो म्हारी मा छै। मोसूं आ वात क्युं हुवै[16] ?" तरै धण कह्यो–"तो हूं फूलनै लिखनै तोनूं परो कढाईस[17]।" तरै लाखै कह्यो–"जांणै सु करो, पण मोसूं आ वात होण री नहीं[18]।"

पछै फूलरी बैर धण कासीद करहीरानूं[19] लिख दियो। सु रांणीरो कासीद जरै[20] हीज आवै तरै[21] कोई जरूर हीज कांम

---

1 तव अपनी माको कहा। 2 अपन कौन हैं। 3 मेरा बाप कौन ? 4 तव इसने कहा—अपन यहां क्यों ? वहां क्यों नहीं चलें। 5 पिछली। 6 सब। 7 मैं फूलके पास जाता हूं। 8 यहांसे। 9 लाखा अवतारी पुरुष। छोटी आयुमें ही सारी साहिवी (राज्य)का अधिकारी हुआ। 10 लाखा पर ही राज्यका आधार रहा। 11 कितनेक दिनोंसे। 12 ओर। 13 जिसको। 14 पत्नी। 15 तू मेरे साथ रति-क्रीड़ा कर। 16 मेरेसे यह वात कैसे वन सकती है। 17 तो मैं फूलको पत्र लिख कर तेरेको देश-निकाला करवा दूंगी। 18 जो चाहे सो करो, परंतु मेरेसे यह वात नहीं होने की। 19 (१) ऊंटनी-सवार। संदेशवाहक ऊंटनी-सवार (२) एक व्यक्तिका नाम। 20 जव। 21 तव।

हुवै । सु करहीरो फूल आवतो दीठो[1] । तरै फूल दूहो कह्यो–

"कच्छ करहीरै छंडियो कूं देसड़ो कुसत्त[2] ।"

तरै आधो दूहो करहीरो कहै—

"लाखो फूल-महेळियां, खिण देवर खिण पुत्त[3] ।।"

आ वात धण कहाड़ी[4] । तरै फूल कह्यो–"तो लाखानूं देस मांहिसूं परो काढीजो ।" रजपूतांनूं कह्यो–"लाखानूं देसोटो दियो छै[5] । देस मांहिथा परो काढीजो[6] ।" तरै लाखै कह्यो–"म्हारो बाप चोथी अवसथा छै[7] । मोनूं परो काढो छो । पण जिको ही फूलरी वात आ कहै–'मुंवो', तिणरी जीभ वढाऊं[8] । युं कहिनै लाखो वळै खेरड़ी मांमारै गांव दिसी गयो[9] । कितराएक दिन रह्यो । वांसै फूल मूंवो[10] । वा रांणी धण वांसै बळी[11] ।

लाखो उठै, सु लाखानूं आ वात कोई कहै नहीं । वांसैं धरती सूंनी[12] । लाखो मांमा रै । सु लाखो कहै–"किणही कह्यो फूल मुंवो तो उणरी जीभ वढाऊं ।" तरै बीहतो कोई कहै नहीं[13] । तरै देसरा सिगळा[14] कांमदार महाजन, सिगळै भेळा हुयनै कह्यो[15]–"लाखो आवै नहीं । धरती सूंनी । कोइक उपाव करो ज्युं लाखो आवै ।" तरै कह्यो–"जीभ वढावण कुण जावै[16] ? तरै सगळै भेळा हुयनै कह्यो–"डाही डूंसणीनूं मेलो । आ जाय कहसी[17] ।" तरै डाहीनूं

---

1 सो ऊंटनी सवार करहीरोको फूलने आते हुए देखा। 2 (उष्ट्रारोही) करहीरो कच्छ देशको क्यों छोड़ कर आ रहा है ? कोई असत कार्य हो गया दिखता है। 3 हे फूल ! तेरा पुत्र लाखा तेरी पत्नीके साथ उच्छृंखल देवर की भांति छेड़-छाड़ करता है। 4 यह वात तेरी रानी धणनै कहलवाई है। 5 राजपूतोंको कहा—हमने लाखाको देश-निकाला दे दिया है। 6 अतः इसको देशमेंसे निकाल देना। 7 मेरा बाप चतुर्थावस्था (वृद्धावस्था) प्राप्त है। 8 परंतु जो भी फूलके संबंधमें यह बात कहे कि वह मर गया तो मैं उसकी जीभ कटवा दूंगा। 9 यों कह कर के लाखा पुनः अपने मामाके गांव खेरड़ीकी ओर चला गया। 10 पीछे फूल मर गया। 11 वह रानी धण उसके पीछे सती हुई। 12 विना राजाके, पीछे देश सूना। 13 तब डरता हुआ कोई यह बात कहे नहीं। 14 समस्त। 15 समस्त लोगोंने इकट्ठे हो कर कहा। 16 तब कहा—जीभ कटानेको कौन जाय ? 17 डाही नामकी ढाढ़िनको भेज दो, वह जाकर के कह देगी।

लाखा कनै मेली[1]। आ उठै गई[2]। लाखो उठै बैठो थो सु अपूठो हुइनै बैठो नै डाहीनूं लाख [पसाव] दियो[3]। सु जिकूं थो सु सारो अेके दरड़े नांखियो[4]। नै इण वीण रबाब जिकूं बतीसूं जंत्र तयार करनै ओ दूहो गायो[5]—

फूल सुगंधी वाड़ियां, भाटी देख सिधांण।
तों विण सूनी सिंधड़ी, वळ लाखा महरांण[6]॥

ओ दूहो इण कह्यो। तरै लाखो फिरनै सांम्हो बैठ कह्यो--"फूल सुंवो ?" तरै इण कह्यो--"थे थांहरै मुंहडै कहो छो[7]।" तरै लाखै कयो--"हिमैं म्हारी जीभ कटावो[8]। मैं आ वात कही।" तरै रूड़े मांणसै कह्यो--"आ वात कुं हुवै[9] ?" तरै सोनारी जीभ सात वेळा करनै काटी[10]। इण भांत सासत कियो[11]। पछै डाहीनूं १ बीड़ो लाखै दियो, तिको माथै चाढ लियो[12]। तरै लाखो कहै--"कुण वास्तै[13] ?" तरै डूंमणी कयो—

लख लाखा द्रह[14] जाय, जो दीजै मुख वांकड़ै[15]।
पांन कुटक्कै रहि कहै, जो लाभै सो भाय॥

डूंमणी डाही कयो--"पहली तो लाख दियो अपूठै मुंहडै सु कुण कांम ? नै बीड़ो सांम्हो फिर दियो सु लाख सरीखो।" पछै लाखो केलाकोट आय टीकै बैठो। पछै वांगै थांणैं फूल रहतो तठै लाखो ही रहण लागो।

---

1 तब डाहीको लाखाके पास भेजा। 2 यह वहां गई। 3 लाखा वहां बैठा हुआ था, परंतु पीठ फिरा कर बैठा और ऐसे बठे हुए ही उसने डाहीको लाख-पसाव दिया। 4 सो जितना जो कुछ उसको दिया वह सारा का सारा एक खड्डे में डाल दिया। 5 और इसने वीना, रबाब आदि बत्तीसों वाद्य-यंत्र थे तैयार करके यह दोहा गाया। 6 हे फूल ! सुगंधित वाड़ियोंमें ऐसा न हो कि कोई अन्य भाटी आकर के उसकी सुगंधी लेले। हे बड़े राजा लाखा ! तेरे बिना सिंध सूनी है। तू जल्दी लौट आ। 7 तब इसने कहा—तुम अपने मुंहसे ही कह रहे हो। 8 अब मेरी जीभ कटवा दो। 9 यह बात कैसे हो सकती है ? 10 तब सोनेकी जीभ बनवा कर सात बार उसको काटा। 11 इस प्रकार जीभ काटनेका शास्त्र-विधान किया। 12 उसने उसको अपने मस्तक पर चढाया। 13 ऐसा किसलिये ? 14 खड्डेमें। 15 जो टेढ़े मुंहसे दिया जाय (जो पीठ फिरा कर दिया जाय)।

तरै लाखैरै मयारी बैर सोढी थी, सु लाखो वांगैनूं चालण लागो तरै सोढी कह्यो[1]–"मोनूं थां विना आवड़सी नहीं[2] । मोनूं पण साथै ले चालो ।" तरै लाखै कयो–"उठै आठ पोहोर चढणो-उतरणो, थांहरो कांम नहीं ।" तरै सोढी कहै–"थांहरै डीलरो पछेवड़ो १ मोनूं दीजै[3] । इण पछेवड़ा रो दरसण करीस[4] नै मोहल में वैठी रहीस[5] । नै अेक ओ मनभोळियो डूंम अठै राखो । ओ मोहल नीचै ऊभो थांहरो जस गावसी, सु सुणीस नै वैठी दिन वोळाइस[6] ।"

सु लाखो तो वागोर बलोचांरै थांणै चालियो । मास ५ तथा ७ लागा । वांसै सोढी घरै छै, सु वरसातरा दिन छै । ऊपर मेह झड़ लाग रयो छै । वीज[7] चमकै छै । इण समै सोढी रात आधीरा झरोखै आय बैठी छै, सु अत कांम व्यापियो छै[8] । सु नीचै डूंम मनभोळियो गावै छै । इणनूं ऊपर बुलायो । इणसूं अठै सोढी चूकी[9] । सु भेळो ले-सूती छै[10] । लाखारो पछेवड़ो सु पगां नीचै विछायो छै । इणसूं केइक दिन घरवास रयो[11] ।

सु लाखो उठै वांगै छै, सु बारै रातरा नाड़ाछोड़ करणनूं आयो[12], सु ऊंचो जोवै छै[13] । तरै दूहो कह्यो[14]—

किरती माथा ढळ गई, हिरणी गई उलत्थ ।
सुवै निचिंती गोरड़ी, उर माथै दे हत्थ[15] ॥

तरै मावल वरसड़ो लाखा कनै थो[16] सु मावल कहै–"राज !

---

1 जव लाखा वांगेको जाने लगा तो उसकी कृपापात्र (मानीती) पत्नी सोढीने कहा । 2 मुझको तुम्हारे विना यहां अच्छा नहीं लगेगा । 3 तुम्हारे शरीर परका दुपट्टा एक मुझको दीजिये । 4/5 इस पछेवड़ेका दर्शन करूंगी और महलमें वैठी रहूंगी । 6 सो सुनती रहूंगी और वैठी हुई अपने दिन विताऊंगी । 7 विजली । 8 सो अत्यंत काम व्यापन हुआ है । 9 यहां सोढी इससे कुकर्म करवा कर पतित हुई । 10 वह उसको साथमें लेकर सोती है । 11 इससे कई दिन तक घर-वसा चलता रहा । 12 सो रातको पिशाव करनेके लिये वाहिर आया । 13 सो वह ऊपर आकाशकी ओर देखता है । 14 तव उसने यह दोहा कहा । 15 किरती (कृत्तिका नक्षत्रसमूह) शीर्षस्थान (मध्याकाश)से पश्चिमकी ओर चली गई है और हिरणी (मृगशिरा नक्षत्रसमूह) उलट गई है । ऐसे समयमें वक्षस्थल पर हाथ रखे स्त्री (पत्नी) निश्चित सो रही है । 16 पासमें था ।

युं दूहो कह्यो सु न छै[1] ।" तरै मावल दूहो कहै—

हिरणी माथा ढळ गई, किरती गई उलत्थ ।
नारी नरां सनाहियां, पड़ै झड़ोफड़ हत्थ[2] ।।

यूं मावल नै लाखै रात तो इण भांत वात कीवी । रात थी सु वोळाई[3] ।

परभात मावलनूं कह्यो—"अेक वार हूं केलाकोट जाय खबर ल्याऊं ।" तरै मावल कह्यो—"भलां जावो ।" तरै साहणीनूं कह्यो—"कोई आपणै इसड़ो घोड़ो छै सु चढनै आथण केलाकोट जाईजै[4] ।" तरै इण कह्यो--"छै तो घणाई[5] । कोई पतवांण जोयो न छै[6] ।" तरै कह्यो--"ऊंठ मंगाव ।" तरै ऊंठ १ मंगायो । लाखै घरांनूं चलायो, सु केलाकोट कोसां १० तथा १५ आया[7], तरै लाखै ऊंठनूं कांब वाही[8], सु करहो करूंकियो[9]। सु सोढी सूती थकी सुणियो[10] । तरै दूहो कह्यो—

झीणो करह करूंकियो, रीणो मंझ करांह ।
फूलांणी कांबेटियो, ऊमाहड़ो घरांह[11] ।।

सोढी डूंम मनभोळिया नूं कह्यो—"लाखोजी आया । आवतांरी अवाज सुणूं छूं[12] ।" तरै डूंम कह्यो--"सौ कोस वंगो छै । हमार हीज कठा आवै[13] !" इतरो कहिनै पाछा बेऊं सुय रया[14] । अतरै पोहर १ लाखोजी ऊंठ चढिया आय ऊभा रया[15] । लाखो उतरतो

---

1 आपने जो दोहा कहा है वह यों नहीं है । 2 हिरणी मध्याकाशसे नीचे चली गई है और किरती उलट गई है । ऐसे समयमें स्त्री-पुरुषोंमें कवचधारियों की भांति काम-युद्ध हो रहा है । 3 शेष रात व्यतीत की । 4 कोई अपने ऐसा घोड़ा है जिस पर चढ कर के संध्या तक केलाकोट पहुंचा जा सके । 5 हैं तो वहुत । 6 किन्तु परीक्षा करके देखा नहीं है । 7 सो केलाकोट १० या १५ कोस दूर रह गया—वहां तक पहुंच गये । 8 तब लाखेने ऊंटके वेंत मारी । 9 सो ऊंट बलबलाया । 10 सो सोती हुई सोढीने सुना । 11 घरको शीघ्र पहुँचनेके लिए उत्सुक फूलके पुत्र लाखाने ऊंटको वेंतसे मारा है । अतः उसका वह शिथिल (थका हुआ) ऊंट अन्य ऊंटोंके बीच बलबलाया है । 12 आते हुएकी आवाज सुन रही हूँ । 13 यहांसे बंगा सौ कोस दूर है । अभी कहांसे आजावे ! 14 इतना कह कर दोनों फिर सो गये । 15 इतनेमें एक पहरके वाद ऊंट चढे हुए लाखाजी आ खड़े हुए ।

सवों सोढीरै मोहल गयो[1]। आगै देखै तो सोढी मनभोळियासूं गळबांही घातियां सूती छै। जोयनै पाछो वीजी वैरांरै घरे गयो[2]। उठै तयारी हुई, तरै अैही जागिया[3]। कयो–"ठाकुर आया नै आंपांनूं दीठा[4]।" डूंम ऊठ परो गयो। वात होणहारी थी सु हुइ चुकी। लाखो वीजी हीज वैरांरै घरे सुय रह्यो[5]।

सवारै[6] गोखै[7] आय वैठनै डूंम मनभोळियै नूं वुलायो। कह्यो–"रे! म्हैं तोनूं सोढी दी। तोनूं महापसाव करी[8]।" नै सोढीनूं कहाड़ियो[9]–"म्हैं तोनूं डूंमनूं दी[10]। तैसूं जिकूं जे नीसरियो जाय सु लेजा[11]। उठै डूंम दूहो कहै—

> चोर भलां ही धन हरै, सापुरसां घर जा'र।
> दीठा दोस ज परहरै, लाखा सो दातार[12]॥

डूंम मनभोळियो सोढीनूं ले गयो। पछै कितरेक दिने लाखो पाटण परणीजण आयो[13]। तठै ओ डूंम पण मांगणी आयो छै। सोढी पण साथै आई छै। लाखै डूंमनूं दीठो[14]। तरै कह्यो–"रे! सोढी समाधी छै[15]?" तरै कह्यो–"जी समाधी छै।" सोढी पण लाखानूं दीठो। रूप, साहिवी देख, उज लूसनै सोढी कह्यो[16]–"धांन-पांणी खाणरो सूंस छै[17]।" लाखैनूं कह्यो–"थांनूं सोढी देखनै धांन-पांणी खाणरो सूंस लियो छै। जो मोनूं लाखोजी अेकांतमें आप हाथसूं

---

1 लाखा ऊंटसे उतरते ही सोढीके महलमें गया। 2 देख कर फिर दूसरी स्त्रियोंके घरको चला गया। 3 वहां इनके आनेकी तैयारी हुई तव ये भी जग गये। 4 ठाकुरने आकर अपनेको देख लिया है। 5 लाखा दूसरी स्त्रियोंके ही घरमें सो गया। 6 दूसरे दिन प्रातः। 7 झरोखेमें। 8 अरे (ढाढ़ी)! मैंने तुझको सोढी दी। तुझको इसे महापसाव करदी। (महापसाव = कोड़पसाव आदि वड़े दानोंसे भी वड़ा दान, महादान)। 9 और सोढीको कहलवाया। 10 मैंने तुझे ढाढ़ीको देदी। 11 तेरे से जो (धन) निकाला जाय सो लेकर चली जा। 12 ऐसे सत्पुरुषोंके घर पर जाकर चोर भले ही उनका धन हरण करे, जो उनके (चोरोंके) अपराधको देख कर भी अपनी महान् उदारतासे उन्हें उस धनके साथ छोड़ देते हैं। हे लाखा! ऐसा दातार एक तू ही है। 13 पीछे कितनेक दिनोंके वाद पाटणमें विवाह करने को आया। 14 देखा। 15 अरे! सोढी प्रसन्न है? 16 आंसू पोंछ कर सोढीने कहा। 17 अन्न-जल लेनेकी शपथ है।

सूळा कर खवाड़ता, तिकै खवाड़ै[1] । बीजो क्युं खावूं नहीं । पछै सूळांरी कांब ४ वणायनै मेली । कयो–"जावो सोढीनूं दो ।" तरै ले जाय दी । सोढी देखनै कह्यो--"श्रै कांब तो लाखाजीरी वणाई न हुवै[2] ।" पछै श्राप कांब ४ हाथसूं वणाई । एकण कपड़ै लपेटनैं मेली । सोढी वे कांब देखी । श्रै कांब लाखाजीरै हाथरी वणाई हुवै । वे कांब हाथमें लेत सवां जीव उड गयो[3] । लाखानूं कह्यो--"जी सोढी मुंई ।" तरै च्यार रजपूतांनूं मेलिया[4] नै कह्यो--"क्युंहेक[5] श्रगर चंदण ले जावो, सोढीनूं वाळ श्रावो[6] ।"

---

1 लाखाजी श्रपने हाथसे शूले (शूल्य-मांस) वना कर मुझे एकान्तमें खिलाते थे सो खिलाएँ । 2 ये शलाकाएँ तो लाखाजी की वनाई हुई नहीं हो सकतीं । 3 उन शलाकाश्रोंको हाथमें लेते ही प्राण उड़ गये । 4 भेजे । 5 कुछेक । 6 सोढीको जला श्राश्रो ।

बात जांम ऊंनड़ सांवलसुध कवि रोहड़ियानूं आऊठ कोड़-सांमई दी तिणरी

लाखा फूलांणी कनै सांवळसुध कवि रहै। लाखो वडो दातार छै। तिण ऊंनड़रै मन आई जु किण हीक[1] वडै पात्रनूं मोज[2] दीजै। तरै सांवळनूं आप कनै सांमई तेड़ियो[3]। तठै[4] आयो तरै सांवळरो घणो आदर कियो।

पछै वेळा २ तथा ३ मुजरै आयो तरै कयो–"क्युं जस करो[5]।" तरै लाखारो जस करणो मांडियो[6]। तरै पूरो (दै) सुहावै नहीं। तरै चोथै दिन आयो, तरै कयो–"क्युं जस करो।" तरै सांवळ कयो–"म्हे लाखारो जस करां, सु राजनूं सुहावै नहीं। लाखा जिसो और कुण छै[7]?" तरै ऊंनड़ कयो–"लाखो किसो दातार छै? पूतळो सोनारो वाढै छै[8], दांन दै छै। मड़ो घर मांहै राखै छै[9]। सूतग लागै छै[10]। दातार होय तो एकण किणूनूं परो दै नहीं तरै[11]?" तरै सांवळ कयो–"राज तो आऊठ कोड़-बंभणवाड़रा धणी छो[12]। उणरै इतरी विलायत दे सको नहीं[13] तो सत बोलै छै। राज आऊठकोड़-बंभणवाड़ एकण किणीनूं दातार छो तो परी दो[14]।" ऊंनड़ बात दिल मांहै राखनै परधांनांनूं कयो–"फलांणी ठोड़ राजलोक और लोकांरी वसी सूधा जात जास्यां[15]। तयारी करो।" सिगळां तयारी की[16]। पछै भलो दिन जोय[17], दीवांण वणाय[18] सारा उमराव तेड़नै[19] सांवळसुध कविनूं डेराथी तेड़ायनै[20] आपरै तखत बैसांणनै[21] आऊठ-लाख सांमई

---

1 किसी एक। 2 दान। 3 तब सांवलको अपने पास सामई बुलाया। 4 वहां 5 कुछ मेरा यश वर्णन करो। 6 तब उसने लाखाका यश वर्णन करना शुरू किया। 7 लाखाके समान और ऐसा कौन है? 8 सोनेका पुतला काटता है। 9 घरमें शव पड़ा रखता है। 10 मरणाशौच लगता है। 11 वह यदि सचमुच ही दातार हो तो किसी एकको ही वह सुवर्ण-पुतला दान क्यों नहीं कर दे? 12 आप तो आउठकोड़-बंभणवाड़ प्रदेशके स्वामी हो। 13 उसके जितना प्रदेश आप दे सकते नहीं। 14 आप भी यदि ऐसे ही दातार हैं तो आउठकोड़-बंभणवाड़ किसी एकको दान कर दें। 15 अमुक स्थान पर रनिवास और अपनी वसीकी प्रजा सहित यात्राको जायेंगे। 16 सबने तैयारी की। 17 देख कर। 18 दरबार भर कर। 19 बुला कर। 20 बुलवा कर। 21 अपने सिंहासन पर बिठा कर।

रो महापसाव[1] करनै आप गाडो जोतराय[2] समंदरै बेट[3] कराड़ै[4] गयो।

गीत ऊंनड़रो

कोड़ दीयण कीधो[5] करणीगर[6], भल दातार कवीचै[7] भाग।
आऊठ लाख तणो छत्र ऊंनड़, तो विण किणही न दीधो त्याग[8]।। १
सो-लाखां[9] लग[10] दांन समपियो[11], वांसै घातै हतणां विण्यांण[12]।
तो जिम गहड़[13] तखत वड त्यागी, सुकवि किह न किया सुरतांण।। २
सवा कोड़ लग आगै सयणै, पात्र[14] भणावै[15] महापसाव।
लोभाऊ दियो लाखावत, सिंध तणो छत्र सांमां-राव।। ३

1 महाप्रसाद, वहुत वड़ा दान। 2 जुतवा कर। 3 द्वीप। 4 किनारा। 5 किया, वनाया। 6 ईश्वरने। 7 के। 8 दान। 9 करोड़। 10 का, तक। 11 दिया, समर्पण किया। 12 अनेक प्रकारकी सामग्रीके साथ। 13 वीर, महान्, गंभीर। 14 चारण। 15 यश-गान करवाया।

'कच्छ कलाधर' नामक कच्छके इतिहास ग्रन्थमें ऊनड़का यह गीत पदच्छेद, वैणसगाई और भाषाकी अशुद्धियोंके साथ पूरा (आठ झड़ोंमें) दिया हुआ है। परन्तु जाम ऊनड़के जिस महा-पसावकी घटना पर उसमें यह छंद दिया गया है, वह घटना सर्वथा अन्य प्रकारकी है। घटना संक्षेपमें इस प्रकार है—

जाम ऊनड़के पाटवी पुत्र वालक सत्ताको हारस चारणका पुत्र, देवीको पाडाकी वलि देनेके खेलमें मार देता है। हारस चारण इस भयके कारण नगरसमई छोड़ कर भाग जाता है। लेकिन जाम ऊनड़ उसके पीछे आदमी भेज कर आदरके साथ वुला लेता है और ढाई दिनके लिये उसे समस्त नवलखी सिंधका राजा वना देता है। स्वयं एक जलपात्रको लेकर महलोंमें चला जाता है। उक्त गीत कच्छ कलाधरमें इस प्रकार है—

कोल वरस कीया करणीगर, भल दातार कवीचे भाग,
आवठ कोड तणो छत्र ऊनड़, तो वण आपे कवण तेआग।
सुधो दाओजी केरा ओसामा, मेल गानारां न सूझै माग,
(सूधो दाव जिके राव सामा, मेळग नरां न सूझै माग)
दान वडा दातारे दीधा, तखत किणे न कीधा तेआग।
सा लखां लग दांन समपेओ, पोती वखाणां प्रथीसर पाण,
(सो लाखां लग दांन समपियो, पात वखाणैं प्रथीसर पाण)
तो जिम घोड़ तखत वेसाडे, सो कव कीणे न कीया सुरताण।
सिंध तणें नें तखत वेसाडे, पात्रां भणाव्यो महा पसा,
लोभीया तें दीनों लाखाउत, सिंध तणो छत्र साम सा।

—दुलेराय अेल. काराणी : (पृ० ३७०) कच्छ कलाधर, प्रथम खंड, द्वितीयावृत्ति, पृ- ३६४ (प्रकरण १७ मुं), 'जाम उन्नड़'।

वात १ जांम ऊंनड़ सांवळसुधरी

जांम ऊंनड़ सांवळसुध कविनूं आऊठकोड़-सांमई दी दांन तरैं आपरा गाडा समंदरै बींट कराड़ां लेजाय छोड़िया । आपरी ठाकुराई उठै की[1] । गांव ५०० सो उठै आपरै दाखलै किया[2] । ऊंनड़री वडी साहबी, सु उतरा मांहै अमावी हुई[3] ।

सु विचै थोड़ो सो पांणी थो नै नैड़ा[4] हीज गांव ३०० हुरमझरै दाखलै[5] रा था, सु वां[6] जांणियो ओ नैड़ो आयो सु म्हांनूं मारैनैं धरती ल्यै, माल पण ल्यै । ऊंनड़ पण जांणियो थो आंनूं[7] मारूं । वे ता पहला अति भयसूं हीज माल-वित नावां घालनै हुरमझ गया । गांव ऊंनड़ आपरा किया[8] । नै गांव ७०० कुडळै-गुलाईरा परगना समंद्र वार सूमरांरा धकायनै लिया[9] । वडी ठाकुराई सिधसूं नजीक भुज दिसीसूं जायनै[10] । जिहाज दिन ३ तथा ४ नूं जाय ।

पछै महड़ (ऊनड़) कनै सूं राव खंगार हमीरोत कुंड नैं गुलाईरा परगना चाप लिया भुज वांसै[11] ।

पछै अकबर पातसाह जांमनूं तुरक कियो । हमैं तुरक छै[12] । वडा दातार छै । चारण आयेरी खबर दै तिणनूं ५ महमूंदी दीजै[13] । अजै वडी सायबी छै[14] । मांणस हजार ८००० तथा ९०००री जोड़ छै । सिधरा गांव नजीक छै । वासूं कर बधो दै छै ।

---

1 वहां अपना राज्य स्थापित किया । 2 वहां ५०० गांव अपने अधिकारमें कर लिये । 3 उतनेमें संतोष नहीं हुआ । 4 निकट । 5 अधिकारके । 6 उन्होंने । 7 इनको । 8 ऊनड़ने उन गांवोंको अपने अधिकारमें कर लिया । 9 और समुद्रके किनारे-किनारे ७०० गांव सूमरोंके अधिकारके कुडलै-गुलाई परगनेके थे, सूमरोंको भगा कर अपने अधिकारमें कर लिये । 10 भुजकी ओरसे लगा कर सिधके निकट तक वड़ी ठकुराई (राज्य)का स्वामी हुआ । 11 बादमें राव खंगार हमीरोतने कुंड और गुलाईके परगने भुजके अधिकारमें कर लिये । 12 अब मुसलमान हैं । 13 किसी चारणके आ जानेकी सूचना देने वालेको पांच महमूंदी इनाममें दी जाती है । 14 अभी तक वड़ी ठकुराई है ।

गीत पखालदरी वेढ राव खंगार नै रावल जांम हुई तिणरो बारहट ईसर कहै

परा नांख पड़िहार पिंड पवंग[1] छोड़ै परा,
परापुड़ ऊपड़ी वेढ प्राझी[2] ।
राहिबै हरधवळ हरधवळ राहिबो,
मांझियै वाजिया[3] आय मांझी[4] ॥१॥

जिण दिन रावळ नवोनगर लियो, तद हरधवळ हाजारै हाथ रयो[5] नै हाजो नीसरियो[6] जातो हुवो तिणनूं[7] जसै हरधवळरै बेटै वांसै[8] आपड़नै[9], हाजा बापरा मारणहारनूं मारियो[10] ।

---

1 घोड़ा । 2 (१) अत्यधिक, (२) जबरदस्त । 3 लड़े । 4 प्रमुख । 5 तब हरधवल हाजाके हाथसे मारा गया । 6 निकल कर, निकलता हुआ । 7 जिसको । 8 पीछेसे । 9 पकड़ कर । 10 बापको मारने वाले हाजाको मार दिया ।

वेढ १ जांम सत्तै नै अमीखांन हुई तिणरी वात

पातसाह अकबर गुजरात आजमखांननूं सोबै मेलियो[1]। सु तिण दिन गिरनार अमीखांन गोरी हुतो[2]। सु तिणनै जांम सत्तै सुख हुतो[3]। सु आजमखांन गिरनार लेवण मतै[4]। तरै जांम इणरो ऊपर करै[5]। तरै आजमखांन जांमसूं हळफळ करी[6]। पिण वजीर जेसो जांमरै रस हुवण दै नहीं[7]। तरै अठी[8] नबाब चढियो। उठी[9] जांम चढियो। नवानगरसूं कोस १२ धवळहर छै, उठै उतरियो[10]। नबाब आंमरण उतरियो छै[11]। १३००० अमीखांन, ४००० काठी, ४००० झाला, ४००० जेठवा, वाढेल ५०००, राव पंचायण ल्यायो ५०००। जांमरा घोड़ा हजार १००००। आजमखांन कनै पण निपट सखरो साथ[12]। सु वळै कहाव घणा ही हुवा, पण जांम मांनै नहीं[13]। फोजां बेऊं चढ आई। तरै अमीखांनरै चाकर काठीलो हांमो हुतो, सो क्युं उणसूं जांम बुरी की थी[14]। सु तिण अमीखांननूं कयो[15]—"तूं गिरनाररो धणी, काइ पाधरमें मरै[16]? तरै अमीखांनरो अणी विगर विढियां हीज मुड़ियो[17]। बीजो ही साथ घणो मुड़ियो[18]। तरै उणै घणो जोर कियो तठै जांम सत्तो नीसरियो[19]। तठै कवर अजो वजीर जेसो कांम आया। भात्रीज भांणेज जमाई मांणस ६७सूं कांम आया[20]। कवर अजै जेसै घणो पराक्रम कियो। मांणस १८०० जांमरा खेत

---

1 बादशाह अकबरने आजमखानको गुजरातके सूबे पर भेजा था। 2 उन दिनों गिरनारमें अमीखान गोरी राज्य करता था। 3 उसके और जाम सत्ताके परस्पर प्रेम था। 4 आजमखानका विचार गिरनार लेनेका। 5 तब जाम इसकी (अमीखानकी) सहायता करे। 6 तब आजमखानने (अमीखानको मदद नहीं करनेके लिये) जामसे बातचीत की। 7 लेकिन वजीर जैसा जाम और उसके परस्पर मेल होने नहीं देता। 8 इधरसे। 9 उधरसे। 10 वहां जाकर ठहरा। 11 नवाब आंमरणमें आकर ठहरा है। 12 आजमखानके पास भी निपट बढ़िया सेना। 13 पुनः कई बार बातचीत हुई परन्तु जाम नहीं मानता। 14 अमीखानका एक चाकर काठीला हामा नामक था, उसके साथ जामने कभी बुरा बर्ताव किया था। 15 उसने अमीखानको कहा। 16 तू गिरनार का स्वामी है, क्यों व्यर्थमें मर रहा है? 17 तब अमीखानकी सेना बिना लड़े ही मुड़ गई। 18 दूसरी सेना भी बहुत सी लौट गई। 19 तब इसकी (आजमखानकी) सेनाने बहुत जोर मारा तो जाम सत्ता वहांसे भाग निकला। 20 भतीज, भानजे और दामादके साथ ६७ मनुष्य काम आये।

पड़िया[1] । आजमखांनरा मांणस ७०० कांम आया । खेत हाथ आयो[2] । बीजै[3] दिन आजमखांन नवोनगर लूंटियो । पछै जांम वात कर मेळ कियो[4] । घोड़ा ५ जांम दिया । घोड़ा १० री जमै आगै की, सु वरसावरस द्यै[5] । आप मिळियो । अमीखांन दिसिया कह्यो– "मारल्यो, थांहरो गुनैगार छै[6] ।" हमैं घोड़ा ६० वरसावरस द्यै छै[7] ।

गीत जांम सत्तारो

परी राख पतसाह बळ-बांह[8] अहंमंदपुरो,
अभंग लखधीर इम कियो आगै ।
सतो मांगै नहीं धीर साहण समद,
मीरजां मीरसूं बाथ[9] मांगै ।। १
अमी खंगार नह मुदाफर ऊगरै,
हुवा अळगा विना झाटकै हाथ[10] ।
साह राखै सरण साह बीजा[11] सरस,
सूर मांगै सतो बाथ समराथ ।। २
आदि लगि सरण साधार लाखा हिमैं[12],
भलो सत-साल[13] इम[14] भला भावां ।
मांगी पातसाह मा[15] मांग जुध मीरजां,
आव मैदांन मैदांन आवां ।। ३

गीत

पैसंतां लार[16] लाख दळ पैठा[17],
ढाल वाळिया लोथां[18] ढेर ।

---

1 जामके १८०० आदमी रणखेत रहे । 2 (आजमखांकी) विजय हुई । 3 दूसरे । 4 पीछे जामने संधि कर के मेल कर लिया । 5 दस घोड़े और आगे देते रहनेकी शर्त्तकी, सो प्रति वर्ष देता है । 6 स्वयं उससे मिला और अमीखांके संबंधमें कहा—उसे मार डालो, वह तुम्हारा गुनहगार है । 7 अब प्रति वर्ष ६० घोड़े देता है । 8 भुजाओंके बलसे । 9 युद्ध । 10 बिना प्रहार किये ही (युद्ध किये बिना ही) अलग हो गये । 11 दूसरे । 12 अब । 13 शत्रु-शल्य, शत्रु के लिये कांटा रूप । 14 इस प्रकार । 15 मत, नहीं । 16 पीछे । 17 घुस गये प्रवेश किया । 18 लाशोंके ।

निग्रह[1] फोज फाड़ नीसरतै[2],
सतै घातिया[3] पाखर सेर[4] ॥ १
सता तणो[5] वढ[6] लोप न सकियो,
लोपी नहीं लोह-ची-लीह[7] ।
पै[8] पंडर[9] घड़[10] रा पाड़ंतै,
दरगैरा पड़िया तिण दीह[11] ॥ २
सतावीस दी कवण[12] संभारै,
सदी स कवण वधै संग्रांम ।
पंच हजारी किता पाड़िया,
किता हजारी आया कांम ॥ ३
त्रिकुट[13] अनै[14] हथणापुर[15] तीजो,
घड़ा[16] खूह-खण[17] एकण घाय[18] ।
इण निसपति असपतिसूं अवडो[19],
रिण काछियो[20] जु काछी राय[21] ॥ ४

गीत आढो भरमो कहै

तवल[22] वाज[23] गजराज[24] सकबंध अकबर तणा[25],
रहचिया[26] मीर हालै रंढाळै[27] ।
सतै आफाळिया[28] भला खुरसांणसूं[29]
काछ[30] पंचाळ[31] सोराठ[32] काळै ॥ २
सारसी पारसी सिंधुरी साईयां,
गुड़ड़िया सोर नीसांण गुड़िया[33] ।

---

1 युद्ध । 2 निकलते हुये । 3 डाल दिया, बना दिया । 4 छेद नाश । 5 का । 6 (१) प्रहार, (२) शस्त्रकी तीक्ष्ण धार । 7 (१) शस्त्रकी मर्यादा, (१) शस्त्रकी धारा-को । 8 (१) परंतु, (२) प्रतिष्ठा, (३) पाँव । 9 मुसलमान, यवन । 10 सेना । 11 उस दिन । 12 कौन । 13 लंकाका गढ । 14 और । 15 हस्तिनापुर । 16 सेना । 17 नाश । 18 प्रहार । 19 इतना । 20 लड़ाईकी, युद्ध किया । 21 कच्छके राजाने, कच्छाधिपति सत्ताने । 22 ढोल, नगारा । 23 घोड़ा । 24 हाथी । 25 का । 26 संहार किया, पराजित किया । 27 वीरने । 28 युद्ध किया, भिड़ा 29 बादशाहसे । 30 कच्छ देश । 31 पांचाल देश । 32 सौराष्ट्र । 33 बजे ।

ओतरा[1] पाछमा[2] लाख दळ आवटै[3],
जांमसूं काबली थाट[4] जुड़िया ।। २
ढहै[5] ढींचाळ[6] रत-खाळ[7] खळकै धरा,
जुड़ै धड़ पड़ै भड़दड़ जड़ाळै[8] ।
सता विण अवर कुण साहसूं समवड़ै[9],
पाधरै पैज[10] मैदांन पालै[11] ।। ३
जांम जु कियो आजीज सु जेहवो[12],
इसो को हुवो भाराथ[13] आगै ।
कियो खळकट[14] दळां काछ-कालंबरां,
वीररो वळै सर घोर वागै ।। ४
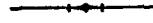
---

1 (१) उत्तरके, (२) आगेके । 2 (१) पश्चिमके (२) पिछले । 3 नाश होता है । 4 सेना । 5 गिरते हैं । 6 हाथी । 7 रक्तका नाला । 8 कटारीसे । 9 समता करता है । 10 (१) मर्यादा, (२) प्रतिज्ञा । 11 रोकता है । 12 जैसा, समान । 13 युद्ध । 14 नाश, ध्वंश ।

वात १ झाला रायसिंघ मांनसिंघोत नै जाड़ेचा जसा धवलोत नै जाड़ेचा सायब हमीरोत वेढ हुई तिणरी[1]

झाला रायसिंघ मांनसिंघोतनूं मांनसिंघ परो काढियो[2]; तरै जाड़ेचो जसो रायसिंघरै बैहनेई हुतो, तठै गयो[3]। उठै रायसिंघ वरस १ रयो। सु एक दिन जसो रायसिंघ चोपड़ रमता हुता[4]; तितरै[5] १ सोदागर नवैनगर भुजनूं जातो थो, सु नगारो साथै थो, सु वाजतो थो। सु गांव धोळहर जसारै गांवरी सींम मांहै पैंडै नीसरतो थो[6]। सु जसै नगारो सुणियो नै कह्यो–"ओ नगारो कुण वजावै छै[7]? इसो कुण छै जु मांहरै गांवरी सींममें नगारो वजावतो नीकळै[8]? पांडवनूं हुकम कियो जु घोड़ो तयार कर ल्याव[9]। साथसूं जाबता की–"जु वेगा तयार हुइ आवो[10]। आंपां इणसूं वेढ करस्यां[11]।"

तरै झालै रायसिंघ कह्यो–"म्हारा ठाकुर! इसड़ी वात हळवी कासूं करो छो[12]? पैंडा रो गांव छै[13]। घणा ही पैंडै नीसरसी, थे किण-किणसूं वेढ करसो[14]?" तरै जसै कही–"जु जिकोई[15] म्हारी सींव मांहै नगारो वजावतो नीसरसी[16] तिणसूं[17] म्हे वेढ करस्यां।" तरै रायसिंघ कह्यौ–"राज! वेढ नहीं कर सको।" तरै जेसै ओकर वाह्यो[18]–"जु जांणीजै छै, राज मांहरी सींव मांहै नगारो वजावसो[19]!" तरै रायसिंघ कह्यो–"म्हे रजपूत छां तो थांहरी सींव मांहै आय नगारो

---

1 झाला रायसिंह मानसिंहोत और जाड़ेचा जसा धवलोत तथा जाड़ेचा साहिब हमीरोतके परस्पर लड़ाई हुई उसका वर्णन। 2 मानसिंह ने झाला रायमल मानसिंहोतको अपने देशसे निकाल दिया। 3 तब रायसिंह अपने बहनोई जाड़ेचा जसाके यहां चला गया। 4 सो एक दिन जसा और रायसिंह दोनों चौपड़ खेल रहे थे। 5 इतनेमें। 6 सो वह जसाके धवलहर गांवकी सीमामें हो कर मुसाफिरी करता हुआ निकल रहा था। 7 यह नगाड़ा कौन बजा रहा है? 8 ऐसा कौन है जो मेरे गांवकी सीमामें नगाड़ा बजवाता हुआ निकलता है? 9 सईसको आज्ञाकी कि वह घोड़ा तैयार करके लावे। 10 सैनिकोंको सूचना की कि जल्दी तैयार हो कर आयें। 11 अपन इससे लड़ाई करेंगे। 12 मेरे सरदार! ऐसी ओछी वात क्यों करते हो? 13 यात्रियोंके लिये आने-जानेके मार्ग वाला यह गांव है। 14 मार्ग पर हो कर अनेक निकलेंगे, आप किस-किससे लड़ाई करेंगे। 15 जो कोई भी। 16 निकलेगा। 17 उससे। 18 तब जैसेने ताना मारा। 19 मालूम होता है कि आप मेरी सीमामें नगारा बजवायेंगे।

वजावस्यां[1] ।' तरै जेसै कह्यौ–'जो थे नगारो वजावस्यो तो हूं वेढ करीस ।' आ वारता तो अठै नीवड़ी[2] ।

सोदागररो पहला नगारो वाजियो थो, तिणरी जेसै खबर कराई, जु कुण[3] छै । जु आदमी खबर दी–'जु वापारी लोक छै । पैंडै जाय छै[4] ।' आ वात जेसै सुणनै कह्यौ–'काहुं करां[5] ! वापारी लोक हुवा । नहींतर[6] म्हारी सींव मांहै नगारो देरावै नै हूं वेढ न करूं ! सु जांणनै आघो काढियो[7] ।

पछै कितराएक दिनां मास ४ तथा ५ झालै मांनसिंघ रांम कह्यौ[8] । तरै रजपूतां विचारियो–'जु टीको किणनूं देस्यां[9] ? रायसिंघरा भाई तो नांन्हा[10] छै नै रायसिंघ बाहिर छै । नै यांथी तो धरती रहसी नहीं[11] । टीका लायक रायसिंघ छै । तरै विचारनै रजपूते रायसिंघनूं बुलायो । इण दिसी ओठी चाढियो[12] नै कह्यौ–'ठाकुर रांम कह्यो छै । धरती थांहरी छै । थे वेगा पधारज्यो[13] ।'

सु जेसो रायसिंघ साळो बैहनेई झरोखै बैठा था । तितरै ओठी[14] १ हळोदरै मारग दिसी[15] आवतो जेसै दीठो[16] । तरै रायसिंघनूं कह्यो–'जु ओठी १ हळोदरा मारग दिसी आवतो दीसै छै[17] । यूं बेऊं[18] ठाकुर वात करै छै; तितरै ओठी आय दरबाररै मांहै मुंहड़ै-उतरियो आय जुहार कियो[19] । तरै जसै रायसिंघ रजपूतनूं पूछियो–'जु थे क्युं आया छो ?' तरै रजपूत कह्यो–'ठाकुरां रांम कह्यो[20] नै राजनूं रजपूतै बुलाया छै । राज वेगा पधारो । राजरी धरती छै ।' जाड़ेचै जसै कह्यो–'राज वेगा पधारो ।' जसै रायसिंघनूं

---

1 यदि हम राजपूत हैं तो तुम्हारी सीमामें आ कर नगारा वजवायेंगे । 2 यह बात तो यहां ही समाप्त हुई । 3 कि कौन है । 4 मार्ग चल रहे हैं । 5 क्या करें । 6 नहीं तो । 7 सो जानते हुए भी आगे निकल जाने दिया । 8 फिर कितनाक समय, चार तथा पांच महीने बीत जाने पर झाला मानसिंह मृत्यू-प्राप्त हुआ । 9 राज-तिलक किसको देंगे ? 10 छोटे । 11 और इससे तो देश सम्हलेगा नहीं । 12 इसके लिये एक उष्ट्रारोहीको भेजा । 13 आप जल्दी आयें । 14 उष्ट्रारोही, शुतुरसवार । 15 से, की ओरसे । 16 देखा । 17 कि एक उष्ट्रारोही हलवदके मार्ग द्वारा आता हुआ दिखाई देता है । 18 दोनों । 19 इतनेमें उस उदास-मुख उष्ट्रारोहीने भीतर आ कर प्रणाम किया । 20 ठाकुरकी मृत्यु हो गई ।

लूगड़ा[1] कराय दिया, खरच दियो। घोड़ा दिया। यूं करनै चढणरी वेळा हुई तरै जसैनूं रायसिंघ सीख करतै कह्यो–'जु राज मोनूं ओकर बोलियो थो[2], सु हूं रजपूत छूं, तो सही राजरी सींव मांहै नगारो देराइस[3]।' तरै जसै कह्यो–'जिण ही दिन थे नगारो म्हारी सींव मांहै दिरावसो, तद हूं आडो आय ऊभो रहीस[4]।' सु पहली तो आ वात अदावदरी हुई थी, तरै तो सारां ही जांणियो थो–'ऐ साळा वैहनेई थकां रांमत करै छै[5]।' नै आ वात रायसिंघ हालतां[6] कही तरै तो सारे ही जांणियो–'जु आ वात साची हुई। कोई उपाव उपद्रव हुईसी।'

सु झालो रायसिंघ तो चढनै हळोद आय टीके वैठो। पछै मासां ४ धरती रस पड़ी[7], तरै रायसिंघ सारांही रजपूतांनूं कह्यो–'म्हारै श्री रिणछोड़जीरी जात छै, सु करणरो मन छै[8]। सकोई[9] साथ तयार हुवो।' तरै देस मांहै भलो रजपूत, भलो घोड़ो थो, सु सोह भेळो कियो[10] जात सारू[11]। हळोदसूं असवार हजार २०००, पाळा हजार २००० सगळो साथ छै सु गांव धवळहररी सींव[12] मांहै आया, तरै नगारो दिरायो[13]। तरै जाड़ेचै जसै कह्यो–'इसो कुण छै जिको म्हारी सींव मांहै नगारो दै?' आदमी मेल खवर कराई। आदमी कह्यो– 'जु झालो रायसिंघ छै।' तरै जसो आपरा साथसूं चढनै सांम्हो आयो। तरै रायसिंघ जसानूं कहाड़ियो[14]–'जु थां कनै साथ थोड़ो छै[15] नै म्हारै पण श्री रिणछोड़जीरी जात करणी छै। सु हूं जात करनै वळतो थां मांहै नीसरीस तरै वेढ करीस[16]। तितरै थे पण थांहरै देसरो साथ

---

1 वस्त्र। 2 आपने मुझे एक वार ताना दिया था। 3 तो अवश्य आपकी सीमामें नगाड़ा वजवाऊंगा। 4 तव मैं (युद्धके लिये) आड़ा आ कर खड़ा रहूँगा। 5 ये साला-वहनोई हैं इसलिये हंसी-मजाक कर रहे हैं। 6 रवाना होते समय। 7 देशमें शासन-व्यवस्था जम गई। 8 मेरे श्री रणछोड़जीकी जात (यात्रा) वोली हुई है, सो करनेका मन है। जात = कार्यकी सिद्धि होने पर संकल्पित भेंटके साथ की जाने वाली किसी देवमूर्तिके दर्शनकी पूर्व-निश्चित यात्रा। 9 सभी। 10/11 उन सबको यात्रामें साथ चलनेके लिये इकट्ठा किया। 12 सीमा। 13 तव नगाड़ा वजवाया। 14 कहलवाया। 15 तुम्हारे पास सेना कम है। 16 सो मैं यात्रा करनेके वाद लौटता हुआ तुम्हारी सीमामें हो कर निकलूंगा और तव लड़ाई करूंगा।

भेळो करो[1] ।' आ वात जसारै पण दाय आई[2] ।

झालो रायसिंघ पछै रिणछोड़जीरै दरसण गयो। कटारो ठाकरांरी कमर मांहीसूं छिटक पड़ियो[3], सु रायसिंघ लियो। रुपिया १५००) रो, इण रुपिया २०००) हजार दिया। दरसण कर पाछा खड़िया[4]।

अठै जसो आपरा देसरा साथसूं चढिया–पाळा[5] आदमी हजार सात ७००० भेळा किया[6]। झालो रायसिंघ श्री रिणछोड़जीरी जात कर वळतो[7] नवैनगर रावळ जांम कनै आयो, मिळियो। रावळ जांम घणो आदर भाव कियो। महमांनी कर सीख दी[8]। मांणस २ रूड़ा मेलनै रायसिंघनूं कहाड़ियो[9]–'थे नै जसै बेई वाद कियो छै[10]। थे स्यांणा छो, जसो मोटियार छै[11]। थे नीसरता धोळहरथा कोस ४ अळगा नीसरजो[12]।' आ वात जाइ आदमियां रायसिंघनूं कही। तरै रायसिंघ कह्यो–'वा वात तो नीवड़ी[13]। घणां मांणसां सुणी[14]।' तरै उणे आदमिये जांमजीनूं कह्यो। तरै जांम ही तमकियो[15]। कह्यो, थे जाय कहो–'जसो म्हारो भत्रीज छै। जो थूं धोळहर जाईस, तो म्हारा रजपूत ४ हुसी सु जसा भेळा हुसी[16]।' तरै उणे रायसिंघनूं कह्यो–'जु जांम यूं कहै छै।' तरै रायसिंघ कह्यो–'आ वात तो हूं जांणूं छूं, पण कासूं करू ? पहली वात कही[17]। हिमैं जांम आप धोळहर पधारै तो हूं टळूं नहीं[18]।'

यूं कहिनै रायसिंघ धोळहर नजीक आयो। नगारो दियो[19]।

---

1 जितनेमें तुम भी अपने देशकी सेनाको इकट्ठी करलो। 2 यह बात जसाके भी जँच गई। 3 ठाकुर श्रीरणछोड़रायकी कमरमें से एक कटार नीचे गिर पड़ा। 4 दर्शन कर के पीछे रवाना हुए। 5 सवार और पैदल। 6 इकट्ठे किये। 7 लौटता हुआ। 8 आतिथ्य कर के विदाई दी। 9 दो भले आदमियोंको भेज कर के रायसिंहको कहलवाया। 10 तुम और जसा, दोनोंने एक विवाद खड़ा कर लिया है। 11 तुम समझदार हो और जसा जवान है। 12 तुम लौटते हुए धलवहरसे चार कोस दूर हो कर के निकलना। 13 वह बात तो खतम हुई (वह बात तो पक्की हो गई)। 14 बहुतसे मनुष्योंने सुन ली है। 15 तब जाम भी क्रोधित हुआ। 16 मेरे चार राजपूत होंगे सो जसाकी सहायतामें होंगे। 17 परन्तु अब मैं क्या करूं ? जब कि पहले बात कर चुका हूँ। 18 अब तो जाम स्वयं धवलहर पधार जायँ तो भी टलनेका नहीं। 19 नगाड़ा बजवाया।

धोळहर डेरो कियो। जसानूं आदमी मेलनै कहाड़ियो[1]–'हूं आयो छूं। राज तयार हुय रहीजै। आंपै परभातरा वेढ करस्यां[2]।' जसो पण आपरा साथसूं तयार हुवो छै। बीजो[3] दिन हुवो तद रायसिंघ आपरा साथसूं चढ आयो। जसो पण आपरा साथसूं चढ आयो। गांवरा मुंहडा[4] आगै तळाव छै, तिणरै पाछै मैदांन छै। तठै वेऊं कांनीरो साथ आय चढियो छै[5]। अणी मिळिया छै[6]। वेढ भली भांतसूं हुवै छै। वेऊं कांनीरो साथ पागड़ा छाडिया पाळो थको विढै छै[7]। तिण मांहै जसो असवार २०० सूं आपरै साथ मांहै चढ़ियो ऊभो तमासो जोवै छै। तरै रायसिंघ दीठो[8]–'जु म्हारो साथ थोड़ो नै जसारो साथ घणो, जु काइ घात करूं[9]।'

रायसिंघ आदमी मेलनै[10] जसारी खबर कराई–'जु कठै छै, किसी आणी मांहै छै[11]?' सु आदमी खबर ले पाछो आयो। कह्यो–'पैली कांनै सांनै (छांनै) साथ चढियो ऊभो छै, तठै छै।'

तरै रायसिंघ आपरा साथ मांहै भलो रजपूत, भलो घोड़ो थो त्यां मांहै टाळनै असवार ४०० लेनै जसो ऊभो थो तठै जसा ऊपर तूट पड़ियो। जसो निपट ससवो मुंवो[12]। जसारो साथ भागो। अठै जसा रायसिंघरो घणो साथ कांम आयो। खेत रायसिंघरै हाथ आयो[13]।

पछै गांवनूं हल्लो कियो। तरै रायसिंघरी वैहन जसारै घर हूंती सु आडी फिरी। कह्यो–'थे घणो ही कांम कियो, गांव मोनूं कांचळीरो वगसो[14]।' तरै गांव मारियो नहीं[15]। नै आपरो साथ खेत पड़ियो थो, सु संभायनै हळोद पाछा आया[16]।

---

1 जसाको आदमी भेज कर कहलवाया। 2 अपन कल प्रातः लड़ाई करेंगे। 3 दूसरा। 4 मुंह, साम्हने। 5 वहां पर दोनों ओरकी सेनाएँ चढ़ आई हैं। 6 दोनोंकी सेनाएं आमने-साम्हने हो गई हैं। 7 दोनों ओरकी सेनाएं अपने-अपने वाहनोंको छोड़ कर पैदल युद्ध कर रही हैं। 8 तब रायसिंहने देखा। 9 इसलिये कोई आक्रमण करनेकी घात करूं। 10 भेज कर। 11 वह कहां और कौनसी अनी (टुकड़ी) में है। 12 जसा बड़ी सरलतासे मार दिया गया। 13 रायसिंहको विजय हुई। 14 तुमने बहुत अच्छा काम किया, अब यह गांव तो मुझको कंचुलीके रूपमें बख्शीश करदो। 15 तब गांवको नहीं लूटा। 16 और अपने सैनिक जो युद्ध भूमिमें काम आ गये थे, उनकी अन्त्येष्टि करके हलवद लौट आया।

तिण वातरी साखरो गीत वारहट ईसर कहै[1]—

गीत

पंख किसूं भखै, की अगन प्रकासै,
लाअै किसूं संकर गळ लेअ ।
वप जसराय तणो घाय वहंतां,
लोह धार रहियो लागेअ ।। १
अमिख अमिखच्चर मंगन आई,
उतवंग ईस न उपगरियो ।
सांमा तणो सरीर सरब ही,
आवध धारां ऊतरियो ।। २
विहंगां हुवो न चीनो विसनर,
भव ही तणै न आयो भाग ।
अंग जसराज तणौ आफळतां,
लिख-लिख गयो अंगारां लाग ।। ३[2]

वात

जसानूं रायसिंघ मारियो, जिण ऊपर[3] जाड़ैचा ठाकुर सको[4] भेळा होयनै नवानगर जांमजी तीरै गया[5] । आय कह्यो–'राज

---

1 इस युद्ध-वार्ताकी साक्षीका गीत बारहठ ईश्वरदास इस प्रकार कहते हैं। 2 गिद्ध आदि पक्षी क्या भक्षण करें और अग्नि क्या जलाये ? शंकर अपनी रुंडमालाके लिये किसका सिर प्राप्त करें ? शरीरका कोई भी अंग किसीके हाथ नहीं लगा । जसराजके शरीर पर इतने अधिक शस्त्रों के प्रहार लगे हैं कि उसके शरीर का प्रत्येक अवयव छोटे-छोटे टुकड़े हो कर शस्त्रोंसे ही लगा रह गया ।। १

गिद्धिनी और चील आदि मांसभक्षी पक्षी मांस भक्षणके लिये आये । शिव अपनी रुंडमालाके लिये सिर लेनेको आये । परंतु किसीको कुछ भी हाथ नहीं लगा । सामा जसराजका समस्त शरीर शस्त्रोंकी धाराओंसे ही लगा रह गया ।। २

पक्षियोंको उसके शरीरका कुछ भी भाग प्राप्त नहीं होने से निराशा हुई । वैश्वानर उसके शरीर को देख ही नहीं पाये और भगवान् शंकरको अपना भाग–वीरका मस्तक भी प्राप्त नहीं हो सका । जसराजके अंगके युद्धमें शस्त्रोंके प्रहारोंसे हुए छोटे-छोटे टुकड़े जो शस्त्रों ही में लगे रहे, उन्हें छुड़ा कर, मात्र उनका ही दाह-संस्कार किया गया ।। ३

3 जिस पर, जिस बातके लिये । 4 सभी । 5 पास गये ।

जाड़ेचांरा ठाकुर छो। झालै रायसिंघ जसानूं मारियो छै। राज मांहरी ऊपर करो[1]।'

तरै जांमजी जाड़ेचा साहव हमीरोतनूं विदा कियो। तावीन[2] घोड़ा हजार २०००० दिया। कह्यो–'थे जाय रायसिंघनूं मारि लेओ।' तरै आ वात रायसिंघ सांभळी[3]। तिण ऊपर हळोदरो कोट संवरायो[4]। आपरो साथ भेळो कियो। मरणीक हुय बैठा छै[5]। कोट सझियो छै[6]। जाड़ेचांरो कटक हळोदथा कोस १० आय उतरियो छै।

हळोदथा कोस ५ साहिवरो सासरो छै[7]। सु रातरै-पोहर[8] साहिव असवार ५००सूं सासरै आयो। सु झालो रायसिंघ आपरै साथ मांहे[9] ऊभो खबरदारी ल्ये छै[10]। तितरै[11] रायसिंघरो मांगणिहार[12] गांव जाडै साहिबरो सासरो थो, तठै ओ पण परणियो थो[13], सु सासरै गयो थो, सु साहिब रायसिंघ ऊपर आयो सुणनै ओ ही[14] रायसिंघ तीरै आयो। आसीस दी। तरै डूंमनूं पूछियो–'थे कांई वात सुणी ?' तरै कयो–'बीजी कांई वात तो सुणी नहीं[15], नै जाड़ेचो साहिब आज सासरै आयो छै।' तरै रायसिंघ कयो–'आ वात तो हूं मांनूं नहीं। मो इतरै नैड़ै थकै[16], साहिव कदै कटक मांहिथा सासरै जाय नहीं।' तरै डूंम कयो–'हुकम करो तो घोड़ांरा सहनांण वताऊं।' तरै कह्यो–'वताव[17]।' तरै इण सहनांण कह्या। तरै वात मांनी[18]। तरै रायसिंघ आपरो साथ थो तिण मांहैसूं भलो रजपूत, भलो घोड़ो थो, तिण मांहै असवार ५०१ टाळवां[19] था तिके लेनै साहिब ऊपर दोड़ियो।

---

1 आप हमारी सहायता करें। 2 अधिकारमें, तावेदारीमें। 3 सुनी। 4 जिस पर हलवदका कोट तैयार करवाया। 5 मरनेको तैयार (अत्योत्साहसे युद्धमें मरणातुर) होकर बैठे हैं, मरणीक = मरणशील, मरणधर्मा। 6 योद्धा और शस्त्रों आदिसे कोटको सभी प्रकार पूर्ण कर लिया है। 7 हलवदसे पांच कोसकी दूरी पर साहिबकी ससुराल है। 8 रातके समय। 9 अपनी सेनामें। 10 खड़ा हुआ देख-भाल कर रहा है। 11 इतनेमें। 12 याचक। 13 वहां यह भी व्याहा था। 14 यह भी। 15 दूसरी तो कोई वात नहीं सुनी है। 16 मेरे इतने निकट होते हुए भी। 17 वतला दे। 18 तव बातको सच माना। 19 चुने हुए।

सु जाड़ेचो साहिब सासरियांसूं सीख करनै हालतो थो[1]। रात पोहर १ वांसली थी[2], सु सासरिया हालण दै नहीं[3]। कह्यो–'सीरांवणी करावां छां[4]। राज सीरांवणी अरोगनै पधारो[5]।' तरै साहिब तो रहतो न थो, पण सासरियां माडां राखियो[6]।

परभात हुवो तरै साहिब अमल करनै फराकत तळाव पधारिया[7], सु साहिब आप घोड़ै असवार हुवो छै। मुंहड़ै आगै मांणस ५०१ पाळा-तरवारिया गिरिया साथै छै[8]। तळावरी पाळ[9] पांणीरी तीर पूगा[10], तितरै पैली कांनी साथ आवतांरी बरछी झळकी सु दीठी[11]। तरै खबर कराई। तितरै रायसिंघ ही आय भेळो हुवो[12]। अणी मिळी[13]। अठै वेढ निपट सखरी हुई[14]। रजपूत रजपूतांरै मुंहडै आया[15]। रायसिंघ नै साहिब मांहोमांही बाजिया[16]। रायसिंघ साहिबनूं मारियो। रायसिंघनूं पण साहिबरै हाथरा पूरा लोह लागा। रजपूत बेहांईरा घणा कांम आया[17]। छोकरो १ पाछो नायो[18]। झालो रायसिंघ एकण खांनहड़ी मांहै पड़ियो थो, सु जोगिये उपाड़ियो[19]। पाटा बांधिया[20]। रायसिंघ तो जीवियो। साहिब नै साहिबरो साथ, रायसिंघरो साथ कांम आयो, आ वात जाड़ेचांरै कटक सुणी तरै कटक पाछो गयो।

---

1 सो जाड़ेचा साहिव अपनी ससुराल वालोंसे आज्ञा प्राप्त कर रवाना हो रहा था। 2 उस समय पिछली एक प्रहर रात शेष थी। 3 अतः ससुराल वाले उस समय प्रस्थान करनेकी आज्ञा नहीं देते। 4 मनुहार कर के कहा–कलेवेकी तैयारी करा रहे हैं। 5 श्रीमान् कलेवा अरोग कर पधारें। 6 परंतु ससुराल वालोंने हठात् रोक कर रख लिया। 7 प्रभात हुआ तब अफीम ले कर के शौच-निवृत्तिके लिये साहिव तालाव पर गया। 8 उसके आगे-आगे तलवार धारण किये हुए ५०१ योद्धा साथमें चल रहे हैं। 9 ऊंचा किनारा, कगार। 10 पहुंचे। 11 इतनेमें दूसरी ओरसे आती हुई सेनाकी वरछियाँ चमकती हुई देखीं। 12 इतनेमें रायसिंह भी आ पहुंचा। 13 दोनों सेनाएँ आमने-सामने हुई। 14 यहां वहुत जबरदस्त लड़ाई हुई। सखरी = अच्छी। 15 दोनों ओरके रजपूत एक-दूसरेके सामने आ कर भिड़े। 16 रायसिंह और साहिव परस्पर भिड़े। 17/18 दोनों ओरके सभी रजपूत काम आ गये। एक छोकरा भी वापिस नहीं आया। 19 झाला राय-सिंह एक खड्डेमें गिर पड़ा था, उसे योगियोंने उठाया। 20 घावों पर पट्टे बांधे।

तिण वातरी साखरो दूहो[1]—

कण बे हूंता काछ, साहिब जसवंत सारिखा ।
झालो झंझेड़ै गयो, पाछै रहियो पाछ ।।[2]

गीत साहिब हमीरोतरो

भड़[3] घणा तोय आजूणो[4] भांजै
विढवा ऊठियो वांकम-वीख[5]
साहिब एको लाख सरीखो
साहिब एको कोड़ सरीख ।। १.

झालै[6] क्यु साहिब झाला अै[7]
मयंद[8] ऊठियो न्रिभै-मणो[9]
मुंह झालिओ न जाअै मिळअै
त्रिणे घणे ही मंगळ तणो[10] ।। २

हामावत एको हारवसी[11]
दळ-अर[12] दाख[13] दहण खग[14] दाहि
कुंजर कोड़ मिळै जो कारी
सीह झड़फतो सकै न साहि[15] ।।३

खग बंधव पेखै खळ-खोहण[16]
खत्री ऊठियौ धूणै खाग[17]
गुरड़ तणो मुंह तोय न ग्रहिजै[18]
नव-कुळ जो मिळ आवै नाग ।। ४

---

1 उस वातकी साक्षीका दोहा । 2 झाला रायसिंह, साहिब और जसवंत, दोनों ओरके वीरोंकी सेनाओंमें परस्पर ऐसा भयंकर युद्ध हुआ कि उसमें रायसिंहके सिवा कोई शेष नहीं रहा । साहिव और जसवंतने रायसिंहकी सेनाका और रायसिंहने साहिब और जसवंत सहित उनकी समस्त सेनाका खातमा कर दिया । 3 वीर । 4 आज, आजका । 5 वांकी चाल वाला, वांकी तौर वाला । 6 पकड़ते हैं । 7 ये । 8 मृगेन्द्र, सिंह । 9 निर्भय मन वाला, निडर । 10 का । 11 हारेगा, हरावेगा । 12 शत्रु दल । 13 देख कर । 14 खड्ग । 15 सहन करना, धारण करना । 16 शत्रुओंका नाश करने वाला । 17 खड्ग । 18 पकड़ा जा सके ।

मंगळ[1] त्रिणेग्र[2] न मयंद मैंगळै[3]
पनगे[4] गुरड़ न सकियो पाल[5]
एको कळह[6] घणै ऊठंतो
झालौ साहि(ब)न सकियो झाल ।। ५

वात १ जीवै रतनूं धरमदासांणी कही नै पहला सुणी थो तिका तो लिखी हीज हुती । वात जाड़ेचा साहिबरी नै झाला रायसिंघरी फेर लिखी[7]

जाड़ेचो साहिब पहला भारै भुजनगररै धणियांरो चाकर थो । सु किणीक वास्तै रीसांणो हुवो, तरै छाडनै ग्रहमंदावादरा धणीरो चाकर मूसाखांन तिण कनै गयो[8] । उठै मास ७ रहिनै सातलपुर पटै करायनै पाछो वळतो[9] हळवदथी कोस ८ माळियो गांव रायधणांरो तिणरै कांठै[10] ग्रसवार ५००सूं ग्राय उतरियो थो ।

सु ग्रा खबर रायसिंघनूं पांसवाथा वाघेलै रिणमल सगो थो उण खबर मेली[11]–'जु पोहर ४ रातरो साहिब गांव माळियै रहसी[12] ।' सु रायसिंघ किणीनूं वात जणाई नहीं[13] । ग्रसवार-पाळा[14] हजार ३००० चढनै खड़ियो[15] सु भाख-फाटती[16] रायसिंघ माळियै ग्रायो ।

साहिबनूं घड़ी एक पहला रायसिंघरै परधांन भाटी गोविंददास ख़बर दी थी । सु ग्रै चढ तयार हुइ ऊभा रया था[17] । सु साम्हां ग्राय । तळाव १ मांहै दबिया ऊभा था । साहिब साथै पबो जाड़ेचो वडो

---

1 ग्रग्नि । 2 तृण-समूह । 3 हस्ति-समूह, हाथियोंका झुंड । 4 पन्नग-समूह, सर्प-समूह । 5 वर्जन, रोक । 6 युद्ध । 7 जाड़ेचा साहिब ग्रौर झाला रायसिंहके युद्धकी वात जो पहिले लिखी गई है वह तो सुनी हुई लिखी गई थी । इनके इस युद्धकी एक ग्रौर बात धर्मदासके पुत्र रतनूं-बारहठ जीवाने (प्रकारान्तरसे) इस प्रकार कही सो वह भी यहां ग्रौर लिखी जा रही है । 8 वह उससे किसी कारण रुष्ट हो गया, तब वहांसे छोड़ कर के ग्रहमदाबादके स्वामीका चाकर मूसाखान था उसके पास चला गया । 9 लौटता हुग्रा । 10 रायधनोंका मालिया गांव उसके किनारे । 11 रायसिंहका संबंधी (समधी) वाघेला रिणमल था, उसने पांसवा गांवसे यह खबर भेजी । 12 रातके चारों पहर (रात भर) साहिब मालिया गांवमें रहेगा । 13 रायसिंहने किसीको भी इस बातकी सूचना नहीं दी । 14 सवार ग्रौर पैदल । 15 चला, रवाना हुग्रा । 16 प्रभातके समय । 17 सो ये भी चढ कर तैयार खड़े थे ।

राजपूत थो। रायसिंघ साथै वीको ईडरियो नै पठांण हबीब वडा रजपूत था, सु वाजिया[1]। वीको पवो वाजिया[2]। रायसिंघ नै साहिब वाजिया[3]। बेऊं खेत रया[4]।

राव खंगार घोड़ा हजार-बारै[5] १२०००सूं कोस ७ परै आजोर उतरियो थो[6]। नै जांम वीभो हळवदथी कोस १ उतरियो छै। तिण समै आ वेढ इणां हुई[7]। बेऊं कांम आया सु राव जांम चढि परा खड़िया[8]।

साहिब तो कांम आयो[9]। रायसिंघनूं जोगियां उपाड़ियो मांणस ६०सूं[10]। वांसै टीकै रायसिंघरै चंद्रसेन वैठो। वरस १० हुवा छै। हालांसूं लाख महमूंदी बेटी २ देतां रायधण अळगेरा, तिण वैर भागो नहीं[11]।

तिण समै रायसिंघ जोगी १०० लेनै हळवदरै तळाव आय उतरियो। दिन २ हुवा। रांणा चंद्रसेन रायसिंघोतनूं खबर हुई– 'कोई वडा जोगेश्वर आया छै।' तरै चंद्रसेन दुपहरीनूं सुखपाळ[12] १ मांहे वैस[13] डीकरा[14] २ नांना सुखपाळ मांहे वैसांण[15] असवार १० तथा १२, पाळा ५ तथा ७ साथै ले जोगियांरै पगे-लागण गयो। पगे लागो। पछै बूवना[16] १० उण मांहिला ऊठनै चंद्रसेन कनै आय बैठा। चंद्रसेननूं कहण लागा–'अै आयस[17] कुण छै?' तरै चंद्रसेन कहण लागो–'कोई वडा सिध छै।' तरै उणै कयो–'सिध न छै। थारो

---

1 साहिबके साथमें पव्वा जाड़ेचा वड़ा वीर राजपूत था और रायसिंहके साथमें वीका ईडरिया और हबीब पठान दोनों वड़े वीर राजपूत थे—ये परस्पर लड़े। 2 वीका और पव्वा लड़े। 3 रायसिंह और साहिब परस्पर लड़े। 4 दोनों वीर-गतिको प्राप्त हुए। (यहाँ रायसिंह और साहिब दोनोंका खेत रह जाना बताया गया है, किंतु आगेके विवरणसे पता चलता है कि रायसिंह मरा नहीं, घायल हो गया था और उसे आहत अवस्थामें जोगी उठा कर ले गये।) 5 बारह हजार। 6 आकर ठहरा था। 7 उस समय इनके परस्पर यह लड़ाई हुई। 8 दोनों काम आ गये तब रात्र जाम चढ कर चला गया। 9 साहिब तो मर गया। 10 रायसिंहको उसके ६० आदमियोंके साथ जोगी उठा कर ले गये। 11 एक लाख महमूंदी और दो कन्याएँ देते हुए भी हालोंसे रायधण राजी नहीं, इसलिये शत्रुता मिटी नहीं। महमूंदी = एक सिक्का। 12 पालकी। 13 बैठ कर। 14 लड़के। 15 बैठा कर। 16 साधु, जोगी। 17 योगी, सन्यासी।

बाप छै।' बूवने चंद्रसेननूं झालियो[1]। नै साथै हुता तिणां पांचां-सातांनूं कूट मारिया[2]। बीजा नास गया[3]। बूबनां चंद्रसेननूं बांधनै सुखपाळ मांहि नांखनै[4] घोड़ै चंद्रसेनरै रायसिंघनूं चाढियो। बीजा[5] जोगी घोड़ै चढ हळवदरा कोट मांहै अजांणजकरा[6] आय, रजपूत ७ वळै मरण वाळा हुता सु मारिया[7]। बीजा नास गया। रायसिंघरी जोगियां आंण फेरी[8]। चंद्रसेननूं छोडनै मांणस साथै देनै गांव मालणियाळ दे सीख दी[9]। आप साथै जोगी ५७ ऊपड़िया हुता, तिणांरो जोग उतराय आप-आपरा गांव दै घरे मेलिया[10]। झाला आय सोह मिळिया[11]। रायसिंघ आपरी राई-वाई की[12]। बेटा भगवांनदास नारणदास कनै राखिया।

रायसिंघनै आयो संसार सुणियो। वरस १ हुवो। साहिबरै भारै असवार १५००० हजार, १५००० पाळांसूं अंजार कोसां २० उतरियो इण माथै[13]। उठाथी दूजो भींव पंचाइणरो साहिबरा पोतरां साथै फोज दै रायसिंघ ऊपर भारै असवार हजार १००००, पाळा हजार १०००० विदा किया[14]। हळोद उतरियो। रायसिंघ सांम्हां असवार २०००, पाळा २०००सूं आय उतरियो। वेढ हुई[15]। रायसिंघ मांणस ३५०सूं कांम आयो[16]। आदमी १४० जाड़ैचांरा कांम आया। भारै चंद्रसेननूं पगै लगायो। हळवद बैसांणियो[17]।

—०—
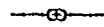
1 पकड़ा। 2 और जो साथमें थे उन पांच-सात आदमियोंको पीट कर मार दिया। 3 दूसरे भाग गये। 4 डाल कर के। 5 दूसरे। 6 अचानक, एकदम। 7 सात राजपूत लड़ कर के मरने वाले थे उनको और मारा। 8 जोगियोंने रायसिंहकी आन-दुहाई फिरा दी। 9 चंद्रसेनको छोड़ दिया और उसको मालणियाल गांव पट्टेमें देकर और कुछ आदमी साथ दे कर रवाना किया। 10 इन लोगोंका जोगी-भेष उतरवा कर और अपने-अपने गाँव वापिस देकर इनको अपने घर भेजा। 11 सब झाले आकर मिले। 12 रायसिंहने अपनी शासन-व्यवस्था जमा ली। 13 साहिबका लड़का भारा १५००० सवार और १५००० पैदल सेना लेकर इसके (रायसिंहके) ऊपर अंजारसे २० कोस दूर आकर ठहरा। 14 वहांसे (अंजारसे) पंचायनके बेटे भीम दूसरेको साहिबके पोतोंके साथ दस हजार पैदल सेना देकर भाराने रायसिंहके ऊपर रवाना किया। 15 लड़ाई हुई। 16 रायसिंह ३५० मनुष्योंके साथ काम आया। 17 भाराने चंद्रसेनको अपने पाँवों लगाया और हलवदकी गद्दी पर बिठा दिया।

झालांरी वंसावली लिख्यते

झालो सुरतांण प्रथीराजरो। प्रथीराज, चंद्रसेन, रायसिंघ मांनसिंघरा, तिको वांकानेर वसियो[1] । ईडर राव कल्यांणमलरी भतीजी, केसोदास नारायणदासोतरी वेटी परणियो थो[2] । सु ईडर छड़वड़ै साथ जातो हुतो[3] । पछै रांणा आसकरणनूं खवर हुई । गांव माथकै हळोदथा कोस ७ उतरियो हुतो सु तठै आदमियां १२सूं मारियो[4] ।

१ मांनसिंघ हळोद धणी ।

२ रायसिंघ हळोद धणी । वडो रजपूत, जिण जसो साहिव मारिया ।[5]

३ रांणो चंद्रसेन रायसिंघरो । इणनूं मोटै राजारी बेटी सतभामावाई परणाई हुती । घणा दिन जीवियो । पछै वेटै आसकरन अमर कैदमें कियो[6] ।

३ नारणदास ।

३ भगवांनदास ।

रांणा चंद्रसेन रायसिंघोतरो परवार आंक ३

४ प्रथीराजनूं पातसाह जांहगीर पकड़ ग्वालेर चाढियो[7] ।

५ सुरतांण प्रथीराजरो ।

४ भोजराज । ४ रांणो ।

५ प्रतापसी ।

५ रांणो आसकरण वापनूं झाल आप टीकै वैठो[8] । सतभांमारो

---

1 पृथ्वीराज, चन्द्रसेन और रायसिंह तीनों मानसिंहके पुत्र, वह (मानसिंह) वांकानेरमें जा वसा । 2 मानसिंहका ईडरके राव कल्याणमलकी भतीजी, उसके भाई केशवदास नारायणदासोतकी वेटीके साथ विवाह हुआ था । 3 वह छुटपुटे साथको लेकर ईडर जा रहा था । 4 हलवदसे सात कोस दूर माथके गांवमें ठहरा हुआ था, वहां पर १२ आदमियोंके साथ आसकर्णने मानसिंहको मार दिया । 5 रायसिंह हलवदका स्वामी । यह बड़ा वीर राजपूत हुआ । इसने जसा और साहिवको मारा । 6 पीछे उनके (चन्द्रसेनके) वेटे आसकर्ण और अमरने चन्द्रसेनको कैद कर दिया । 7 बादशाह जहांगीरने पृथ्वीराजको पकड़ कर ग्वालियरके किले पर चढा दिया । 8 राणा आसकर्ण अपने वापको पकड़ (कैदमें डाल) कर स्वयं गद्दी पर बैठ गया ।

बेटो[1] । भाई अमरानूं धरती मांहै हैंसो[2] दियो हुतो । पछै चूक करनै अमरानूं ही झलायो[3] । आसकरणरी बैहन बीच हुय छुडायो । पछै अमरै एकलै मोहल मांहै जाय आसकरणनूं मारियो[4] । उणरै बेटो कोई नहीं । टीकै अमरो बैठो ।

५ रांणो अमरो । भाई आसकरणनूं मार टीको लियो । पछै वरसे २ बाकळिअै अमरानूं कटारी ३सूं मारियो[5] ।

६ रांणो मेघराज ।

७ गजसिंघ श्रीजीरै वास । गुजरात रुपिया २००००)रो पटो ।

---

1 यह मोटे राजा उदयसिंहकी पुत्री सत्यभामाकी कोखसे उत्पन्न राणा चन्द्रसेनका पुत्र । 2 हिस्सा । 3 पीछे दगा करके अमराको भी पकड़वा लिया । 4 पीछे अमरा इकल्लेने महलमें जा कर आसकर्णको मार दिया । 5 पीछे दो वर्षोंके बाद बाकलियेने तीन वार कटारीका वार कर के अमराको मार दिया ।

वात झालांरी

गुजरातरै देस झालावाड़रा गांव १८०० कहीजै। मुदै तो गांव हळवद ही में छै[1]। नै अै पाटरिया कहीजै। सु पाटरी हळोदथी कोस ८ छै। आगै तो इणांरो उतन पाटरी हुतो[2]। झालो महमंद सोळंकी मूळराज पाटणरा धणीरो चाकर थो। सु राठोड़ सीहै नै मूळराज जाड़ेचै लाखैनै मारियो, तद कहै छै[3], लाखो जाड़ेचो हाथीरै होदै वेढ मांहै बैठो थो[4]। सु लाखानूं झालै महमंद बरछी लगाई। तिण रीझरी मूळराज महमंदनूं झालावाड़ गांव १८००सूं दीवी[5]। तद इतरा परगना लागता। झालावाड़ कहावै[6]—

गांव ७४७ वीरमगांव। निपट वडी ठोड[7]। रुपिया ३०००००) आज उपजै छै। दांम १०००००००), गांव ७४७[8]।

२५२ गांव वीरमगांव वांसै। २१६ वीरमगांव, दांम ६९८५७३५। ३६ मूळ (मूळी)रा दांम ३८५९६८[9]।

१६२ भोमियां नीचै जोर-तलब[10]।

११२ हळवद।

---

1 खास गांव तो हळवदके ताल्लुकेमें ही हैं। 2 पहले तो इनका निवास पाटड़ीमें था। 3, 4 तब ऐसा कहा जाता है कि जब युद्ध हो रहा था तब लाखा जाड़ेचा हाथीके हौदेमें बैठा हुआ था। 5 उस साहसिक कार्यसे प्रसन्न होकर मूलराज सोलंकीने झाला महमंदको १८०० गाँवोंका झालावाड़ प्रान्त इनायत कर दिया। 6 झालावाड़ कहे जाने वाले प्रान्तमें तब इतने परगने लगते थे। 7 वीरमगांव जिलेके ७४७ गांव हैं, यह बहुत उपजाऊ और बड़ा प्रदेश है। 8 आज (ख्यात-लेखकके समयमें) इसकी उपज तीन लाख रुपये हैं और उन ७४७ गांवोंका कर एक करोड़ दाम हैं। दाम = दामका मूल्य देशकालानुसार न्यूनाधिक रहा है। राजस्थान और गुजरातमें एक पैसेमें २५ दाम, तदनुसार एक रुपयेमें १६०० दामोंके हिसावसे फलावट करनेका प्रचलन अधिकतर रहा है। इस हिसाबसें (वीरमगांव जिलेके ७४७ गांवोंका राजस्व) एक करोड़ दामोंके ६२५०) रुपये होते हैं। वीरमगांव जिलेकी उपज (उत्पादन) तीन लाख रुपये और उसके साथ एक करोड़ दामों (६२५० रुपयों)का उल्लेख उपज पर उत्पादन-शुल्क या राजस्व ही होना संभव है। 9 (वीरमगांव जिलेमें) वीरमगांव परगनेके पीछे २५२ गांव, जिनमें उप-प्रान्त तरीके २१६ गांव वीरमगांवके, जिनका राजस्व दाम ६९८५७३५ (रु० ४३६६।≡। १०) और शेष ३६ गांव मूळी उप-प्रान्तके जिनका राजस्व ३८५९६८ दाम (रु० २४१≡॥ १८) हैं। 10 १६२ गांव भोमियोंके अधिकारमें हैं, जिनकी तलबी सख्तीसे वसूल होती है।

४६ गांव जुदा परगना वांसै गया[1] ।

६ पाटण ।

३७ मुंजपुर ।

६२ सूंना वरस ४० तथा ५० हुवा[2] ।

पाटरी हळोदथा कोस ८ । तठै घर २०० तथा २५० कोळी, वोहरा, वांणिया, ग्रासिया वसै छै । लूंणरो आगर उठै छै । रुपिया ७०००) उपजै छै । वीरमगांवनूं लागै[3] ।

झाला मकवांणां भिळै[4] ।

१ मांनसिंघ । २ रायसिंघ ।

३ चंद्रसेन । ४ आसकरण ।

४ अमरा । ५ मेघराज ।

गांव १५२ वीरमगांव तालकै[5] ।

४० गांव कोळी कांन्हा हेठै । अमल न दे । दांम ३६०७६२२[6] ।

८७ तालकै भोमियां । जोर पोहतां हासल दे[7] ।

३६ मूळी, रायसल पंवार[8] ।

८६ हासलीक । चूंडो-रांणपुर, वढवांणनूं लागै[9] । वाचणथा[10] कोस ३०, वीरमगांवथा कोस ३० । तठै आजमखां सखरो[11] कोट करायो ।

२२३ वढवांण लारै जुदा किया । दांम ५५४३४८[12] ।

२७ चूंडा-रांणपुर ।

---

1 गांव ऐसे हैं जिनका एक अलग परगना बना । 2 ६२ गांव ४०-५० वर्षोंसे उजड़े हुए हैं । 3 (पाटड़ी गांव) वीरमगांव परगनेको लगता है । 4 झाला राजपूत मकवानोंमें शामिल होते हैं । 5 इनके १५२ गांव वीरमगांव ताल्लुकेमें हैं । 6 ४० गांव कोली कान्हाके अधिकारमें हैं, जिनका राजस्व ३६०७६२२ दाम (रु० २२५४।।।≡ २२) हैं, किन्तु अमलदारी नहीं होने देते । 7 ८७ गांव भोमियोंके ताल्लुकेमें हैं । सख्ती पहुंचने पर राजस्व देते हैं । 8 ३६ गांव मूली परगनेके, जिनका भोमिया-जागीरदार रायसल (रायसिंह) पंवार है । 9 चूंडा-राणपुर और वढवानके अंतर्गत हैं । 10 वाचणसे । 11 अच्छा । 12 २२३ गांव वढवानके अंतर्गत और किये, जिनका राजस्व ५५४३४८ दाम अर्थात् रु० ३४६।≡। २३ हैं ।

४५ भोमियां हेठै[1] ।

४० वेरांन[2] ।

११० हासलीक[3] ।

३ मूळीरो परगनो । वीरमगांव वांसै गांव ३६ लागै । गांव ४ पातसाही दाखल[4] । बीजा गांव काठियां दबाया[5] । पंवार रायसिंघ भूमियो छै । धंधूको, धवळको, मोरवी, काठीवाड़, बाचारांवाळी, झुझूवाड़ो[6] ।

चूंडा-रांणपुररी वस्ती—

७० वांणिया, १५० भरवाड़, पटेल, १०० सिपाई ।

कोट हेठै नदी देरांणी-जेठांणी सदा वहै छै[7] । कोटरो किलादार पातसाही तरफसूं मिलकबेग सदा रहै छै। सु गांव २ पावै छै। सहरमें चूंगी पावै छै। वीरमगांव जिणरी जागीर मांहीं हुवै सो असवार ५०० चूंडै-रांणपुर काठियांरै मुंहडै राखै[8] ।

हळवद सहर झालांरो उतन। अहमंदावादथी कोस ४० । नवानगर हालांरासूं कांकड़[9] नवोनगर कोस ३० छै । हळवद पाधर मांहे छै[10] । तळाव ऊपर कोट छै । चोड़ो घणूं । मांहे मांणस हजार २००० रहै तिसड़ी[11] ठोड़ छै । कोट मांहै कूवो १ मीठो पांणी । हळवदरी पाखती[12] झाड़ी थोड़ी, मैदांन छै । खेती ज्वार, बाजरो, तिल, कपास हुवै । ऊनाळी-पीयल कसबै काई नहीं[13] । सैंवज घणो हुवै[14] । पाखतीरा गांवां कूवा छै ।

---

1 ४५ गांव भोमियोंके अधिकारमें हैं। 2 ४० गांव वीरान हैं। 3 ११० गांव हासिल-वसूलीके हैं। हासलीक = वे गांव जहांके कृषक सिंचाई द्वारा कृषि करते हैं और उस कृषिका हासिल (कृषि-कर) भरते हैं। 4 ४ गांव बादशाहके अधिकारमें हैं। 5 दूसरे गांवों पर काठी-राजपूतोंने अधिकार कर लिया। 6 छहों गांवोंके नाम हैं। 7 कोटके नीचे देरानी-जेठानी नामकी नदी निरंतर बहती है। 8 वीरमगांव जिसकी जागीरीमें होता है उसे चूंडा-राणपुरके काठी-राजपूतोंके प्रतिरोधके लिये ५०० सवार रखने होते हैं। 9 हाला-राजपूतोंके नवानगरसे सीमा लगती है। 10 हलवद शहर मैदानमें है। 11 जैसी, जितनी। 12 आजू-बाजू, आसपास। 13 कसबेके आजू-बाजू सिंचाई द्वारा होने वाली चैती (रवीकी) फसल कोई नहीं होती। 14 विना सिंचाईकी चैती-फसल बहुत होती है। सेंवज = आश्विनमें अधिक वर्षा होनेसे जमीनके अंदरकी नमीसे हो जाने वाली गेहूं, चनों आदिकी (विना सिंचाईसे होने वाली) फसल।

सहररी वस्ती संमत १७१६—

१००० बांभण, ७०० वांणिया, ४०० महेसरी, ३०० ओसवाळ,* ३०० रजपूत, १०० मोची, १० घांची[1], ५० छीपा, २० सोनार।

हळवदसूं इतरा सहर इतरै कोसै छै–[2]

४० अहमदाबाद, २० वीरमगांव, ३० नवोनगर, २० वांकानेर, १५ वढवांण, ३० दसाड़ो, १५ मोरबी।

हळवदसूं बीजी ठोड़ वांकानेर छै, सु हळोदनूं लागै छै[3]। तिको वांकानेर हळवदसूं कोस २०, काठीवाड़ नजीक छै। तिणनूं गांव १२० लागै छै। तिणमें गांव २३ हमार वसै छै[4]।

देवतकही सूं झाला डीले छूटका तो मारवाड़ मांहै छै[5]। नै जेसळमेररै देस खाडाळ दिसी गांव ४ तथा ५ देवतरा छै[6]।

डांवर, जेसळमेरसूं कोस २० खाडाळ में गरभवास, लाठीहर सीताहर कनै[7]। सेवैं सांखलेरै गांव कनै, कोसै ५१।

मांगणी-रो-तळो[8], डावरथा कोस २१।

जूजळ-रो-बेरो[9] डांवरथा कोस १।

लाठीहर, डांवरथा कोस २ खाडाळमें।

---

*माहेश्वरियोंके ४०० ओसवालोंके ३०० व्यक्तियों या घरोंका योग ७०० वाणिया (वनिये) प्रतीत हैं।

1 हिन्दू तेली। 2 हलवदसे इतने शहर इतने कोसों पर हैं। 3 हलवदसे दूसरे स्थान पर वांकानेर है, जो हलवद परगनेके अंतर्गत है। 4 जिनमें इस समय २३ गांव आबाद हैं। 5 देवतकहीके झाला छूटे-बिखरे तो मारवाड़में हैं। 6 और जैसलमेर देशके खाडाल प्रान्तकी ओर देवतकहीके देवतोंके चार-पांच गांव हैं। 7 पास। 8 मांगणीका कुआं। 9 जूजलका कुआं।

मेवाड़रै झालांरो वात

मेवाड़रै दरबार झाला वडा रजपूत हुवा । रांणारै श्रै सिरै चोकी उमराव छै[1] । इणां ऊपर कोई बैसण न पावै[2] । सु रांणा सांगारी वार मांहै आया अजो सजो[3] । इणांनूं भायां-आसियां हळवदथी काढिया, तरै मेवाड़में आया[4] ।

१ रांणो राजो ।

२ अजो राजारो । मेवाड़ हळवदथी आयो । रांणै सांगै नै बाबर पातसाह सीकरी-पीळियेखाळ वेढ हुई तरै रांणो सांगो भागो, तठै अजो कांम आयो[5] ।

३ सिंघ अजारो । बहादर पातसाह मांडवरै हाडी करमेतीरै फेरै चीतोड़ लियो, तद कांम आयो[6] ।

२ सजो राजारो । परगनो हाडोतीरै मेऊरो परगनो अेक ठोड़ छोटी सी झालावाड़ अठै ही कहीजै[7] । गांव ४० तथा ५० वे कहीजै तठै झाला वसै छै । रजपूत वस्ता भोमिया तिणांनूं नवसेरीखांन तोड़ नांखिया[8] । सु उण झालावाड़रा मुदै गांव श्रै[9]—

१ उरमाळकोट । १ सूंडल । १ रायपुर ।

सिंघ अजारो आंक ३

४ सुरतांण । ४ मालो । ४ पूरो । ४ कांन्ह ।

४ लूंणो । ४ किसनो ।

---

1 ये (झाले) रांणाके दरबारमें सबसे ऊंचे आसनके (मिसलके) उमराव हैं । 2 इनके ऊपर कोई बैठने नहीं पाता । 3 राणा सांगाके शासन-कालमें अजो और सजो आये । 4 इनको इनके आसिया-भाईयोंने हलवदसे निकाल दिया तब ये मेवाड़में आये । 5 राणा सांगा और बादशाह बाबरके परस्पर सीकरी-पीलियाखालमें लड़ाई हुई जिसमें राणा सांगा तो भाग गया और अजा उसमें काम आ गया । 6 हाडी करमेतीके लिये मांडवके बादशाह बहादुरने चित्तोड़ पर अधिकार कर लिया, उस समय अजाका लड़का सिंघ काम आया । 7 हाडोतीका यह एक मऊ परगना भी यहां पर छोटी झालावाड़ कहा जाता है । 8 भोमिया राजपूत यहां रहते जिनको नवसेरीखांने मार भगाया । 9 उस झालावाड़के खास गांव ये हैं ।

सुरतांणसिघरो आंक ४

५ वीदो ।

६ देदो ।

७ हरदास वडो रजपूत । रांणारै सिरै चोकी उमराव । झाड़ोळ पटै[1] । एक वार पातसाहरै वास वसियो थो[2] । पातसाह मनसोर पटै दी । पछै रांणै फेर मनायो । पछै सीसोदियै माधोसिंघ, स्यांम नगावत मारियो[3] ।

८ रायसिंघ हरदासरो । वडो रजपूत हुवो रांणारै । हरदासरो पटो पायो । एक वार पातसाहजीरै वरस १० वसियो थो । पातसाह कूंडोरो पटै दियो। पछै रांणै मनायो । मोत मुंवो[4] ।

९ सुरतांण मेवाड़ वास ।

९ भावसिंघ जोधपुर वसियो । रेख ३५००० गूंदवच पटै[5] ।

९ वीरमदे हरदासरो ।

९ वरसो हरदासरो । पातसाही चाकर । जाजपुर पटै[6] ।

९ अखैराज ।

९ मंडळीक । झालो वीदो, देदो ।

७ स्यांम देदारो ।

८ चंद्रसेन । ८ महासिंघ ।

७ रांमसिंघ ।

८ रिणछोड़ । ८ नाहरखां ।

७ रतनसी ।

वाघ वीदारो आंक ६

हाथी सुरतांणरो आंक ५

६ माधोदास । ६ महेसदास । ६ रायमल ।

---

1 झाडोल गांव पट्टेमें । 2 एक बार बादशाहके यहां नौकर रहा था । 3 मार दिया । 4 अपनी मौतसे मरा (किसी युद्धमें काम नहीं आया) । 5 भावसिंह जोधपुरमें बस गया, वहां उसे ३५०००)की रेखका गूंदोच पट्टेमें मिला । 6 हरदासका पुत्र वरसा बादशाही चाकर और जहाजपुर पट्टेमें ।

सिंघ ग्रांक ३ ।

४ मालो । ५ सांवळदास । जोधपुर वास । गांव १५सूं गोमळियावास पटै ।[1]

६ नरहरदास ।

७ दयाळदास रावत ।

८ प्रतापसी रावत ।

६ वळभद्र ।

७ सुजांणसिंघ ।

४ पूरो सिंघरो ।

५ सत्रसाल ।

६ केसोदास ।

४ कांन्ह सिंघरो ।

५ सकतो ।

४ स्यांमदास ।

६ नारण ।

७ वाघ ।

४ किसनो सिंघरो ।

५ मेघ ।

६ करमसी । ६ नगो ।

सजो राजारो ग्रांक २

रांणो सांगो सीकरी भागो तद नीसरियो[2] ।

३ जैतो जोधपुर चाकर हुतो । खैरवो पटै । सरूपदे रांणीरो बाप[3] ।

४ मांनो ।

५ कल्यांणदास ।

६ राघवदे ।

७ प्रथीराज ।

६ केसरीसिंघ ।

५ ग्रासो मांनारो । प्रथीराज जैतावतरो दोहीतरो[4] ।

६ राजसिंघ । ६ प्रथीराज

५ सत्रसाल, नांनारो टीकाइत[5] ।

६ कांन्ह ।

७ जसवंत ।

६ नाथो ।

७ सवळो ।

४ जेसो जैतारो ।

५ भोपत रांणा ग्रमरारै कांम ग्रायो[6] ।

---

1 सांवलदासका निवास जोधपुर । १५ गांवोंके साथ गेमलियावास पट्टेमें । 2 राजाका बेटा सज्जा सीकरीकी लड़ाईमें जब राणा सांगा भाग गया था तब यह भी निकल गया था । 3 जैता जोधपुरमें चाकर था । खैरवा गांव पट्टेमें । यह राणी स्वरूपदेवीका बाप था । 4 मानाका बेटा ग्रासा, यह प्रथीराज जैतावतका दोहिता है । 5 शत्रुसाल अपने नानाकी गद्दीका अधिकारी हुग्रा । 6 भूपति राणा ग्रमराके लिये काम ग्राया ।

मेवाड़रा झालांरी पीढी आढै महेसदास लिख मेली संमत १७२२रा असाढ सुद ७[1]

१ रांणो सेखो दोलारो।
२ रांणो गीगन ।
३ रांणो ब्रह्मदेव ।
४ रांणो जालप ।
५ रांणो मरीच ।
६ रांणो वीसम ।
७ रांणो गोग ।
८ रांणो मक ।
९ रांणो हरपाल ।
१० रांणो केहर ।
११ रांणो हरी ।
१२ रांणो सातल ।
१३ रांणो कांन्ह ।
१४ रांणो सूर ।
१५ रांणो विजैंपाल ।
१६ रांणो मुंध ।
१७ रांणो पदम ।
१८ रांणो उधीर ।
१९ रांणो वेगड़ ।
२० रांणो रांम ।
२१ रांणो वरसिंघ ।
२२ रांणो भीम ।
२३ रांणो सत्तो ।
२४ रांणो रणवीर ।
२५ रांणो वाघ ।
२६ रांणो राजो ।

।। इति मेवाड़रा झालांरी ख्यात वारता संपूर्णम ।।
दसकत वीठू पनैरा। वाचै जिणसूं जै श्रीरुघनाथजीरी वाचजो ।

---

1 आढा महेशदासने वि० संवत् १७२२के आसाढ शुक्ल ७को मेवाड़के झालोंकी वंशावली इस प्रकार लिख कर भेजी ।

श्रीगणेशायनमः

अथ रावजी श्री सीहैजीरी वात लिख्यते

राजा सिंघसेन[1] कनवज[2] सूं जात्रा करण द्वारकाजीनै पधारिया। आप गोत्र-कदंब[3] वहुत कियो हुतो, तैं[4] मन विरक्त हुवो। राज वेटानूं सूंप अर आप कापड़ीरै रूप हुवा[5]। साथै आदमी १०१ हुवा आप जात्रा चालिया। रजपूत ठाकुर साथै हुवा। पगै प्यादो हालियो सरब साथ[6]। कोस-कोस ऊपर सौ-सौ गाय दांन देवै छै। जठै डेरो हुवै तठै वावड़ी[7] अथवा कूवो करावै। ईयै जिनस[8] आप तीरथ पधारिया।

आगै सोळंकी[9] गुजरात मांहै राज करै। चावड़ा[10] पण गुजरात मांहै राज करै। पाट-तखत वैसणो पाटण[11]। मारु लाखो जांम सिंध राज करै[12]। सु चावड़ा नै लाखै वैर। एक धरतीरो वेध[13]। आपसमें सीम[14] ऊपर युद्ध हुतो रहै। वीजो[15] राखाइतरो[16] वाप लाखै

---

1 राव सीहाका अपर नाम। 2 उत्तर-प्रदेशके फर्रुखावाद जिलेका कन्नोज नगर। 3 गोत्र-हत्या, वंश-संहार। 4 जिससे। 5 पुत्रको राज्य सौंप कर, खुदने साधुका रूप धारण कर लिया। 6 सभी साथ पैदल चला। 7 वावली, वापिका। 8 इस प्रकार। 9 सोलंकी = एक क्षत्रीवंश, जिसका राज्य काठियावाड़ (सौराष्ट्र), गुजरात और राजस्थानमें था। 10 'चावड़ा' या 'चावोड़ा' = एक क्षत्रीवंश, जिसका राज्य दक्षिण, गुजरात, सौराष्ट्र और राजस्थानमें था। शिलालेख और संस्कृत ग्रन्थोंमें 'चालुक्य', 'चापोत्कट' और 'चावोटक' नाम भी लिखे मिलते हैं। सांभरमें (राजस्थानमें) 'मूलराज चालुक्य'का एक शिला-लेख प्राप्त हुआ है, जो सम्वत् ९९८का है। इस शिलालेखसे (जिसमें 'वसुनंद निधौ' = ९९८, सम्वत् उल्लिखित है) वाम्बे-गेजेटियरमें उल्लिखित मूलराजका समय सन् ९६१ = (वि० सम्वत् १०१७) ठीक नहीं प्रतीत होता। 11 पट्ट-सिंहासन (राजधानी) अणहिलपुर-पाटणमें। 'अणहिलपुर-पट्टन' उत्तर-गुजरातका सरस्वती नदीके किनारे पर वसा हुआ इतिहास-प्रसिद्ध प्राचीन नगर है। इसे वनराज चावड़ाने ९वीं शतीमें वसाया था। आजकल केवल 'पाटण' नामसे ही यह नगर प्रसिद्ध है। पश्चिम-रेलवेके महसाना-जकशनसे रेलकी एक शाखा पाटनको जाती है। 12 मारू लाखा-जाम सिंधमें राज्य करता है। (सिंधके कुछ भागके अतिरिक्त लाखाका कच्छमें भी राज्य था। सिंध और कच्छके मरु-प्रदेशों पर अधिकार होनेसे लाखाको मारू लाखा कहा गया है।) 13 (१) शत्रुता, (२) टंटा, झगड़ा। 14 सीमा। 15 नाम है। 16 राखायत लाखाका भानजा था।

मारियो । लाखैरो वैहनेई अर लाखैरै वास हुतो[1] । सु वै[2] लाखैरो आंब वाढियो, तै ऊपर लाखै मारियो[3] । सु वेध पड़ियो[4] । सु आपसमें चावड़ां अर लाखै युद्ध हुवै । सु चावड़ा हारै अर लाखो जीपै । सदा जुध हुवै सु लाखो जीपै[5] ।

तिकै समईयै रावजी श्रीसीहोजी द्वारकाजी पधारता पाटण पधारिया[6] । सु लाखैरै इष्ट कुळदेवीरो अर चावड़ांरै इष्ट खेत्र-पाळरो[7] छै । सु देवी सबळ अर खेत्रपाळ निबळ[8] । तिण वास्तै लाखो जीपै[9] ।

तिण वार चावड़ै राजा मूळनूं सुपनैमें खेत्रपाळ कह्यो[10]–जु राव सीहो कनवजरो धणी[11] राठवड़[12] आयो छै । तिणनूं श्रीमहादेवजीरो वर छै; सु थे मिळो, ज्युं थांहरो वैर घिरै[13] । इणांरै हाथां[14] लाखो मरसी । ताहरां[15] चावड़ा एकठा हुय राव सीहैजी कनै आया । आय अर भक्तरी[16] वीनती कीधी । वीनती रावजी मांनी । चावड़ां भली भांत भगतरी[17] तयारी कीवी । आप पधारिया । ताहरां मूळराजरी मा कड़ूंबैरै[18] बेटांरी बहुवां जिकै बरस १५, १६, १७री बाळ-रांडां[19] हुती, तियैंनूं[20] कह्यो–'जाहरां[21] रावजी अठै आरोगै[22], ताहरां थे परुसारै मांहै[23] तरकारयां[24] ले-ले अर मो[25] आगै आंण-आंण मूकज्यो[26] । ताहरां रावजी वात पूछसी, ताहरां हूं सरब वात कहीस ।''

---

1 राख़ाइतका बाप लाखाका बहनोई था और लाखाके यहां ही रहता था । 2 उसने । 3 जिस पर लाखेने उसे मार दिया । 4 जिससे परस्पर शत्रुता हो गई । (कई प्रतियोंमें 'सु वेध पड़ियो'के स्थान 'सु वेसुध पड़ियो' पाठ भी लिखा मिलता है ।) 5 सदा युद्ध होते रहते हैं, जिनमें लाखा ही जीतता है । 6 उस समय रावजी श्रीसीहाजी द्वारकाजी जाते हुए पाटनमें आये । 7 क्षेत्ररक्षक देवता, क्षेत्रपाल । 8 तुलनामें देवी सबल और क्षेत्रपाल निर्बल । 9 इसलिये लाखा जीतता है । 10 उस समय स्वप्नमें क्षेत्रपालने मूलराज चावड़ेको कहा । (मूलराज सोलंकी सम्वत् ९९८में अपने मामा सांवतसिंह चावड़ाको मार कर पाटनका राजा बना था ।) 11 कन्नौजका स्वामी । 12 राठौड़ । 13 वैरका बदला लिया जाय । 14 इनके हाथोंसे । 15 तब । 16 भोजनके लिये प्रार्थना की । 17 भोजनकी सामग्री । 18 कुटुंबके । 19 बाल-विधवाएँ । 20 उनको । 21 जब । 22 भोजन करे । 23 परोसनेकी सामग्रीमें । 24 शाक आदि व्यंजन पदार्थ । 25/26 मेरे आगे ला-ला कर रखना ।

पछै रावजी पधारिया, ताहरां मूळराजरी मा कहाड़ियो–'रावजीनूं हूं पुरसीस[1]। म्हारै हाथै[2] जीमाड़ीस। वीजा ठाकर भूंजाई आरोगै[3]।' ताहरां राव सीहोजी मांहै पधारिया। विछायत हुई। आप आरोगण वैठा[4]। पुरसण विरियां विधवा अस्त्रियां वाळ-वय आंण-आंण सरव वसतां मूकण लागी[5]। ताहरां रावजी पूछियो मूळराजरी मानूं ओ कहि विरतंत[6] ? इतरी वहु विधवा, सु कासूं[7] ?' ताहरां मूळराजरी मा कह्यो–'महाराज ! लाखै फूलांणीसूं म्हांरै वैर छै[8]। सु इयांरा[9] घरधणी[10] लाखै मारिया। जाहरां म्हां अर लाखै वेढ[11] हुवै, ताहरां मांहरो साथ मिटै[12], अर लाखैरो साथ[13] जीपै। वरस एकमें दोय वार वेढ हुवै[14]। सु रावजी पधारिया छो, आप म्हांरी मदत करो।' ताहरां रावजी कह्यो–'हूं जात्रा जाऊं छूं, आवता आवस्यां[15], ताहरां थे कहिस्यो[16] ज्युं करस्यां। हमारूं तो मैं तरवार छाडी[17] छै। द्वारकाजी परस[18] आवतां लाखैनैं मारूं तो सेत-रांमरो जायो[19]।' ताहरां रावजी कह्यो–'साथ एकठो करज्यो, अर लाखैनूं कहाड़ज्यो[20], जु म्हे आवां छां[21], तयार हुय रहिज्यो।' पछै चावड़ांसूं विदा हु करनै[22] राव सीहोजी द्वारकाजीनूं चालिया छै[23], जाय द्वारकाजी नै[24] रिणछोड़जीरा दरसण किया, गोमती सनान[25] कियो, घणो धर्म कियो, मास १ द्वारकाजीमें राव श्री सीहोजी रह्या।

---

1 रावजीको मैं परोसूंगी। 2 मेरे हाथसे भोजन कराऊंगी। 3 दूसरे ठाकुर भोजन तैयार हुआ है वह भोजन करें। 4 स्वयं भोजन करनेको वैठे। 5 परोसनेके समय वाल अवस्था वाली विधवा स्त्रियां ला-ला कर भोजनकी सर्व वस्तुएँ रखने लगीं। 6 यह क्या वृत्तान्त है ? 7 इतनी वहुएँ विधवाएँ ! यह क्या वात है ? 8 फूलके पुत्र लाखासे हमारे वैर है। (मारवाड़के पश्चिम प्रदेशकी भाषामें अपत्य अर्थमें 'आंणी' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे फूलका पुत्र 'फूलांणी'। चत्ताका पुत्र और वंशज 'चत्तांणी'। 9 इनके। 10 पतियोंको। 11 लड़ाई। 12 तव हमारा जन-समुदाय नष्ट हो जाता है। 13 लाखाका दल विजय पाता है। 14 एक वर्षमें दो वार लड़ाई होती है। 15 लौटते हुए आवेंगे। 16 कहोगे। 17 अभी तो मैंने तलवार रखना छोड़ दी है। 18 द्वारकानाथके चरण स्पर्श कर के। 19 पुत्र। 20 कहला देना। 21 हम आते हैं। 22/23 चावड़ोंसे विदा हो कर राव सीहोजीने द्वारकाजीको गमन किया। 24 और। 25 स्नान।

घणो धर्म करनै, अपूठा पधारिया[1]। कितरैहेकै[2] दिने था[3] पाटण पधारिया। ताहरां सोळंकियां, चावड़ां साम्हां जायनै रावजी सीहैजीनूं नारेळ दियो[4]। घणै हरख[5] रावजीनूं पाटण ल्याया।

अठै साथ भेळो करनै[6] लाखैनूं आदमी मेलायो। ताहरां लाखै साथ भेळो कियो हुंतो, सु आदमी आवत समां[7] लाखै चढणरी तयारी कीवी। लाखै कहियो–'आगै चावड़ा सदाई भाजता[8], अबकै ईयै भांत[9] चालिया आवै छै सु कासूं जांणी जावै[10]।' ताहरां आदमी मेल समझ कराई[11]। ताहरां खबरदार आइ खबर दी[12]–'राव सीहो कनवजियो[13] कटक मांहै छै।' ताहरां लाखो पण संकियो[14]। हळवै-हळवै[15] हालण लागो[16]।

सु आगै एक दिन राखायत लाखारो भांणेज रजपूतां मांहै बैठो हुतो, सु रजपूतै भांणेजनूं पूछियो[17]–'भांणेज! लाखोजी प्रभातरी विरियां[18] दरबार पधारै ताहरां मुंहड़ो[19] उतरियो लागै सो कासूं छै[20]? आज परमेश्वररी कृपासूं रावळै[21] धरती बरकरार छै[22]। देस पण घणो लायो छै। अर जुद्ध मांहै जीप[23] पण लाखैजी री हुवै, तो वेदल[24] क्युं रहै छै?' ताहरां भांणेज कह्यो–'मोनूं खबर काई[25] नहीं।' ताहरां रजपूत कहै–'भांणेज! लाखैजीनूं तूं पूछ अर खबर कर।' ताहरां राखायत रजपूतानूं कहै[26]–' हूं पूछूं अर मांमोजी

---

1 पीछे लौटे। 2 कितने एक। 3 दिनों से। 4 नारियल दिया। (१ राजपूतोंमें नारियल देना विवाह संबंध पक्का करनेका संकेत है। यह नारियल कन्याके पिताकी ओरसे वरके पिताके पास भेजा जाता है। जब वरका पिता उस नारियलको ले लेता है तब विवाह सम्बन्ध दृढ़ समझा जाता है। २ तीर्थ-यात्रासे लौट आने पर यात्रीको स्वागत व बधाईके रूपमें भी नारियल दिये जानेकी प्रथा है।) 5 अत्यन्त आनन्दसे। 6 सेना इकट्ठी करके। 7 मनुष्यके (दूत) आते ही। 8 भागते थे। 9 इस समय इस तरह। 10 क्या जाना जाये? 11 तब आदमी भेज कर दर्याफ्त करवाया। 12 खबर-नवीसोंने (गुप्त दूतों) आ कर खबर दी। 13 कन्नौजका राठौड़। 14 शंकित हुआ। 15 धीरे-धीरे। 16 चलने लगा। 17 राजपूतोंने लाखाके भानजे राखायतको पूछा। 18 समय। 19 मुख। 20 कांतिहीन उदासी लिये मालूम होता है सो यह क्या बात है? 21 आपके पास। 22 बहाल अथवा वैभव सहित विद्यमान है। 23 जीत। 24 उदास। 25 कुछ। 26 कहता है।

मो ऊपर रीस कर मोनूं मराड़ै तो कुण छोडावै[1] ?' ताहरां रजपूत बोलिया–'जे[2] लाखोजी तोनूं काढै[3] तो साथै नीसरां[4]; मारै तो साथै मरां। पण[5] तूं आ वात पूछ।'

ताहरां राखायत एक दिन लाखैजीनूं पूछियो–'मांमाजी ! आज ठाकुररी कृपा कर[6] अर[7] रावळै[8] सोह[9] थोक छै[10]; अर धरती बरकरार छै; पण परभातरै पोहर[11] राज[12] दरवार करो छो, ताहरां रावळो मुंह उतरियो लागै सु कासूं जाणीजै ? ताहरां लाखैजी कह्यो–'रूड़ा भांणेज[13] ! तोनूं कहीस[14], पण एकांत कहीस। इण वातरो विवरो छै[15]।' सु युं करतां[16] दिन तीन चार आडा[17] घातनै[18] लाखैजी भांणेजनूं साथ ले अर चढिया सु समुद्र पधारिया। रजपूत पण सोह[19] साथै लिया। तठै समुद्र मांहै पैठा[20]। पैस[21] अर एक वडो पाटलो[22] तिण ऊपर भांणेजनूं वैसांण अर पाटलानूं धकाय अर वहतै पांणी मांहै वहाय दियो[23]। ताहरां रजपूतै दीठो, मांहरो जोर कोई पूजै नहीं[24]। अर भांणेजनूं लाखै वहाय दियो। जाहरां भांणेज निजर हुतां[25] अलोप[26] हुवो, ताहरां लाखोजी अपूठा पधारिया[27]। अर भांणेज, आगै अपछरा[28] रहै छै, तेथ[29] जाय पहुंतो। तेथ लाखोजी आगै अपछरावांनूं कहि राख्यो हुंतो[30]– 'भांणेज राखायत आवसी, थे सोहरो[31] राखिया[32]।' तिण जवाब ऊपर अपछरा आई। आयनै भांणेजनूं ले गई। ले जायनै घर मांहै सोहरो राखियो। रात उठैहीज भांणेज वसियो[33]। परभात हुवो,

---

1 और मामाजी मुझ पर क्रोध कर के मरवा डालें तो मुझे कौन छुड़ावे ? 2 यदि। 3 तुमको निकाल दें तो। 4 निकल जायें। 5 परन्तु। 6 ईश्वरकी कृपासे। 7 और। 8 आपके राज्यमें। 9 सब। 10 वैभव हैं। 11 प्रभातके प्रहरमें। 12 आप। 13 अच्छे (योग्य) भानजे ! 14 तुझको कहूँगा। 15 इस वातके पीछे एक विवरण है। 16 ऐसे करते-करते। 17 बीचमें। 18 डाल कर। 19 सब। 20 प्रवेश किया। 21 प्रवेश कर के। 22 लकड़े का तखता। 23 तखतेको धक्का दे, दूर निकाल, वहते हुए पानीमें बहा दिया। 24 लगे नहीं, पहुँचे नहीं। 25/26 दृष्टिसे बाहिर हो गया। 27 पीछे लौट आये। 28 अप्सरा। 29 वहाँ। 30 था। 31 सुखपूर्वक। 32 रखना। 33 वास किया।

ताहरां वळै[1] लाखोजी समुद्र पधारिया, रजपूतां समेत। ताहरां राखायतनूं अपछरावां तखत बैसांण नै[2] चलाय दियो, सु तखत बैठो राखायत आयो। आय लाखाजीनूं मिळियो। ताहरां लाखाजी पूछियो–'क्युं भांणेज ! तमासो दीठो[3] ?' ताहरां कह्यो–'मामाजी ! अपछरावांरा मोहल दीठा[4]।' ताहरां लाखैजी कहियो–'भांगेज ! बापरै[5] वैर, नै सांमरै[6] कांम जिकै आपरौ जीव[7] दियो[8], सो[9] वां मोहलां[10] जावस्यै[11]।' अरु कहियो–'भांणेज ! म्हेई रातरा ओथ जावां छां[12]। तमासो देखअर आवां छां. तै ओजगै[13] लियै[14] मुंह उतरियो दीसै छै।' ताहरां भांणेज पूछियो–'मामाजी ! उला[15] मोहल दीठा, पण पैला महल घणा सखरा[16], अतही[17] ऊंचाती दीठा[18], तिकै महल कियैरा छै[19] ?' ताहरां लाखैजी कहियो–'घणो[20] सांम-धरमी मरै, तिकेरा महल वे छै[21]। बापरै वैर नै धणीरै कांम आवै[22]; तियांरी भांणेज ! वा जायगा छै[23]। ताहरां राखायत वात सांभळ चुप कर रह्यो[24]। इण प्रस्ताव रात पड़ी[25]। ताहरां राखायत लाखैजीरी असवारीरो घोड़ो[26] सांहणी[27] कना[28] ले, अर राजा सिंघसेन अर चावड़ां कनै गयो[29]। जाय मिळियो नै कह्यो– 'आ वेळा छै। जे लाखैनै मारस्यो तो वेगा हालो।' ताहरां राजा सिंघसेन नै सोळंकियां चावड़ांनूं चाढ़िया[30]। रात थकी असवार कराड़िनै[31] अपूठो[32] आयो। घोड़ो ताजो[33] कर ले जाय, सांहणीनूं[34]

---

1 फिर। 2 लकड़ीके पट्ट पर बिठला कर। 3 तमाशा देखा। 4 अप्सराओंके महल देखे। 5-6 पिताके वैरके बदलेमें और स्वामीके लिये। 7-8 जिन्होंने अपने प्राण दिये हैं। 9 वे। 10-11 उन महलोंमें, जायेंगे। 12 हम भी रातको वहाँ जाते हैं। 13-14 उस जागरणके कारण। 15 इधरकी तरफ के। 16 बहुत ही अच्छे हैं। 17 अत्यन्त ही। 18 ऊंचाई पर देखे। 19 किसके हैं ? 20 अत्यन्त ही। 21 स्वामी-धर्मसे मरते हैं उनके महल वे हैं। 22 बापका वैर लेवें और अपने स्वामीके काम आवें। 23 भानजे ! उनकी वह जगह है। 24 तब राखायत बात सुन कर चुप हो गया। 25 इसी प्रसंगमें रात हो गई। 26 लाखाके चढ़नेका घोड़ा। 27-28 घोड़ेके तबेलेके दरोगेके पाससे। 29 राव सीहा और चावड़ोंके पास गया। 30 तब राजा सिंहसेन और सोलंकियों चावड़ोंको युद्धके लिए रवाना किया। 31-32 रातमें ही सबको चढ़वा कर पीछा आया। 33 घोड़ेका श्रम रहित कर के। 34 तबेलेके दरोगेको।

सूंपियो[1] । जठै खोलियो हुंतो[2] तठै ले जाय बाधो[3] । बीजो घोड़ेनूं सरब[4] झाटक[5] खुररो करनै[6] ताजो कियो हुंतो[7]; नै फुरणा[8] आछा न किया[9] । परभातरा[10] लाखोजी घोड़ा देखणनूं पधारिया, ताहरां घोड़ो देखनै कह्यो–'रे घोड़ो किणी ही छोड़ियो नहीं हुतो ?' ताहरां साहणी कह्यो–'जी, कुण छोड़ै ?' ताहरां लाखैजी घोड़ै ऊपर पछेवड़ी फेरी[11] । पछेवड़ीसूं घोड़ो लूह्यो[12] । पछै नाकमें पछेवड़ी फेरी; ताहरां मांहिसूं राती पुड़ी नीसरी[13] । ताहरां राखायतनूं पूछियो–'भांणेज ! सिद्धपुर पाटण गयो हुतो ? राजा सिंघसेन, चावडां, सोळंकियांनूं खबर दीनी ?' ताहरां कर सलांम[14], अर कह्यो–'मांमाजी ! कहेनै[15] हूं आयो हुतो[16] । बापरै वैर, स्यांमरै कांमनै दोड़ियो छूं ।' ताहरां लाखोजी बोलिया–'भांणेज ! ऊंचा महलांरो ध्यांन राखिया ।' ताहरां कह्यो–'मांमाजी ! ऊंचा महलां री मनसा राखी तो छै ।' ताहरां लाखोजी बोलिया–'भांणेज ! साथ कियो[17] ?' 'मांमाजी ! साथ आयो, थेई असवार हुवो[18] ।' लाखोजी चढिया । कटक मुकालवै आयो[19] । ताहरां लाखैजी कुळदेवी समरी[20] । ताहरां कुळदेवी प्रगट हुय कह्यो–'हिवै म्हारै जोर कोई नहीं । ओ राजा सिंघसेन आयो । इयैनूं[21] श्रीमहादेवजीरो वर छै । सु महादेवजीसूं म्हारो जोर नहीं ।' ताहरां लाखै देवीनूं कह्यौ–'मोनूं मींच[22] भली देई[23] ।' ताहरां देवी कह्यो–'मीच भली देईस[24] । पण[25] जीप नहीं हुवै[26] ।' यु करतां दळ आंमा-सांमा मंडिया[27] । ताहरां राखायत

---

1 सौंप दिया । 2 जहांसे खोला था । 3 वहीं लेजा कर बांध दिया । 4 दूसरा घोड़ेका सब अंग । 5 झटक (पोंछ) कर । 6 खुर्रा कर के । 7 ताजा बना दिया था । 8 नासिका छिद्र । 9 साफ नहीं किया था । 10 प्रातःकाल में । 11 पिछौरी (चद्दर) घोड़ेके शरीर पर फिराया । 12 पिछौरीसे घोड़ेका शरीर पोंछा । 13 लाल मिट्टीकी पपड़ी निकली । 14 प्रणाम कर के । 15-16 कह कर मैं आया था । 17 भानजे ! क्या उन्होंने सेना तैयार करली ? 18 मामाजी ! सेना तो चढ़ कर आ गई, आप भी चढ कर तैयार हो जायें । 19 सेना मुकाबलेमें आ गई । 20 तब लाखाजीने कुलदेवीका स्मरण किया । 21 इसको । 22-23 मुझे मृत्यु अच्छी देना । 24 देऊंगी । 25-26 परन्तु विजय नहीं होगी । 27 एक दूसरेके मुकाबलेमें खड़े हुए ।

कह्यो–'मांमाजी ! मैं रावळा मूंग खाधा[1]; हूं रावळै मुंहड़ै आगै लड़ीस[2] ।' ताहरां राखायत जण-जणरै मुंहडै आगै लड़तो दीसै[3] । राखायत कांम आयो[4] । लाखो कांम आयो । राजा सिंघसेन लाखैनूं मार अपूठा पधारिया[5] । चावड़ांरै पाटण पधारिया ।

पछै लाखैरी मा, लाखैरो राजलोक आयो[6] । खेत मांहै लाखो पोढियो छै[7] । जीव नहीं नीसरियो छै[8] । ताहरां राखायत निजीक पड़ियो दीठो[9] । ताहरां लाखैरो राजलोक कहण लागो–'ओ हरांमखोर[10] अठै क्युं पड़ियो ? दूर करो । तरै लाखोजी बोलिया–'ओ राखायत सांमधरमी[11] छै । हरांमखोर नहीं छै । माजी[12] ! आ ग्रीझ[13] देखो पड़ी छै, सु म्हारै मुंह ऊपर आय बैठी, आंख काढ़णनूं[14] । ताहरां राखायत दीठी । आपरो फीफर वाढ़ि[15] अर ग्रीझ मारी छै । नहीं तो ग्रीझ म्हारी आंख काढत । थे मोनूं कठै देखता[16] ? माजी ! थे म्हारो मुंह दीठो जीवतैरो । हिवै राखाइत म्हारै कनारै ल्यावो[17], ज्युं हूं हाथ लाऊं, ज्युं इयैनूं मुगत हुवै[18] ।' 'ताहरां राखाइतरो जीव नीसरियो नहीं हुतो । ससकतो हुतो[19] । ताहरां लाखैजी राखाइतनूं नजीक अणायो[20], माथा ऊपर हाथ दियो । जीव मुक्त हुवो[21] । इतरै पण लाखैजोरो जीव मुक्त हुवो । राजलोक[22] सत्यां हुई[23] । लाखोजी सरग[24] पधारिया । राखाइत पण सरग लोग हुवो ।

ताहरां ऊंचा महल सोनैरा रतनमय कांगुरा, तियां[25] घरां[26] तो

---

1 मैंने आपका अन्न खाया है । 2 मैं आपके मुखके आगे लड़ूंगा । 3 तब राखायत हर एकके मुखके आगे लड़ता हुआ दृष्टिमें आता है । 4 राखायत मारा गया । 5 सीहोजी लाखाको मार कर पीछे लौटे । 6 जनाना (स्त्रीजन) आया । 7 रणक्षेत्रमें लाखा सोया हुआ है । 8 जीव नहीं निकला है । 9 तब राखायतको समीपमें पड़ा देखा । 10 अधर्मी (अस्वामीभक्त) । 11 स्वामीभक्त है । 12 हे माताजी ! । 13 गृध्र पक्षी । 14 आंख निकालनेके लिये । 15 फेफड़ा काट कर । 16 आप मुझको कहां देखतीं ? 17 अब राखायतको मेरे पास लाओ । 18 ज्योंही मैं इसके हाथ लगाऊंगा, त्योंही इसके प्राण निकलेंगे । 19 मृत्युके सूचक अंतिम श्वास लेता था । 20/21 तव लाखाजीने राखाइतको समीप मंगवाया, सिर पर हाथ लगाया, तब राखायतका जीव निकला । 22 स्त्रीजन । 23 अपने-अपने पतियोंके साथ अग्निमें जल गईं । 24 स्वर्ग । 25/26 उन घरोंमें तो लाखाजी गये ।

लाखोजी पधारिया। तळैरा[1] महल रूपैरा अर सोनेरा कांगरा, तियां घरां जायनै राखइत अवतार लियो। एक दिन लाखोजी ऊपरलै घरां झरोखै बैठा हुता[2]; अर राखाइत ऊँचो जोयो। देखै तो लाखोजी बैठा छै। देख अर वेदल हुअो[3]। तरै लाखोजी बोलिया–'भांणेज! वेदल क्युं हुवो?' कह्यो–'मांमाजी! ईंयांनूं घणो ही दोड़ियो, पण आया नहीं। लाखोजी बोलिया–'भांणेज! दोड़ियां आवै छै?'

दूहो

लिखियौ लाभै लोय, पर-लिखियौ लाभै नहीं।
पर सिर पदम हि जोय, जे विह विहवै अप्पियो[4] ॥ १

हिवै राव सिहैजीनूं चावड़ां परणाया, घणो संतोष कर[5]। अर राव सिहोजी कनवजनूं चालिया। साथै चावड़ीरो चकडोळ लेनै चालिया। चावड़ीरी चाकर गोलियां साथै लेइ सुखै-समाधै कनवज पधारिया[6]। भली भांत कनवज मांहै राज करै छै।

एक दिनरो समाजोग छै[7]। राखरै विखै पोढिया छै[8]। तरै रांणी चावड़ी सुहणो लाधो[9]–'जु नाहर ३ आया छै[10]। रांणी जांणै छै, मांहरो पेट फाड़, आंतरा काढ, नाहर आंतरा लेले अर पहाड़ै गया[11] छै। अळगा-अळगा[12] आंतरा लियां जाय छै।' इसो रांणी चावड़ी सुहणो लाधो। तद रांणी जागी। जागनै रावजीनूं कह्यो–'महाराज! म्हैं इसो सुपनो पायो।' कह्यो–'कासूं दीठो?'[13] कह्यो–'जांणूं छूं म्हारो पेट फाड़ नाहर आंतरा परवतै ले ले जाय छै। इसो म्हैं सुहणो

---

1 नीचेके। 2 लाखा गोखमें बैठा था। 3 खिन्न चित्त हुआ। 4 लोकमें (भाग्यमें) लिखा हुआ मिलता है, दूसरेके भाग्यमें लिखा नहीं मिलता। दूसरेके सिर परकी लक्ष्मीको देख कर लोभ मत करो। जो विधाताने वैभव दिया है उसमें संतोष करो। 5 अब चावड़ोंने अत्यन्त संतोषके साथ सीहाजीको अपनी कन्या व्याह दी। 6 सीहाजी चावड़ीका डोला साथमें ले कर कन्नौजको चले, दास और दासियोंके साथ सुख-शान्तिसे कन्नौजको पधार गये। 7 एक दिनकी घटना है। 8 रातमें सोये हुए हैं। 9 तब चावड़ी रानीको एक स्वप्न दिखा। 10 तीन सिंह आये हैं। 11 रानी जानती है कि उसका पेट चीर कर सिंह अंतड़ियां ले ले कर पहाड़ पर गये हैं। 12 अलग-अलग। 13 क्या देखा?

दीठो ।' ताहरां रावजी चावड़ीनूं ताजणा २-३ वाह्या[1] । ताहरां चावड़ी बैठी रही । नींद न पड़ी[2] । वेदले थकां दिन ऊगो[3] । ताहरां राव सीहो बोलियो-'चावड़ी ! तूं मन में अप्रीत मत जांणै[4] । म्हैं तोनूं ताजणा इतरै वासतै वाह्या छै जु तोनूं नींद न पड़ै[5] । नींद पड़ियां सुहणारो फळ मिटै छै[6] । थारै तीन पुत्र हुसी, सु सीह सारीखा हुसी । घणी धरती लेसी । वडो वधारो हुसी । इतरी वात सुणै रांणी खुसी हुई[7] । बहुत हरखित हुई छै । कितरैहेकै दिनै पुत्र हुवा ।

---

1 तब रावजीने चावड़ीको दो-तीन चाबुक मारे । 2 नींद नहीं आई । 3 उदासीमें दिन निकल आया । 4 तब राव सीहाने कहा—चावड़ी ! तू अपने मनमें हमारी नाराजी नहीं समझना । 5 मैंने तेरेको चाबुक इसलिये मारे हैं कि तेरेको नींद न आये । 6 नींद आजानेसे स्वप्नका फल वृथा हो जाता है । 7 इतनी बात सुन कर रानी हर्षित हुई ।

राव आसथांनजी री वात

चावड़ीरै तीन पुत्र हुवा छै, अतुळीबळ[1], महा पराक्रमी। युं करतां रावजी सीहोजी देवगत हुवा[2]। सु वडो बेटो टीकै बैठो।

चावड़ीरै बेटा नांन्हा[3]। ताहरां चावड़ी बेटा लेअर पीहर आई छै[4]। हिवै रांणी चावड़ी अठै पीहर रहै[5]। बेटा दिन-दिन मोटा हुवै छै। प्रतापवांन, तेजवंत, महा बळिष्ट। कुंवर जवांन हुवा।

एक दिनरो समाजोग छै। कुंवर तीनेही चोगांन रमै छै[6]। रमतां थकां[7] गेंद जाइनै एक डोकरी छांणा चुगती हुती, तियेरै पगां मांहै जाय पड़ी[8]। ताहरां कुंवर गेंद लेण आयो। डोकरीनूं कह्यो–'गेंद दे।' डोकरी कह्यो–'म्हारै माथै भार छै, थे[9] उतरनै ल्यौ।' ताहरां लेतां थकां डोकरीनूं धको आयो नै छांणा विखर गया[10]। डोकरी बोली–म्हांईजरां घरां मांहै[11] मोटा हुवा, अर ठकुराई[12] मांडो[13]; मांमारै परसाद खाय[14] अर मोटा हुवा छो; अर वळै मांमारा लोकांनूंई मारो छो[15]। आपरै तो ठोड़ न थी।'.

इतरो सुणनै घरै आया। आय अर मानूं पूछियो। 'मा! म्हो[16] कदण[17] छां[18]? कठै म्हांरो पिता छै? कठै पळां छां[19]? लोक कहै छै, आपरै तो ठोड़ नहीं।' तद मा कहै–'लोक झख मारै[20]।' पण ईयै आग्रह कियो[21]। त्यौं मा कह्यो–'जु थे नांनेरै[22] पळो छो।' तद पाधरा मांमै गोढै जाए सीख मांगी[23]। मांमै घणो ही आग्रह कियो; पण आसथांन रह्यो नहीं। सीख कीवी। सु उठारा चालिया ईडर[24]

---

1 अतुल्य बलशाली। 2 देवगतिको प्राप्त हुए, मर गये। 3 छोटे। 4 तब चावड़ी अपने पुत्रोंको ले कर मायके आ गई है। 5 अब रानी चावड़ी यहां पीहरमें ही रह रही है। 6 तीनों ही कुमार मैदानमें खेल रहे हैं। 7 खेलते हुए। 8 एक बुढ़िया कंडे बीन रही थी, उसके पांवोंमें जा कर गेंद पड़ी। 9 तुम। 10 बुढ़ियाको धक्का लग कर उसके कंडे बिखर गये। 11 हमारे ही घरोंमें। 12 ठाकुरपन (मालिकी)। 13 करना शुरू किया। 14 मामाका अन्न खा कर। 15 फिर मामाकी प्रजाको ही मारते हो? 16 हम। 17 कौन। 18 हैं। 19 हम कहाँ परवरिश पाते हैं? 20 लोकोंके कहने पर ध्यान मत दो वे यों ही बकते हैं। 21 परन्तु इन्होंने हठ किया। 22 नानाके घरमें। 23 तब सीधे मामाके पास जा कर जानेके लिये आज्ञा मांगी। 24 गुजरातमें महीकांठा प्रान्तमें एकनगर है।

आया । उठासूं पाली[1] आय डेरा किया । तठै कान्है[2] मेररी[3] ठाकुराई[4] तैसु लोकां पास हासल पण लै; अर अनीत[5] पण करै । जिका कुंवारी परणीजे, जिको दिन ३ आपरै महल राखै[6] ।

सु आसथांनजीरो डेरो एके बांभणरै घरै[7] । तिणरी बेटी मोटियार[8] । तैनूं आसथांनजी देख अर कहण लागा–'जु आ विधवा छै ?' तद ब्राह्मण बोलियो–'राज ! आ कुंवारी छै ।' पूछियो–'किसै वासतै[9] ?' तद ब्राह्मण अरज कीवी–'जु राज ! अठै आ अनीत छै ।' आसथांनजी पूछियो–'जु मेर कनै साथ कितरोहेक छै[10] ?' इण अरज कीवी–'महाराज ! पाळा[11] हजार २०००० हुसी ।' तद आसथांनजी बोलिया–'जु बेटी थांरी परणाय, म्हे जांणां[12] ।' तद ब्राह्मण बेटी परणाई, फेरा लिया[13] । पछै कांनैरा आदमी ब्राह्मणरी बेटीनै वैहल बैसांण ले हालिया[14]। ज्यौं आसथांनरै डेरै गोढ़ै[15] आया, त्यौं ब्राह्मणरी बेटी भाज[16] अर डेरै में आय बैठी । त्यौं वे जोर सो करण लागा[17] । तद आसथांनजी रा चाकरां उहांनूं[18] मार काढ़िया । आ खबर कांनड़देनूं हुई । कान्हो साथ ले पाली ऊपर आयो । आसथांनजी नीसरिया[19] । कांनै पाली मारी[20] । लूंटेरू[21] लोग वित ले चालता रह्या[22] । कान्हो लारै[23] थोड़ा सा मांणसांसूं[24] रह गयो । यूं करतां

---

1 पाली मारवाड़में एक नगर है, जो जोधपुर से १८ कोस है । 2 'कान्हा' एक मेरका नाम है । 3 पर्वतोंमें रहने वाली एक कौम । 4 स्वामित्व । 5 अन्याय भी करता है । 6 क्वारी (अपरिणीता) का विवाह हो तो उसको ३ दिन अपने महलमें रखता है । 7 ब्राह्मणके घरमें । 8 तरुण । 9 किसलिये ? 10 मेरके पास मनुष्य कितने हैं ? 11 पैदल । 12 तेरी पुत्रीका विवाह करदे; फिर हम जाने । 13 भांवरी ली, (अग्निकी चार प्रदक्षिणा की । इससे विवाह पूर्ण हुआ समझा जाता है । तीन परिक्रमामें कन्या आगेड़ी और चौथी परिक्रमामें वर आगेड़ी रहता है । तदन्तर कन्याको वरके वाम अंगकी ओर बिठाई जाती है । चतुर्थ परिक्रमाके समय यह गीत गाया जाता है–'चौथै फेरै रे बाई हुई पराई ।' तात्पर्य यह है कि चतुर्थ परिक्रमा होने पर पिताका स्वत्व मिट कर पतिका स्वत्व हो जाता है और फिर वह उसकी पत्नी कहलाने लग जाती है ।) 14 कान्हा मेरके मनुष्य ब्राह्मणकी बेटीको जनाना बैलगाड़ीमें बिठला कर ले चले । 15 पास । 16 भाग कर । 17 तब वे बल दिखाने लगे । 18 उनको । 19 पाली छोड़ कर चले गये । 20 कान्हाने पालीको लूट लिया । 21 लूटने वाले । 22 धन और मवेशी लेकर चले गये । 23 पीछे । 24 मनुष्यों से ।

आसथांनजी मांणस पांचसौ सूं आंण वतळायौ[1], नै लड़ाई हुई। कान्हैनूं मारियो। वितरो वांसो कियौ[2]। मेर ज्युं ज्युं लाधा[3], त्युं मारिया। वित सरब पड़ायो[4]। पाली चौरासी गांवांसूं लीवी। पासै भाद्राजण पिण चोरासी गांवांसूं लीवी[5]। ओरूं[6] पसवाड़ै[7] खेड़[8] गोहिल[9] राज करै सु गोहिलांरै परधांन[10] डाभी[11]; सु रीसांणा हुवा[12]। गोहिलांरो वडो धोम राज[13], अर डाभी पण डीलां घणां[14] सिरीखा[15] परधांन, सु रीसांणा थका छाड गया[16]। जाहरां आसथांनजीरो राज भारी पड़ियो[17]। तद डाभियां जांणियो, गोहिल मरावां। तद डाभी आसथांनजी कनै गया। सारी ही हकीकत कही[18] वात कीवी। ताहरां आसथांनजी कह्यौ–'कूंकर लेस्यां[19]।' तद डाभियां कह्यो–'म्हे थांनै समचो करस्यां[20]। ताहरां थे चूक करिया[21]।'

इतरै गोहिलां पिण आलोच कियो[22]–'जो राठोड़ जोरावर[23]। सिरांणै आय राजस्थांन् मांडियो[24]। जो कूं ललो-पतो कीजै तो टिग सगीजै[25]।' ताहरां सारा ही आलोच कर परधांन मेलियो। सु परधांननै कह्यो–'थे जाय वात कर आवो; अर मनुहार करज्यो, जो उठै खेड पधारो। देस देखो। थे रांम-रांम[26] कर आवो। अर जे पधारै तो भगत रो कह्या[27], अर म्हांनूं खबर मेलिया[28]। ज्युं

---

1 आकर ललकारा। 2 पीछा किया। 3 मिले। 4 धन सब पीछा लेलिया। 5 चौरासी गांवोंके साथ पाली लेनेके अनंतर समीपवर्ती भाद्राजण और उसके ८४ गांव भी ले लिये। 6 अन्य भी। 7 पार्श्ववर्ती। 8 खेड़, एक प्राचीन नगरका नाम। 9 गोहिल जातिके राजपूत खेड़के स्वामी थे। 10 प्रधान (मुख्य मंत्री)। 11 डाभी, राजपूतोंकी जाति। 12 अप्रसन्न होगये। 13 गोहिलोंका वैभव वाला राज्य था। 14 और डाभी संख्यामें अधिक (डील = शरीर)। 15 समान कक्षाके। 16 नाराज हो करके छोड़ कर चले गये। 17 प्रबल होगया। 18 सब वृत्तान्त कहा। 19 कैसे लेवेंगे? 20 संकेत कर देंगे। 21 तब तुम धोखेसे मार डालना। 22 इस अवसर पर गोहिलोंने भी विचार किया। 23 क्योंकि राठोड़ बलवान हैं। 24 मस्तकके उपर ही आकर राजधानी कायम करली है। 25 यदि कुछ खुशामद की जाय तो टिके रह सकते हैं। 26 राजस्थानमें, प्रणाम, सलाम आदिके स्थानमें भेंटके समय 'राम-राम' कहनेका भी रिवाज है। 27 यदि आयें तो मिहमानीका कहना। 28 और हमको खबर भेजना।

भक्तरी तयारी करां[1] ।' ताहरां डाभी जाय आसथांनजीसूं मिळिया। सरब हकीकत कही। आदमी मेलियो खेड़नूं[2]—'भगतरी तयारी करज्यो[3] । रावजी आसथांनजी पधारसी ।'

इंयां भगतरी तैयारी कीधी । आगै डाभियां गोहिलांनूं कह्यो— 'जु थे ठाकुर छो[4], म्हे थांहरा चाकर छां, म्हे थांसूं बराबरी करां तो कासूं होवै ? आखर तो म्हे थांहरा चाकर छां। जीमणी बगल गोहिल ऊभा रहै[5]; डावी बगल डाभी ऊभा रहसी । ज्युं पहली राव आसथांनरो साथ थांसूं मिळै[6], पछै म्हे मिळस्यां।' डाभियांसूं गोहिल खुसी हुवा[7] । युं करतां राव आसथांनजी पधारिया । डाभियां गोहिलांसूं चूक करायो[8] । मांहै पधारिया । ताहरां डाभियां कह्यो[9]— 'जी[10], डाभी डावै, गोहिल जीमणै ।' ताहरां जीमणी तरफ उतरिया। गोहिल सरब मारिया । डाभी सरब उबारिया[11] । खेड़ राव आसथांनजी लीधी। पछै आप खेड़ हीज रह्या। खेड़ राज कियो। तठासूं खेड़ेचा कहांणा[12] ।

॥ इति वात संपूर्ण ॥

---

1 जिससे मिहमानीकी तैयारी करें। 2 3 डाभियोंने खेड़को मनुष्य भेजा और कहलाया कि मिहमानीकी तैयारी करना। 4 आप मालिक हैं। 5 दाहिनी तर्फ गोहिल खड़े रहें, और वांई तरफ डाभी खड़े रहेंगे। 6 पहिले आसथानजीका लोक आपसे मिले। 7 प्रसन्न हुए। 8 डाभियोंने गोहिलोंको धोखेसे मरवाया। 9 भीतर आये तब डाभियोंने आसथानजीसे कहा कि महाराज ! (बड़े आदमीको उसके नामसे संबोधन नहीं करके 'जी' शब्दसे किया जाता है) डाभी वांई तरफ है, गोहिल दाहिने हाथकी तरफ हैं। (इसमें यह भी स्वारस्य है कि शत्रु दाहिने हाथको हों तो हाथका दाव बहुत अच्छा रहता है)। 10 तब दाहिनी ओर तलवार चलाई। 11 बचा दिया। 12 तबसे 'खेड़ेचा' कहलाये। (अन्य ख्यातों और गीत छदों आदिसे पता चला है कि आसथानजीसे गोहिलोंके प्रधान आसा डाभीने, गोहिलोंको मरवा कर खेड़का राज्य उन्हें दिला देनेका षड़यंत्र रच कर, आसथानजीको खेड़के स्वामी प्रतापसिंह कल्याणमलोतकी बेटी व्याहने का निश्चय किया। आसथानजीने वहाँ पर कुछ विवाद उपस्थित कर मोहिलोंको मार कर खेड़ राज्य गोहिलोंसे छीन लिया। आसा डाभीको अपने कब्जेमें कर खेड़का राज्य छीन लेने का एक पुराना सोरठा भी प्रसिद्ध है—

गोहिल गळ हथियेह, खेड़ धरा खागां मुंहै।
आसो अपणायेह, गह भरियो बळ गजियो ॥

वात राव कांनड़देजीरी

कांनड़देजी[1] महेवै[2] राज करै छै। अर सलखोजीनूं[3] गांम १ दियो। तेथ[4] सलखावासी कहांणी, उठै रहै छै।

एकदा प्रस्ताव राव सलखोजीरै रांणी गुर्विणी[5] हुती। ताहरां राव सलखो महेवै आयो। आय अर किरियांणो[6] लियो। एक राठी[7] वेगार लियो। तियैरै माथै सरव असबाव दे अर आप चढ़ि घोड़ै अर पूठै हुवो[8]। मारगमें जावतां च्यार नाहर नळा खायनै बैठा छै। भख आपरो बैठा खाय छै[9]। ताहरां त्यांनूं देख सलखोजी घोड़ैसूं उतरनै धरती बैठा; नै वै राठी कह्यो[10]–'हूं पूछ आऊं।' ताहरां सलखै कह्यो–'पूछि आव।' ताहरां राठी दोड़ियो-दोड़ियो राव कांनड़दे कनै गयो। कह्यो–'जी, सलखोजी पधारिया हुता, सु किरियांणो लियो गूढै[11] जावता हुता। सु म्हारै माथै पांड[12] हुती सु सुगन[13] हुवो। जिका रांणी किरियांणो खासी तैरो बेटो धणी[14] हुसी, सु थांनूं कहण आयो छूं। किरियांणो अपूठो घेरीजै[15]; अर सलखैजीनूं अपूठा घेरीजै। ताहरां कान्हड़देजी आदमी मूकिया[16]–'जावो सलखैजीनै अपूठा ल्यावो।' आगै सलखोजी बैठा घड़ी १ दीठो; राठी न आयो[17]। ताहरां आप गांठ किरियांणैरी घोड़ैरै आगै हांनै[18] दे अर घरै पधा-

---

1 राव तीड़ाके तीन पुत्र थे, कान्हड़दे, सलखो और त्रिभुवणसी। त्रिभुवणसीकी पुत्री कुमरदे जैसलमेरके रावल केसरिदेवको व्याही थी। सं० १४५३ में केसरिदेवके स्वर्गवास करने पर कुमरदे सती हुई। इस विषयका यह शिलालेख जैसलमेरमें उपलब्ध हुआ है। ओं संवत् विक्रमे १४५३ वर्षे माह सुदी ८ राजश्री त्रिभूणसी राठड़ पुत्री महाराजाधिराज श्री केसरिदेव भार्या ॥ राज्ञी श्री कुमरदे नाम ॥ महाराजा श्रीकेसरिदेव सह स्वर्गता श्री ॥ (जैसलमेर पर्यटनके समय प्राप्त।) 2 महेवा मारवाड़के मालानी प्रांतका एक भाग। 3 सलखा राव तीड़ाका मध्यम पुत्र। 4 वहां। 5 गर्भवती। 6 किरियांणो = सोंठ, अजवाइन, पीपरामूल, खांड, गुड़ आदि पंसारटकी वस्तुएं। 7 एक क्षुद्र श्रेणीकी जाति। 8 उसके सिर पर सामान देकर स्वयं घोड़े पर चढ़ गया और उसके पीछे-पीछे चलने लगा। 9 मार्गमें चार नाहर बैठे हुए अपना भक्ष खा रहे हैं। 10 उस राठीने कहा। 11 गूढ़ा = निवास स्थान, रक्षा स्थान। 12 गठड़ी। 13 शकुन। 14 स्वामी। 15 वापिस लौटा लेना चाहिये। 16 भेजे। 17 एक घड़ी तक राठीकी प्रतीक्षा की लेकिन वह नहीं आया। 18 घोड़े या ऊंटकी काठीका एक अग्र भाग।

रिया। आदमी आया; देखै तों सलखोजी नहीं। तोहरां आदमी अपूठा फिर गया। राठी सलखावासी[1] गयो। जाइ रावळै कपड़ो लियो। कह्यो–'जी, रावळै[2] बेटा ४ हुसी। सु धरतीरा धणी[3] हुसी। धरती थांहरै घरै हुसी[4]। अर थांहरै कुरसी दर कुरसी[5] ठकुराई हुसी। थांरा कर दस दिसा पसरसी[6]। दीकरा[7] थांरा घणा सकरमण[8] हुसी।' इसो राठी सगुनरो फळ कह्यो। आप हरखित हुयनै राठीनूं पाघ बंधाई। बीजांही सवणियांनूं[9] पूछियो। तियां कह्यो–'जिकै रांणीरै प्रसूत हुसी तियैरो बेटो धरतीरो धणी हुसी।' आप राजी हुवा। मालोजी जाया[10]। घणो हरख हुवो। घणी वधायां वैंहची[11]। मालो[12] दिन दिन वधै। महा प्रतापवांन हुवो। बीजो बेटो वीरम, तीजो जैतमाल, चोथो सोभत। वीरमनै सोभत एकै मा-रा[13]। मालो नै जैतमाल एकै मा-रा। यु करतां बेटा वडा हुवा। जाहरां मालोजी बारह वरसांरा हुवा; ताहरां मालोजी महेवै गया, जायनै राव कांनड़दे[14] नूं मुजरो कियो। राव मालैनूं बोलायो[15]। दिहांनगी करदी[16]। भेळो जीमै[17]। मालो भलीभांत चाकरी करै। कांनड़दे मालै ऊपर मया करै[18]।

एक दिनरो समाजोग छै। रावळ कांनड़दे सिकार चढिया छै। सरब रजपूत साथै छै। मालो पण साथै छै। सिकार रमी, अर अपूठा वळिया[19]। ताहरां राव कांनड़देरो पलो[20] मालै पकड़ियो। कह्यो–'कांनड़देजी! धरतीरो हैंसो[21] मांगूं, छोडूं नहीं। घणोही कह्यो, पण छोड़ै नहीं। रजपूत अळगा ऊभा हुइ रह्या[22]। नैड़ो कोई न आवै[23]।

1 सलखावासी = सलखाका आबाद किया हुआ गांव। 2 आपके। 3 स्वामी। 4 आपके घरमें धरती होवेगी अर्थात् आपके अधिकारमें धरती आजावेगी। 5 पीढ़ी दर पीढ़ी वंश परवंश। 6 आपके हाथ दशों दिशाओंमें फैलेंगे। 7 लड़के, पुत्र। 8 सकर्मण्य, श्रेष्ठ कार्य करने वाले। 9 शकुन-वेत्ताओंको। 10 मल्लिनाथजी जन्मे। 11 वहुत वधाइयां दीगई। 12 मल्लिनाथजी। 13 वीरम और सोभत एक माताके उदरसे जन्मे। 14 कान्हड़दे, मल्लिनाथजीके पिता सलखासे बडे थे, इसीसे राज्याधिकारी हुए। 15 वतलाया, वातचीत की। 16 प्रतिदिन-देय द्रव्य नियत कर दिया। 17 कान्हड़देके शामिल भोजन करते हैं। 18 कृपा करते हैं। 19 पीछे लौटे। 20 वस्त्रका छोर। 21 हिस्सा, अंश, बंट। 22 दूर खड़े रह गये। 23 कोई निकट नहीं आता है।

कह्यो–' जी, काको भतीजो समझल्यो[1] । म्हे कांसूं जांणां[2] ?' ताहरां राव कांनड़दे कह्यो–'माला ! तोनूं धरती में तीजो हैंसो देइस[3] ।' ताहरां कह्यो–'जी, मोनूं एथ[4] लिखाय द्यो; अर थांहरा रजपूत पटू[5] द्यो तो छोड़ूं ।' ताहरां ओथहीज[6] कागळ[7] लिख दियो । रजपूत पटू दिया ताहरां छोड़िया । आइनै धरती मालैनूं वेंहच दीधी । मालो कांनड़देरी खिजमत[8] भलीभांत करै । ताहरां कांनड़दे मालैनूं बुधवंत[9] जांणनै प्रधांन थापियो । ताहरां अमराव कहण लागा–'जियै ठाकुरै[10] आपरा भाई प्रधांन थापिया, तियांरी ठाकुराई जावणहारी[11] छै ।' हिवै[12] मालै धरती मांहे आपरो अमल करायो । राज भलीभांत चालण लागो[13] । पण रजपूतांरै वात दाय न आवै ।

एकदा प्रस्ताव । दिलीरै पातसाह सारी धरती मांहै डंड घातियो[14] । गढ़ किरोड़ी मूंकिया[15] । ताहरां महेवै ही किरोड़ी[16] आयो । ताहरां कांनड़दे सरब रजपूत तेड़िया[17] । कांमेतियां, मालेजीनूं तेड़िया । तेड़नै मंत्रणो कियो[18]–'जु, कासूं करस्यां[19] ?' ताहरां मालोजी वोलिया–'करोड़ीनूं मारस्यां । डंड नहीं दां । 'सिगळां ही ठाकुरांरै वात दाय आई[20]–जु किसी विध मारस्यां ? मिसलत करो[21] ।' ताहरां कह्यो–'जु इयांनूं[22] जुदा-जुदा कर मारस्यां, गांवै लेजायनै मारस्यां[23] ।' आ वात सिगळांरै ही दाय आई । ताहरां किरोड़ी तेड़नै कह्यो–'थांहरा आदमी गांवै मूंको[24], ज्यूं पईसा[25] ल्यावै । ताहरां इसी मिसलत कीधी–'आजहूं[26] पांचमैं दिहाड़ै[27] दोपहररी विरियां[28] सरब कांम करस्यां ।' आ मिसलत करि ऊठिया ।

---

1 चचा भतीज परस्पर समझलो । 2 हम क्या जाने ? 3 तुझको धरतीमेंसे तीसरा हिस्सा देदूंगा । 4 यहीं । 5 जामिन, प्रतिभू । 6 वहीं । 7 कागज, स्वीकार पत्र । 8 सेवा, नौकरी । 9 बुद्धिमान । 10 जिस ठाकुरने । 11 उनकी ठकुराई जाने वाली है । 12 अब । 13 राज्यका कार्य अच्छी तरह चलने लगा । 14 दंड डाला गया । 15 किलोंके लिये किरोड़ी भेजे गये । 16 किरोड़ी = दंड उगाहने वाला । 17 बुलाया । 18 सलाह की । 19 क्या करेंगे ? 20 सब ही ठाकुरोंके वात पसंद आई । 21 गुप्त परामर्श करें । 22 इनको । 23 गांवोंमें लेजा कर मार देंगे । 24 भेजो । 25 पैसे (द्रव्य) । 26 आजसे । 27 दिन । 28 समय ।

ताहरां सिरदार हुतो, तियैनूं[1] मालो लेगयो । बीजा बीजी ठोड़ै मेलिया[2] । ताहरां बीजै ठाकुरै लेजाय करोड़ीरा आदमी मारिया । अर मालै सिरदारनूं घरै लेजाय अर घणा हीड़ा[3] किया । दिन पांचमैं पछै कह्यो–'जु, कांनड़दे मराया छै । पण हूं तो तोनूं मारूं नहीं[4] । बीजा थांरा सरब कांनड़दे मारिया छै ।' ताहरां किरोड़ी कह्यो–'जे माला ! हूं दिली जीवतो पहुंतो तो तोनूं धरतीरो धणी कराईस[5] ।' बांह बोल दियो[6] । मालै आपरो साथ साथै दे अर किरोड़ीनूं दिली पहुंचतो कियो[7] । ताहरां किरोड़ी दिली जाय पातसाह आगै पुकार घाली[8]– 'जु कांनड़दे सरब आदमी मारे । अरु मेरी तांई मालै जीवता उबारचा । माला हजरत का खासा बंदा है । बड़ा सांमधरमी है । लायक है ।' ताहरां पातसाह हुकम कियो–'मालैकूं महेवा दिया ।' ताहरां किरोड़ी आदमी मूंकियो । मालैनूं तेड़ियो[9] । मालो साथ भेळो करनै दिली गयो । जाय पातसाहरै पावै लागो[10] । पातसाह मालैनूं निवाजियो[11] । रावळरो टीको दियो[12] । उठै कितराइक दिन रह्यो ।

वांसै कांनड़देजी देवगत हुवा[13] । ताहरां त्रिभुवणसी टीकै बैठो । ताहरां मालो पातसाहसूं विदा हुयनै देस आयो । त्रिभुवणसी साथ भेळो करनै मालैसूं लड़ाई कीधी । त्रिभुवणसी घावै पड़ियो[14] । साथ भागो । ताहरां त्रिभुवणसी ईंदांरै परणियो हुतो सो ईंदा लेगया । लेजायनै घाव बंधाया[15] । ताहरां मालै दीठो[16]–'त्रिभुवणसी जीवतां राज आवै नहीं ।' ताहरां त्रिभुवणसीरो भाई पदमसी हुतो[17], तियैनूं भखायो[18]–'तूं त्रिभुवणसीनूं मारै तो तोनूं[19] टीको देवां ।' ताहरां

---

1 उसको । 2 दूसरोंको दूसरी जगहोंमें भेजा । 3 सेवा । 4 परन्तु मैं तो तुझको मारूंगा नहीं । 5 माला ! यदि मैं दिल्ली जीवित चला गया तो देशका स्वामी तुझको बनवा दूंगा । 6 परस्पर वचनबद्ध हुए । 7 मालाने अपने मनुष्योंको साथमें देकर करोड़ीको सुरक्षित दिल्ली पहुँचवा दिया । 8 तब करोड़ीने दिल्ली जाकर बादशाहके आगे पुकार की । 9 मालाको बुलवाया । 10 जाकर बादशाहके पांवों लगा । 11 बादशाहने मालाके ऊपर कृपा की । 12 रावलकी पदवी देकर तिलक किया । 13 पीछे कान्हड़देजी परलोक पहुँच गये । 14 त्रिभुवनसी घायल हुआ । 15 लेजा करके घावों पर पट्टे बंधवाये । 16 तब मालाने देखा । 17 था । 18 उसको बहकाया । 19 तेरेको ।

पदमसी लोभायौ थकै जाइनै त्रिभुवणसीनूं पाटां मांहै सोमल नींव मांहै भेळियो[1]। पाटै मांहै विस हुवो[2]। त्रिभुवणसी देवगत हुवो[3]। पदमसी मालै कनै[4] आयो। कह्यो–मोनूं टीको द्यो।' मालै कह्यो–'टीको युं नहीं आवै।' कह्यो–'जी, दोय गांम ल्यो, बैठा खावो[5]।' ताहरां पदमसीनूं दोय गांव महेवैरा दे विदा कियो।

रावल मालोजीरी* वात

हिवै रावळ मालोजी महूर्त जोवाड़िनै महेवै आयो[6]। आयनै महेवै टीकै बैठो। सरब रजपूत आय मिळिया। धरतीमें आंण सगळै फेराई[7]। सरब भूमिया साझिया[8]। ठाकुराई वधी। भाई सरब आय मिळिया। धरती मांहै मालैरी धाक पडण लागी[9]। बीजो भाई जैतमाल, तियैनूं सिवांणो दियो[10]। जैतमाल सिवांणै राज करै छै, पण मालैरौ चाकर हुवो रहै। वीरम सोभत अै पण महेवैरै पासै

---

1 तब पदमसीने लालचमें आकर और वहां जाकर नीमके पट्टोंमें सोमल विष मिला दिया। 2 पट्टोंमें जहर होगया। 3 त्रिभूवनसी मर गया। 4 पास। 5 दो गांव लेलो और बैठे खाओ। 6 अब मालाजी मुहूर्त दिखा कर महेवे आया। 7 देशमें सर्वत्र अपनी आन-दुहाई फिरवाई। 8 समस्त भोमियोंको अपने अधिकारमें किया। 9 देशमें मालाकी धाक जमने लगी। 10 दूसरा भाई जैतमाल, उसको सिवाना दिया।

*'माला' रावल मल्लिनाथका साहित्यिक नाम है। जैसाकि 'तेरह तूंगा भांजिया मालै सलखांणी' सलखाके पुत्र मल्लिनाथने बादशाही सेनाके तेरह दलोंका नाश कर दिया। लोकमान्यता है कि इनकी रानी रूपांदेकी अडिग भक्ति और चमत्कारोंसे प्रभावित होकर रावल मल्लिनाथ भी उस ओर प्रवर्त होगये। निरंतर भक्तिमें तल्लीन रहनेके कारण इन्हें वचनसिद्धि प्राप्त थी। लूनी नदीके किनारे तिलवाड़ा ग्रामके सामने तिलवाड़ा-फेयर नामक रेलवे स्टेशनके पास थान गांवमें रावल मल्लिनाथका बड़ा मंदिर बना हुआ है। रूपांदे रानीका मंदिर भी कुछ दूरी पर मालाजाल गांवमें बना हुआ है। रावल मल्लिनाथकी स्मृतिमें थान और तिलवाड़ाके बीच लूनी नदीके पाटमें प्रत्येक वर्ष चैत्र कृ० ११से चैत्र शु० ११ तक एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें लाखों रुपयोंके मूल्यके ऊंट, घोड़े, बैल आदि पशुओंका और वस्त्र आदि अन्य व्यापारिक वस्तुओंका क्रय-विक्रय होता है। कहा जाता है कि साधु-सन्यासी और भक्तजनोंके वार्षिक धार्मिक सत्संगका रूपान्तर यह मेला है।

गूढा कियां रहै[1]। हिवै मालोजीरै बेटा हुवा। सो पिण वडा जोरावर ऊठिया, सु वीरमनूं रहण न दै। ताहरां वीरमजी जाइ जोईए रह्यो[2]। रावळ घड़सी पण रावळ मालैरै चाकर रह्यो। विमळादे परणाई[3]। जगमाल मालावत, रावळ घड़सी, हेमो सीमाळोत, ईंयां वडो संतोख[4]। रावळ मालैजी सरब धरती लीवी छै। दोय पातसाह भागा। एक दिलीरै पातसाहरी फोज भागी। एक मांडवरै पातसाहरी फोज भागी। मालो सिद्ध हुवो[5]। नव बेटा हुआ। वडा सिरदार हुवा। राव चूंडैनूं पिण मालैजी ठाकुर कियो। माथै हाथ दिया[6]।

एकदा प्रस्ताव। कुंवर जगमाल बोलाय हेमै सीमाळोतनूं कह्यो–'वरसात छै, देस सुहामणो लागै छै। रावळजी हुकम करै तो थळ मांहै सिकार रमां[7]।' हेमै रावळजी कना[8] हुकम लियो। अै ठाकुर सिकारनूं चढिया। दिन १५ तथा २० कह्यो जी रहिस्यां[9]। ताहरां रावळ घड़सी, जगमाल, हेमो सीमाळोत, सिकारनूं चढ

---

1 वीरम और सोभत ये दोनों भाई भी महेवेके पास ही अपना गुढा बना कर रह रहे हैं। 2 तब वीरमजी वहांसे जाकर जोईयोंके यहां रहा। 3 रावल घड़सी भी मालाका चाकर रह गया और उसे विमलादे व्याह दी गई। 4 इनके परस्पर बड़ा स्नेह। 5 माला भक्ति कर के सिद्ध हो गया। 6 राव चूंडेके सिर पर हाथ रख कर उसे भी ठाकुर बना दिया।

'माला' रावल मल्लिनाथका साहित्यिक नाम है। जैसा कि 'तेरह तूंगा भांजिया मालै सलखांणी' सलखाके पुत्र मल्लीनाथने बादशाही सेनाके तेरह दलोंका नाश कर दिया। लोक-मान्यता है कि इनकी रानी रूपांदेकी अडिग भक्ति और चमत्कारोंसे प्रभावित होकर रावल मल्लिनाथ भी उस ओर प्रवर्त हो गये। निरंतर भक्तिमें तल्लीन रहनेके कारण इन्हें वचन-सिद्धि प्राप्त थी। लूनी नदीके किनारे तिलवाड़ा ग्रामके सामने तिलवाड़ा-फेयर नामक रेल्वे स्टेशनके पास थान गांवमें रावल मल्लिनाथका बड़ा मंदिर बना हुआ है। रूपांदे रानीका मंदिर भी कुछ दूरी पर मालाजाल गांवमें बना हुआ है। रावल मल्लिनाथकी स्मृतिमें थान और तिलवाड़ाके बीच लूनी नदीके पाटमें प्रत्येक वर्ष चैत्र कृ० ११से चैत्र शु० ११ तक एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें लाखों रुपयोंके मूल्यके ऊंट, घोड़े, बैल आदि पशुओंका और वस्त्र आदि अन्य व्यापारिक वस्तुओंका क्रय-विक्रय होता है। कहा जाता है कि साधु-संन्यासी और भक्तजनोंकी वार्षिक धार्मिक सत्संगका रूपान्तर यह मेला है।

7 रावलजी यदि आज्ञा करें तो थल प्रदेशमें (जंगलमें) जा कर शिकार खेलें। 8 पास, से। 9 कहा कि १५ तथा २० दिन वहां रहेंगे।

नीसरिया[1] । जठै घणा जाळ, घणा खेजड़, सूरज दीसै नहीं, अैड़ी झंगी तेथ गया[2] । वसती कठै लाभै नहीं[3] । इयै भांत सिकार रमै ।

एक दिन प्रभातरा चढ़ि नीसरिया । एकै ठोड़ आया । आगै देखै तो कोहर तेविनै, धाव पायनै मरद तो सोह गांम गया छै[4] । एक बैर[5] जावै छै । सु साठीको कोहर, तियैरी वरत छै सु वरत सांवटिनै काख मांहै घाली छै[6] । कोस पंजाळी बांह मांहै घातिया छै[7] । माथै बिघड़ियो भरियो पांणीरो छै[8] अर मारग चाली जाय छै । ताहरां पूछियो–'महेवैरो मारग कठै छै[9] ?' ताहरां लांवो हाथ करनै मारग दिखायो । ताहरां सारा कहण लागा–'देखो ठाकुरे, छोकरीरो वळ ! देखो, कितरो[10] भार उठाये जावै छै ।' ताहरां एक असवार घोड़ै हूं[11] उतरनै ढाल भार भरनै उपाड़ण लागो[12], सु कळाईसूं ढाल उपड़ै नहीं । ताहरां सारा बोलिया–'धन्य वा छोकरी, जियै इतरै भार थकां बांह लांबी कीधी[13] !' ताहरां हेमो सीमाळोत वोलियो–'जावो, खबर करो कुंवारी छै कना परणी छै[14] ?' ताहरां एक असवार दोड़नै खबर कर आयो, 'जु कुंवारी छै ।' ताहरां अै ठाकुर वै पगै-पगै

---

1 अपने-अपने वाहनों पर सवार होकर शिकारके लिये निकल गये। 2 जहां पर घने जाल वृक्ष और घने शमी वृक्ष, झाड़ी ऐसी कि सूर्य भी नहीं दिखे, ऐसे स्थान पर गये। 3 कहीं बस्ती देखनेको नहीं मिले। 4 आगे देखते हैं कि कुएँको सींच कर और अपने पशुओंको पानी पिला कर मर्द तो सब ही अपने गांव को चले गये हैं। 5 स्त्री। 6 साठीका कुआँ, जिसके मोटे रस्सेको समेट कर कांखमें डाले हुए है। साठीको कोहर = साठ पुरुषका गहरा कुआँ। वरत = चरसेको पानी से भर कर के कुएँमेसे खेंचनेके लिये चरसेके बंधा हुआ चमड़ेका मोटा रस्सा। 7 कोश (चरसा) और पंजाली बांहमें डाल रखे हैं। पंजाळी = कुएँमेंसे पानी निकालनेके लिये चरसेमें या बैलगाड़ीमें जुते हुए दो बैलोंको एक दूसरेसे अलग नहीं होने देनेके लिये उनके कंधोंमें डाला जाने वाला जूएकी तरहकी लकड़ीका एक चौखटा। 8 सिर पर पानीसे भरा हुआ विघड़िया है। बिघड़ियो = वि+घड़ियो, दो घड़े या दूसरा घड़ा। घड़ेके ऊपर दूसरा छोटा घड़ा। सिर पर उठाया जाने वाला पानीसे भरा बड़ा घड़ा और उसके ऊपर रखा जाने वाला दूसरा छोटा घड़ा। 9 महेवेका मार्ग कहां पर है? 10 कितना। 11 घोड़ेसे। 12 उठाने लगा। 13 धन्य है उस लड़कीको जिसने इतना बोझा होते हुए भी अपने हाथको लंबा कर दिया। 14 जाओ और पता लगाओ कि यह क्वारी है अथवा व्याही हुई है?

गया[1]। आगै वसती आई। देखै तो एक रजपूत बरछो लियां ऊभो छै[2]। ताहरां वै रजपूतनूं पूछियो–'आ किणांरी वसती छै[3] ?' ताहरां रजपूत बोलियो–'जी वसती सोळंकियांरी छै।' कह्यो–'ठकुराळा[4] ! आ बेटी किणरी छै[5] ?' ताहरां ऊ रजपूत बोलियो–'जी, ईयै रजपूतरी डावड़ी छै[6]।' वळै पूछियो–'थे कि जातिया छो[7] ?' कह्यो–'जी, हूं सोळंकी छूं।' ताहरां उठै उतरिया, डेरा किया[8]। गांवरा लोक हीड़ा करण लागा। ताहरां वै रजपूतनूं तेड़नै हेमै कह्यो–'थांरी बेटी जगमालजीनूं परणाव।' ताहरां रजपूत बोलियो–'राज ! म्हे मालैजी रा रजपूत छां। म्हां सरीखांरो साहिवांसूं सगपण किसो[9] ? म्हे खिलहरी लोक छां[10]। जंगळरा वसणहार भूंछ लोक छां[11]। मांहरा टाबर राज-रीत-सार काई जांणै[12] ? अै तो राजा छै, मांहरा छोरू गंवार लोक छै[13]।' ताहरां हेमोजी बोलियो–'जी टाबर रावळा छै।' ताहरां आथण वांस रोपाय, अर चंवरी बांध, जगमालजीनूं परणाया[14]। दिन ३, ४ रह्या। उठै सोळंकणीनूं आसा रही[15]। उठाहूं जगमालजी* चढि अर महेवै आया[16]। सोळंकणी

1 तब ये ठाकुर (उस लड़कीके) पाँवोंको खोजते-खोजते गये। 2 खड़ा है। 3 तब उस राजपूतको पूछा कि यह किनकी बस्ती है ? 4 हे ठाकुर ! 5 यह लड़की किसकी है ? 6 जी ! यह इस (मुझ) राजपूतकी लड़की है। 7 पुनः पूछा कि तुम कौन जातिके हो ? 8 तब वहीं उतर कर डेरा लगा दिया। 9 हम सरीखोंका बड़ोंसे कैसा संबंध ? 10 हम तो ऊंट आदि पशु चराने वाले जंगली लोक हैं। 11 जंगलमें रहने वाले अपढ लोक हैं। भूंछ = असभ्य, असंस्कृत, अपढ़। 12 हमारे बच्चे राज-रीतिकी बातोंमें क्या समझें। 13 हमारे बच्चे ग्रामीण लोक हैं। 14 तब संध्याको बांस खड़े कर (मंडप बनाय) और चंवरी बांध कर जगमालका विवाह कर दिया। 15 वहां सोलंकनी गर्भवती हुई। 16 वहांसे जगमालजी चढ़ कर महेवे आये।

*जगमाल बड़े वीर पुरुष थे। ये गुजरातके बादशाहकी बेटी गींदोलीको उड़ा कर ले आये थे। जगमालको मार कर गींदोलीको वापिस ले जानेके लिये बहुत बड़ी सेनाके साथ बादशाह स्वयं जगमाल पर चढ़ कर आया था। जगमाल युद्धमें बड़ी वीरतासे लड़ा और उसने ऐसी तलवार बजाई कि बादशाह और उसकी सेनाको रणांगणसे भाग कर प्राण बचाने पड़े। गींदोलीको प्राप्त करनेके लिये फिर वह साहस नहीं कर सका। प्रसिद्ध है कि—'गींदोली बांधी गळै, जिका न दे जगमाल'। इस ऐतिहासिक घटनाके सम्बन्धमें 'गींदोलीरी वात' नामक कथानक प्रसिद्ध है। जगमालकी इस अभूतपूर्व विजयसे राजस्थानका लोक-साहित्य भी बहुत प्रभावित हुआ है। स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला—'गींदोली जगमाल म्हालै, गींदोली किम दीजै हो राज।' लोकगीत आज भी प्रसिद्ध है।

उठै हीज राखी, साथै ल्याया नहीं[1] ।

कितरैहेकै दिने सोळंकणी वेटो जायो[2] । नांव[3] कूंभो दियो । नांनांणै हीज[4] मोटो हुवै ।

एकदा प्रस्ताव । रावळ मालैजी महेवै राज करतां थकां पातसाही फोजां महेवै ऊपर विदा हुई[5] । ताहरां मालैजी अमराव तेड़िया । कह्यो–'कासूं करस्यां[6] ?' ताहरां आलोच कियो[7] । कह्यो–'जी आंपै लड़ाई कियां पहुंचां नहीं । ताहरां हेमो बोलियो–'जी रातीवाहो देस्यां[8] ।' ताहरां मालोजी बोलिया–'भली कही ।' ताहरां रातीवाहो थापियो[9] । ताहरां मालैजी हुकम कियो–'सिरदारांरा नांव मांडो ।' ताहरां सातवीसी सिरदार नांवै मंडाया[10] । इतरां ठाकुरांनूं हुकम कियो–'थे रातीवाहो द्यो[11] ।' सु तुरकांरै हाथियां ऊपर कनातां चालै, काठरा थांभा चालै । जाहरां उतरै, ताहरां घर वणाय लै । सिरदार तो घर मांहै उतरै । इसो जतन करै । युं करतां महेवैरै नजीक आय उतरिया । ताहरां ईयां ठाकुरां रातीवाहैरी तयारी कीनी । ताहरां जगमाल मालावत, कूंपो मालावत, हेमो सीमाळोत, घड़सी रतनसीओत–ईयां ठाकुरां सिरदार मारणो अटकळियो[12] । सिरदारां आपस में कह्यो–'ठाकुरे ! मुगल तो घर मांहै छै । सु थांभो तोड़ अर घर मांहै घोड़ो घालणो अर सिरदारनूं घाव करणो[13] । अर आप थांभो तोड़ गळी करनै घोड़ो घालणो[14], अर घाव करणो । बीजैरी सेरी मांहै घोड़ो घालणो नहीं[15] ।' इसो वयण

---

1 सोलंकनीको वहीं रखा, अपने साथ नहीं लाये । 2 कितनेक दिनोंके वाद सोलंकनीको पुत्र उत्पन्न हुआ । 3 नाम । 4 ननिहाल । 5 मालाजी जिन दिनों महेवामें राज्य करते थे, तव महेवे पर वादशाही सेना रवाना हुई । 6 क्या करेंगे ? 7 तव परामर्श किया । 8 रात्र्याक्रमण करेंगे । 9 तव रात्र्याक्रमणका निश्चय किया । 10 तव एक सौ चालीस (७×२०, सात वीसी = १४०) सरदारोंके नाम लिखे गये । 11 इतने ठाकुरोंको आज्ञा की गई कि तुम रात्र्याक्रमण करो । 12 इन ठाकुरोंने सरदारको मार देनेकी तजवीज सोची । 13 और सरदार पर प्रहार करना । 14 अपने आप कनातके थंभेको तोड़ कर गली वना ले और उसीमें अपना घोड़ा डाले । (दूसरेकी वनाई हुई गलीमें नहीं डाले) । 15 एककी वनाई हुई गलीमें दूसरा कोई अपना घोड़ा उधर नहीं डाले ।

दिनरो कियो[1] । बीजा असवार फोज ऊपर नांखो[2] । ताहरां रात पोहर १ गई, ताहरां ईयां ठाकुरां रातीवाहो दियो[3] । ताहरां हेमै सीमाळोत जाइ पैहली तोड़ि कनात, भांज थांभो[4], अर मुगलनूं घाव कियो । मारनै माथैरी कुलह लीधी[5] । अर जगमाल मालावत घोड़ो दाबियो, सु थांभो खिसियो नहीं । खस रह्यो[6] । ताहरां हेमैंरी गळी कीधी[7] तियैमें घोड़ो घाल अर घाव कीधो, सु हेमै दीठो[8] । अै ठाकुर सिरदार मुगल मार बीजो[9] साथ सरब भांज, अै ठाकुर ऊभा रह्या । मुगल नाठा[10] । ईयां साथ लूंटियो । पछै आय रावळजीनूं सलाम कीधी । दरबार जोड़ रावळजी बैठा । सारैही साथरो मुजरो लियो । ताहरां कुंवर जगमाल कहै–'सिरदारनूं म्हारो घाव छै[11] ।' 'ताहरां हेमो सीमाळोत कहै–'कोई सहनांण द्यो[12] । ताहरां रावळ मालोजी बोलिया–'जियां सिरदार मारियो, तियां कनै सहनांण हुसी[13] ।' ताहरां हेमै सिरदाररै माथैंरी कुलह काढ दीधी । कह्यो जी–'जगमालजी ! म्हां मारियो सु थांईज मारियो छै[14] । पण थांनूं आ वात चाहीजै नहीं[15] । म्हे तो थांहरां रजपूत छां । म्हांरो थे वांनो वधारो तो भलो छै, किना युं करचां भलो ? पहली तो थां म्हारी गळी कीधी, मांहै घोड़ो घालियो, पछै थां मारियैंनूं घाव कियो, सु थां मांहै जगमालजी चूक छै[17] । आपां बोल किसो कियो हुंतो[18] ।'

---

1 दिनमें सभीने इस प्रकार वचन दिया । 2 दूसरे सवार सेना पर आक्रमण करें । 3 तब इन ठाकुरोंने रात्र्याक्रमण किया । 4 थंभेको तोड़ कर । 5 मार कर सिर परकी कुलह ले ली । कुलह = लोहेकी टोपी, शिरस्त्राण । 6 खूब पच रहा, किन्तु थंभा नहीं खिसा । 7 तब हेमेकी बनाई हुई गलीमें अनुसरण किया और उसके भीतर अपना घोड़ा प्रवेश करके प्रहार किया । 8 हेमेने ऐसा करते हुए देख लिया । 9 दूसरा । 10 मुगल भाग गये । 11 सरदार पर घाव मैंने किया है । 12 कोई निशान हो तो दो । 13 जिसने सरदारको मारा है, उसके पास कोई निशान होगा ही । 14 जगमालजी ! हमने मारा है सो तो आपहीने मारा है । 17 लेकिन आपको यह बात नहीं करनी चाहिये । 16 हमारा स्वरूप (प्रतिष्ठा) बढ़ाना अच्छा है अथवा यों करना अच्छा ? आपही सोचें । 15 देखिये ! पहले तो, मैंने जो गली बनाई थी उसीमें आपने अनुसरण किया और अपना घोड़ा अंदर प्रवेश किया । मेरे द्वारा मारे हुए पर आपने प्रहार किया । जगमालजी ! यह आपकी भूल है । 18 अपनने निश्चय कौनसा किया था ?

ताहरां जगमाल हेमैसूं रीसांणा[1] ।

दिन ५ तथा ७ आडा घातिनै एक दिन जगमाल कह्यो–हेमाजी ! घोड़ो थे मोनूं द्यो, थे मो कना बीजो घोड़ो ल्यो[2] । 'कह्यो जी–म्हां कनै घोड़ा, रजपूत छै सु थांहरा हीज छै । थांहरै कांमनूं ही छै[3] ।' कह्यो–'थां माहरै कामनूं तो छो, पण घोड़ो मोनूं द्यो ।' ताहरां हेमो कहै–'राज ! घोड़ो न द्युं[4] ।' तो कह्यो–'थे मांहरा चाकर नहीं ।' ताहरां हेमै कह्यो–'नहीं तो नहीं[5] ।

हेमै वास छोड़ियो । हेमो जाय घूवरोटरै पहाड़ां पैठो । हिवै हेमो मेवासी हुवो[6] । महेवैरी धरती उजाड़ै । सातवीसी गांव महेवैरा मांहि धुंवो धुखै नहीं[7] । इसो जोर घालियो कै के जाळोररी मांहै वसिया, के जेसळमेररी मांहै वसिया[8] । रईयत सरब गई । धरती हेमा आगै वस सगै नहीं[9] । कितराहेक वरस युंही धोंकळ रह्यो[10] । हिवै रावळ मालोजी कुटेवा पड़िया[11] । युं करतां घट घणो वेचाक हुवो[12] । ताहरां दांन पुण्य कियो । जाहरां मालोजी अंतकाळ आया । ताहरां बेटा, पोतरा, भाई सरब उमराव एकठा हुवा छै । ताहरां मालोजी बोलिया–'इतरा दिन तो हेमै देस मारियो[13] । हिवै हूं घरै न हुवो, ताहरां हेमो महेवैरै किंवाड़ै घाव करसी[14] । प्रोळ आय ठाहोकसी[15] । इसड़ो कोई रजपूत छै जु हेमैरी पूठ राखै[16] ?' वार २-३ रावल मालैजी कह्यो, पण कोई बोलै नहीं । ताहरां कुंभो जगमालोत बोलियो–'ठाकुरे ! बोलो काई नहीं । खेड़रा ऊपना

---

1 तब जगमाल हेमेसे नाराज हो गया। 2 अपना घोड़ा मुझे दो और मेरे पाससे दूसरा घोड़ा ले लो। 3 तुम्हारे कामके लिये ही है। 4 राजकुमार ! घोड़ा नहीं दूंगा। 5 नहीं तो नहीं सही। 6 अब हेमा लुटेरा हो गया। 7 महेवेके १४० गांवोंमें धुआँ नहीं निकलता है। अर्थात् सभी घर खाली हो गये। 8 ऐसा आतंक जमाया सो भयके मारे कई जालोर प्रान्तमें और कई जैसलमेर प्रान्तमें जाकर वस गये। 9 हेमाके आतंकसे देश आवाद नहीं हो सकता। 10 कितनेक वर्षों तक यह उपद्रव योंही चलता रहा। 11 अब रावल मालाजी रोगग्रस्त हुए। 12 इस प्रकार रोग-निवृत्त नहीं होनेसे शरीर अधिक अस्वस्थ हो गया। 13 इतने दिन तो हेमेने देशको लूटा। 14 अब ज्योंही मैंने कूच किया नहीं; त्योंही हेमा महेवेके दर्वाजे पर आकर घाव करेगा। 15 पौलि पर आकर छापा मारेगा। 16 ऐसा कोई राजपूत है जो हेमेका पीछा करे।

घोड़ा, खेड़रा ऊपना रजपूत छो। बोलो क्युं नहीं छो ? रावळजी कहै छै[1]।' ताहरां रजपूत बोलिया। कह्यो–'जी, आगै हेमै ऊपर बीड़ो उठावणो छै। अर घूंघरोटरा पहाड़ छै। थेई कूंभाजी बोलो नहीं, पाटवी कुंवररा बेटा छो[2]।' ताहरां कूंभै कह्यो–'वाह! वाह!' ताहरां कूंभै ऊठनै रावळ मालैजीनूं सलांम करनै कह्यो–'बाबाजी! आगै हेमै उजाड़ कियो, हिवै हेमो उजाड़ करै सो कूंभो इग्यारह गुणो सीळै[3]।' ताहरां रावळजी बोलिया–'साबास! कूंभा!' हूं जांणतो हुतो, तूं हेमा ऊपर बीड़ो उठाईस[4]। ताहरां रावळ मालैजी आपरी कटारी तरवार कूंभैनूं बंधाई। कूंभै ऊपर राजी हुवा। आपरी असवारीरो घोड़ो बगसियो। आप जीव सोरो कियो[5]। कूंभो बाहुड़ियो, ताहरां बांसै रजपूत हसण लागा[6]। 'जांणां छां कूंभोजी नांनांणै जाइ अर हुड़ियांरै माथै कटारी भांजसी[7]।' आ कूंभैनूं खबर हुई। 'रजपूत वांसै हसण लागा।' युं करतां रावळजी देवगत हुआ[8]। रावळजीरो कृत कियो[9]। जगमालजी टीकै बैठा। हेमै पण आ वात सांभळी[10]। रावळ मालोजी विसरांमियो[11]। अर आप फुरमायो जु–'हेमो आवसी ताहरां?' कूंभै सलांम कीवी–'हेमो हूं पालीस[12]।' ताहरां हेमो पण बैस रह्यो। हेरा लगाइ फीटा किया[13]। जु 'कूंभो कठैई जावै अर

---

1 ठाकुरो! आप कोई बोलते ही नहीं। खेड़ जैसी वीरप्रसू धरामें आप उत्पन्न हुए हैं; आपके घोड़े भी खेड़में ही उत्पन्न हुए हैं, फिर भी आप क्यों नहीं बोल रहे हो? रावलजी आपको पूछ रहे हैं। 2 तब राजपूतोंने कहा—आगे हेमेके ऊपर बीड़ा उठाना है (कोई ऐसा-वैसा व्यक्ति नहीं है) और जहां घूघरोटके पहाड़ हैं। आप भी कुंभाजी बोल नहीं रहे हो; आप तो पाटवी कुंवरके पुत्र हैं। 3 पहले तो हेमाने जो उजाड़ किया सो तो कर ही दिया, किन्तु अब यदि उजाड़ करेगा तो कूंभा उसका ग्यारह गुणा भरेगा। 4 मैं जानता था कि तू हेमाके ऊपर बीड़ा उठायेगा। 5 स्वयंको (मालाजीको) संतोष हुआ। 6 कुंभा जब वहांसे लौट गया तो पीछे राजपूत हंसने लगे। 7 जानते हैं, यह ननिहाल जाकर भेड़ोंके ऊपर अपनी कटारी तोड़ेगा। अर्थात् हेमेके विरुद्ध इसका कुछ कर सकना असंभव बात है। 8 इस प्रकार रावलजी देवगतिको प्राप्त हुए (मर गये)। 9 मृतक संस्कार और भोज आदि किये गये। 10 हेमेने भी यह बात सुनी। 11 कि रावल मालाजी स्वर्ग पहुंच गये। 12 हेमाको मैं रोकूंगा। 13 तब हेमा भी चुप रह गया और धावे बोलने बंद कर दिये।

हूं चढ़ू[1] ।' अर कूंभो पण सावचेत रहै। आठो पोहर हथियार बांध्यां बैठो रहै। घोड़ा २ पलांण मांडिया रहै[2]। च्यार पोहर घोड़ांरी चोकी। एक घोड़ो चरै; एकै घोड़ै पलांण मांडियै रहै। ईयै भांत कूंभो रहै। इसी कूंभैरी धाक। तैसूं हेमो देसमें पैसण पावै नहीं[3]। आ वात सिगळै कोटै सुणी[4]।

ताहरां रांणो मांडण सोढो ऊमरकोटरो धणी, तियै आ वात सुणी, अर कह्यो–[5]'कूंभो वडो रजपूत; जियैरी धाकसूं हेमो वैस रह्यो[6]। महेवैरी धरती वसी[7]। फेर हेमो महेवैरीमें न आयो[8]। इयेनूं परणाईजै इसो रजपूत छै[9]। ताहरां सिगळां ही रजपूतां कह्यो–'वाह! वाह!' ताहरां वांभण तेड़नै नारेळ दियो[10]। कह्यो जी–'कूंभे जगमालोतनूं महेवै जाय नाळेर वंदावो[11]। वाईरी सगाई कूंभैसूं कीवी छै[12]।' ताहरां वांभण नाळेर ले हालियो नै महेवै आयो[13]। पछै भलो मोहरत जोवाड़[14] कूंभैनूं प्रोहित नाळेर दियो, ताहरां कूंभै ऊठ, सलांम कर नाळेर लियो[15]। कूंभै कह्यो–'रांणैजी मोनूं रजपूत कियो। हिवै हूं रजपूत हुवो। मोनूं मोटो कियो[16]।' वांभणनूं भलीभांत विदा दीनी। अर कह्यो–'मोनूं रावळजो देस भळायो छै, जे हूं हिमारूं परणीजण आऊं तो हेमो तुरत महेवै

---

1 इस टोहमें रहता है कि कुंभा कहीं जाये और मैं चढ़ाई करूं। 2 दो घोड़े हर दम जीन कसे तैयार रहते हैं। 3 कुंभेका ऐसा आतंक कि हेमा देशमें (महेवेकी धरतीमें) प्रवेश ही नहीं कर पाता। 4 यह वात सभी गढ़ोंने (गढ़पति राजाओंने) सुनी। 5 तव यह वात ऊमरकोटके स्वामी राणा मांडण सोढाने भी सुनी और उसने कहा। 6 कुंभा वड़ा वीर राजपूत है जिसकी धाकसे हेमा जैसा वीर भी चुप वैठ गया। 7 महेवा प्रदेश पुनः बस गया। 8 हेमा फिर महेवा प्रदेशमें नहीं आया। 9 यह ऐसा राजपूत है कि इसका विवाह (अपनी लड़कीको देकर) कर दिया जाय। 10 तव सभी राजपूतोंने कहा—'वाह! वाह! (वहुत अच्छी वात है)। तव ब्राह्मण को वुला कर नारियल दिया। 11 उसे कहा कि महेवे जाकर कुंभे जगमालोतसे इस नारियलका वंदन कराओ (नारियल-वंदन द्वारा सम्बन्ध स्वीकृत कराया जाय)। 12 कि वाईकी सगाई कुंभेसे की है। 13 तव ब्राह्मण नारियल लेकर चला और महेवे आया। 14 दिखा कर। 15 तव कुंभेने उठ कर नारियलको प्रणाम किया और नारियल ले लिया। 16 कुंभेने कहा—'राणाजीने मुझको राजपूत वनाया और अब मैं राजपूत वन गया। मुझको वड़ा वनाया।

आवै । हूं आय न सकूं[1] ।' ताहरां आदमी अमरकोट गयो । जायनै राणै मांडणनूं हकीकत कही । ताहरां राणै मांडण कह्यो–'ठाकुरे ! कूंभो इसो रजपूत, जियेनूं घरै ले जायनै परणावीजै[2] ।' ताहरां मांडण कहाड़ियो–'अमरकोटसूं सौ कोस महेवो छै । पचास कोस म्हे आवां छां, पचास कोस थे आवो ।' इसो कहाड़ियो[3] । ताहरां आदमी आयो नै कूंभैनूं कह्यो । कूंभै आदमी अपूठो मूंकियो, अरे कहाड़ियो–'छांना-छांना आवज्यौ[4] । ताहरां राणै मांडण सेजवाळ तयार कराया । लोक साथ ले अर हालिया[5] । कूंभैनूं आदमी मूंकियो[6] । कूंभो वर वण चालियो[7] । आय रांणा मांडणसूं मिळियो । मांडण कूंभानूं देख राजी हुवो । कूंभो परणियो । हथळेवो छोड़ियो, अर कूंभै कह्यो–'मोनूं विदा द्यो[8] ।' तांहरां कह्यो जी–'दोय पोहर रहो, राजलोक कहै छै[9] । युं वात करतां वार लागी[10] । तितरै[11] आदमी आय कह्यो–'जी हेमो आयो । आई नै महेवैरै किंवाड़ै घाव दियो[12] । 'हेमैरा हेरा फिरता हुता[13] । कूंभो चढै औौर महेवै आवै । सु हेमो आयो, ताहरां कूंभै विदा मांगी । घोड़ै असवार हुवो । ताहरां रायसिंघ मांडणरो बेटो, पाटवी कुंवर तिको बोलियो, कह्यो–'जी जिका वींदणी तियैरो मुंहडो देखो[14] । ताहरां घोड़ै चढियै हीज वैहलरी खोळी ऊंची करनै मुंहडो जोयो[15] । कह्यो–'जी जोयो छै, सुख पावज्यौ ।[16] ।'

---

1 मुझको रावलजीने देश सुपुर्द किया है। यदि मैं इस समय विवाह करनेको आ जाऊं तो हेमा तुरंत ही महेवे पर चढ़ कर आ जाये । अतः मैं इस समय नहीं आ सकता । 2 तब राना मांडणने कहा—'ठाकुरो ! हेमा ऐसा वीर राजपूत है उसे उसके घर जाकर कन्याको व्याही जाये । 3 इस प्रकार कहलवाया । 4 कुम्भेने आदमीको पीछा लौटाया और उसके साथ कहलवाया कि 'चुपचाप गुप्त रीतिसे आना' । 5 आदमियोंको साथ लेकर चला । 6 कुंभेको आदमी भेजा । 7 कुंभा दूल्हा बन कर चला । 8 कुंभेका विवाह हो गया। ज्योंही हथलेवा छूटा त्योंही कुंभेने कहा—'मुझे आज्ञा दीजिये । 9 स्त्रीजन कह रही हैं कि दो पहर ठहरें । 10 इस प्रकार बात करनेमें देर लग गई । 11 इतनेमें । 12 अजी ! हेमा आ गया और उसने आकर महेवेके किवाड़ों (दर्वाजे) पर घाव किया । 13 हेमेके जासूस फिरते थे । 14 अजी ! जो दुलहिन है उसका मुंह तो देख लो । 15 तब घोड़े पर चढ़े हुए ही वहलीकी खोल (पर्दा, आवरण) उठा कर मुंह देखा । 16 और कहा कि 'देख लिया है, सुख की प्राप्ति हो ।

ताहरां रायसिंघ पण साथ हुवो छै। सु रायसिंघ वडो बांणा-वळी[1]। रायसिंघरो वाह्यो (बांण) खाली न पड़ै[2]। ताहरां दोनूं चढि खड़िया। ताहरां रायसिंघ बोलियो–'कूंभाजी ! महेवै जाय कासूं करस्यां ? अड़ोग्रड़ हालो, ज्युं घूंघरोटरा पहाड़नूं खड़ो। ज्युं जाइ पहुंचां[3]।' ताहरां कूंभो बोलियो–'थे धाड़वी, रायसिंघजी ! सरब मारग जांणो छो[4]। म्हे कासूं जांणां मारगरी सार[5] ? ताहरां घूंघरोटनूं चढ खड़िया छै[6]। दोय पोहर रात खड़िया, दो पोहर दिन खड़िया।

ताहरां आगै सेंचाळ कोहर तेवै छै[7]। पणिहार घड़ो भरियो छै। कहै छै–'रे भाई ! मोनूं घड़ो उखणाय[8]।' ताहरां सेंचाळ उखणावै नहीं। उवा नहोरा करै छै[9]। ताहरां कूंभै सेंचाळनूं कह्यो–'रे मुंहडै मूंछ छै, मरद कहावै छै, इये पिणियारीनूं घड़ो क्यूं नहीं उखणावै छै ? ताहरां सेंचाळ बोलियो–'उतावळा छो तो राज उखणावो[10]। ताहरां कूंभै नैड़ै हुइ घड़ैनै हाथ घाति अर ऊंचो लियो[11]। अर घोड़ो त्रापियो[12]। काछी घोड़ो हुतो। गजंदा २, ३, ४ वार घोड़ै कुळाछां खाधी[13]। कूंभै घड़ो इमहीज हाथां मांहै राखियो[14]। घोड़ो थांभि ठाढो करनै कह्यो[15]–'बाई ! नैड़ी आव[16]।' ताहरां पणि-हाररै माथै घड़ो मेलियो छै। ताहरां पणिहार बोली–'वीरा ! तूं

---

1 रायसिंह वाण चलानेमें विशेषज्ञ। 2 रायसिंहका चलाया हुआ बाण व्यर्थ नहीं जाता। 3 कुंभाजी ! अपन महेवे जाकर क्या करेंगे ? अपन तो उसको पहुंचते हुए चलें और घूघरोटके पहाड़की ओर चलाएँ सो जाकर वहां पहुंच जायें। 4 आप तो लुटेरे हैं रायसिहजी ! आप सभी मार्ग जानते हैं। 5 मार्गके संबंधमें हम क्या जानें ? 6 तब घूघरोटके लिये चढ करके चले हैं। 7 सेंचाल कुएँमेंसे पानी निकाल रहा है। सेंचाल = बैलोंको चला कर मोटके द्वारा कुएँमेंसे पानी निकालने वाला व्यक्ति, सिचाईका काम करने वाला, सींचक। 8 मुझको घड़ा उठवा दें। 9 वह निहोरा कर रही है। 10 इतने उतावले हो तो आप ही उठवा दें। 11 तब कुंभेने निकट आकर, घड़ेको हाथसे ऊंचा उठाया। 12 और घोड़ा चमक गया। 13 काछी घोड़ा था, उसने अपने अगले दोनों पांवोंको ऊंचा और उठा टप्पें भर कर छलांगें मारीं। 14 इस पर भी कुंभेने घड़ेको उसी प्रकार हाथमें पकड़े रखा। 15 घोड़ेको थाम कर और उसे शान्त करते हुए कुंभेने कहा। 16 बाई ! निकट आ।

कूंभो जगमालोत नहीं छै[1] ?' ताहरां कह्यो–'कूंभो हूं छूं ।' कह्यो–तूं हेमैरै वांसै चढियो[2] छै ?' कह्यो–'होवै[3] ।' ताहरां पणिहार कह्यो–'हेमो तो घरै गयो हुसी ।' कह्यो–'रे वीरा ! तूं पुरख में रतन, हेमैरै वांसै कांई जाय ? हेमो तो जमरी दाढां मांहे छै[4] । जो जरडां इण तैंरो कासूं मारणो[5] ? तूं अपूठो जा[6] । वळै आयो रहसी[7] । कह्यो–'जी म्हैं रावळजीनूं बोल दियो छै[8] । ताहरां पगै-पगै हालिया[9] । कोस दोयइक परै जावै तो हेमो उतरियो छै[10] । साथ उतरियो छै । सूंखड़ी अणाई छै[11] । बैठा रजपूत खावै छै । हेमो डोरड़ो गावै छै ।

'लाडा ! थारै डोरड़ै वीस गांठ हो'[12]

यु गावतां कूंभो आयो । कह्यो–'जी, साथ ! साथ[13] !' यु कहतां पैहली जाय ऊभा[14] । ताहरां हेमो बोलियो–'साबास, साबास ! कूंभा साबास तोनूं ! म्हारो तैं पूठो दाबियो[15] ! साबास सपूत !' इतरै रायसिंघ आयो । ताहरां हेमो बोलियो–कूंभा ! मालांणा ! कटक वाळा वनोड़ा मतां नांखै ? साइयां मिळो[16] ।' ताहरां कूंभो घोड़ै हूं[17] उतरियो । ताहरां रायसिंघ बोलियो–कूंभा ! क्युं उतरै ? म्हारा हाथ देख । सिगळाहीनूं कबूतर दाई वींधूं[18] ।' ताहरां कूंभो

---

1 भाई ! तू कुंभा जगमालोत तो नहीं है ? 2 तू हेमेके पीछे चढ़ कर आया है ? 3 हां । 4 भाई ! तू पुरुषोंमें रत्न; हेमेके पीछे क्या जाय ? यह तो यमकी डाढ़में ही है ? 5 मरे हुएको क्या मारना ? 6 तू लौट जा । 7 यह तो फिर कभी आया रहेगा । 8 मैंने रावलजीको वचन दिया है । 9 तब उसके खोज सम्हालते-सम्हालते चले । 01 कोस दो-एक परे जाते हैं तो (देखते हैं कि) हेमा अपना डेरा लगाए हुए बैठा है । 11 मिठाई आदि भोजन-सामग्री मंगवाई गई है । 12 हेमा 'डोरड़ा' गा रहा है—'लाडा ! थारै डोरड़ै वीस गांठ हो = हे दूल्हे ! तेरे विवाह सूत्रमें वीस गांठें हैं ।' 'डोरड़ा या कांकण-डोरड़ा' = विवाहके पूर्व दूल्हे और दुलहिनके हाथमें बांधा जाने वाला एक मांगलिक सूत्र है जिसमें गांठें दे कर कई मांगलिक वस्तुएँ बांधी जाती हैं । डोरड़ाके लोक-गीतोंमें विवाह-सूत्रमें बँध जानेके उत्तरदायित्व पर बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रकाश डाला गया हैं । 13 हेमाके साथियों ने कहा—'हमला ! हमला !' साथ = (१) हमला, (२) सेना, (३) मनुष्य, (४) साथी । 14 वे यों कह ही नहीं पाये थे, जिसके पहिले ही ऊपर जा खड़े हो गये । 15 मेरा पीछा तूने किया । 16 तब हेमाने कहा—हे कुंभा ! हे मालाणा ! तेरे साथ वालोंको व्यर्थमें क्यों बीचमें डालता है ? अपन ही निपट लें । 17 से । 18 मेरे हाथ देख, अभी सबको कबूतरोंकी भांति बींध लूंगा ।

बोलियो–'रावळ मलीनाथजीरी आंण छै, बोलो तो। मोनूं उतरण द्यो[1]। ताहरां रायसिंघ हूं जोरावरी कूंभो उतरियो[2]। जायनैं डेरै मांहै हेमैनूं तसलीम कीधी[3]। हेमैं कह्यो–'सावास कूंभा !' ताहरां हेमो कहै–'कूंभा ! तूं घाव कर।' कूंभो कहै–'हेमाजी ! थे घाव करो[4]।' हेमो कहै—'कूंभा ! तूं बाळक छै। म्हैं घणा नींब बंधाया छै[5]।' ताहरां कूंभो कहै छै–'हेमाजी ! थे घाव करो।' हेमो कहै–'कूंभा ! थारै अजेस पिंड लोह नहीं लागो छै[6], बाळक छै। तूं घाव कर। हूं वडेरो छूं, घाव क्यूं करूं[7] ?' कूंभो कहै–हेमाजी ! वरसै थे वडा, पण पगै म्हे वडा। थां मांहरौ धांन पलैमें लियो, थे मांहरा चाकर, तै में वडा, थे घाव करो[8]।' ताहरां हेमै कह्यो–'हूं कासूं करूं ? तूं न रहै हीज[9] ?' ताहरां हेमै घाव कियो कूंभैनूं। वढ खपर पैडो वाढि, टोप वाढि, भुंहारा वाढि, कांणेठै आवती रही[10]। कूंभै घाव कियो, सु हेमैरा दोय धड़ा किया। हेमो पड़ियो। ताहरां कूंभै कटारी काढि हेमैरै हीयैमें मारी। पकड़ि ताड़ियांनै भांज नांखी[11]। कह्यो–'मालांणा कटकांनूं कहज्यो, कटारी हेमैरी छातीमें भांगी छै, हुड़ियां ऊपर नहीं भांगी छै[12]। यूं कहतां कूंभैरो हंस उडियो।

---

1 तब कुंभाने कहा—'तुम्हें रावल मल्लीनाथजीकी सौगंध है, यदि बोले तो ! मुझे ही उतरने दो।' 2 तब रार्यासहसे हठ करके कुंभा घोड़ेसे उतरा। 3 डेरेमें जाकर हेमेको प्रणाम किया। 4 कुंभा कहता है कि 'हेमाजी ! पहले प्रहार तुम करो। 5 हेमा कहता है कि—'कुंभा ! तू बालक है। मैं तो अनेक बार प्रहारों पर नीमके पट्टे बंधवा चुका हूं। अर्थात् अनेकों प्रहार सहन किये हैं। नींब बंधावणो = घावों पर नीमके पट्टे बँधवाना। 6 तेरे शरीरमें अभी तक कोई प्रहार नहीं लगा है। 7 मैं बड़ा हूं, मैं पहले कैसे प्रहार करूं ? 8 कुंभा कहता है, हेमाजी ! वर्षोंमें तुम बड़े जरूर हो, परंतु पदमें मैं बड़ा हूं। तुमने हमारा अन्न खाया है, हमारे चाकर हो और फिर आयुमें बड़े। अतः पहले तुम घाव करो।' 9 तब हेमाने कहा—'जब तू मानता ही नहीं है, तो मैं क्या करूं ? विवश हूं।' 10 तब हेमाने कुंभे पर प्रहार किया। तलवारकी बाढ़ ऐसी चली कि जिससे गोल चक्केकी भांति खोपड़ी कट गई, टोप कट गया और भौंहोंको काटती हुई कानकी नोक पर आ लगी। 11 कुंभेने ऐसा प्रहार किया कि हेमाके दो टुकड़े कर दिये। हेमा गिर गया। कुंभेने अपनी कटारी निकाल कर हेमेकी छातीमें मारी और फिर उसको पकड़ कर ऐसा फिराया कि पसलियोंकी हड्डियां तोड़ती हुई उसकी ताड़ियाँ भी टूट गईं। 12 पासमें खड़े हुए अपने आदमियोंको कहा कि—'मालाणा कटकके सरदारोंको कहना कि कटारीको हेमाकी छातीमें तोड़ा है, मेटों पर नहीं तोड़ा है।

हेमो अजूंस जीवै छै[1] । इतरै साथ महेवैरो आयो । कह्यो–'जी साथ आयो ।' हेमो बोलियो–'रे कुण छै[2] ?' कह्यो–'जगमाल छै ।' ताहरां हेमै कहाड़ियो–'राज ! किसै वासतै[3] ?' कह्यो–'जगमाल ! तोमें दोय चूक छै । म्हारो जीव नीसरै ताहरां आए[4] ।' ताहरां कह्यो–'जी, किसो चूक मोमें[5] । ताहरां कह्यो–'एक तो तैं मो सारीखो रजपूत घोड़ैरै वासतै काढियो[6], सु सात ७ वरस तांई[7] महेवैरी धरती वसण न दीधी । नहीं तो सातवीस गांव महेवै वांसै हुता । अर वळै घणी धरती वांसै घालत । राज वधण न दीधो[8] । बीजो, तैं कूंभैरी मानै दोहाग दीधो[9] । जे तैं कूंभैरी मानैं रात दीनी हुवंत. तो इसड़ा रतन २१४ पैदा हुवंत, तो घर भलो दीसंत[10] । तोमें मोटा दोय अवगुण हुआ । जे आंपां मेळ हुवंत तो कितरी धरती लेवंत[11] ।' इतरै हेमैरो ही हंस उडियो[12] । जगमालजी उतरिया । साथ सोह उतरियो । दाग दियो[13] ।

एकठा हुयनै महेवै आया[14] । हेमैरै बेटैनूं तेड़नै वास वसायो[15] । कूंभै सोढी परणी हुती सु सेजवाळो आयो । सोढी महेवै आयनै सती[16] हुई । जगमाल महेवै सुखसूं राज करै छै ।

दूहा

हेमो होठ डसेह[17], खड़ग जु आछंटचां[18] खत्री ।
भूंहारा[19] भांजेह, कूंभै कांणेठै[20] गई ।। १

1 हेमा तो अभी तक जीवित हैं । 2 अरे ! कौन है ? 3 आप किसलिये आये हैं ? 4 जगमाल ! तेरे दो अपराध हैं । तू मेरा जी निकल जाय तब आना । 5 मेरेमें कौनसा अपराध है ? 6 एक तो तूने मेरे जैसे राजपूत को एक मात्र घोड़ेकी बातके लिये निकाल दिया । 7 तक । 8 और और भी बहुतेरी भूमि महेवेके अधिकारमें डालता । तुम्हारा राज्य बढने नहीं दिया । 9 दूसरी बात, तूने कुंभेकी माताको अमान्य कर दिया । 10 जो तूने कुंभेकी माताको सम्मान्य करके ऋतुदान दिया होता तो ऐसे २१४ रत्न और पैदा हुए होते और जिससे तुम्हारा घर शोभा पाता । 11 जो अपने आपसमें मेल होता तो कितनी ही धरती और अधिकारमें कर लेते । 12 इतनेमें हेमेके प्राण-पंखेरू उड़ गये । 13 अग्नि-संस्कार किया । 14 सभी इकट्ठे होकर महेवे आये । 15 हेमाके बेटेको बुला कर अपने यहां रखा । 16 सोढी महेवे आकर सती हुई । 17 होंठ डसते हुए । 18 प्रहार किया । 19 भौंहें । 20 कनपटी ।

घणूं वखाणूं घाव, कूंभांणा[1] ! भागै-कमळ[2] ।
हेमो जिण हाथाव[3], भुंइ[4] पड़ियौ भख छै जहीं ॥ २
डसै अहर[5] जमदूत, मछर[6] छिळंतै भेलियो ।
कूंभै वाळो कूंत[7], हेमै वप[8] सांसर हुवो ॥ ३

॥ इति वात संपूर्णम् ॥

1 हे कुंभा ! 2 सिर टूट जाने पर, बिना सिरके । 3 हाथोंसे । 4 भूमि । 5 अधर, होंठ । 6 क्रोध । 7 भाला । 8 शरीर ।

॥ श्री गणेशायनमः ॥

अथ वात वीरमजीरी लिख्यते

वीरमजी महेवैरै पासै गूढ़ो[1] कर वसिया छै। सु जिकोई महेवै मांहै खून कर वीरमजीरै गूढ़ै आवै तियेनूं वीरमजी राखै[2]। वांसै कोई आवण पावै नहीं[3]। ईयै भांत रहै।

एकदा प्रस्ताव। जोईयो दलो गुजरात चाकरी गयो हुतो भाईयांसूं विढनै[4]। उठै गुजरात घणा दिन रह्यो। ओथ वीमाह कियो[5], घणा दिन रह्यो। उठासूं दलारी इच्छा ऊपनी, देस जाईजै[6]। ताहरां उठाहूं चालियो[7]। आवतो-आवतो महेवै आय नीसरियो। आय कूंभाररै घरै डेरो कियो छै। साथै लुगाई छै, कूंभारीनै कह्यो–'एक नाई ल्याव, जु म्हारी खिजमत करै[8]। कूंभारी नाई बुलाय लाई। नाई खिजमत कीधी। नाई घोड़ी दीठी[9]। द्रव्य कनारो दीठो[10]। नाई जोयनै जगमालजी मालावतनूं कह्यो–'एक कोई धाड़वी आयो छै[11], कूंभारीरै उतरियो छै। उवैरै सखरी घोड़ी छै[12]। राज! एक बैर बोहत फूटरी छै, पदमणी छै[13]।' ताहरां आदमी मेलियो। खबर कराई। कह्यो–'जावो खबर करो, कुण छै?' ताहरां आदमी कुंभारीरै घरै आया, जासूस थका[14]। देख अर गया। ताहरां कूंभारी बोली–'ठकुराळा! तो ऊपर चूक छै[15]।' कह्यो–'जो, कैरो[16]?' कह्यो–'बाबा! तोनूं मारसी[17], घोड़ी नै थारी बैर लेसी[18]। कह्यो–'कुण?

---

1 रक्षा स्थान। 2 कोई भी व्यक्ति महेवेमें कोई अपराध (हत्या) करके आ जाये उसे वीरमजी अपने यहां रख लेते हैं। 3 उसके पीछे कोई नहीं आने पाता। 4 जोईया दला अपने भाइयोंसे लड़ कर गुजरातमें चाकरी करनेको चला गया था। 5 वहीं विवाह किया। 6 वहां दलाकी इच्छा हुई कि अब देशको जाना चाहिये। 7 तब वहांसे रवाना हुआ। 8 एक नाईको बुला ला जो मेरी हजामत बना ले। 9 नाईने दलाकी घोड़ीको देखा। 10 उसके पासका धन भी उसने देखा। 11 कोई एक लुटेरा आया है। 12 कुम्हारीके यहां ठहरा हुआ है। उसके पास बढ़िया घोड़ी है। 13 उसके साथ एक स्त्री बहुत सुंदर है, पद्मिनी ही है। 14 तब जासूस होकर कुम्हारीके घर पर आदमी आये। 15 हे ठाकुर! तेरे पर धोखा है। 16 किसका। 17 तुझको मारेंगे। 18 घोड़ी और तुम्हारी स्त्रीको ले लेंगे।

कह्यो–'गांमरो ठाकुर ।' ताहरां कह्यो–'किही ऊवरूं हो[1] ।' कह्यो–'जी, वीरमजीरै गुढ जावो तो ऊवरो। ताहरां घोड़ै पलांण मांडि असवार हुवो। वैरनै साथै ले वहीर हुवो[2]। वीरमजीरै गुढै जाय पहुंतो[3]। खवर हुई, ताहरां साथ अपूठो गयो[4]। कह्यो–'जी, ऊ तो[5] वीरमजीरै गूढै गयो। ताहरां जगमाल वैस रह्यो[6]।

दिन ५।७ वीरमजी दलै नूं राख अर विदा दीनी[7]। ताहरां दलै कह्यो–'वीरमजी ! आज वाळा दिन थांहरा दिया छै[8]। जे थे मांहरै गूढै आवस्यो तो म्हे थांरा हीड़ा करस्यां[9]। थांहरा रजपूत छां[10]।' ताहरां दलैनूं वीरमजी पोहचतो कियो।

पछै मालैजीरा वैटां नै वीरमजी वणै नहीं[11]। ताहरां वीरमजी महेवो छाडनै जेसळमेर आयो। जेसळमेर ही टिकियो नहीं[12]। ताहरां अपूठो नागोर आयो[13]। नागोर ही रह्यो नहीं। ताहरां नागोररै देसरो उजाड़ कियो। गांम लूटि अर जांगळू आया[14]। ताहरां जांगळूं मांहै ऊदो मूळावत हुतो[15]। कहियो–'वीरमजी ! थे आघा खड़ो। म्हांसूं थे राखिया न जावो[16]। नागोररो थां उजाड़ कियो। वांसै वाहर हूं पालीस[17]। थे आगै जोईये पधारो।' ताहरां वीरमजी आघा जोईयां पधारिया[18]।

वांसै साथ नागोररो आयो। आय जांगळू डेरो कियो। ओ कोट जड़ि वैस रह्यो[19]। ताहरां खांन ऊदैनूं कहाड़ियो–'माल ल्यावो, अर

---

1 किसी प्रकार वचूं भी। 2 स्त्रीको साथ लेकर रवाने हुआ। 3 पहुंचा। 4 जब यह मालूम हुआ (कि दला यहांसे चला गया है) तो जगमालका साथ लौट गया। 5 वह। 6 तव जगमाल विवश होकर वैठ गया। 7 पांच-सात दिन रख कर वीरमजीने दलेको जानेकी आज्ञा कर दी। 8 तव दलेने कहा—वीरमजी ! ये दिन आपके दिये हुए हैं। 9 तुम हमारे गूढे (निवास-स्थान) पर आवोगे तो हम तुम्हारी सेवा करेंगे। 10 हम तुम्हारे राजपूत हैं। 11 अव मालाजीके वेटों और वीरमजीके पटती नहीं। 12 जैसलमेरमें भी टिक नहीं सका। 13 तव लौट कर नागौर आया। 14 तव नागौर प्रान्तको उजाड़ कर दिया और वहांके गांवोंको लूट कर जांगलू आ गया। 15 था। 16 वीरमजी ! आप आगे चले जायं, हमारेसे आपका रखना बन नहीं पाता। 17 आपके पीछे वाहर आयेगी उसको मैं रोकूंगा। 18 तव वीरमजी आगे जोईयोंके यहां चले। 19 यह कोट बंद करके वैठ गया।

वीरम ल्यावो[1] ।' ताहरां खांनसूं ऊदो मिलण आयो। ताहरां खांन ऊदैनूं पकड़ लियो। कहियो–'जी ! वीरम ऊदैरै पेट मांहै छै।' ताहरां ऊदैरी मानूं बोलाई। कह्यो–'वीरम वावड़ो, नहीं तर ऊदैरी खाल कढाऊं छूं, अर भुस भराऊं छूं[2]।' ताहरां ऊदैरी मा कनै ऊभी राखी छै[3]। अर कह्यो–'जी, खाल काढ़ो[4]।' ताहरां ऊदैरी मां बोली–'वीरम तो ऊदैरी खाल मांहै न छै; 'वीरम ऊदैरै पेट मांहै छै, पेट फाड़ो।' ताहरां खांन बोलियो–'देखिया रे ! रजपूतांणियांका बळ[5]। बेटै ऊपर कांन नहीं हिलाती है[6]।' ताहरां खांन महरवांन हुयनै ऊदैनूं छोड़ियो। वीरमरो गुनो बगसियो[7]। खांन उपरांठो फिर नागोर गयो[8]। ऊदो जाय जांगळू बैठो।

हिवै वीरमजी जाय जाईये रह्यो[9]। जोईयां घणो आदर दियो। घणा हीड़ा किया[10]। कह्यो–'वीरमजी विखैमें आया छै, बेखरच छै[11]।' ताहरां दांण मांहैं विसवो कर दियो[12]। वडी भायप कीधी[13]। अठै वीरमजीरा कांमेती दांण ऊपर बैसै[14] रातिरो हैंसो वैंहचाइ दै[15]। कदै सरब गोलक मेल आवैं। कहै–थे सवारै लेज्यो[16]। जे नाहर बकरी मारै तो एकै बकरीरो इग्यारह बकरी लै। कहै नाहर तो जोईयांरो छै[17]।

---

1 तब खानने ऊदाको कहलवाया कि 'माल लाओ और वीरमको भी लाओ।' 2 तब ऊदाकी माको बुलवाया और उससे कहा कि 'वीरमको बतलाओ, और नहीं बतलाती हो तो तुम्हारे सामने ऊदाकी खाल खिंचवाता हूँ और उसमें भूसा भरवाता हूँ।' 3 तब ऊदाकी मांको पासमें ला कर खड़ी कर दी है। 4 और कहा कि 'खाल खींच लो।' 5 तब खान बोला—'अरे देखा तुम लोगोंने ! राजपूतानीके साहसको।' 6 अपने बेटेके लिये कोई विरोध नहीं कर रही है। 7 वीरमका अपराध भी माफ कर दिया। 8 खान लौट कर नागौर चला गया। 9 अब वीरमजी जोईयोंके यहां जा कर रहे। 10 बहुत सेवा की। 11 वीरमजी आपत्तिके मारे यहां आये हैं, पासमें खर्ची (रुपया-पैसा) नहीं है। 12 मालगुजारीमें उनका भाग डाल दिया। 13 बड़े ही भाईचारेका व्यवहार किया। 14 अब यहां मालगुजारी की वसूलीके लिये वीरमजीने अपने कर्मचारियोंको बैठा दिया है। 15 रातको मालगुजारीमें से उनका हिस्सा बाँट कर उन्हें दे देते हैं। 16 कभी सभी आमदनी अपने गोलकमें रख देते हैं और उन्हें कह देते हैं कि कलकी आमदनी सब तुम ले लेना। 17 यदि कोई नाहर बकरीको मार देता है तो एक बकरीकी जगह ग्यारह बकरी वसूल करते हैं और कहते हैं कि नाहर जोईयोंका है।

एकदा प्रस्ताव । वुकण भाटी आभोरियो, सु जोईयांरो मांमो छै । सु वुकण पातसाहरो साळो हुतो[1] । सु वुकण नै वुकणरो भाई वेऊ दिल्ली हुता[2] । सु पातसाह कहै–'मुसलमांन हुवो ।' ताहरां वुकण नास अर जोईये आयो[3] । अर भाई मुसलमांन हुवो[4] । ताहरां वुकण जाईयांमें रह्यो । ताहरां वुकणरै पातसाहरै घररो माल, विध-विधरा विछावणा दुलीचा, कपड़ा वीरमजी दीठा[5] । ताहरां वुकणनूं कह्यो–'भाटी ! म्हांनूं भगत कर[6] ।' ताहरां वुकण कह्यो–'वीरमजी ! थांनूं भगत करीस[7] ।' ताहरां वुकण भगतरी तयारी कीधी[8] । वीरमजीनूं तेड़िया[9] । ताहरां वीरमजी रजपूतांनूं कह्यो–'आंपै वुकणनूं मारिस्यां[10] ।' भगतरै मिस जायनै मारिस्यां[11] । ताहरां रजपूतां कह्यो–'भलां राज[12] !' पछै वुकणरै डेरै आय वुकणनूं मारियो । डेरो लूटि माल लियो । घोड़ा लिया । आपरै डेरै ले आया ।

हिवै जोईयांरै मनमें सोच पड़ियो[13] । 'जोरावर आदमी घरमें आय पैठो[14] । कांई नां मारै[15] ?' यु करतां दिन ४-५ हुवा । ताहरां फरवास वढायो, ढोलरै वास्तै[16] । ताहरां पुकार गई । 'राज ! फरवास वीरमजीरै लोकै वाढियो[17] ।' तोई जोईयां गई कीवी[18] । कह्यो–'वीरमजीसूं आंपां तोड़णी नहीं[19] ।' ताहरां दलैनूं वीरमजी तेड़ायो[20] । 'चूक कर मारूं ।' इसी विचारी[21] । ताहरां दलो आयो । खड़सलै एकी

---

1 यह वुक्कण बादशाहका साला होता था । 2 वुक्कण और वुक्कणका भाई दोनों दिल्लीमें थे । 3 तब वुक्कण भाग कर जोईयोंके यहां आ गया । 4 और उसका भाई मुसलमान हो गया । 5 तब वुक्कणके यहां विविध प्रकारके विछौने, गलीचे और कपड़े आदि बादशाहके घरका माल वीमरजीने देखा । 6 तब वुक्कणको कहा कि–'भाटी ! हमारी आव-भगत करो ।' 7 तब वुक्कणने कहा–'वीरमजी ! मैं आपको गोठ (प्रीति-भोज) दूंगा । 8 तब वुक्कणने गोठ देनेकी तैयारी की । 9 वीरमजीको वुलवाया । 10 अपन वुक्कणको मार देंगे । 11 गोठके मिस जा कर मारेंगे । 12 तब राजपूतोंने कहा–'अच्छी वात है राजन् ।' 13 अब जोईयोंको भी चिन्ता हुई । 14/15 जोरावर आदमी घरमें आकर घुस गया । किसीको मार न दे ? 16 तब ढोल वनवानेके लिये एक भाऊका पेड़ कटवा दिया । 17 राज ! भाऊको वीरमजीके आदमियोंने काट लिया । 18 तोभी जोईयोंने कोई ध्यान नहीं दिया । 19 वीरमजीसे अपनेको तोड़ना नहीं है । 20 तब वीरमजीने दलेको वुलवाया । 21 मनमें ऐसा विचार किया कि दलेको धोखेसे मार दूं ।

तरफ बळद जोतियो नै बीजी तरफ घोड़ो जोतियो[1]। जाहरां मांगळियांणी दलैनूं भाई कियो हुतो[2]। सु चूक मांगळियांणी लखियो[3]। ताहरां दांतण लोटामें उलटो घालियो। घालनै लोटो दांतणरो मेलियो[4]। ताहरां दलै दांतण देख अर अटकळियो[5]। 'जु, चूक छै।' जितरै दलै चाकरनूं कह्यो–'म्हारो पेट कसकसै।' तरै कहियो–'बाहिर भूम चालो।' ताहरां खड़िसल बैस अर घरनूं चालियो[6]। पछै खड़सल छोडि वै हीज घोड़ै चढ़नै खड़ियो[7]। खड़सलनूं एके तरफ बळद जूतो, एके तरफ राठी जूतो। खड़सल ले वुहा[8]। दलो घोड़ै चढ़ अर घरै गयो। तितरै[9] वीरमजी रजपूत एकठा किया। मसलत करनै आया[10]। पूछियो–'दलो कठै?' कह्यो जी–'पेट कसकसतो सु जंगळै गयो[11]' ताहरां दलियै गहिलोत कह्यो–'दलो गयो।' ताहरां कह्यो–'खड़सल बैठो कितरीइक दूर जासो[12]।' कहियो–'जी खड़सल छोड़ै असवार हुसी[13]। खबर करो।' ताहरां असवार चढ़ियो। जाय देखै तो एक तरफ बळद जूतो छै, बीजी तरफ आदमी जूतो छै। खड़सल लीयै जाय छै। आयनै खबर दी–'दलो गयो।' ताहरां रजपूतां कह्यो–'चूक थांहरो वै लाधो।' ताहरां रजपूतां कह्यो–'सही, जोईया आवसी[14]।' यूं करतां जोईयां साथ करनै गायां लीवी। ताहरां कूक आई[15]। कह्यो–'जी, जोईयां गायां लीवी।' ताहरां वीरमजी चढिया। रजपूत

---

1 खड़सलमें एक ओर तो बैल जोता और दूसरी ओर घोड़ा जोता। खड़सल = दो बैलों वाली एक सवारी बैलगाड़ी। 2 उन दिनोंमें वीरमजीकी स्त्री मांगलियाणीने दलेको अपना भाई बनाया था (धर्म-भाई बनाया था)। 3 इस धोखेकी बातका मांगलियाणीको पता लग गया। 4 तब (दलेके लिये दातुन करनेको) एक लोटेमें उलटा दातुन रख कर दातुनका लोटा भेजा। 5 तब दलेने दातुन देख कर (धोखेका) अनुमान कर लिया। 6 इतनेमें दलेने नौकरसे कहा–'मेरे पेटमें दर्द हो रहा है।' तब उसने कहा–'शौच हो आओ।' तब खड़सलमें बैठ कर घरको चल दिया। 7 पीछे खड़सलको छोड़ कर उसी घोड़े पर चढ़ कर चल दिया। 8 खड़सलमें एक ओर बैल और एक (दूसरी) ओर राठी जुता, इस प्रकार खड़सल लेकर चले। 9 इतनेमें। 10 परामर्श करके आये। 11 पूछा कि–'दला कहां?' उत्तर दिया कि पेटमें दर्द हो रहा था सो शौचको गया है। 12 खड़सलमें बैठा हुआ कितना दूर जायेगा। 13 खड़सलको छोड़ कर घोड़े पर सवार होगा। 14 तब राजपूतोंने कहा कि–'अब सही ही जोईये हमारे ऊपर चढ़ कर आयेंगे।' 15 जोईयोंने अपना संगठन करके किसीकी गायें छीन लीं। तब पुकार आई।

सरब चढिया। लड़ाई हुई। वीरमजी अर देपाळ जोईयो वाजिया[1]। जोईयैनूं वीरमजी मारियो। वीरमजी आप ठोड़ रह्यो[2]।

पछै गांम वडेरणसूं वीरमजीरै राजलोकनूं ले अर रजपूत नोसरिया[3]। सु चूंडैनूं आवतां धाय एकै आक हेठै मूंकियो हुतो सो वीसर गई[4]। कोस एक परै गया, ताहरां चूंडैनूं संभाळियो[5]; देखै तो नहीं। ताहरां हरिदास दलावत घिरियो[6]। आगै देखै तो साप छत्र ऊपर कर बैठो छै। ताहरां हरिदास डरियो। दीठो–'कासूं जांणीजै?' नैड़ो गयो[7]। ज्युं साप सिरक अर बिल पैस गयो[8]। ताहरां हरिदास चूंडैजीनूं संभाहिनै ले आयो। आयनै मा री गोदी दियो। जसहड़रो चूंडोजी मांगळियांरो दोहीतरो[9]। गोगादे, देवराज, जैसिंघ ऐ तीन भाई।

यूं करतां मारगमें वहतां[10] एक राठी मिळियो। तिकैनूं[11] पूछियो। कहियो–'ओ किसो विरतंत[12]?' ताहरां राठी कह्यो–'ओ लड़को छत्र-धारी राजा हुसी।' ताहरां रावळगन भेळो हुवो। पद्रोलायां पधारिया[13]। ताहरां चूंडैजीरी मा कह्यो–'म्हारै धणी सेती कांम छै, आंतरो हुवै छै, हूं सती हुईस[14]। ताहरां चूंडोजी धायनूं दियो। अर धरती माता सूर्यनूं भळाई[15]। अर कह्यो–'आल्हो चारण छै, तिणरै खोळै देज्यो[16]।' चूंड़ैजीरी मा सती हुई। मांगळियांणी सती हुई। दोय सती हुई। लोक सह कोई विखर गयो[17]। गोगादे, देवराज,

---

1 वीरमजी और देपाल जोईया परस्पर लड़े। 2 जोईयाको वीरमजीने मार दिया और वीरमजी स्वयं काम आ गया। 3 पीछे वड़ेरण गांवसे वीरमजीके जनानाको लेकर राजपूत लोक निकल गये। 4 सो आते हुए मार्गमें चूंडेकों धायने एक आकके नीचे रख दिया था सो वहीं भूल गई। 5 एक कोस आगे निकलने पर चूंडेको सम्हाला। 6 तब हरिदास दलावत उसे लेनेके लिये वापिस लौटा। 7 देखा–'क्या जाना जाय?' पास गया। 8 ज्योंही सांप सरक कर बिलमें घुस गया। 9 चूंडाजी, जसहड़ मांगलियाका दोहिता है। 10 चलते हुए। 11 उसको। 12 यह क्या वृत्तान्त है? 13 तब सभी राज-परिवारके लोग इकट्ठे हुए और वहांसे पद्रोलाया गांवको आये। 14 तब चूंडाजीकी माताने कहा–'मेरे तो अपने स्वामीसे ही काम है, अंतर बढ़ रहा है अतः मैं सती होऊंगी। 15 तब चूंडाजीको तो धायके सुपुर्द किया और धरती (देश)को सूर्यके सुपुर्द किया। 16 इस बच्चेको आल्हा चारण है उसकी गोदमें देना। 17 और सभी लोग बिखर गये।

जैसिंघ तीनै ठाकुर नांनांणै ले गया। चूंडोजी आल्है चारण रै घरै पूगतो कियो[1]। आल्हो भली भांत राखै। घर मांहै आसरो धायनूं मांड दियो[2]। धाइ बैठी पाळै[3]। छांनौ राखीजै[4]। ईयै जिनस चूंडोजी म्होटा हुवै छै[5]।

---

1 पहुँचा दिया। 2 घरमें एक आश्रय-स्थान धायके रहनेके लिए बनवा दिया। 3 धाय उसमें बैठी हुई चूंडेका पालन करती है। 4 गुप्त रखा जा रहा है। 5 इस प्रकार चूंडोजी दिन दिन बड़े हो रहे हैं।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वात रावजी चूंडैजीरी लिख्यते

चूंडैजीनूं धाय लै अर आल्है चारणरै घरै काळाऊ गांव जायनै रही[1]। आल्हैनूं कह्यो[2]—'बाई जसहड़ सती हुतां थांनूं आसीस कही छै, अर कह्यौ—'इयै लड़कैनूं भली भांत राखज्यो, कहीनै जणावो मतां। थांहरै खोळै दियो छै[3]।' ताहरां आल्हो लोकांनूं कहै—'ईयै रजपूतांणीरो बेटो छै[4]; आय रही छै।' उठै चूंडैजीनूं धाय पाळै। केहीनूं कहै नहीं—वीरमजीरो बेटो छै[5]। ज्यौं वरसां ८-९ रो हुवो–फिरियो टावरां मांहै रमै[6]।

एक दिन वरसातरा दिन छै। सु केरड़ा जंगळ मांहै उछर गया[7]। केरड़ां वाळा नीसर गया। चारण रा केरड़ा घरै रह गया[8]। ताहरां चारणरी मा बोली–'बेटा चूंडा! केरड़ा आघेरा जंगळ मांहै टोवड़ा चरै छै, तियां मांहै भेळ आव[9]।' ताहरां चूंडो केरड़ा ले अर भेळण गयो[10]। केरड़ा कठै ही लाधा नहीं[11]। ताहरां आप चरावण लागो[12]। तितरै चारण घरै आयो[13]। चूंडो घरै नहीं छै। ताहरां चारण पगैपगै तेड़णनूं हालियो। कहियो–'मा वुरो कियो। चूंडैनूं मेलणो न हुतो[14]।' आगै चूंडै केरड़ा जंगळमें ऊभा कर नै आप रूंखरी छांह सोय रह्यो[15]। ताहरां सरप विल मांहैसूं नीसर नै[16] चूंडैरै

---

1 धाय चूंडाजीको लेकर कालाऊ गांवमें आल्हा चारणके घर पर जाकर रह गई। 2 आल्हाको कहा। 3 जसहड़ बाईने सती होनेके समय तुम्हें आशिष कहा है और कहा है कि—'इस लड़केको भली भांति रखना। किसीको मालूम नहीं होने देना। तुम्हारी गोदमें (रक्षणमें) दिया है। 4 इस राजपूतानीका लड़का है। 5 वहां पर धाय चूंडाजीका पालन-पोषण कर रही है और किसी पर यह जाहिर नहीं होने देती कि—'यह वीरमजीका पुत्र है।' 6 अब जबकि चूंडाजी ८-९ वर्षका हो गया; बच्चोंके साथ फिरता हुआ खेलता है। 7 बछड़े तो जंगलमें हूँक गये। 8 चारणके बछड़े घर पर रह गये। 9 तब चारणकी मां ने कहा—'बेटा चूंडा! इन बछड़ोंको दूर जंगलमें जहां बछड़े चर रहे हैं, उनमें शामिल कर आओ।' 10 तब चूंडा बछड़ोंको उनमें शामिल करनेको ले गया। 11 बछड़े कहीं मिले नहीं। 12 तब स्वयं चराने लग गया। 13 इतनेमें चारण घर पर आया। 14 तब चारण पदानुसरण करता हुआ उसे बुलाने गया। 15 चूंडा बछड़ोंको जंगलमें (एक जगह) खड़े कर के स्वयं एक वृक्षकी छायाके नीचे सो गया। 16 निकल कर के।

माथै छत्र कर बैठौ। तितरै चारण गयो। देखै तो चूंडैरै माथै ऊपर छत्र करनै सरप बैठो छै। ज्युं मिनखरी किड़वा हुई त्युं सरप सिळक नै रूंख मांहै पैस गयो[1]। ताहरां चारण नजीक जाय नैं चूंडैनूं जगायो। कह्यो–'बाबा! तूं क्युं आयो जंगळमें? घरै चाल।' ताहरां घरै ले आयो। आय मानूं कह्यो–'मा! तैं बुरो कियो। चूंडैनूं आज पछै मतां मूंकै[2]।'

पछै चारण एक घोड़ो लायो। हथियार लायो। वागो करायो[3]। चूंडैनूं घोड़ै चाढ़ि अर महेवै गयो। आगै रावळ मालैजीरै सारो मुदो नाई ऊपर छै[4]। ताहरां नाईनूं सिळियो। नाईनूं घणी भोळावण दीनी[5]। नाई कह्यो–'रावळजीरै पावै घातो[6]।' ताहरां भलो दिन देख नै रावळजीरै पाए लगायो। रावळजी दिलासा दीधी[7]। हिवै चंवडोजी रावळ मालैजीरी चाकरी करै। एक दिन रावळजीरै ढोलियै हेठै सोय रह्यो[8]। नींद आय गई। ताहरां रावळजी पोढण पधारिया। ताहरां ढोलिया तळै आदमी दीठो। ताहरां जगायो। रावळजी महरबान हुवा। नाई पण विनती कीधी। कहियो–'राउ! चंवँडो भलो रजपूत छै। काई एक खिजमत सांपीजै[9]। ताहरां कह्यो–'गुजरात सांमी चोकी राखौ[10]।' अर कह्यो–'रजपूत साथै हुवौ।' ताहरां सिखरो बोलियो–'रावळजी! मोनूं समझ अर देज्यो[11]।' कहियो–'जी, म्हें हुकम करां छां, थे जावो।' ताहरां ईंदा साथै दिया। चंवंडैनूं घोड़ो, सिरपाव दे विदा कियो। ताहरां चंवडो काठै थांणै जाय बैठो। बडा जाबता कीधा[12]। कितराइक दिन हुवा, ताहरां एक घोड़ांरी

---

1 जैसे ही मनुष्यका पदचाप हुआ, सर्प रेंग कर के एक वृक्षकी जड़ोंकी खोहमें घुस गया। 2 चूंडेको आजके बाद फिर कभी मत भेजना। 3 वागा बनवाया। 4 वहां रावल मल्लीनाथजीका सारा दारोमदार एक नाईके ऊपर है। 5 नाईको बहुत सिफारिश की। 6 इसे रावलजीके पाँवों लगाओ। 7 रावलजीने आश्वासन दिया। 8 एक दिन रावलजीके पलंगके नीचे सो रहा। 9 इसे कोई सेवा सौंपिये। 10 तब कहा–गुजरातके ओरकी चौकी पर रखा जाय। 11 तब सिखराने कहा–मुझे समझ कर साथमें देना। 12 तब चूंडा काठाके थाने पर जाकर बैठ गया और वहां उसने अच्छा प्रबन्ध कर दिया।

सोबत आई[1] । सु सोदागरां कनां घोड़ा खोस लिया[2] । घोड़ा रजपूतांनूं वकस दिया[3] । एक घोड़ो आप राखियो । पुकार दिल्ली गई । अहदी आयो । घोड़ा ल्यावौ । मालैजीनूं जोर पड़ियो[4] । घोड़ा मांगीजै[5] । ताहरां मालैजी आदमी मूकिया[6] । कह्यो–'चंवडा घोड़ा ल्याव ।' ताहरां कह्यो–'घोड़ा तो वैंहच दीधा[7] ।' घोड़ो एक हुतो सु कह्यो–'ओ छै, लीयै जावौ ।' ताहरां मालैजीनूं खबर दीनी । घोड़ा नहीं । ताहरां मालैजी घोड़ा सीलिया[8] । अर कह्यो–'चांवडो देसमें रहण न पावै[9] ।' ताहरां चंवडो ईंदावटी आयो[10] । ईंदां कनै रहै । अठै साथ कियो । साथ कर नै डीडवांणो मारायो । द्रव्य ले आयो[11] ।

हिवै मंडोवर राज तुरक करै[12] । ताहरां मंडोवररै धणी घास एकठो करावणो मांडियो[13] । ताहरां कह्यो–'गांम-गांम[14] दोय दोय घासरी गाडी मंगावो ।' ताहरां ईंदांरै गांम घास मंगाजै । ताहरां ईंदां कह्यो–'ल्यावां छां[15] ।' ताहरां ईंदै चंवडैनूं कह्यौ–'आंपै मंडोवर लेस्यां[16] ।' ताहरां कह्यौ-'भलां ।' ताहरां रजपूत सरब एकठा हुवा । मंत्र कियो[17] । ताहरां च्यार-च्यार ठाकुर गाडी मांहै बैठा । एक खाड़ेती हुवो[18] । एक एक आदमी गाडीरै कनारै हुवो[19] । हथियार सिगळांरा[20] गाडियां मांहै राखिया अर गाडियां चलाई । पाछलै पोहररी[21] गाडियां आई अर[22] गाडियां कोट मांहै पैसण लागी[23] । भारा बे-बे गाडा मांहै घास हुतो[24] । एक मुसलमांन दरोगो हुतो,

1 कितनेक दिन बीत गये, तब एक दिन एक घोड़ोंका काफिला वहां आया । 2 सौदागरोंके पाससे घोड़े खोस लिये । 3 सभी घोड़े राजपूतोंको बाँट दिये । 4 मालाजी पर दबाव डाला गया । 5 घोड़े मांगे जा रहे हैं । 6 तब मालाजीने आदमी भेजा । 7 घोड़े तो बांट दिये । 8 तब मालाजीने घोड़े प्रतिदानस्वरूप दिये । 9 और कहा–चूंडा देशमें नहीं रहने पाये । 10 तब चूंडा वहांसे ईंदावाटीमें आ गया । 11 यहां उसने अपना संगठन बनाया और डीडवानाको लूटा और मालमत्ता ले आया । 12 इस समय मंडोरमें तुर्कोंका राज्य है । 13 तब मंडोरके स्वामीने घास इकट्ठा कराना शुरू किया । 14 प्रत्येक गांवसे । 15 लाते हैं । 16 तब ईन्दोंने चूंडाको कहा–'अपन मंडोर लेंगे ।' 17 परामर्श किया । 18 एक हांकने वाला बना । 19 एक-एक आदमी प्रत्येक गाड़ीके किनारे (साथमें) होकर चला । 20 सबके । 21 पिछला प्रहर । 22 और । 23 प्रवेश करने लगीं । 24 प्रत्येक गाड़ेमें दो-दो भारे घास भरा हुआ । भारा = घासका बड़ा भार, बंडल ।

तियै बरछो मांहै वाही[1] । देखै, घास थोथा तो है नहीं[2] ? ताहरां बरछी एक रजपूतरै साथळै लागो[3] । अर अपूठी खांची ताहरां कपड़ैसूं बरछीरो लोही पूंछ नांखियो[4] । दरोगो बोलियो–'रजपूतां ! क्या खड़हरयां सब अैस्यां हीं होय[5] ? दग-दग गाडियां चाली गई । सरब गाडियांरो छेह आयो, ताहरां संझ्या हुई । रात पड़ी[6] । ताहरां गाडियां मांहै थी रजपूत नीसरिया[7] । जाय अर प्रोळां जड़ी[8] । तुरकांनूं मार चंवडैजीरी आंण फेराई[9] । मंडोवर लियो[10] । धरती मडोवररी मांहैसूं तुरक खदेड़ काढिया[11] ।

मालैजी सुणियो–'चंवडै मंडोवर लियो ।' ताहरां मालोजी साथ कर अर चंवडैजी कनै आया । चूंडोजीसूं मिळिया । कह्यो–'साबास सपूत !' ताहरां भगतरी तयारी हुई[12] । मालोजी बोलिया–'लोक घणो छै[13] । इयांनूं नियारा बैरावो[14] । आंपै भेळा जीमस्यां[15] ।' ताहरां सवणीए बियो पटाभिषेक कियो[16] । राव चंवडोजी कहांणो[17] । रावळ मालोजी महेवै गयो । चंवडोजी भली-विध[18] मंडोवर राज करै छै । चंवडैजी बीजी ही धरती घणी लीवी[19] । वीमाह १० किया । १४ बेटा हुवा[20]–

१ राव रिणमल ।	१ अड़कमल[21] ।
१ सतो ।	१ रणधीर ।

1 एक मुसलमान दरोगा था जिसने गाड़ी (के घासमें) बरछीका प्रहार किया । 2 देखता है कि, कहीं घास थोथा तो नहीं है ? 3 तब बरछी एक राजपूतकी जंघामें लगी । 4 और जब बरछीको वापस खींचा तो कपड़ेसे बरछीके लगा हुआ खून पोंछ डाला । 5 दारोगेने कहा–राजपूतो ! सभी खड़हेरियां ऐसी ही (भरी हुई) हैं न ? 6 जब सभी गाड़ियोंका अंत आया, तब तक संध्या हो गई और रात पड़ गई । 7 तब गाड़ियोंमेंसे राजपूत निकले । 8 और उन्होंने जाकर पौलें बंद करदीं । 9 मुसलमानोंको मार कर चूंडाकी आन-दुहाई फिरवा दी । 10 मंडोर पर अधिकार कर लिया । 11 मंडोरकी धरतीमें से मुसलमानोंको खदेड़ कर निकाल दिया । 12 तब भोजनकी तैयारी हुई । 13 मालाजीने कहा कि–मेरे साथ बहुत लोक हैं । 14 इनको अलग बिठाओ । 15 अपन एक थालीमें भोजन करेंगे । 16 तब शकुनी लोगोंने चूंडाजीका दूसरा पट्टाभिषेक किया । 17 चूंडाजी 'राव' कहलाया । 18 अच्छी प्रकार । 19 चूंडाजीने दूसरी भी बहुत-सी धरती अपने अधिकारमें कर ली । 20 दस विवाह किये और १४ बेटे हुए (चूंडाजीरा चवदै बेटा, चवदै ही राव कहांणा) । 21 अरड़कमल ।

१ सैंहसमल[1] ।	१ कान्हो ।
१ अजमल ।	१ रांम ।
१ भीम ।	१ लूंणो ।
१ राजधर[2] ।	१ लोलो[3] ।
१ पूनो ।	१ सुरतांण ।

चवदै बेटा हुआ । यूं करतां घणा दिन हुवा[4] । साहबी वधी[5] ।

ताहरां नागोर आया । अठै नागोर खोखर राज करै[6] । खोखर-रै घरै राव चूंडोजीरी साळी हुती[7] । तियै भगतरै वास्तै कोट मांहै बुलाया[8] । राव चूंडोजी कोट मांहै पधारिया । दिन ४।५ मांहै रह्यो । एक दिन रजपूतांसूं कह्यो–'आंपै नागोररो कोट लेस्यां[9] ।'

ताहरां एक दिनरो समाजोग छै । राव चवंडो साथ करनै नागोर मांहै जाय पैठो । रोज आवतो । अपरचो कोई न हुंतो[10] । जायनै खोखरनूं मारियो[11] । बीजो लोग सरब नास गयो[12] । नागोर लियो । दुहाई फेरी[13] । हिवै नागोर आय वैठो[14] । सुखसूं राज करै । सतैनूं मंडोवर राखियो । सतो मंडोवर मांहै राज करै[15] ।

ताहरां राव चवंडोजी एक दिन दरबार जोड़ बैठा छै । जितरै हेक

---

1 सहसमल । 2 'राजधर' नाम केवल अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेरकी प्रतिमें मिला है । अन्य कई प्रतियोंमें यह नाम नहीं मिलता । स्थान रिक्त है ।

वि० –प्रसिद्ध है कि चूंडाजीने ईंदा-पड़िहारोंकी सहायता कर के मुसलमानोंको मंडोरसे मार भगाया । मंडोर सम्हाल रखनेमें अपनेको असमर्थ जान और अपने ऊपर किये गये उपकार-का ऋण चुकानेके लिये ईंदा-सरदार राय धवलोजीने अपनी कन्या चूंडाजीको व्याह कर मंडोर दहेजमें दे दिया—

ईंदांरो उपगार, कमधज कदै न पांतरै ।
चूंडो चंवरी चाढ, दियो मंडोवर दायजै ॥

3 'लाला' नाम भी अन्य प्रतियोंमें लिखा मिलता है । 4 यों करते बहुत दिन बीत गये । 5 वैभव वढ़ा । 6 यहां नागोरमें खोखर राज्य कर रहा है । 7 खोखरकी पत्नी राव चूंडाजीकी साली थी । 8 उसने भोजनके लिये उन्हें कोटमें बुलवाया । 9 अपन नागोरके कोट पर अधिकार करेंगे । 10 सदा आता रहता था इसलिये कोई अविश्वासकी बात नहीं थी । 11 जा कर के खोखरको मार दिया । 12 दूसरे सभी लोग भाग गये । 13 नागौर पर अधिकार कर लिया और अपनी आन-दुहाई फिरा दी । 14 अब (मंडोरसे) नागौर आकर बैठ गया । 15 सत्ता मंडोरमें राज्य करता है ।

हाळी आयो[1]। आयनै कह्यो–'राज ! म्हारै खेत माल छै[2]। हूं हळ वाहतो हुतो सु चरवैरा कांना नीसरिया छै[3]। सु माल धरतो मांहैलो धरतीरै धणीरो छै[4]। तैरै वासतै हूँ थांनूं कहण आयो छूं[5]।' ताहरां रावजी साथै आदमी दिया। 'जावो, काढो[6]।' ताहरां हाळी साथै आदमी लेनै आयो। धरती खिणी पण घणा ऊंडा छेह न आवै[7]। ताहरां आदमी राव चवंडै आगै गया। जायनै कह्यो–'राज ! वासण ऊंडा छै, छेह नावै[8]।

ताहरां रावजी हाथी असवार हुइनै पधारिया छै। आयन वेलदार लगाया। कह्यो–'खिणो।' ताहरां वेलदारां ऊंडा खिणनै काढिया[9]। देखै तो भूंजाईरा वासण छै। चरवा, द्रेगां, कूंडियां, थाळियां[10]। ताहरां कह्यो–'ठाकुरे ! जोवो[11]।' ताहरां रावजी उतरिया। उतरनैं जोया। ऊपर नांनग चावड़ैरो नांमो छै। युं लिखियो छै–'जिको अै वासण वरतावै सु ईयै भांत भूंजाई करै[12]।' ताहरां राव चूंडैजी कह्यो–'वासण परहा बूरो[13]।' ताहरां रजपूत बोलिया–'राज ! कोई एक थोक तो लीजै[14]।' ताहरां रावजी पळी १ उठाय लियो[15]। बाकीरा वासण सरब बूरिया[16]।

ताहरां रावजी नागोर आयनै पळी तोलायो सु पचीस पईसां

---

1 जितनेमें एक कृषक आया। हाळी = १ हल चलाने वाला। 2 कृषकके यहां कृषि संबंधी कार्यकी नौकरी करने वाला। 2 आ कर के कहा–राज ! मेरे खेतमें माल निकला है। 3 मैं हल चला रहा था तब एक देगके किनारे निकले हैं। 4 धरतीमें प्राप्त हुआ वह माल उस धरतीके स्वामीका है। 5 इसके लिये मैं आपको कहनेके लिये आया हूँ। 6 जाओ, निकाल लाओ। 7 धरतीको खोदा परन्तु ऊंडे अधिक होनेसे अंत नहीं आता है। 8 बर्तन ऊडे बहुत हैं अतः अंतका पता नहीं लगता। 9 तब बेलदारोंने गहरा खोद कर के निकाल लिया। 10 निकाल कर देखते हैं तो चरू, देगें, कूंडियें और थालियाँ आदि भूंजाईके बर्तन मिले। 11 तब लोगोंने कहा–ठाकुर ! देखिये। 12 जो इन वर्तनोंको काममें लाये वह इस प्रकार भूंजाई करे। भूंजाई = बड़ा भोज। 13 वर्तनोंको वापिस गाड़ दो। 14 कोई एक वस्तु लेलो। थोक = (१) एक ही प्रकारकी वस्तुओंकी राशि। (२) वस्तु। (३) नग, संख्या। 15 तब रावजीने एक पळी लेली। पळी = घी, तेल आदि द्रवपदार्थ नापनेका एक लंबी डंडी वाला पात्र, टीपरा। 16 शेष बरतन गाड़ दिये।

भर पळी हुवो[1] । ताहरां रावजी हुकम कियो–'घिरत भूंजाईमें ईयै पळी सौं पुरसो[2] । आधो पुरसै तो सुवारनूं सभा दीजै[3] । भरियो पुरसणी रजपूतनूं ।' ईयै भांत राव चूंडौजी राज करै ।

एक दिन अरड़कमल चूंडावत भैंसैनूं घाव कियो[4] । भैंसैरा दोय टुकड़ा किया । ताहरां सहु कोई ठाकुर कहण लागा–'वाह घाव कियो[5] । ताहरां रावजी बोलिया–'कासूं घाव कियो[6] ?' पसू बांधनै घाव कियो। इसो घाव जो राव रांणंगदेनूं अथवा सादै कुंवरनूं करै तो जांणूं घाव कियो[7] । मोनूं भाटी खटकै छै । इयां गोगादेजीनूं विष्टकारी दी हुंती, सु मोनूं दूखै छै[8] ।' ताहरां अरड़कमलजी मनमें जांण रह्यौ । बोलियो नहीं । यूं करतां कितरेहेक दिनै सादै कुंवरनूं अरड़कमलजी मारियो। तै ऊपर राव रांणंगदे मेहराज सांखलो मारियो[9] । तै ऊपरा मेहराजरो भांणजो सोमो राकसियो राव चूंडैजीनूं जाय पुकारियो[10] । कह्यो–'सौ घोड़ा, सौ वीमाह देवां[11] ।' ताहरां राव चूंडोजी चढिया । जायनै पूंगळ कनारै[12] राव रांणंगदे मारियो । ताहरां रांणंगदेनूं मार माल लूटि अर[13] नागोर आयो ।

ताहरां मोहिलरै वेटो जायो, सु घूंटी न दै[14] । ताहरां रावजीनूं खवर हुई । ताहरां कह्यो–'मोहिल कंवरनै घूंटी क्युं न दो ?' कह्यो–'जी, रिणमलनूं विदा देवो तो घूंटी देऊं[15] ।' ताहरां रिणमलनूं

---

1 तव रावजीने नागोर आ कर उस पळीको तुलवाया तो वह पच्चीस पैसे भर नाप की हुई । पच्चीस पैसोंका तोल ४५ तोलोंके लगभग होता है । एक पैसा जो ढब्बूसाई पैसा भी कहलाता है, लगभग पौने दो तोलेका होता है । 2 भुंजाईमें घी इस टीपरेसे परोसा जाय । 3 यदि सुवार (सूपकार) आधा टीपरा परोसे तो उसको सजा दी जाय । 4 एक दिन अरड़कमल चूंडावतने एक भैंसे पर प्रहार किया । 5 तव सभी ठाकुर कहने लगे–'वहुत अच्छा प्रहार किया।' 6 तव रावजीने कहा–'यह क्या घाव किया ?' 7 ऐसा घाव यदि राव राणंगदे अथवा सादे कुंवर पर करे तो घाव किया जाना जाय । 8 इन्होंने गोगादेजीको अपशब्द कहे थे (ताना मारा था) सो मुझे सल रहा है । 9 जिस पर राव राणंगदेने मेहराज सांखलाको मार दिया । 10 जिस पर मेहराजके भानजे सोमा राकसियेने राव चूंडेसे पुकार की । 11 उसने कहा–सौ घोड़े देंगे और (तुमारा तथा तुमारे लोगोंके साथ) सौ विवाह कर देंगे । 12 निकट । 13 और । 14 तव मोहिल रानीने पुत्रको जन्म दिया सो वह उसे जन्मघुट्टी नहीं देती है । 15 रिणमलको निकाल दें तो जन्मघुट्टी दूं ।

तेड़िनै[1] रावजी कह्यो–'तूं सपूत छै। रिणमल बेटा ! तूं विदा कर[2]।' ताहरां रिणमलजी कह्यो–'रावजी ! आ धरती कांन्हैनूं छै। म्हैं ईयैसूं कांम कोई नहीं[3]।' ताहरां रिणमलजी रावजीरै पगां लाग अर सोझत पधारिया[4]।

एक दिन रावजीरै भूंजाईरो घिरत आवतो हुतो, गाडी-वांहणा भरिया[5]। रोज भूंजाईमें बारह मण घी लागतो[6]। राव चूंडोजी वडो दातार। भूंजाई भली। चरवै सुकाळ[7]। सु एक दिन मोहिल घी आवतो दीठो[8]। ताहरां मोहिल पूछियो–'रावजीरै कोई वीमाह छै[9] ?' छोकरी मेलनै खबर कराई[10]। कहियो–'जी, बारह मण घी रोज भूंजाई लागै छै।' ताहरां छोकरी आय कह्यो। ताहरां मोहिल बोली–'रावरो घर युंही लूटीजै छै[11]। ताहरां मोहिल रावजीनूं कह्यो–'भूंजाई म्हारै सारै कीजै[12]। ताहरां भूंजाई मोहिल सारै कीवी छै। ताहरां मोहिल पांच सेर घिरत भूंजाई लागै छै। रावजीसूं कह्यो–'म्हे थांहरै वडी संमार कीवी छै[13]।' ताहरां रजपूत सरब दुमना हुवा[14]। ठकुराई नांन्ही घाली[15]।

कितराइक दिन हुवा, ताहरां रांणंगदेरो बेटो हुतो सु[16] भाटी एकठा किया। पछै मुलतांण जाइनै[17] मुसलमांन हुइनै[18] मुलतांणरी फोज आंणी। भाटीनै तुरक भिळनै आया[19]। ताहरां रिणमलनूं कह्यो–'तूं नीसर[20]। जे तूं जीवतौ छै तो तूं म्हारौ वैर लेईस[21]।

---

1 बुला कर। 2 पुत्र रिणमल ! प्रस्थान कर। 3 तब रिणमलजीने कहा–रावजी ! यह धरती कान्हाके लिये है, मेरेको इससे कोई वास्ता नहीं है। 4 तब रिणमलजी रावजीके चरण स्पर्श कर सोजतको चले गये। 5 एक दिन रावजीके यहां भुंजाईके लिये बैलगाड़ियोंमें भरा हुआ घृत आ रहा था। 6 प्रति दिन भुंजाईमें बारह मन घी लगता था। 7 राव चूंडाजी बड़े दातार अतः भुंजाई अच्छी बनती थी और अतिथि-सत्कार भी अच्छा होता था। (कोई भी आओ, सबका भोजन उनकी ओरसे ही होता था।) 8 देखा। 9 रावजीके कोई विवाह है क्या ? 10 दासीको भेज कर खबर करवाई। 11 रावका घर योंही लुटा जा रहा है। 12 भोजनकी व्यवस्था मेरे अधिकारमें कर दीजिये। 13 हमने तुम्हारे बड़ी बचत कर दी है। 14 तब सभी राजपूत नाराज हो गये। 15 ठकुराई कमजोर हो गई। 16 जिसने। 17 जा कर के। 18 हो कर के। 19 भाटी और मुसलमान साथ हो कर के आये। 20 तू निकल जा। 21 मेरे वैरका बदला लेवेगा।

अर अै[1] रजपूत नीसरिया छै[2], तियांसूं दोख मतां राखै[3]। अै थारै वडै कांम आवसी[4]। जेठी घोड़ो छै सु सिखरै उगमणावतनूं देई[5]। अर रजपूत दुचिता छै सु तूं सुचिता करै[6]। इयै मोहिल सरव दुहविया छै[7]।' ताहरां कह्यो–'म्हैं कांन्हैनूं टीको कह्यो छै, सु इयैनूं काहूनीरै खेजड़ै ले जायनै ईयैरै माथै अरळ देईस[8]। ताहरां रिणमल जांणियो–'कांन्हैनूं राव मगरो दियो[9]। रिणमलनूं रावजी विदा दीनी[10]।

रिणमलजी नीसरियो। रजपूत सरब नीसरिया। सिखरो उगमणावत ईंदो, ऊदो त्रिभुवणसीयोत राठोड़, काळो टीवांणो, अै ठाकुर भेळा नीसरिया छै[11]। जावतां एकै जायगां अरहट वहतो दीठो[12]। तेथ आया[13]। आय अर घोड़ा पाया। घोड़ांरा मुंह छांटिया। हाथ धोया। आंख्यां छांटी अर अमल किया[14]। पांणी पियो। तेथ सिखरो उगमणावत दूहो कहै[15]–

काळो काळै हिरण जिम, गयो टिवांणो कूद।
आयो परव न साधियो, त्रिभुवण थारै ऊद[16] ॥ १

ताहरां ऊदै अर काळै कह्यो–'म्हे सिखरै रैं साथै नहीं जावां, भांडसी[17]। हालो, अपूठा जावां[18]।' जितरै पूनो उठै सांमो आयो[19]। पूनो दोला गोहिलोतरो बेटो। इयैनूं सिखरै कह्यो[20]–'थे घिरो, अपूठा

---

1 ये। 2 निकल गये हैं। 3 उनसे वैर मत रखना। 4 ये तेरे बड़े काम आयेंगे। 5 जेठी घोड़ा है उसे सिखरै उगमणावतको दे देना। 6 और जो राजपूत नाराज हैं उन्हें तू खुश कर देना। 7 इस मोहिल रानीने सबको नाराज कर दिया है। 8 तब कहा–'मैंने कान्हेको टीका देनेका निश्चय किया है, सो इसको काहूनीके खेजड़े लेजा कर इसके मस्तक पर तिलक दूंगा। (उत्तरदायित्व इसके सिर पर दूंगा।) 9 तब रिणमलने जाना कि कान्हेको रावने मगरा प्रदेश भी दे दिया। 10 रावजी ने (चूंडाजीने) रिणमलको जानेकी आज्ञा दी। 11 ये सभी ठाकुर साथ निकले हैं। 12 जाते हुए मार्गमें एक स्थान पर रहँट चलता हुआ देखा। 13 वहां आये। 14 आंखें छांट कर (हाथ-मुंह धो कर) अफीम लिया। 15 वहां सिखरा उगमणावत एक दोहा कहता है। 16 दोहार्थ–'काला टिवाणा तो काले हरिणकी भाँति कूद गया (अवसर खो दिया) और हे त्रिभुवन तेरे पुत्र ऊदाने हाथ आये पर्वको भी नहीं साधा।' 17 तब ऊदाने और कालाने कहा–'अपन सिखरेके साथ नहीं चलें, वह अपनेको बदनाम करेगा।' 18 चलें, लौट जायें। 19 इतनेमें पूना वहां साम्हने आ गया। 20 इसको सिखरेने कहा।

हालो[1] ।' ताहरां पूनो कहै–'हूं फिरूं नहीं । श्रो अवसर कठै लहूं[2] ?' ताहरां काळै अर ऊदै कह्यो–'म्हे अपूठा पूनै साथै जास्यां[3] ।' ताहरां सिखरो बोलियो–'थे जावो नां । हूं एक दूहो मोनूंई कहीस[4] । ताहरां दूहो कहै–

छक्कड़ लेह सिरांवणी, फदियो ऊग विहांण ।
ऊगमणावत कूदियो, चढ चंगै केकांण[5] ।। १

इण प्रस्ताव पूनो तो रावजी कनै गयो[6] । उठै रावजी नागोररो कोट छोडनै बाहिर आया । भाटियांरी फोज आई । ताहरां रावजी सांम्हां जायनै लड़िया । रावजी कांम आया[7] । सात आदमियांसूं कांम आया[8] । ताहरां भाटिये रावजीरो माथो वाढि वांसमें प्रोयो[9], नै वांस रोपियो[10] । रोपि नै माथो ऊंचो राखियो[11] । आय सांम्हां नै जुहार कियो[12] । मुंहड़ै कहियो–'चूंडाजी जुहार ।' इसी मसकरी कीवी[13] । ताहरां केलण आप वडो सवणी हुतो[14] । सु केलण बोलियो–'ठाकुरां सुणो, आज पछै भाटी राठोड़ांरा चाकर हुसो । सिलांमी हुसी[15] ।'

ताहरां आगै लोक सरब एकठा हुवा छै । वसी गाडा एकठा कर रिणमलजी ढूंढाड़नूं ले हालिया[16] । रजपूत सारा सुमना किया[17] । जेठी घोड़ो सिखरैनूं दियो ।

ताहरां भाटी केलण सारी फोज लैनै वांसो कियो[18] ताहरां एकै

---

1 तुम लौटो और वापिस चलो । 2 यह अवसर कहाँ पाऊं ? 3 हम तो लौट कर पूनाके साथ जायेंगे । 4 तुम जाओ नहीं । मैं एक दोहा मेरे खुदके संबंधमें भी कह दूंगा । 5 दोहार्थ–'जो प्रभात होते ही तत्काल एक छकड़ा भर कलेवा कर लेता है और नित्य एक फदिया ले लेता है, वह सिखरा उगमणावत अच्छे घोड़े पर सवार हो कर फांद गया ।' 6 इस बात पर पूना तो रावजीके पास चला गया । 7 रावजी (चूंडाजी) काम आ गये । 8 सात आदमियोंके साथ काम आये । 9 तब भाटी राजपूतोंने राव चूंडाजीके सिरको काट कर के एक बांसमें पिरो दिया । 10 और बाँसको जमीनमें गाड़ कर खड़ा किया । 11 बांसको खड़ा कर के उसके सिरे पर (चूंडेजीका) मस्तक रखा । 12 सामने आ कर जुहार किया । 13 ऐसी मसखरी की । 14 उस समय केलण जो बड़ा शकुनी था । 15 ठाकुरो ! सुनो, आजके बाद भाटी क्षत्री राठौड़ोंके चाकर होंगे (और भाटियोंकी ओरसे राठौड़ोंको) सलामी होगी । 16 रणमलजी गाड़े इकट्ठे कर के अपनी वसीको ढूंढाडको ले चले । 17 सभी राजपूतोंको प्रसन्न किया । 18 पीछा किया ।

गांम गया। प्रभात हुवो। ताहरां पिणिहारियां वात कहै छै–'वाई ! कोई एक काळो-तारो आयो छै। तिको आपरो वाप मराड़ि धरती गमाय आयो छै[1]। लारां[2] कटक आवै छै। हिवै आंपांहीनूं मराड़िसो[3]।' ओ वोल राव रिणमलजी कांनै सुणियौ। सांभळनै पिणिहाररो वचन, अर कह्यो–'अठा आगै नहीं जावां[4]। फोजसूं लड़ाई करस्यां।' ताहरां साथ अपूठो घिरियो। रजपूत ससमा हुआ[5]। वेढ हुई। सिखरै पातसाही ढाल पाड़ी[6]। मुगल नाठा[7]। भाटी नाठा। रिणमलजी तो फोज मारता-मारता नागोर आया। भाटी तुरक नाठा। रावजी आय नागोर मांहै पैठा[8]। राव रिणमलजो टीकै वैठा। वडो राजवी हुवो। २२ वेटा हुवा। राव चूंडैजोरै प्रधांन सावद्ध भाटी, ऊंनो राठोड़[9]।'

---

1 कोई एक दुर्भागी (कलंकी) आया है। वह अपने वापको मरवा कर और अपनी धरती (देश) खो कर आया है। 2 पीछे। 3 अब अपनेको ही मरवावेगा। 4 यहांसे आगे नहीं जावेंगे। 5 राजपूत तैयार हुए। 6 सिखरेने वादशाही सेना पर विजय पाई। 7 मुगल भाग गये। 8 रावजीने आ कर नागौरमें प्रवेश किया। 9 राव चूंडाजीके प्रधान सावद्ध भाटी और ऊना राठोड़ थे।

अथ गोगादेजीरी वात लिख्यते

गोगादेजी जुवान[1] हुवा; ताहरां वीरमजीरो वैर लेवणनूं साथ एकठो कियो[2]। साथ करनै जोईयां ऊपर चढियो। आगै जोईयांनूं खबर हुई; ताहरां जोईया नीसरिया[3]। ताहरां अपूठा आय कोस २० आया। आय हर हरोळ गयो। ताहरां जोईयां दीठो[4]–'गोगादे फिर गयो।' ताहरां जोईया फिर आय वसिया। गोगादेजी दबो मार बैठा हुता[5]। इतरै हेरो आयो। कह्यो–'जी, दलो हेरियो छै; धीरदे हेरियो छै[6]। जियै ठोड़ सूवता तिका ठोड़ हेर आया छां[7]।' हेरो चौकस कर गया हुता सूवणरी ठोड़। सु धीरदे तो परणीजण गयो; नै हेरां जाय गोगादेजीनूं कह्यो[8]।

गोगादेजी चढिया। आधी रातरा जायनै पड़िया। ताहरां दलै ऊपर गोगादेजी उतरिया। धीरदे ऊपर ऊदो गोगादेश्रोत उतरियो[9]। ताहरां धीरदे तो परणीजण गयो हुतो। धीरदेरै सूवणरी ठोड़ धीरदेरी बेटी सूती हती[10]; सु ऊदै जायनै घाव कियो[11]। सु तरवार इसड़ी वुही[12]–बैर वाढि, विछावणा वाढि, मांचो वाढि अर घरटीसूं जाय रड़की[13]। ताहरां तरवाररो नाम 'रळतळी' कहांणो[14]। गोगादेजी दलो मारियो। गाडा लूटि अर पाद्रोलायां आय उतरिया[15]।

जाहरां[16] गोगादेजी दलो मारियो, ताहरां दलारो भात्रीजो हांसू

---

1 युवा, जवान। 2 तब वीरमजीके वैरका बदला लेनेके लिये योद्धाओंको संगठित किया। 3 तब जोईया भी निकल आये। 4 देखा। 5 गोगाजी दबक कर घातमें बैठा था। 6/7 इतनेमें गुप्तचरोंके दलने आकर कहा कि उसने दलाका पता लगा लिया है और धीरदेवका भी पता लगा लिया है एवं जिस जगह ये सोते हैं उस स्थानका भी पता लगा लिया है। (धीरदेको कई प्रतियोंमें धीरजदे और कइयोंमें धारदे भी लिखा है)। 8 इधर गुप्तचरोंने जाकर गोगादेजी को यह सूचना दी उधर पीछे से धीरदे ब्याह करनेको चला गया। 9 तब दलाका वध करनेके लिए गोगादेजीने और धीरदेका वध करनेके लिये ऊदा गोगादेश्रोतने निश्चय किया। 10 धीरदेके सोनेके स्थान पर धीरदेकी बेटी सोई हुई थी। 11 सो ऊदाने जाकर उसके ऊपर प्रहार किया। 12/13 सो वह तलवार ऐसी चली कि। उस स्त्रीको काट कर उसके बिछौने काटे और फिर खाटको काट कर उसके पासमें पड़ी हुई चक्कीके जाकर टकराई। 14 तब उस तलवारका नाम 'रळतळी' कहलाया। 15 गाडोंको लूट कर पाद्रोलायां गांवमें आकर ठहरे। 16 जब।

पड़ोहियो चढि अर पूंगलनूं दोड़ियो[1]। धीरदेनूं कहण गयो[2]। आगै धीरदे परणीज अर रात सूतो[3]। कांकण-डोरा छोड़िया न हुता[4]। सु रात पहर १ बासली हुती। ताहरां पड़ोहियो हींसियो[5]। ताहरां धीरदे जागियो। कहियो–'रे, पड़ोहियो हींसियो? कह्यो–'जी, पड़ोहियो कांह[6] ?' तितरै[7] वात कहतां पेहली हांसू जोईयो आय पुकारियो। ताहरां धीरदे बोलियो–रे कुसळ छै?' कह्यो–'जी, कुसळ कठा[8] ? गोगादे वीरमोत आयो हुतो। दलो मारियो। मारनै पाछो जाय छै[9]।' ताहरां धीरदे ऊठियो। जांमो पहर, हथियार बांधनै आयो। आयनै घोड़ै जीण करायो। तितरै राव रांणंगदेनूं खबर हुई। ताहरां आयनै कह्यो–'जी डोरा-कांकण खोलनै चढो[10]। ताहरां धीरदे बोलियो–'आयनै खोलस्यां[11]।'

ताहरां रांणंगदे नै धीरदे जोईयो बेऊं चढिया[12]। आगै गोगादेजी पाद्रोलायां उतरिया छै। घोड़ा चरणनूं छोड़ दिया छै। साथ सोह पांणी ऊपर टिकियो छै[13]। भाटी नै जोईयांरो साथ आघो वुहो[14]। ताहरां घोड़ा चरता दीठा[15]। ताहरां जांणियो–'जु, अै घोडा गोगादेरा छै[16]।' ताहरां घोड़ा लिया। घोड़ा लेनै अपूठा घिरिया[17]। पाद्रो-लायां आया सु कटकनूं त्रिस पाड़ियो[18]। ताहरां भाटियै अर जोईयै कहियौ–'पांणी पावो, ज्युं वाताळगो करां, वैर भांजां[19]।' ताहरां पांणी पीवण दीनो। ताहरां पांणी पायो अर घोड़ा ताजा करनै

---

1 तब दलाका भतीजा हांसू 'पड़ोहियो' नामक घोड़े पर चढ़ कर पूगलको भागा। 2 धीरदेको कहनेके लिये गया। 3 धीरदे विवाह करके (प्रथम-मिलनकी) उसी रात अपनी स्त्रीके पास सोया हुआ था। 4 कंकण-डोरड़े (विवाह-सूत्र) अभी तक खोले नहीं गये थे! 5 पिछली एक प्रहर रात थी तब पड़ोहिया घोड़ा हिनहिनाया। 6 उत्तर दिया कि पड़ोहिया कहां है जी? 7 इतनेमें। 8 उत्तर दिया कि अजी! कुशल कहां? 9 मार करके वापिस जा रहा है। 10 अजी! कंकण-डोरड़े खोल कर सवारी करो। 11 वापिस आकरके खोलेंगे। 12 दोनों चढ़ कर रवाना हुए। 13 सारा साथ तालाब पर पानीके किनारे पर ठहरा हुआ है। 14 भाटी और जोईयोंका साथ आगे चला। 15 तब घोड़े चरते हुए देखे। 16 ये घोड़े गोगादेके हैं। 17 घोड़ोंको लेकरके वापिस घिरे। 18 पाद्रोलायां गांवके निकट आये तब कटकको प्यासने सताया। 19 पानी पिला दो, जितने अपन बातचीत करें और फिर जा करके शत्रुताका बदला लें।

बेहुं रुखा हुय आया[1]।

ताहरां गोगादेजी कह्यो–'रे घोड़ा ल्यावो।' ताहरां ढाढी कहै[2]–

चाहीया नह लब्भए, गोगादे घोड़ाह।
बद्धै तुरी न चारियै, घी घत्तै थोड़ाह[3]॥

ताहरां लड़ाई मंडी। भाटी नै जोईया राठोड़ांसूं वाजिया[4]। गोगादेजी घावै पड़िया[5]। साथळां बेहुं वढी[6]। बेटो ऊदो पण पसवाड़ै पड़ियो[7]। तरवाररो नांमांण किसूं छै. सु तरवार टेकनै गोगादेजी बैठा घूमै छै[8]।

तितरै रांणंगदे चढियो नीसरियो[9]। ताहरां गोगादेजी बोलिया–'राव रांणंगदे ! तू वडो सगो छै, म्हारो परवाड़ो लेल्यै[10]।' ताहरां रांणंगदे बोलियो–'तो सारीखां विष्टारो म्हे परवाड़ो लेता फिरां छां[11]?' ताहरां रांणंगदे तो आघो ही वूहो[12]।

तितरै धीरदे जोईयो आयो। ताहरां गोगादेजी बोलियो–'धीरदे! आव, तूं वडो जोईयो छै। म्हारो परवाडो लै। थारौ काको म्हारै पेट मांहै तड़फड़ै छै[13]। म्हारो परवाड़ो लै।' ताहरां धीरदे घिरियो[14]। नैड़ो आयनै उतरियो[15]। ताहरां गोगादेजी तरवाररी झड़प वाही सु जोईयो कनै आय पड़ियो[16]। ताहरां ताळी दे अर हसियो। ताहरां धीरदे बोलियो–

---

1 तब पानी पिलाया और घोड़ोंको ताजा करके दोनों ओरसे चले। 2 तब ढाढ कहता है। ढाढी = विरुद गाने वाली जाति। 3 हे गोगादे ! चरनेको छोड़े हुए घोड़े आवश्यकता पर हाथ नहीं आते। ऐसे समय पर घोड़ोंको बँधा रख कर थोड़ा घी दे देना चाहिये, पर चरनेके लिए नहीं छोड़ना चाहिये। 4 तब लड़ाई शुरू हुई। भाटी और जोईये राठौड़ोंसे लड़े। 5 गोगादेजी आहत हुए। 6 दोनो जंघाएँ कट गईं। 7 उनका पुत्र ऊदाभी पासमें गिर गया। 8 उनकी (गोगादेजीकी) तलवारकी लचक कैसी बढ़िया है, वे उस तलवारको टिका कर उसके सहारे बैठे हुए घूम रहे हैं। 9 इतनेमें राणंगदे सवारी किया हुआ उधरसे निकला। 10 राव राणंगदे ! तू हमारा बड़ा सम्बन्धी है, मेरा प्रवाड़ा ले ले। प्रवाड़ा—वीरताका विरुद। 11 तेरे समान नीचके हम प्रवाड़े लेते फिरते हैं क्या ? 12 तब राणंगदे तो आगे चला गया। 13 तेरा काका मेरे पेटमें छटपटा रहा है। 14 तब धीरदे लौटा। 15 निकट आकर घोड़ेसे उतरा। 16 तब गोगादेजीने झड़प कर तलवारका प्रहार किया सो जोईया पासमें आकर गिर पड़ा।

बळिया काळा दाद, तूं आंपै हर मेळियौ ।
गोगादे वेधीर, एका जेही नीवड़ी ।।
सु हांण महेवै[1] ।

ताहरां धीरदे पड़ियो, कांम आयो ।

ताहरां गोगादेजी बोलिया–'जे कोई सुणतो हुवै तो सांभळज्यो[2], गोगादे कहै छै; राठोड़ै अर जोईयै वैर बराबर हुवो छै । जे कोई जीवतो हुवै तो महेवै जायनै कहज्यो[3] । राव रांणंगदे विष्टाकारी दीनी छै[4] । ज्यो वैर भाटियां कनां लेज्यो[5] । ताहरां भींपो भांस मांहै छिपियो हुतो, सु भींपै सुणियो[6] । सु जाहरां भींपो महेवै गयो, ताहरां समाचार कह्या[7] ।

तितरै जोगी गोरखनाथ आय नीसरिया[8] । गोगादे बैठो दीठो[9] । ताहरां गोरखनाथ साथळां जोइनै लगाई[10] । एक साथळ ऊदैरी चेढी । एक साथळ आपरी चेढी[11] । ताहरां गोगादेजीनूं गोरखनाथजी शिष्य किया । अजेस गोगादेजी चिरंजीव छै[12] ।

गोगादेजी वीरमोत थळवट मांहै रहै[13]। एक समइयै थळवट मांहै काळ पड़ियो । लोग मऊनूं चालियो[14] । थोड़ो सो लोग रह्यो ।

---

1 तव धीरदेने कहा—'वदला लेने वालोंमें अधीर हे गोगादे ! तूने अपनेको और मुझको, दोनोंको भगवानसे मिला दिया । (परस्पर क्षत्रियोचित काम कर वीर-गतिको प्राप्त हुए ।) अत: अब अपने आपसमें जो भयंकर शत्रुता थी, वह खत्म हो गई । महेवेकी हानिकी वात थी सो वह भी अब दोनों ओर एक जैसी वात हो जाने पर खत्म हो गई । अपना वैर वरावर हो गया ।' 2 जो कोई सुनता हो तो सुन लेना । 3/4/5 जो कोई जिंदा हो तो महेवे जाकर यह खवर देना कि राव रणांगदेने हमें अपशब्द कह कर ललकारा है सो इस वैरका वदला भाटियोंसे लेना है । 6/7 भींपा कहीं झाड़ीमें छिपा हुआ था, उसने गोगादेकी इस वातको सुना और वह जव महेवे गया तो उनके ये समाचार कह सुनाये । 8/9 इतनेमें योगी गोरखनाथ उधर आ निकले । उन्होंने गोगादेको इस हालतमें वैठे देखा । 10 जव गोरखनाथने टूटी हुई जंघाओंकी तलाश करके गोगादेजीके शरीरमें जोड़ दी । 11 उनमें एक जांघ ऊदेकी और एक स्वयं गोगादेकी चिपकाई । 12 गोगादे अभी तक चिरंजीवी है । 13 वीरमजीके पुत्र गोगादेजी थल प्रांतमें रहते हैं । 14 एक वार थलमें दुकाल पड़ा सो लोगोंने मऊके रूपमें देशसे प्रस्थान कर दिया । मऊ = दुष्कालके कारण भूखों मरती हुई गरीव प्रजाका वह समूह जो वर्षा-वहुल प्रांतमें खेती, मजदूरी आदि करनेको जा रहा हो ।

बीजा सरब उचळिया[1]। आप आपरै मतै गया[2]। मजूरी कर खाधो[3]।

पछै ऊपरसूं असाढ़ आयो, ताहरां गांवां मांहै लोग आय वसियो[4]। सू वांनर तेजो भलो रजपूत हुतौ। आपरो खासो चाकर हुतो सोई मऊ गयो हुतो सु ओ पण पाछौ आयो[5]। दोय साथै टाबर—एक बेटो एक बेटी[6]। एक पड़तलनूं बळद[7]। तिकै रजपूत गांव मीतासर आय वासो लियो। रात रह्यो[8]।

प्रभात कोहर सांपड़णनूं गयो[9]। ओ जांणतो न हुतो, पांणीडी मांहै बैठो[10]। झूलण लागो सु गांवरा धणी मोहिल देख अर उण रजपूतनूं बेटीरी गाळ दीवी[11]। अर कह्यो–'रे, पापी! लोग पांणी पीवै छै।' अर उवै रजपूतनूं चोट वाही। बळदांरो जूट वहतो हुतो तिकै पुरांणीरी दीवी[12]। सु रजपूतनूं बुरी लागी। ताहरां लोकां कह्यो–'रजपूत गोगादेजीरो छै, बुरो कीवी[13]।' ताहरां मोहिलै पुरांणीसूं इयैरा मगर चीरिया[14]। अर कह्यो–'गोगादे करसी सो देखस्यां[15]।' ताहरां रजपूतांणी उण रजपूतनूं वरज राखियो[16]। अर ओ घरनूं

---

1 दूसरे सभी लोगोंने उचाला कर दिया। 'उचाला' अर्थके लिये देखिये इस दूसरे भागके पृ. ११७ की टिप्पणी। 2 अपने-अपने विचारसे भिन्न-भिन्न स्थानोंको गये। 3 मजदूरी कर गुजरान किया। 4 फिर जब अगले वर्षका आषाढ़ मास आया तब वापिस लोग अपने-अपने गांवोंमें आकर बसे। 5 वानर तेजा एक अच्छा राजपूत था और वह गोगादेजीका खासा सेवक था, वह भी मऊके रूपमें चला गया था, अब वापिस लौटा। 6 एक लड़का और एक लड़की, दो बच्चे साथमें। 7 सामान रखनेको एक बैल साथमें। 8 उस राजपूतने मीतासर गांवमें आकर विश्राम लिया और रात भर ठहरा। 9 प्रभात समय कुंएँ पर नहानेको बैठ गया। 10 इसे पता नहीं था अतः वह पीनेके पानी भरनेकी कूंडी (हौज)में नहानेको गया। 11 जब वह उसमें स्नान करने लगा तो गांवके मालिक मोहिलने उस राजपूतको बेटीकी गाली दी। 12 जो बैलोंकी जोडी पानी निकाल रही थी, उनको हांकनेकी पुरानी लेकर उसको मारा। पुरांणी (परांणी) = बैलोंको हांकनेकी एक लकड़ी जिसकी एक ओर तीखी लोहेकी कील लगी होती है। 13 यह राजपूत तो गोगादेजीका आदमी है, इसे मार कर तुमने बुरा किया। 14 तब मोहिलने पुरानीसे उसकी पीठ चीर दी। 15 गोगादे करेगा सो देख लेंगे। 16 तब एक राजपूत स्त्रीने उस राजपूतको रोक रखा।

हालियो[1]। घरै आय, घर मांहै रातरौ चांनणो कियो[2]। ताहरां गोगादे कह्यो–'जावो देखो, खवर करो तेजै वानररै घरै चांनणो क्युं छै ? देखो, आयो न छै[3] ?' ताहरां आदमी आय खवर कर गया। कह्यो–'राज ! तेजसी वांनर आयो छै।' तद कह्यो–'बोलाय ले आव।' तद बोलाय ले आयो। गोगादेजीसूं मिळियो[4]।

बीजै दिन गोगादेजी तळाव सिनांन करणनूं पधारिया[5]। साराही लोग तळाव मांहै भूलणनूं पैठा। गोगादेजो आप सिनांन करणनूं पैठा[6]। पण वांनर तेजौ तळाव मांहै वड़ै नहीं[7]। ताहरां गोगादेजी तेजैनूं सूंस दिराय तळाव मांहै भूलणनूं तेड़ियो[8]। मांहि गयो। ताहरां गोगादेजो मगरांमें परांणीरा घाव दीठा, तद कह्यो–'ओ कासूं छै[9]!' ताहरां उठै रजपूत वहुत दिलगीर हुवो[10]। ताहरां गोगादेजी कह्यो–'रे किसै वास्तै[11]? ताहरां रजपूत सारी हकीकत कही। कह्यो–'राज ! थांहरो कर मारियो छै[12]।' ताहरां गोगादेजी कह्यो–'किसो गांम[13] ?' ताहरां ईयै कह्यो–'राज ! मीतासर रांणै मांणकराव[14]।' ताहरां गोगादेजी कह्यो–'धीरज राखि, देखां, श्री परमेश्वर कासूं करै[15] ?'

पछै मोहिलां ऊपर कटक कियो। कितरैहेकै दिनै देव-ऊठणी एकादशी आई, तियै दिन आपरो साथ ले गोगादेजी मीतासर ऊपर चढिया[16]। गांव मांहै सतावीस वीमाह; रजपूत, जाट, वांणियांरै

---

1 और यह अपने घरको चला। 2/3 घर पर आकर जब उसने दीपक जला कर रातको प्रकाश किया, तब गोगादेने कहा—"जाकर देखो तो, पता लगाओ कि तेजा वानरके घरमें प्रकाश क्यों हो रहा है ? वह आ तो नहीं गया है ?" 4 गोगादेजीसे मिला। 5 दूसरे दिन गोगादेजी तालाव पर स्नान करने को पधारे। 6 साथके सब ही लोग स्नान करनेको तालावमें घुसे। गोगादेजी स्वयंने भी उसमें प्रवेश किया। 7 परन्तु तेजा वानर तालावमें प्रवेश नहीं करता है। 8 तब गोगादेजीने शपथ देकर तेजेको स्नान करनेके लिए तालावके अन्दर बुलवाया। 9 अन्दर गया तब गोगादेजीने उसकी पीठ पर परानीके घाव देखे तो उन्होंने कहा—"यह क्या बात है ?" 10 तब वह राजपूत वहां बहुत उदास हुआ। 11 तब गोगादेजीने कहा—"अरे किस लिये ?" 12 आपका राजपूत हूं, ऐसा जान करके मुझे मारा है। 13 कौनसा गांव ? 14 तब उसने कहा—राजन् ! मीतासर गांवके राना माणकरावने। 15 तब गोगादेजीने कहा—'धीरज रखो, देखो, श्री परमेश्वर क्या करते हैं ?" 16 कितनेक दिनोंके बाद जब देवोत्थनी एकादशीका दिन आया, उस दिन अपना साथ लेकर गोगादेजीने मीतासरके ऊपर चढ़ाई कर दी।

हुता सु जांनां आवती छी[1]। सु हेकै थळी हेठै गोगादेजी पण उतर बैठा[2]। लोकां केही दीठा, सु जांणियो जांन छै[3]। पछै बारसरै दिन परभातै मोहिलां ऊपर आया। वेढ हुई[4]। सिरदार मोहिलांरो नीसर गयो[5]। और सरब मार काढिया[6]। गांव लूंटियो। कोहर ऊपर खेजड़ो छै, सु ऊठै आया[7]। पछै तैनूं बगल मांहै ले ऊभा रह्या[8]। ऊ खेजड़ो मरदरी ताल समो छै[9]। गोगादेजी इतरै डील हुंता[10]। पछै जांनां सतावीसै लूंट लीवी[11]। रजपूतरो वैर ले पधारिया[12]।

इति वात गोगादेजीरी संपूर्ण।

---

1 उस दिन उस गांवमें राजपूत, जाट और बनियोंके २७ विवाह थे, अतः बाहिरसे बारातें आ रही थीं। 2 सो (उस गांवके पास) एक टीबेके नीचे गोगाजीने भी अपना पड़ाव डाल दिया। 3 कई लोगोंने देखा तो समझा कि कोई बारात है। 4 फिर द्वादशीके दिन प्रभात मोहिलों पर चढ़ करके आये और लड़ाई हुई। 5 मोहिलोंका सरदार माणकराव भाग निकला। 6 और दूसरे सबको मार डाला। 7 उस कूंएंके ऊपर एक शमी-वृक्ष है, वहां पर आये। 8 उस वृक्षको बगलके नीचे दे कर खड़े रहे। 9 वह खेजड़ा-वृक्ष पुरुपके ताल समान परिमाण जितना ऊंचा है। ताल = पुरुपका खड़ा हो कर ऊपरको हाथ उठाये हुए—एड़ीसे हाथकी अंगुलियों तकका एक मान। 10 गोगादेजीका शरीर इतना ऊंचा था। 11 फिर २७ बारातोंको भी लूट लिया। 12 अपने राजपूतके वैरका बदला लेकर गोगादेजी लौटे।

श्री गणेशायनमः

अथ अरड़कमलजी चूंडावतरी वात लिख्यते

अरड़कमलजीनूं एक दिन नागोर मांहै राव चूंडैजी वोल वाह्यो हुतो[1]। सु अरड़कमलजीरै हीयै खटकतो हुतो[2]। सु अरड़कमलरो हेरो ठांम-ठांम रहतो हुतो[3] जु—'कठै ही[4] रांणंगदे अथवा सादूळ कुंवर कठै ही आवै, और हूँ मारूं तो धन्य म्हारो जीवियो। मोसूं रावजी वचन कह्यो छै।[5]'

एकदा प्रस्ताव[6]। छापर मोहिल राज करै ताहरां मोहिलां नाळेर सादूळ रांणंगदेवोतनूं पूंगळ मेल्हियो।[7] बांभण[8] नाळेर ले अर पूंगळ गयो। जायनै राव रांणंगदेनूं दियो। कह्यो—'जी, मोहिलां सादूळ कुंवरनूं नाळेर दियो छै। ताहरां रांणंगदे कह्यो—'मांहरै राठोड़ां सूं वैर; सु परणीजण कोई नी आवै[9]। ताहरां बांभणनूं विदा दीनी[10]।

ताहरां सादूळ सुणियो—'जु रावजी मोहिलांरो नाळेर फे[फि]रियो[11]।' ताहरां सादूळ आदमी म्हेल नै बांमण वुलायो[12]। बांभणनूं तेड़ाय नाळेर वांदियो[13]। बांभणनूं घणो खरच दे अर विदा कियो[14]। को रजपूत तेड़ियो[15]। तेड़िनै कह्यो—"रावजीनूं कहो, भूंडा दीसस्यो[16]। राठोड़ांसूं

---

1 नागोरमें एक दिन राव चूंडोजीने अरड़कमलजीको एक ताना मारा था। 2 वह अरड़कमलजीके हृदयमें खटकता था। 3 इसलिये अरड़कमलने स्थान-स्थान पर अपने भेदिये रख छोड़े थे। 4 कहीं भी। 5 और मैं उनको मारदूं तो मेरा जीना धन्य। रावजीने मुझे ताना मारा था। 6 एक समयकी वात। 7 मोहिलोंने रांणग-देके पुत्र सादूलसे अपनी कन्याका संबंध करनेके लिये पूगल नारियल भेजा। 8 ब्राह्मण। 9 तव रांणगदेने कहा—हमारी राठौड़ोंसे शत्रुता है अतः विवाह करनेको नहीं आ सकता। 10 तव ब्राह्मणको रवाना किया। 11 जव सादूलने सुना कि—'रावजीने मोहिलोंकी ओर से आये हुए नारियल को लौटा दिया। 12 सादूलने तव आदमी भेज कर ब्राह्मणको वुलवाया। 13 ब्राह्मणको वुला कर नारियलको सम्मानपूर्वक वंदन कर के ग्रहण किया। 14 ब्राह्मणको वहुत द्रव्य देकर रवाना किया। 15 किसी राजपूतको वुलवाया। 16 वुला कर के कहा कि रावजीको कहदो कि इस प्रकार करनेसे तो अपनी वदनामी होगी।

बीहता कितराइक दिन रहस्यो[1] ? हूं मोहिल परणीस[2] ।' ताहरां राव कासूं करै[3] ? बेटो न रहै । टीकाइत बेटौ सपूत[4] ।

ताहरां रावजी हुकम कियो—'पधारो ।' ताहरां रजपूत एकठा करनै हालणरी तयारी कीधी[5] । ताहरां राव कन्है मोर घोड़ो मांगियो[6] । ताहरां राव कहै–'तूं घोड़ो जांणां राखसी नहीं । का गंवाड़ीस, का केहेनूं दे आईस । तूं घोड़ो मतां ले जावै[7] ।' ताहरां कह्यो–'हूं घोड़ो म्हारै जीव हूं सोहरो राखीस[8] ।' ताहरां राव कन्हा घोड़ो लियो[9] । केसरिया करै सादौ कुंवार परणीजण चढियो[10] । आइ छापर पहुंतो । मोहिल परणियो । रांणै मांणकरावरै सादो परणियो[11] । गढ द्रोणपुर वीवा करण न दियो । सु मांणकरावरै भाटियांणी रावळ केहररी बेटी हुती, सु जोरावर । ताहरां ओडींटमें व्याह मांडियो[12] । रांणै खेतैरी दोहीतरी, रांणा मांणकरावरी बेटी सादूळ भाटीनूं परणाई[13] ।

ताहरां मोहिलै कह्यो–'चढो । आदमी राखो, सु सेजवाळो ले आवसी । एथ राठौड़ नैड़ा छै । थांरै वैर छै । थे चढि खड़ो[14] ।' ताहरां सादूळ कहै–"हूं परवाह देनैं पछै साथै चढीस । एकलो चढूं

---

1 राठौड़ोंसे डर कर कितने दिन रह सकेंगे ? 2 मैं मोहिलानीसे विवाह करूंगा । 3/4 सुपूत टीकायत बेटा रहा, वह जब नहीं मानता तो राव क्या करे ? 5 तब राजपूतोंको इकट्ठा कर के चलनेकी तैयारी की । 6 उस समय रावसे मोर नामका घोड़ा मांगा । 7 तब राव कहता है कि मैं जानता हूँ कि तू घोड़ा रख नहीं सकेगा । या तो खो देगा या किसीको दे आएगा । तू यह घोड़ा मत लेजा । 8 मैं घोड़ेको मेरे जीसे भी अधिक आराम-पूर्वक रखूंगा । 9 तब रावसे घोड़ा ले लिया । 10 केसरिया वस्त्र पहिन कर के सादूल कुंवर विवाह करनेको रवाना हुआ । 11 आ कर के छापर पहुँचा और राना माणकरावके यहां मोहिल पुत्रीके साथ विवाह किया । 12 रावल केहरकी बेटी भटियानी माणकरावकी स्त्री बड़ी जोरावर, उसने इस विवाहको ओडींट गांवमें किया । 13 राना माणकरावकी पुत्री जो राना खेताकी दोहीती थी, सादूल के साथ ब्याही गई । 14 तब मोहिलोंने कहा—"तुम रवाना हो जाओ । आदमियोंको पीछे रख दो सो वे मोहिलकी पालकी अपने साथ ले आयेंगे । यहां राठौड़ नजदीक हैं । तुम्हारा उनसे बैर है अतः तुम चढ़ कर पहिले रवाना हो जाओ ।"

नहीं[1] ।' युं कहिनै रह्यो । ताहरां हेरै जायनै कह्यो अरड़कमल नूं–'सादो मोहिलं परणीजणनूं आयो छै[2] ।'

तरै ढाढी कहै[3]–

नागांणाचो विणियै तुंणियै ,
अरड़कमल ओ चंदा सुणियै ।
हेरू मंझि थये परणायो ,
सादा ! अरड़कमलजी आयो[4] ॥

ताहरां अरड़कमलजी साथ करनै चढियो । नागोरसूं चढियो । ताहरां वडोकरो सुगन हुवो[5] । सु ताहरां मेहराज सांखलो साथ हुतो सु तिणनूं अरड़कमलजी पूछियो[6]–'सुगनरो फळ कहो ।' ताहरां मेहराज कहै–'आंपै काळै गोहिलरै घरै हालो[7] । ज्युं जाइ अर जीमण कराड़ां[8] । अर जाहरां कुंवरजी ! जीमणनूं वुलावै ताहरां काळैनूं भेळो बैसांणज्यो[9] । पैहलां कवो थे मतां भरज्यो[10] । काळैनूं भरण देज्यो[11] । जाहरां काळो कवो भरै, ताहरां पूछज्यो–'जु, एक सुगन म्हांनूं इसोसोक हुवो, तैरो विचार काळाजी कहो[12] ।'

ताहरां जायनै काळैरै उतरिया[13] । काळै भगतरी तैयारी की[14] । ज्युं आरोगण वैठा, ताहरां काळैनूं भेळो बैसांणियो[15] । काळै कवो भरियो,[16] ताहरां अरड़कमल पूछियो, ''काळोजी ! म्हे तो

---

1 तव सादूल कहता है कि मैं यहां त्याग (नेग अ र दान) दे देनेके वाद सवके साथ ही रवाना होऊँगा। अकेला नहीं जाऊँगा। 2 तव भेदियोंने जाकर अरड़कमलको कहा कि सादूल मोहिलोंके यहां शादी करनेको आया हुआ है। 3/4 तव ढाढी कहता है—''हे सादूल ! नागोरके भेदियोंके द्वारा तेरे विवाहका सव भेद अरड़कमलने सुन लिया है। तेरा विवाह उन हेरुओंकी उपस्थितिमें ही हुआ है अतः अरड़कमल तेरे ऊपर चढ़ कर आया ही समझो।'' 5 तव अच्छा शकुन हुआ। 6 मेहराज सांखला साथमें था, उसको अरड़कमलजीने पूछा। 7 अपन पहले काला गोहिलके यहां चलें। 8 वहां जाकर भोजनकी तैयारी करवावें। 9 और जव कुंवरजी ! आपको भोजन करनेको वुलाने आवे तव कालेको साथ विठा कर भोजन करना। 10/11 पहला कौर आप नहीं लेना, कालेको लेने देना। 12 जव काला कौर भरने लगे तव पूछना कि हमको एक ऐसा शकुन हुआ है, उसका फलाफल कालाजी हमें वताओ। 13 तव जाकर कालेके यहां ठहरे। 14 कालेने भोजनकी तैयारी की। 15 जव भोजन करनेको वैठे तो कालेको सामिल विठाया। 16 कालेने ज्योंही कौर भरा।

सादूळ ऊपर चढिया; अर हालतां इसड़ो सुगन हुवो, तैरो विचार कहो[1] ।' ताहरां काळै कह्यो–'सुगन ले जावसी मेहराजरै घरनूं[2] । काळो बोलियो–'अरड़कमलजी ! थे जिए[3] कांम पधारो छो सो सिद्ध हुसी । सिरदार हाथ आवसी । थांहरी जैत हुसी । कालै विहांणै इण विरियां मरसी । इयै सुगनरो ओ विचार छै[4] । ताहरां अरड़कमल आघा चढि खड़िया[5] । महिराज सांखलैरो बेटो आल्हणसी राव रांणंगदे, सादै मारियो हुतो । तैरै वासते मेहराज आगू हुवो । कटक सादै ऊपर लीयै जावै ।

आगै सादूळ भाटी परवाह दे, ढोल वजाय, सेजवाळो लेनै पूगळनूं चालियो[6] । ताहरां लायांरै मगरै अरड़कमल जाय पहुंतो[7] । ताहरां सादैनूं खबर हुई–'अरड़कमल आयो।' ताहरां अरड़कमल बोलियो–'वडा भाटी ! जाहै नां, हूं घणी भुंयथी आयो हूं[8] । ताहरां ढाढी कहै–

'ऊडै मोर करै परळाई, मोर जाइ पण सादो न जाई[9] ।'

ताहरां सादूळ अपूठो घिरियो[10] । रजपूत सांम्हां मंडियो । लड़ाई हुई । रजपूत कांम आयो । सादूळनूं घोड़ाहूं उतर अर इसी तरवार वाही सु घोड़ारा च्यारै पग अळगा पड़िया[11] । सादूळ कांम आयो ।

---

1 तब अरड़कमलने कहा—"कालाजी ! हम तो सादूलके ऊपर चढ़ कर आये हैं। चलते समय हमें इस प्रकारके शकुन हए हैं, उसका फलाफल विचार कर कहिए ।" 2 तब कालेने कहा—"यह शकुन आपको मेहराज के घर पर ले जायेंगे । 3 जिस । 4 सरदार हाथ आयेगा । तुम्हारी जीत होगी । कल इस समय प्रभातमें वह मरेगा । इस शकुनका यह फल है । 5 तब अरड़कमल चढ़ कर के आगे चला । 6 इधर सादूल भाटी त्याग देनेके वाद ढोल बजवा कर अपनी नववधूकी पालकीको साथ ले कर पूगलको रवाना हुआ । ढोल वाजणो = विवाहके सानन्दपूर्वक सम्पन्न हो जाने और न्योछावर और त्याग आदि नेग एवं अन्य प्रथाओंके निर्विघ्न समाप्त हो जानेके बाद बारात रवाना हो जाते समय बारात वालोंकी ओरसे ढोल बजवाये जानेकी एक आवश्यक और महत्वपूर्ण प्रथा। इसे 'ढोल वाजणो', 'ढोल वजावणो', 'जीतोड़ांरा ढोल घुरावणा' भी कहते हैं । 7 तब लायांकी पहाड़ीके पास अरड़कमल उसे जा पहुँचा । 8 अरड़कमलने कहा—"वड़े भाटी सरदार ! जाइये नहीं, मैं तो बहुत दूरसे आपके लिए आया हूँ । 9 तब ढाढी कहता है—"मोर घोड़ा उछलता-कूदता चाहे उड़ जाये, परंतु सादूल कहीं नहीं जायेगा ।" 10 तब सादूल पीछा फिरा । 11 अरड़कमलने घोड़ेसे उतर कर सादूलके ऊपर ऐसी तलवार चलाई सो सादूल और घोड़ाके चारों पांव दूर जा गिरे ।

ताहरां मोहिल आपरो हाथ वाढि अर सादूळरै साथै वाळियो[1]। आप पूगळ गई। जाय सासूरै पगै लागी[2]। सुसरैनूं मुंह दिखाळ अर कह्यो—'सुसराजी ! म्हैं थांहरो सासूजीरो मुंह देखणो हुतो तैरै वासतै हूं एथै आई छूं[3]।' पछै सासू सुसरैरो मुंह देख, अर सती हुई छै। अरड़कमल सादैनूं मार नागोर आयो। राव चूंडैजीरै पाए लागो[4]। ताहरां अरड़कमलजीनूं रावजी दूणो वधारो दियो। डीडवांणो पटै दियो[5]।

इति अरड़कमलजीरी वात संपूर्ण

---

1 तब मोहिल कुंवरानीने अपना हाथ काट कर उसे सादूलके साथ जला दिया। 2 स्वयं पूगल चली गई और वहां जा कर सासूके पाँवों लगी। 3 ससुरको अपना मुंह दिखा कर कहा—'ससुरजी ! आपका और सासूजीका दर्शन करना था इसलिये मैं यहां आई हूं। 4 राव चूंडाजीके पाँवों लगा। 5 तब रावजीने अरड़कमलजीको दुगुना वधारा और सम्मान दिया और डीडवाना भी पट्टे में कर दिया।

अथ वात रावजी रिणमलजीरी लिख्यते

एकदा प्रस्ताव[1] । राव श्री चूंडैजी मोहिलरै कहै रिणमल कुंवरनूं तेड़िनै विदा दीधी[2] । ताहरां रिणमलजी हालियो । रजपूत भला-भला हुता सु रिणमलरै साथै हुवा[3] । ताहरां रिणमलजी ५०० असवारांसूं हालियो । ताहरां रिणमलजी धणलै गांम जाय उतरियो, नाडूलरै[4] । नाडूल सोनिगरा राज करै छै । रिणमलजी गाडा ले जाय धणलै छोडिया छै[5] ।

अठै रिणमलजीरै तीन वार भूंजाई होवै । कड़ाह थाट रहै[6] । आठ-पोहर सिकार खेलै । वडी साहिबी[7] ।

ताहरां सोनगरै सुणियो[8] । ताहरां सोनगरै चारण मेल्हियो[9] । कह्यौ–'जायनै खबर करो । रिणमलरै कितरोहेक[10] साथ छै ?' ताहरां चारण आयो । आयनै[11] रिणमलनूं[12] आसीस दीधी[13] । गढवीनूं[14] कन्है[15] बैसांणियो[16] । सोनगरां की सु वातां पूछी । तितरै भूंजाईरो पधारो हुवो[17] । रिणमलजी ई आया । चारणनूं साथै ले आया । भूंजाई-घण-देवजी-रोटा,[18] सोहिता । ईयै भांत चारण भूंजाई जीमियो । कह्यो–'गढवी ! तोनूं[19] सवारै[20] विदा देस्यां ।' तितरै दिन ऊगो[21] । अर आय सिकारियां कह्यो–'राज ! वांसोर डूंगरचां[22] ५ वाराह रोकिया छै । तुरत चढो ।' चढिया । जाय पांचै वाराह

---

1 एक समयकी वात । 2 राव श्री चूंडाजीने मोहिलरानीके कहनेसे कुंवर रिणमलको बुला कर के निकाल दिया । 3 तव रिणमलजी रवाना हुए तो जो अच्छे-अच्छे राजपूत थे वे सब रिणमलजीके साथ हो लिये । 4 तव रिणमलजी नाडूलके धणले गांवमें आकर ठहरे । 5 रिणमलजीने अपने गाड़े लेजा कर धणलेमें छोड़े । 6 यहां रिणमलजीके दिनमें तीन वार पक्वान्न-रसोई वनती थी । हरदम कड़ाह चलते ही रहते थे । 7 वड़ा वैभव और ठाट-वाट । आठों पहर शिकार खेलते हैं । 8 सुना । 9 तव सोनगरोंने एक चारणको भेजा । 10 कितना सा । 11 आकर । 12 रिणमलको । 13 दी । 14 चारणको । 15 पास । 16 वठलाया । 17 इतनेमें भूंजाई तैयार होकरके आई । 18 मोयन आदि मसाले देकर वनाई हुई एक प्रकारकी वढिया मोटी वाटी । 19 तेरेको । 20 कल सुवह । 21 उदय हुआ । 22 पहाड़ियोंमें ।

मारनै ऊंठ घाल ल्याया[1] । भूंजाई तयार हुई हुती[2] । आय आरोगण बैठा । पातळां पुरसी छै[3] । सहु को जीमै छै[4] । तिसड़ै आयनै वाहरुवां कह्यो[5]–'राज ! पनोतैरै वाहळै[6] एक वडो वाराह आयौ छै ।' युंहीज ऊठियो । घोड़ै पलांण[7] मांडियो । तयार हुय तुरत असवार चढियो । चारण साथै चढियो । चढतां भोईनूं[8] कह्यो–'रे, पनोतैरै वाहळै भूंजाई करिज्यो ।' भूंजाई ओथ[9] जायनै तयार कीधी । आप जाय वाराह मारियो । जितरै[10] अपूठो वळियो[11] तितरै[12] देखै तो भूंजाई तयार छै । आय पांतिये बैठा[13] । आरोगता हुता[14] । आधोइक जीमिया हुता[15] नै वाहरू आया । आयनै कह्यौ–'कोलररै तळाव एक नाहर नाहरी आया छै ।' ताहरां अध-जीमिया ऊठिया[16] । चढि दोड़िया । चारण पण[17] साथै चढियो । जावतां[18] कह गया हुता[19]– 'कोलररै तळाव भूंजाई करज्यो ।' वळै[20] भोईयां जायनै[21] कोलररै तळाव भूंजाई तयार करी । आप जाय नाहर मार अपूठा आया[22] । आगै भूंजाई तयार हुई छै । अर आया । आगै घणो सीरो पुड़ी देवजी-रोटो[23] तयार हुवो छै । सरव साथ आय भूंजाई बैठो । भूंजाई जीमनै अपूठा घरै आया[24] ।

मारग मांहै आवतां चारण विदा की[25] । कह्यो–'जी, नाडूळ निजीक[26] छै ।' ताहरां चारणनूं विदा दी । चारणरै घोड़ै ऊपरची ली[27] । जितरै[28] नाडूळ हूं[29] निजीक आयो । कोस १ रही । ताहरां[30] पुकारियो–'वाहर रे ! वाहर रे !! वाहर[31] !!! ताहरां लोक

---

1 पांचों वाराहोंको मार और ऊंटों पर डाल कर ले आये । 2 थी । 3 पत्तलें परोसी गई हैं । 4 सभी भोजन कर रहे हैं । 5 इतनेमें आकर के वाहरुओंने (हेरा करने वालोंने) कहा । 6 नाले पर । 7 जीन । 8 एक जाति । 9 उधर । 10 जितनेमें । 11 पीछे फिरे । लौटे । 12 इतनेमें । 13 आकर पंक्तिमें बैठे । 14 भोजन करते थे । 15 लगभग आधा भोजन किया था । 16 तब आधा भोजन किये हुए ही उठ गये । 17 भी । 18 जाते हुए । 19 थे । 20 फिर । 21 जा कर । 22 लौट आये । 23 एक प्रकारकी वाटी । 24 भोजन कर के वापिस घर पर आये । 25 मार्गमें आते हुए चारण रवाना हुआ । 26 नजदीक । 27 चारणके घोड़ेने ऊपरका (निकटका) मार्ग लिया । 28 इतनेमें । 29 से । 30 तब । 31 पीछा करो, पीछा करो ।

नाडूळसूं अपलांणै घोड़ै चढि दोड़िया[1] । आगै देखै तो चारण कूकतो[2] आवै छै । कह्यौ–'क्युं, खोसियो कै तो नूं[3] ?' ताहरां चारण बोलियो– 'रे! मोनूं न खोसियो; थांनूं खोसिया । रे ! रिणमल नाडूळ लेहो[4]...।' कह्यो–'रे, कदी[5] ?' आज लेही[6] । रे, रजपूतां ! रिणमल एथ आय रह्यो छै[7] । बाप काढियो छै[8], अर ओ[9] खरच करै छै । सु कोहीकांरै माथै कड़कसी[10] ।' 'कोहीकां रै, कैरै[11] ?' 'सोनगरांरै माथै; नाडूळ लेही[12] । का हुलांरै माथै कड़कै, सोभत लै[13] । बीजो किणी ही माथै नहीं[14] । हूं पुकारूं छूं रे, कांन दीयै, कोई ऊलै कांन सुणज्यो[15] ! म्हारो क्युं लीजै नहीं; पण थांहरी धरती लीजे छै[16] । वाहर करो[17] ।'

पछै कितराहेक दिन रिणमलजी अठै रहिनै पछै चीत्रोड़ पधारिया[18] । चीत्रोड़ मांहै रांणो लाखो राज करै । चूंडो कुंवर छै । सु चीत्रोड़ छतीस ही राजकुळी चाकरी करै[19] । वडो हिंदुसथांन, वडो राज[20] । अठै रिणमलजी पण दीवांणरी चाकरी करै[21] ।

एक दिनरो समाजोग छै । रांणो लाखो सिकार चढियो छै । चूंडो कुंवर साथै छै । आगै दरवाजै नीसरतां देखै तो एक कुंभार परणीज'र आवै छै[22] । दरवाजै मांहै पैसै छै[23] । ताहरां दीवांण ऊभो

---

1 तब नाडोलके लोग अपने घोड़ों पर बिना जीन रखे ही सवार होकर दौड़े । 2 पुकार करता हुआ । 3 तेरेको किसीने लूटा है क्या ? 4 अरे ! मुझको नहीं लूटा है, तुमको लूटा है रे ! रिणमल नाडोल ऊपर अधिकार कर लेगा । 5 अरे ! कब ? 6 आज ले लेगा । 7 रिणमल यहां आ रहा है । 8 बापने उसको निकाल दिया है । 9 यह । 10 सो यह किन्हींके ऊपर आक्रमण करेगा । 11 कोई किनके ऊपर ? 12/13 या तो सोनगरों पर आक्रमण कर के नाडोल लेगा या हुलोंके ऊपर आक्रमण कर के सोजत ले । 14 दूसरे किन्हीं पर नहीं । 15 अरे ! मैं पुकार कर कहता हूँ, कोई मेरी बात पर कान देना । कोई इधर आकर मेरी बात सुनना । 16 मेरा कुछ नहीं लिया जा रहा है; परन्तु तुम्हारी धरती ली जा रही है । 17 दौड़ कर पीछा करो । 18 कितनेक दिन रिणमलजी यहां रह कर फिर चित्तौड़ पधारे । 19 चित्तौड़में क्षत्रियोंके छत्तीस ही राजवंश चाकरी करते हैं । 20 मान-प्रतिष्ठामें हिन्दुस्थानका बड़ा राज्य । 21 यहां रिणमलजी भी दीवान (राना)की चाकरी करते हैं । 22 आगे जब दरवाजेसे निकलते हुए देखते हैं तो एक कुम्हार विवाह कर के आ रहा है । 23 दरवाजेमें प्रवेश कर रहा है ।

रहियौ–'कुंभारनूं आवणद्यो[1]। ताहरां कुंभार आघो आयो[2]। ताहरां दीवांण कुंभारनूं देखनै निसासो मूंकियो[3]। ताहरां कुंवर चवंडै दीठो[4]। सिकार रस अपूठा पधारिया[5]। महलां मांहै पधारिया। अमराव, राव सरब वाहुड़िया[6]। ताहरां चवंडै कुंवरनूं कह्यो–'वेटा ! थेई जावो। सुख करो[7]।' ताहरां चवंडै हाथ जोड़ि विनती कीधी। दीवांण वोलिया–'चवंडा कासूं कहै[8] ?' ताहरां कह्यो–'दीवांण दरवाजै मांहै नीसरतां निसासो क्युं मूंकियो ? किसै वास्तै[9] ?' ताहरां कह्यो–'चवंडा ! ईयै ख्याल मत पड़ै[10]।' कह्यो–'दीवांण ! वात कह्यां ही ज वणै[11]।' ताहरां दीवांण वोलिया–'चवंडा ! यु नहीं। रजपूतरी वेटी परणीजीजै तैरो कासू[12] ? पण आपरा सगांरी वेटी परणीजीजै तो वीमाह हुवो जांणीजै[13]। ताहरां चवंडै कह्यो–'भलां दीवांण[14] !'

ताहरां चवंडै सरब अमराव एकठा करनैं पूछियौ–'ठाकुरे ! किण-हीरै मोटी वेटी छै[15] ? ताहरां कह्यो–'राज ! रिणमलजीरै डेरै म्होटी वेटी छै[16]।' ताहरां चवंडै कह्यो–'रिणमलजी ! म्हांनूं गोठ करो[17]। ताहरां रिणमलजी कह्यो–'वाह वाह !! ताहरां रिणमलजी

---

1 तब दीवान (राना) खड़े रहे और कहा कि कुम्हारको आने दो। (राजस्थानमें दूल्हेको, चाहे वह किसी भी जातिका हो, जबकि वह मौड़ बांधे हुए विवाह करनेको जा रहा हो अथवा विवाह कर के लौट रहा हो—उसे परम्परासे यह सम्मान प्राप्त है कि उस समय यदि वड़ेसे वड़ा कोई राजा भी सामने आ जाय तो वह राजा उस दूल्हेके सम्मानमें मार्ग छोड़ कर खड़ा रह जाता है। दूल्हा और उसकी वरात मार्ग नहीं छोड़ते। राजस्थानमें इसीलिये दूल्हेको 'दूल्हा' नहीं कहा जाता। "वींदराजा"की सम्मानीय संज्ञासे संबोधन किया जाता है।) 2 तब कुम्हार आगे आया। 3 तब दीवानने कुम्हार दूल्हेको देख करे निःश्वास छोड़ा। 4 उस समय कुंवर चूंडेने देखा। 5 जब दीवान शिकारसे वापस लौटे। 6 उमराव और राव सभी चले गये। 7 तब दीवान (राना) ने कुंवर चूंडेको कहा कि तुम भी जाओ और आराम करो। 8 चूंडा तुम क्या कहना चाहते हो ? 9 दरवाजेमेंसे निकलते हुए दीवानने निःश्वास क्यों छोड़ा ? किसलिये ? 10 तब उत्तर दिया कि चूंडा! इस वातको कोई ख्याल न करो। 11 दीवान ! यह वात तो कहना ही पड़ेगा। 12/13 किसी राजपूतकी वेटीसे यदि विवाह किया जाय तो उसका क्या महत्व ? परंतु यदि किसी बरावरीके संबंधीकी पुत्रीसे विवाह किया जाय तो वह विवाह—विवाह हुआ जाना जाता है। 14 दीवान ! भली वात। 15 किसीके वड़ी लड़की है ? 16 राजन् ! रिणमलजीके घर वड़ी लड़की है। 17 रिणमलजी आप हमको दावत दें।

मंदारियारा बाकरा ४०।५० मंगाया[1]। घणा गाऊथी अणाया[2]। घणा वांना किया[3]। मार बाकरांनै गोठरी तयारी कीधी[4]। चवंडैजीनूं आदमी मूंकियो। 'राज ! गोठ तयार छै। जीमणनै पधारो। मेवाड़ा ठाकुर सोह बैठा छै[5]।'

ताहरां चवंडो आयो। बोलियो–'रिणमलजी ! दीवांणनूं परणावो[6]।' ताहरां रिणमलजी बोलिया–'थांनूं परणावस्यां। दीवांणरी वय अवर छै[7]।' ताहरां चवंडो कहै–'रिणमलजी ! थे मांहरै म्होटा सगा। म्हांनूं रजपूत करो[8]।' वडी हठ हुई। रिणमलजी मांनै नहीं। चवंडोजी छाडै नहीं। युं करतां पाछलो पोहर हुओ। ताहरां चवंडोजी बोलिया–'रे, कोई चारण बांभण भलो छै ईयांरै[9] ?' ताहरां कह्यो–'जी, चारण चांदण खिड़ियो छै।' ताहरां चांदण खिड़ियैनूं तेड़ि नै कह्यो[10]– 'थारै ठाकुरनूं समझावि। एक छोरू मर ही जाय छै[11]।' ताहरां चांदण बोलियो–'राज ! राजा थां सीसोदियांरै वडो बेटो हुवै[12]। बाकीरा फिरता फूंद्यां दो। तैं वासतै न द्यां[13]। अर थे बाई मांगो छो; अर जो म्हे द्यां; अर बाईरै छोरू हुवै सो[14]?' ताहरां चवंडोजी बोलिया–'छोरू हुवै सो चीत्रोड़रो धणी[15]' ताहरां चारण कहै–'राज ! चीत्रोड़री साहिबी कुण छोडै[16]?' ताहरां चूंडैजी सूंस कियो[17]। ताहरां चांदण जाइनै रिणमलजीनूं कह्यो–'राज ! कासूं करो छो[18] ?'

1/2 तब रिणमलजीने बहुत दूरसे मंदारियाके ४०-५० बकरे मंगवाये। 3 अनेक प्रकारके व्यंजन बनवाये। 4 बकरोंको मार कर के गोठकी तैयारी की। 5 चूंडेजीको आदमी भेज कर कहलवाया कि राज ! गोठ तैयार है, भोजन करनेको पधारें। सभी मेवाड़ा ठाकुर बैठे प्रतीक्षा कर रहे हैं। 6 रिणमलजी ! आपकी पुत्रीका विवाह दीवानसे करिये। 7 तुमको व्याहेंगे। दीवानकी वय अधिक हो गई है। 8 रिणमलजी ! आप हमारे बड़े संबंधी हैं, आप हमें राजपूत बनायें। (हमें यह सम्मान दें।) 9 इनके यहां समझदार चारण ब्राह्मण भी कोई है ? 10/11 तब चांदण खिड़िये नामके एक चारण को बुला कर कहा कि तुम अपने ठाकुरको समझाओ कि वे ऐसा ही समझलें कि उनकी एक संतान मर गई है। 12/13 राज ! तुम सिसोदियोंमें जो वड़ा वेटा होता है वही राजा होता है। शेष इधर-उधर मारे फिरते हैं; इसलिये हम दीवानको अपनी कन्या नहीं देते हैं। 14 तुम कन्या मांग रहे हो, मान लो, यदि हम देदें और उस कन्याके पुत्र हो जाय तो उसका क्या होगा ? 15 पुत्र होगा तो वह चित्तोड़का स्वामी होगा। 16 राज ! चित्तोड़का राज्य कौन छोड़े ? 17 तब चूंडेने इस बातकी सौगंध खाई। 18 राजन् ! क्या विचार करते हो ?

'पुराणोई चंदण, नवो कुकाठ[1]' !

कासूं करणो छै ? दीवांणनूं परणावो[2]। ताहरां रिणमलजीनूं चांदण नीठ पगै किया[3]। तुरत दीवांणनूं नाळेर मेलियो[4]।, दीवांण पधारिया। तियैहीज दिन दीवांणनूं परणाया। वडा हीड़ा किया[5]।

दीवांण परणियां पछै तेरह मासै मोकल जायो[6]। जाहरां पांच वरसरो मोकल हुवो; ताहरां दीवांण विसरांमियो[7]। ताहरां सतियां नीसरी। ताहरां राठोड़ सती हुवणरी तयारी कीवी। ताहरां चवंडोजी जाय पगै पड़नै कह्यो[8]–'माजी ! श्रो कासूं करो छो ? थे तो राजवाईरो टीको पावस्यो[9]।' ताहरां कह्यो–'थां चवंडो छै तठै म्हारै वेटैनूं टीको कठा हुसी[10] ?' ताहरां चवंडै कह्यो–'माजी ! टीको मोकलरो छै। हूं मोकलरो चाकर छूं[11]।'

ताहरां चवंडै मोकलनूं तेड़िनै श्रापरा माथारी पाघ मोकलरै माथै म्हेली। मोकलरी पाघ श्रापरै माथै म्हेली। श्रर मोकलनूं चवंडै सलांम की[12]। सारां श्रमरावां मोकलनूं सलांम कीधी। ताहरां मोकलरी मा चवंडैनूं दवा दीन्ही[13]। कह्यो–'चवंडै कियो ज्युं को करै नहीं। श्रा चीतोड़री साहिबी तैं मोकलनूं दीन्हीं[14]। श्रौर जे हूं

---

1 पुराना होने पर भी चंदन, चंदन ही कहलाता है, वह काष्ठ नहीं कहलाता, परंतु दूसरा काष्ठ नया ही क्यों न हो, वह कुकाठ है, उसमें कोई सुगंध नहीं होती। 2 सोचना क्या है ? दीवान को व्याह दो। 3 चाँदणने रिणमलजीको बड़ी मुश्किलसे तैयार किया। 4 तुरंत ही दीवानको नारियल भेज दिया गया। 5 उस ही दिन दीवानको व्याह दिया श्रौर खूब सेवा-चाकरी की। 6 दीवानके विवाह करनेके १३ मास बाद मोकलका जन्म हुश्रा। 7 मोकल जब पांच वर्षका हुश्रा तब दीवान धाम पहुँच गये। 8/9 उस समय जब स्त्रियां सती होनेको निकलीं तो उनमें मोकलकी मा (रिणमलजीकी पुत्री) राठौड़ रानीने भी सती होनेकी तैयारी की। तब चूंडेने उसके पांवों गिर कर कहा—'माताजी! श्राप यह क्या कर रही हैं ? श्राप तो राजमाताका सम्मान प्राप्त करेंगी।' 10 'चूंडा ! तुम मौजूद हो तो मेरे वेटेको टीका कहांसे होगा ?' 11 'माताजी ! टीका मोकलको मिलेगा, मैं तो उसका सेवक हूँ। 12 तब चूंडेने मोकलको बुला कर श्रपने सिरकी पघड़ी उतार कर मोकलके सिर पर रखदी श्रौर मोकलकी पघड़ी श्रपने सिर पर रखदी श्रौर फिर चूंडेने मोकलको प्रणाम किया। 13 उस समय मोकलकी मांने चूंडेको श्राशिप दी। 14 राठोड़ रानीने कहा–'चूंडा ! तूने जो काम किया है वैसा कोई नहीं कर सकता, यह चित्तौड़का राज्य तूने मोकलको दे दिया।

सती हूं तो म्हारो वचन सत्य छै, आ धरती मेवाड़री थांहरै पेटरां रै रहिज्यो[1]।' इसो वचन राठवड़ कह्यो, सु आज लग पाळै छै[2]। रांणो मोकल चित्रौड़ राज करै।

एकदा प्रस्ताव[3]। राव रिणमलजी छड़वड़ै साथसूं जात्रा करण पधारियो हुतो[4]। पछै जात्रा कर पूठो पधारियो हुतो[5]। सु मारगमें आवतां[6] ढूंढाड़ मांहै राजा पूरणमल हुतो[7]। तियै कह्यो[8]– 'म्हांरा[9] चाकर रहस्यो ?' ताहरां कह्यो—'रहिस्यां' ताहरां कह्यौ–'भलां'।

एक दिन चोगानमें रमता, पूरणमलरै जोधो नै कांधळ साथै हुता। सुं कांधळ जेठी घोड़ै चढियो हुतो। सु घोड़ो पूरणमल दीठो[10]। ताहरां मांगियो। ताहरां कांधळ कह्यो–'रिणमलजीनूं पूछियां विना न देऊं।' ताहरां पूरणमल कहै–'जोर ही घोड़ो लेईस[11]।' ताहरां जोधो कांधळ डेरै आया। रिणमलजी कनै[12] आय घोड़ारी वात कही।

ताहरां घाटा रोकाया[13]। अर घोड़ो लेणरी साजत मांडी छै[14]। ताहरां रिणमलजी, जोधो, कांधळ बीजो ही सरब साथ लेनै पूरणमलरै दरबार आया। जेथ पूरणमल बैठो हुतो तेथ गोडो दाबि अर जाय बैठा[15]। बैस अर कणैनूं हाथ घातियो। कणो पकड़ अर ऊभो कियो[16]। बाहिर ले आया। आय अर घोड़ै चढ़िया। घोड़ो बेळास कियो[17]। पूरणमलनूं चाढियो। ताहरां पूरणमलरो रजपूत मारणनूं आयो। ताहरां कटारी काढी। इसड़ा हुवा जु पूरणमलनूं मारै[18]। ताहरां पूरणमल रजपूत पालिया[19]। ताहरां उठारा चढिया पूरणमलनूं

---

1 मैं जो सती हूँ तो मेरा यह वचन सत्य जानना कि मेवाड़की धरती सदा तुम्हारे वंशजोंके पास बनी रहेगी। 2 राठौड़ रानीके कहे हुए इन वचनोंका आज तक पालन किया जाता है। 3 एक बारकी बात है। 4 राव रिणमल अपने थोड़ेसे आदमियोंके साथ तीर्थ-यात्रा करनेको गया था। 5 यात्रा कर के लौट रहा था। 6 आते हुए। 7 था। 8 उसने कहा। 9 हमारे। 10 उस घोड़ेको पूर्णमलने देखा। 11 घोड़ा जबरदस्तीसे ले लूंगा। 12 पास। 13 पूर्णमलने सभी मार्ग रुकवा दिये। 14 और घोड़ा लेनेकी तैयारी हो रही है। 15 जहां पूर्णमल बैठा था, वहां जाकर उसके घुटनेको दबा कर बैठ गये। 16 बैठ कर के पहुंचेमें हाथ डाला। पहुंचा पकड़ कर के उसे खड़ा कर दिया। (कणो = १ पहुंचा २ कमर ३ गरदन) 17 एक घोड़ेके ऊपर दोनों सवार हुए। 18 ऐसा ढंग बनाया कि मानो पूर्णमलको मार रहे हैं। 19 तब पूर्णमलने राजपूतोंको रोक दिया।

लेहीज आया। ढूंढाड़ मांहै आयनै उठै पूरणमलनूं भक्ति कर घोड़ो दै अर विदा कियो[1]। कह्यो–'म्हां कनां घोड़ो युं लीजै। ज्युं थां लेणो मांडियो त्युं न लीजै[2]।

पछै रिणमलजी नागोर आयो। जाहरां राव चूंडोजी कांम आया, ताहरां टीको रिणमलजीनूं हुवो[3]। ताहरां रावजीरो जीव हुतौ जु–'कान्हैनूं टीको देज्यो[4]।' ताहरां रिणमलजी कान्हैनूं नागोर दियो[5]। सतैनूं राव चूंडै मंडोर पैहलीहीज दियो हुतो[6]। रिणमलजी सोझत रहता, रावजी दियो हुतो[7]।

ताहरां भाटियांसूं वैर[8]। सु रोज चढै, धरती भाटियांरी मारै[9]। ताहरां भुजो संढायच प्रधांन वणाय भाटियां म्हेलियो[10]। ताहरां भुजै राव रिणमलजीनूं गुण कह्यो[11]। ताहरां राव रिणमलजी कह्यो–'हमैं न मारूं[12]।' ताहरां भाटियां राव रिणमलजीनूं परणाया। राव जोधो भाटियांरो दोहितो[13]।

ताहरां राव रिणमल, जोधै नरबदसूं वेढ कीवी[14]। ताहरां नरबद घावै पड़ियो। एक आंख फूटी। तीर लागो[15]। रजपूत कांम आया। रिणमलजी मंडोवर लीधी[16]। मडोवर मांहै सतो हुतो।

1/2 ढूंढाड़में आकर के* वहां पूर्णमलको भोजन आदि की खातिर कर के और उस घोड़ेको देकर उसे अपने घर रवाना किया और कहा कि-'हमारे पाससे घोड़ा इस प्रकार लिया जाता है, जिस प्रकार तुमने लेनेका इरादा किया था उस प्रकार हमारा घोड़ा नहीं लिया जा सकता।' 3/4/5 जब राव चूंडोजी काम आ गये तो राज्य-तिलक रिणमलजीको हुआ। परन्तु रावजीने यह इच्छा प्रकट की थी कि टीका कान्हाको देना, अतः रिणमलजी ने (अपना अधिकार त्याग कर) कान्हाको नागोर दे दिया। 6 सत्तेको राव चूंडेने पहिले ही मंडोर दे दिया था। 7 राव चूंडाजीने रिणमलजीको सोजत दे रखा था, सो वे सोजतमें रहने लग गये। 8/9 उन दिनोंमें भाटियोंसे शत्रुता चल रही थी, सो हमेशा चढाई कर के भाटियोंके देशमें बिगाड़ करते हैं। 10 तब भाटियोंने चारण भुजा संढायचको मुखिया बना कर के रिणमलजीको राजी करने के लिये भेजा। 11 भुजेने राव रिणमलजीका यश-गान किया। 12 तब रिणमलजी प्रसन्न हुए और कहा कि 'अब मैं उनका बिगाड़ नहीं करूंगा।' 13 इस पर भाटियोंने राव रिणमलको अपनी कन्या व्याह दी। राव जोधा भाटियोंका दोहिता। 14 राव रिणमल और जोधाने नरबदसे लड़ाई की। 15 नरबदके तीर लगनेसे उसकी एक आंख फूट गई और आहत होकर गिर पड़ा। 16 रिणमलजीने मंडोर पर अधिकार कर लिया।

---

* यहां राव रिणमलका पूर्णमलको लेकर ढूंढाड़से बाहिर आ जाना होना चाहिये। ढूंढाड़में तो वे थे ही।

आंखै जखम हुतो[1]। ताहरां राव रिणमलजी कह्यो–'सतानूं कोट मांहैसूं मतां काढो[2]।' ताहरां सतानूं कोट मांहै राखियो। ताहरां राव रिणमल सतैनूं मिळण पधारिया। रिणमलजी सतैनूं मिळियो। बैठा। पगै लगायो[3]। ताहरां जोधो कुंवर पगै लागो। ताहरां जीनसाल पैहरियां, हथियार वांधियां पगै लागो[4]। ताहरां सतै जोधारै पूठै हाथ दियो[5]। ताहरां जीनसाल हाथनूं लागी[6]। ताहरां सतै पूछियो–'रिणमल ओ कुण[7]।' ताहरां कह्यो–'राज! रावळो गुलांम छै, जोधो[8]।' ताहरां सतै कह्यो–'रिणमल! टीको जोधैनूं देई, धरती जोधो राखसी[9]।' कह्यो–'भलां राज[10]।' ताहरां रिणमलजी टीकाइत बेटो जोधो थापियो[11]। आप मंडोवर ले जोधानूं दियो। आप नागोर पधारिया[12]।

उठै एक दिन बैठो राव रिणमल बोलियो–'ठाकुरे! चीतोड़रा समाचार आजकाल न आवै, कासूं छै[13]?' यु करतां एक दिन आदमी आयो[14]। कागद दियो नै कह्यो–'मोकल मारियो[15]।' ताहरां रावजी वोलिया। कह्यो–'रे, मोकल मारियो[16]?' पछै कागळ वचाया। रिणमलजी मोकलनूं पांणी दियो। नै आप चीतोड़नूं मतो कियो[17]। ताहरां २१ पांवड़सांणा हुतो। पांवड़सांणै ऊभा रहनै कह्यो–'भाई! मोकलरो वैर लीयै पछै काई वात करस्यां[18]। सीसोदियांरी दीकरयां हूं वैरमें राठवड़ांनूं परणाऊं तो हूं रिणमल[19]।' ताहरां रिणमलजी

---

1 मंडोरमें सत्ता था और वह आंखोंसे लाचार था। 2 सत्तेको कोटमेंसे मत निकालो। 3 सब साथ वालोंको उनके पाँवों लगाया। 4 कुंवर जोधाजी कवच पहिने हुये और हथियार बांधे हुए उनके पाँवों लगा। 5 तब सत्ताने जोधाकी पीठ पर हाथ दिया। 6 कवच हाथको लगा। 7 तब सत्तेने रिणमलको पूछा—'रिणमल यह कौन ?'' 8 उत्तर दिया कि राज! यह आपका गुलाम जोधा है। 9 तब सत्तेने कहा–रिणमल! टीका जोधाको देना। धरतीको जोधा रख सकेगा। 10 बहुत अच्छा महाराज! 11 तब रिणमलजीने अपने पुत्रों मेंसे जोधाको टीकायत स्थापित किया। 12 आपने मंडोरको लेकर जोधाको दे दिया और स्वयं नागोर चले गये। 13 वहां एक दिन बैठे हुए राव रिणमलजीने कहा–'ठाकुरो! आजकल चितौड़के कोई समाचार नहीं मिल रहे हैं, क्या वात है? 14 इस प्रकार प्रतीक्षा करते-करते एक दिन आदमी आ ही गया। 15 उसने पत्र दिया और कहा–'मोकल मारा गया।' 16 अरे! मोकल मारा गया? 17 रिणमलजीने मोकल को जलांजलि दी और खुदने चित्तौड़ जानेका विचार किया। 18 मोकलके वैर का बदला लेनेके बाद फिर कोई बात करेंगे। 19 सिसोदियोंकी पुत्रियोंको इस वैरके बदलेमें राठौड़ोंको व्याह दूं तो मैं रिणमल।

कटक करनै चीतोड़ गया। ताहरां सीसोदिया नासि पईरै भाखरै जाय पैठा[1]। घाटा वांधि अर जाय वैठा[2]। ताहरां रिणमलजी जाय भाखर रोकियो[3]। छव मास हुवा, भाखर भिळै नहीं[4]। ताहरां भाखर मांहिलो मेर ईयां काढियो हुतो सु आयनै रिणमलजीसूं मिळियो[5]। तियै कह्यो–'जे दीवांणरो परवांणो हुवै तो हूं आय मिळां[6]।' ताहरां रिणमलजी परवांणो कर दियो। ताहरां ५०० जीनसालिया करनै रिणमलजी पहाड़नूं हालिया[7]। ताहरां मेर कह्यो–'जी, मास १ लग धीरा रहो[8]।' कह्यो–'क्युंजी ?' 'मारगमें नाहरी व्याई छै[9]।' ताहरां रिणमलजी कह्यो–'नाहरी म्हे जांणां, तूं हालि[10]।' ताहरां आदमी ५०० पाळा जीनसालिया करनै रिणमलजी चढिया छै। आगै मैणो छै। ताहरां हालतां-हालतां नाहरी नजीक आई, ताहरां मैणो ऊभो रह्यो–'जी, आगै नाहरी छै।' ताहरां रिणमलजी वेटै अड़मालनूं कह्यो–'हां !' ताहरां अड़माल नाहरी वतळाई[11]। ताहरां तूट अर आई[12]। ताहरां नाहरीनूं कटारीसूं फाड़ नांखी। पछै आघा हालिया[13]। आगै पहाड़ मांहै लेजाइ चाचै मेरैरै घरां मांहै ऊभा राखिया[14]। ताहरां केई चाचैरै घरै चढिया; केई मेरैरै घरै चढिया। रिणमलजी महपैरै घरै चढिया। रिणमलजीनूं प्रतंग्या हुती[15]। 'स्त्री पुरुपरै भेळा थकां न जावतो[16]। ताहरां बारणै[17] ऊभा रहिनै कह्यो–'महपा ! आव बाहिर।' ताहरां महपो स्त्रीरा कपड़ा पैहर घूंघट काढि अर नीसर गयो[18]। ताहरां रिणमलजी कह्यो–'महपा ! आव बाहिरै।' ताहरां

---

1 तव सिसोदिये भाग कर पहीके पहाड़ोंमें जा घुसे। 2 सभी पहाड़ी मार्गोंको रोक कर के जा वैठे। 3 तव रिणमलजीने भी जाकर पहाड़को घेर लिया। 4 छ मास हो गये परन्तु पहाड़ सर नहीं होता। 5 पहाड़में के एक मेर को इन्होंने निकाल दिया था, वह रिणमलजीसे आकर मिला। 6 यदि दीवानका परवाना हो तो मैं आपमें आकर मिल जाऊं। 7 तव ५०० कवचधारी तैयार कर के रिणमलजी पहाड़को चले। 8 एक मास तक धीरज रखो। 9 मार्गमें नाहरीने वच्चे दिये हैं। 10 तव रिणमलजीने कहा–'नाहरीको हम समझ लेंगे–तू आगे चल। 11 तव रिणमलजीने अपने वेटेको कहा–'हां! मारदो !' तव उसने नाहरीको छेड़ा। 12 तव नाहरी टूट कर सामने आई। 13 अड़मालने नाहरीको कटारीसे चीर दिया और फिर आगे चले। 14 पहाड़में लेजा कर सवको चाचा और मेरेके घरोंके पास खड़ा कर दिया। 15/16 रिणमलजीकी प्रतिज्ञा थी कि जहां स्त्री और पुरुष (पति-पत्नी) दोनों एक जगह हों वहां वह नहीं जाता था। 17 द्वार पर। 18 निकल गया।

ओळगांणी[1] बोली–'राज ठाकुर तो म्हारा कपड़ा ले अर पधारिया। हूं कपड़ा बाहिरी बैठी छूं[2]।' ताहरां रिणमलजी पूठा पधारिया[3]। चाचो, मेरो मारिया। बीजा ही सीसोदिया घणा मारिया[4]।

दिन ऊगो, ताहरां रिणमलजी सीसोदियांरा माथा वाढि चंवरी रचाय, तियांरी चोक्यां कीवी[5]। तियां ऊपर बरछांरी वेह मांडी। अर सीसोदियांरी बेटियां राठोड़ांनूं परणाई[6]। च्यार पोहर दिन वीमाह किया[7]। अठै मेवासो भांजि ठोड़ मेरनूं दे अर चीत्रोड़ पधारिया[8]। रिणमलजी कुंभैनूं टीको दियो। बीजा ही जिके सीसोदिया जिके फिरिया हुतां तियांनूं मार, देस मांहिसूं काढि सावळ किया[9]। रिणमलजी कुंभैनूं धरती साफ दीनी[10]। कुंभो सुखसूं राज करै छै। ईयै जिनस देस सरब रिणमलजी वस कीधो छै। जांणै जियेनूं काढै[11]।

एकदा प्रस्ताव[12]। चाचै मेरैरा बेटा रांणैजीसूं आय मिळिया। महपो पमार आय मिळियो। हिवै[13] महपो पमार रांणै कुंभैनूं कहै–'धरती राठोड़ै लीधी[14]। धरतीरा धणी राठोड़ हुआ।'

एक दिन रांणो कुंभो पोढियो छै। अको चाचावत पगै हाथ दै छै[15]। सु अकैरै आंख्यां हूं आंसू ढळिया[16]। ऊंना टिबका रांणारै पगां ऊपर ढळिया, ताहरां रांणो जागियो[17]। देखै तो अको रोवै छै। ताहरां

---

1 ओळगांणी = १ वियोगिनी। परदेशिनी। २ यश गानेवाली ३ स्त्री। 2 मैं वस्त्रहीन बैठी हुई हूँ। 3 तब रिणमलजी वहांसे लौट गये। 4 दूसरे भी बहुतसे सीसोदियोंको मार दिया। 5 दिन उग जाने पर रिणमलजीने चौंरीकी रचना की, सिसोदियोंके सिरोंको काट कर के उनकी चौकियां बनवाईं। 6 उन चौकियों पर बरछोंकी वेह स्थापित की और सिसोदियोंकी कन्याओंका राठौड़ोंसे विवाह किया। [वेह = १ विवाह-मंडप २. मंगल-कलश। विवाहमें स्थापित घट। ३. नीचेसे ऊपरकी ओर क्रमशः छोटे, ऐसे ऊपरा ऊपरी रख कर की जाने वाली मिट्टीके सात घड़ोंकी स्थापना। विवाह-मंडपके चारों कोनोंमें ऐसी चार घट-श्रेणियां स्थापित की जाती हैं।] 7 चारों पहर दिनमें विवाहोंका यही क्रम चला। 8 यहांका अड्डा तोड़ कर के वह जगह मेरको दी और स्वयं चित्तौड़ पधार गये। 9 दूसरे जो सिसोदिये बागी हो गये थे उनको मार दिया और कइयोंको देशमेंसे निकाल दिया। इस प्रकार सबको सीधा कर दिया। 10 रिणमलने देशको निष्कंटक बना कर कूंभाको सुपर्द कर दिया। 11 इस प्रकार रिणमलजीने सारे देशको अधिकारमें कर लिया है। चाहे जिसको निकाल देते हैं। 12 एक बारका जिक्र है। 13 अब। 14 राठोड़ोंने देश ले लिया। 15 अक्का चाचावत पगचंपी कर रहा है। 16 सो अक्केकी आंखोंसे आंसू गिरे। 17 गरम बूंदें पैरों पर पड़ी तो राना जगा।

कहियो–'अका ! क्यों ?' कह्यो—'जी धरती सीसोदिया हूं गई, राठवड़ै लई। ते मोनूं दुख आवै छै[1]।' ताहरां रांणो बोलियो–'अका ! रिणमलजीनूं मारस्यो ?' कह्यो–'दीवांणरा पूठै हाथ हुसी तो मारस्यां[2]।' ताहरां रांणै हुकम कियो। 'रिणमलनूं मारो'। युं रोज आलोच करै।

एक दिन राव रिणमल तळहटी पधारिया हुता[3]। उठै आपरा लोक सर्व एकठा मिळिया[4]। ताहरां रिणमलजीरो डूंम हुतो सु बोलियो[5]–'आज कालिह दीवांणरै अर थांहरै किण ही सौं चूक छै[6]। ताहरां रिणमलजी कह्यो–'म्हांरै तो चूक किण ही सौं नहीं।' तो कहियो–'दीवांणरै थांहीजसौं चूक छै[7]। जोधो कुंवर तळहटी राखज्यौ, थे गढ ऊपर रहो छो, तो कुंवर तळहटी राखज्यो[8]।' ताहरां रिणमलजी तो गढ ऊपर रहै। कुंवर सरव तळहटी रहै।

एक दिन रांणो कुंभो बोलियो–'रावजी ! जोधो आज-काल न दीसै, कठै छै ?[9]।' रावजी बोलिया–'तळहटी छै।' घोडांनूं चारै छै। तो कह्यो–'ऊपर बोलावो।' ताहरां कह्यो–'बोलावस्यां[10]।'' ताहरां जोधैनूं राव रिणमलजी कहाड़ियो[11]–'म्हे तेड़ावां तोई जोधा तूं मतां आवै[12]।' ताहरां एक दिन राणै कुंभै महपै पमार, अकै चाचावत ईयां आलोच कियो[13]। आज रिणमलनूं मारस्यां[14]। रातरा पोढियानूं मारस्यां[15]।' रातरो चूक कियो[16]। रात कुंभो पोढियो

---

1 उसने कहा कि धरती सिसोदियोंसे गई, राठोड़ोंने ले ली; इस बातका मुझको दुख हो रहा है। 2 अक्का ! रिणमलको मार दोगे ? तो उसने कहा कि पीठ पर यदि दीवानके हाथ होंगे तो मार देंगे। 3 एक दिन राव रिणमलजी तलहटी गये हुये थे। 4 वहां उनके सभी आदमी इकट्ठे होकर मिले। 5 उस समय रिणमलजीका एक डूम था सो वह बोला। 6 आजकल दीवानकी आपके किन्हीं पर नाराजी है (किसीको छलसे मार देनेकी बात सुनी जाती है।) 7 दीवानका यह धोखा आप हीके साथ है। 8 आप गढ पर रहते हो तो कुंवरको तलहटीमें रखना। 9 जोधा आज-कल दिखाई नहीं दे रहा है, कहां है ? 10 बुला लेंगे। 11 तब रिणमलजीने जोधाको कहलवाया। 12 हम बुलावें तो भी जोधा तू आना मत। 13 तब एक दिन राणा कुंभा, महपा पँवार और अक्का चाचावत,–इन सबने मिल कर परामर्श किया। 14 आज रिणमलको मार देंगे। 15 रातको सोते हुएको मार देंगे। 16 रातको धोखा किया।

ऊठै, बैसै महिल हूं बारै जावै, फेर मांहि आवै।[1] ताहरां रांणी पूछियो—'दीवांणजी ! आज कासूं छै ? दीवांण किणहीसौं चूक कियो छै ?'[2] कह्यो—'हवै।'[3] ताहरां रांणी बोली—देखिया ! हराम-खोरांरै कहै कोई रिणमलसूं चूक करता हुवो ?'[4] ताहरां बोलिया 'म्हां तो रिणमल मरायो।'[5] रांणी बोली—'कासूं कियो ?'[6] थांरै बापरो वैर लियो, थांनूं टीको दियो, थांरी धरती वसाई, तैरै वासतै थे मरावो ? थांसूं रिणमल कासूं बुरो कियो छै ?'[7] ताहरां दीवांण छोकरी मेल्ही—'जायनै महिपैनूं तेड़ि ल्याव।'[8] कहियो—'थांनूं कांम फुरमायो सु मतां करो।'[9] ताहरां छोकरी जायनै कह्यो—'महपाजी ! थांनूं दीवांण कांम फुरमायो छै सु हिवडां मत करो।[10] थांनूं दीवांण बुलावै छै।'[11] ताहरां जांणियो—'रिणमल जीवियो तो म्हे मरस्यां'[12] ताहरां छोकरीनूं माळा दीन्ही अर कहियो—'तूं कहे, कांम थां फुरमायो हुतो सु कियो।'[13] छोकरी पाछी फिरी। आयनै रांणैनूं कह्यो।

ईंयां जायनै रिणमलजी पोढिया हुतांनूं घाव कियो।[14] ताहरां कटारीसूं एक रजपूत पोढियां ही मारियो। एक लोटैसूं मारियो।

---

1 रातको कुंभा सोता हुआ कभी उठता है, कभी बैठता है, कभी महलके बाहर जाता है और फिर भीतर आता है। 2 दीवानजी ! आज क्या बात है ? किसीको दगा कर के मारनेका विचार किया है क्या ? 3 हां। 4 देखना ! कहीं हरामखोरोंके कहनेसे रिणमलके साथ चूक तो नहीं कर रहे हो ? 5 हमने तो रिणमलको मरवा दिया। 6 रानीने कहा—'यह आपने क्या किया ? 7 उसने तुम्हारे बापको मारनेके बैरका बदला लिया, तुम्हारा राज्य-तिलक किया और तुम्हारे देशको फिरसे बसाया--इसीलिए तुम उसे मरवा रहे हो ? तुम्हारे साथ रिणमलने कौनसा बुरा किया है ?' 8 तब दीवानने दासीको भेजा कि जाकर महिपेको बुला ले आ। 9 कहलवाया कि तुम्हें जिस कामके करनेके लिए आज्ञा दी गई है, वह मत करना। 10/11 तब दासीने जाकर कहा--'महिपाजी ! तुमको जिस कामको करनेकी दीवानने आज्ञा दी है उसे अभी तक मत करो। तुमको दीवान बुला रहे हैं। 12 तब उसने सोचा--'यदि अब रिणमल जिन्दा रह गया तो हम मारे जायेंगे। 13 तब दासीको एक माला दे कर कहा--'तू यह कह देना कि जो काम आपने फरमाया था सो कर दिया गया है। 14 इन्होंने जाकरके सोते हुए रिणमल पर प्रहार किया। [ऐसा कहा जाता है कि राव रिणमल नींदमें सोया हुआ था। षड़यंत्रकारियोंने उसे लंबे वस्त्रसे खाट सहित लपेट कर खाटके साथ बांध दिया, जिससे वह उठ कर उनका मुकाबला न कर सके। परन्तु रिणमलने आहत अवस्थामें भी खाट सहित उठ कर उन लोगोंको मार दिया। उसके बाद उसका भी प्राणांत हो गया।]

एक लातसूं मारियो । जणा तीन मारिया ।[1] रिणमलजी कांम आयो ।

ताहरां छोकरी मोहल चढि पुकारी–'राठोड़ां ! थांहरो रिणमल मारियो ।'[2] ताहरां तळहटी सुणियो । ताहरां जोधो, कांधळ, बीजो ही साथ सरब चढ नीसरियो ।[3] वांसै फोज आई । लड़ाई हुई । कितराएक ठाकुर कांम आया ।[4] चरड़ो चंद्रावत कांम आयो । सिवराज, पूनो, ईंदो, भाटी, विजो । चरड़ै साद कियो–'वडा विजा !'[5] ताहरां एक बीजो विजो हुतो, तिको बोलियो–'फाड़-फाड़ मुंहड़ो, आप मरतां बीजा ई नूं ले मरै ।'[6] ताहरां चरड़ो बोलियो–'हूं तोनूं नहीं कहूं छूं; हूं विजै ईंदैनूं कहूं छूं, कस्तूरियै मृघनूं, ऊगमड़ैरै पोतरैनूं ।'[7] ओथ विजो ईंदो चरड़ैरै कनै कांम आयो ।[8] भींमो, वैरसल, वरजांग भींमावत कांम आया । भींमो चवंडावत पकड़णी आयो ।[9]

मांडळरै तळाव घोड़ांनूं पांणी पायो, ताहरां एकै तरफ जोधो नै सतो दोनूं हुता । दोय असवार घोड़ा पावता हुता । एकां तरफ कांधळ घोड़ो पावतो हुतो । ताहरां कांधळ एकल असवारै घोड़ै पावतांनूं वतळायो ।[10] ताहरां जोधै कांधळरो साद ओळखियो ।[11] ताहरां जोधै कांधळनूं बोलायो । बेऊं भाई एकठा हुवा ।[12] जोधै कांधळनूं रावतपणैरो टीको दियो ।[13] अै ठाकुर मारवाड़ मांहै आया[14] ।

---

1 उस समय राव रिणमलने उस हालतमें सोते-सोते ही एक राजपूतको तो कटारीसे, एकको लोटेसे और एकको लात मार कर मार दिया, तीन जनोंको मार दिया । 2 तब दासी महल पर चढ कर पुकारी—'राठोड़ो ! तुम्हारा रिणमल मारा गया है ।' 3 तब जोधा और कांधल आदि दूसरा सब ही साथ सवार हो कर वहांसे भाग निकले । 4 उनके पीछे फौज चढ कर आई, लड़ाई हुई जिसमें कितने ही ठाकुर काम आ गये । 5 चरड़ेने आवाज दी—'अरे ओ ! वड़ा विजा !' 6 तब एक दूसरा विजा था सो बोला—'मुँह फाड़-फाड़ कर क्यों बकता है, खुद मरता हुआ दूसरोंको भी ले मरता है ? 7 तब चरड़ेने कहा—'मैं तुझको आवाज नहीं दे रहा हूँ, कस्तूरीमृग वाले ऊगमड़ेके पोते विजा ईंदेको पुकार रहा हूँ । 8 वहां चरड़ेके पास विजा ईंदा तो काम आ गया था । 9 भीमा चूंडावत पकड़ा गया । 10 तब कांधलने घोड़ेको पानी पिलाते हुए एक सवारको बतलाया । 11 तब जोधेने कांधलकी आवाज पहिचान ली । 12 दोनों भाई मिले । 13 जोधेने वहीं कांधलको रावताईका टीका दे दिया । 14 फिर ये सभी ठाकुर मारवाड़में आ गये ।

दूहा

आगै सूर न काढिया, तुंगम काढी आय ।
जे मिस रांणो संजड़ी, लेई रिणमल राय ।। १

राय रिणमल नींद भरै, आवध लोह घण ऊबरै ।
कटारी काढी मरद घणो, तिम आगै सूर न तुंग किणी ।। २
तो दिन्नं मेवाड़ं, तो वियप्प कापियं सीसं ।
ना ऊ रयण वहीजै, वैसास कुंभकरणं कृतघ्नं ।। ३
जे रिणमल होवत दळ अंतर, कुंभकरन्न वहंत केणि पर ।
माथा सूळ सही सुरतांणां, ओ समुंद्रां वरतावत आंणां ।। ४

जे वरतावी आंण बेहूं सिधां वीचाळै,
हिंदू अनै हमीर मीर जे लुळिया भाळै ।
जे भग्गो पीरोज, खेत्र जेत्राई खेड़ै,
जे मारै महमंद, गज मारै संभेड़ै ।
रिणमल्ल राव विसरांमियौ, कुंभा की मन विक्कसै ?
छळियो छदम तैं कूड़ कर, जेम सीह आगै ससै ।। १

रावजी श्री रिणमलजीरी वात संपूर्ण ।

।। शुभं भवतु ।। कल्यांणमस्तु ।।

(इन छन्दोंमें राव रिणमलकी वीरताका, मोकल और कुंभकर्णके साथ मेवाड़में किये गये राव रिणमलके उपकारोंका एवं कुंभकर्णकी कृतघ्नता और विश्वासघातका वर्णन किया गया है। छन्द अशुद्ध हैं।)

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE

JODHPUR (INDIA)

Hon. Director, Padmashree Muni Jinvijaya, Puratattvacharya

PUBLICATIONS

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

General Editor:

PADMASHREE MUNI JINVIJAYA, PURATATTVACHARYA

DECEMBER, 1961

PUBLICATIONS

Up to July, 1961

RAJASTHAN PURATAN GRANTHAMALA

(General Editor—Padmashree MUNI JINVIJAYA, Puratattwacharya)

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. November 1961.

A. SANSKRIT

1. Praman-manjari—by Sarvadeva, with commentaries by Advayaranya, Balbhadra and Vaman Bhatt, ed. by Pattabhiram Shastri, Ex-Principal, Maharaja's Sanskrit College, Jaipur, *now* Prof. of Darshan, University of Calcutta. —Rs. 6.00

2. Yantraraja-rachana—An astrological work written under orders of Maharaja Sawai Jai Singh of Jaipur, ed. by Late Pt. Kedar Nath Jyotirvid, Editor, Kavyamala Series. —Rs. 1.75nP.

3. Maharshikul-vaibhavam Pt. I—by Late Vidyavachaspati Madhusudan Ojha, ed. by Mahamahopadhyaya Pt. Giridhar Sharma Chaturvedi. —Rs. 10.75 nP.

4. Maharshikul-vaibhavam Pt. II, Text.—by Late Vidyavachaspati Madhusudan Ojha, ed. by Pt. Pradumna Ojha. — Rs. 3.50 nP.

5. Tarksamgrah—by Annam Bhatt with commentary of Kshmakalyan Gani, ed. by Dr. Jitendra Jetli, MA., Ph. D., Prof., Ramananda Arts College, Ahemdabad. — Rs. 3.00

6. Karakasambandhodyota—by Rabhas Nandi, ed. by H.P. Shastri, M.A., Ph. D., Vice Principal, B. J. Institute Vidya Bhawan, Ahemdabad. —Rs. 1.75 nP.

7. Vrittidipika—by Mouni Krishna Bhatt, ed. by Purushottam Sharma Chaturvedi, formerly Prof, Mayo College, Ajmer. —Rs. 2.00

8. Shabdaratnapradipa—by an unknown author ed. by H.P. Shastri, M.A., Ph. D., Vice Principal, B. J. Institute Vidya Bhawan, Ahemdabad. —Rs. 2.00

9. Krishnagiti—by Somanatha, ed. by Dr. Priyabala Shah, M.A., Ph. D., D. Litt., Prof., Ramanands Arts College, Ahemdabad. —Rs. 1.75 nP.

10. Nritt-samgrah—a treatise on Indian Dance—by an unknown author, ed. by Dr. Priyabala Shah, MA., Ph.D., D. Litt., Prof, Ramananda Arts College, Ahemdabad. —Rs. 1.75 nP.

11. Shringarharavali—by Shri Harsha Kavi, ed. by Dr. Priyabala Shah, M.A., Ph. D., D. Litt., Prof., Ramananda Arts College, Ahemdabad. —Rs. 2.75 nP.

12. Rajvinod Mahakavyam—by Udairaj, a medieval Sanskrit poem on the life and achievements of Mahmud Begra, Sultan of Ahemdabad, ed. by G. N. Bahura, M. A., Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 2.25 nP.

13. Chakrapanivijaya Mahakavyam—by Lakshmi Dhar Bhatt, a romantic Sanskrit poem based on the love story of Usha and Aniruddha, ed. by K.K. Shastri, Curator and Prof, B., J. Institute, Gujrat Vidya Sabha, Ahemdabad. —Rs. 3.50 nP.

14. Nrityaratna—Kosha Pt. I—by Maharana Kumbhakarna Deva of Chittore; a long awaited authentic treatise on Indian Dance, ed. by R. C. Parikh, Director, B. J. Institute, Gujrat Vidya Sabha, Ahemdabad. —Rs. 3.75

15. Uktiratnakar—by Sadhu Sunder Gani, ed. by Puratattwacharya Muni Jinvijayaji, Hon. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 4.75 nP.

16. Durgapushpanjali—by Late Mahamahopadhyaya Pt. Durga Prasad Dwivedi, ed. by G. D. Dwivedi, Lecturar, Maharaja's Sanskrit College, Jaipur. —Rs. 4.25 nP.

17. Karnakutuhal and Shri Krishnalilamritam —by Mahakavi Bholanath, a protege of Sawai Pratap Singh of Jaipur, ed. by G. N. Bahura, M.A., Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 1.50 nP.

18. Ishwarvilasa Mahakavyam—by Kavikalanidhi Shri Krishna Bhatt, a work based on the History of Jaipur, written under orders and in the time of Maharaja Sawai Ishwari Singh, son of Maharaja Sawai Jai Singh of Jaipur. The work bears an eye-witness description of the Ashwamedha yajna performed by Sawai Jai Singh, ed. by Mathuranath Bhatt, Sahityacharya, with a foreword by late Dr. P.K. Gode, M.A.,D. Litt., Curator, B. O. R. Institute, Poona. —Rs. 11.50 nP.

19. Rasadeerghika—by Vidyaram Kavi, a rare and abridged work on Sanskrit rhetorics, ed. by G.N. Bahura, M. A., Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 2.00

20. Padya-muktawali—A compilation of Literary and Historical poems of Krishna Bhatt, a contemporary of Sawai Jai Singh of Jaipur, ed. by Mathuranath Bhatt, Sahityacharya. —Rs. 4.00

21. Kavyaprakash—of Mammata, with Samketa by Someshwar Bhatt, found in Jaisalmer Grantha Bhandar. Edited by R. C. Parikh, Director B.J. Institute, Gujrat Vidya Sabha, Ahemdabad. Pt. I, Rs. 12.00

22. „ „ „ Pt. II, Rs. 8.25 nP.

23. Vasturatnakosha—by an unknown author, Edited by Dr. Priyabala Shah. M. A., Ph. D., D. Litt. Prof. Ramanand Arts College, Ahemdabad. —Rs. 4 50 nP.

24. Dashkantha Vadham—by late Mahamahopadhyaya Durga Prasadji Dwivedi, a poetical work on Ram-Charitra. Edited by Shri Gangadhar Dwivedi, Prof. Maharaja Sanskrit College, Jaipur. —Rs. 4:00

25. Bhuwaneshwari Mahastotram—by Prithwidharacharya, with commentry of Padmanabha, edited by Shri G.N. Bahura, M.A. Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 3.75 nP.

B. RAJASTHANI AND HINDI

1. Kanadhade Prabandha—by Mahakavi Padmanabha, a famous

Rajasthani Historic Poem dealing with the chivalry of Kanadhade Chouhan at the time of the attack of Alauddin Khilji on the fort of Jalore, ed. by Prof. K.B. Vyas, M.A., Elphinstone College, Bombay. —Rs. 12.25 nP.

2. Kyamkhan Rasa—by Alaf Khan, Nawab of Fatehpur (Shekhawati), a Poetical History of Kayamkhanis, the Muslim Rajpoots of Rajasthan, ed. by Dr. Dashrath Sharma, M. A. D., Litt., Professor, Hindu College, Delhi and Shri Agar Chand Nahata, Bikaner. —Rs. 4.75 nP.

3. Lava Rasa—by Gopaldan Kaviya, a contemporary description of the battle of Madhorajpura between the Chief of Lava and Ameerkhan of Tonk, ed. by Mehtab Chand Khared, Jaipur. —Rs. 3.75 nP.

4. Vankidas-ri-Khyat—a History of Rajasthan, writen in Rajasthani prose by Vankidas, the famous Historian of Jodhpur, ed. by Prof. Narottamdas Swami, M.A. Vice Principal, Maharana Bhupal College, Udaipur. —Rs. 5.50 nP.

5. Rajasthani Sahitya Sangrah Pt. I—A collection of old Rajasthani literary prose, ed. by Prof. Narottamdas Swami, M.A. Vice Principal, Maharana Bhupal College, Udaipur. —Rs. 2.25.

6. Rajasthani Sahitya Sangrah Pt II—Three old Rajasthani stories i.e. Bagdawatan Ri Vat, Pratap Singh Mahokam Singh Ri Vat and Veeramde Soneegara Ri Vat, edited by P.L. Menaria M.A., Sahitya Ratna, Offtg. Senior Research Asst. Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 2.75 nP.

7. Kavindra Kalpalata—by Kavindracharya Saraswati, a contemporary of Emperor Shahajahan, ed. by Rani Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat, Jaipur. —Rs. 2.00.

8. Jugal Vilasa—a poem by Maharaja Prithvi Singh of Kushalgarh, ed. by Rani Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat, Jaipur. —Rs. 1.75 nP.

9. Bhagat Mala—a poetical work in Rajasthani by Charan

Brahma Dasji Dadupanthi, ed. by Udairaj Ujjwal, Jodhpur. —Rs. 1.75 nP.

10. A Classified List of Manuscripts Pt. I—a list of 4000, manuscripts collected in The Rajasthan Oriental Research Institute upto the year 1955. —Rs. 7.50 nP.

11. A Classified List of Manuscripts Pt. II—a list of 3855 Mss. collected in the Rajasthan Oriental Research Institute from Apr. 1956 to March 1958. Edited by Shri G. N. Bahura, Dy. Direetor, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 12.00.

12. A List of Rajasthani Manuscripts Pt. I—Collected in the Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur upto March 1958. Edited by Padmashri Muni Shri Jinvijaiji. —Rs. 4.50 nP.

13. A List of Rajasthani Manuscripts—Pt. II—Mss collected during the year 1958-59. Edited by Purushottamlal Menaria M.A. Sahitya-Ratna. —Rs. 2.75

14. Munhata Nensiri Khyat Pt. I—by Munhata Nensi of Jodhpur. History of Rajasthan in Rajasthani prose, edited by Shri Badri Prasad Sakaria. —Rs. 8.50 nP.

15. Raghuwar Jas Prakash—by Charan Kishnaji Adha. A work on Rajasthani rhetories, edited by Shri Sitaram Lalas. —Rs. 8.25

16. Veer Van—by Dhadhi Badar, a Rajasthani poem relating a few heroic events of Veeramji Rathod of Jodhpur. Edited by Smt. Rani Laxmi Kumari Chundawat of Rawatsar. —Rs. 4.50 nP.

17. A Catalogue of Late Purohit Harinarayanji B. A. Vidyabhooshan Manuscripts Collection—edited by Shri G. N. Bahura. Dy. Director Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur and Shri L. N. Goswami, Senior Research Asst. Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 6.25 nP.

18. Sooraj Prakash Pt. I—by Charan Karnidan Kaviya. History of the Rathods of Jodhpur in Rajasthani Poem, edited by Shri Sita Ram Lalas. —Rs. 8.00

19. Nehatarang—by Raoraja Budha Singhji Hada of Bundi. A work on rhetorics, edited by Shri Ramprasad Dadheech M. A. Lecturer, Hindi Dept. Jaswant College, Jodhpur. —Rs 4.00

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

B. WORKS IN THE PRESS

	Work	*Editor :*
1.	Tripura Bharati Laghustawa by Laghu Pandit	Muni Shri Jinvijayaji
2.	Balshiksha Vyakaran by Sangram Singh	,,
3.	Padarth Ratna Manjusha by Krishna Mishra	,,
4.	Karnamritaprapa by Someshwar	,,
5.	Prakritanand by Raghunath Kavi	,,
6.	Shakun-pradeep	,,
7.	Hameer Mahakavya of Naya Chandra Soori	,,
8.	Ratna pareteksbadi of Thakka Pheru	,,
9.	Vasant Vilasa Phagu	Shri MC. Modi
10.	Chandra Vyakaran by Chandra Gomi	Shri B.D. Doshi
11.	Swayambhoochhanda	Shri H.D. Velankar
12.	Nritya Ratna Kosh Pt. II by Maharana Kumbhakarna	Prof. R.C. Parikh & Dr. Priyabala Shah
13.	Nandopakhyan	Shri B. J. Sandesara
14.	Vrittajatisamuchchaya by Kavi Virahanka	Shri H.D. Velankar
15.	Kavi Darpan	,,
16.	Kavi Kaustubha by Kavi Raghunath Manohar	Shri M.N. Gori
17.	Gora Badal Padmini Chaupai by Kavi Hemratan	Shri Udai Singh Bhatnagar
18.	Indra Prastha Prarbandh	Dr. Dashratha Sharma
19.	Vasavdatta of Subandhu	Dr. Jaideva Mohan al Shukla
20.	Ghatkharparadi Panchalaghu Kavyani	Pt. Amrit Lal Mohan Lal
21.	Bhuvan deepak of Yavnacharya	Pt. Purshottam Bhatt
22.	Rajasthan Men Sanskirt Sahitya Ki Khoj by Dr. Bhandarkar	Translation in Hindi by Shri Brahma Dutt Trivedi
23	Munhata Nensi ri Khyat Pt. II	Shri Badri Prasad Sakaria
24.	Rathore Vanshri Vigat	Muni Shri Jinvijayaji
25.	Puratattva Samshodhan Ka Itihasa	,,

26. Sooraj Prakash Pt. II	Shri Sitaram Lalas
27. Rathodan Ri Vanshawali	Muni Shri Jinvijayaji
28. Rajasthani Bhasha Sahitya Grantha Suchi	Muni Shri Jinvijayaji
29. Mira Brihat Padawali, complited by Late Pt. Hari Narayanji Purohit Vidya Bhooshan	Padmashri Muni Jinvijayaji
30. Rajasthani Sahitya Samgrah Pt. III	Shri L.N. Goswami
31. Sthulibhadra Kakadı	Dr. A.R. Jajodia
32. Matsya Pradesh Ki Hindi Ko Den,	Dr. Moti Lal Gupta, M.A. Ph. D.
33. Rukmini Harana by Sayanji Jhoola	P. L. Manariya M.A.,
34 Vrittamuktawali by Shri Krishna Bhatt	Bhatt Shri Mathuranathji
35. Agamrahasya	Shri G. D. Dwivedi
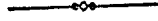
SOME COMMENTS

1—**Kanadhade Prabandha**—by Mahakavi Padmanabha, ed. by Prof. K. B. Vyas M. A., Elphinstone College, Bombay.

We are indeed grateful to the Rajasthan Puratattva Mandir for giving to the interested world this beautiful edition of a very fine work which should be known all over India.

SUNITI KUMAR CHATTERJI
M. A., D. Litt.
Chairman,
Govt. of India Sanskrit Commission.

*

2—**Rajavinoda Mahakavyam**—by Udairaj, ed. by Shri Gopalnarayan Bahura, M. A., Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

The series of important rare Sanskrit and Prakrit texts called the Rajasthan Puratan Granthamala started by Muniji under his General-Editorship is doing valuable service to Indology... With his characteristic vision and historical insight Muniji has selected for this series some rare texts of great historical, literary and cultural value...These texts in Sanskrit will facilitate the search for similar texts...The manuscript of the Rajavinoda Kavya in praise of Mahamud Begda was acquired by Dr. Buhler in 1857 for the Govt. of Bombay.

Muni Jinvijayaji was the first to realise the importance of the poem and make arrangements for its editing and publication in the series of the Rajasthan O. R. Institute Accordingly he entrusted the work of editing this poem to Shri Gopalnarayan and I am happy to find that this learned editor has spared no pains in giving us an edition worthy of the series in which it appears...I have to convey my hearty congratulations to Muni Jinvijayaji upon the wise planning of his scheme of Rajasthan Puratana Granthamala and its successful execution by entrusting different works in it to competent scholars like Shri Gopalnarayan, who also deserves the best thanks of all lovers of Indian

History and Sanskrit by making available to them a new text, hitherto unknown and unpublished.

Annuals of the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona Vol. XXXVII, 1957

P. K. GODE, *M. A., D. Litt.*

*

3—Ishwarvilasa Mahakavyam—by Kavikalanidhi Krishna Bhatt, ed. by Shri Mathuranatha Bhatt, Sahityacharya, Jaipur.

The publication of an 18th century poem of Krishna Bhatt, a Jaipur-court bard, brings out interesting fact that the 'Ashvamedha Yajna' was organised by rulers to assert their supremacy over neighbouring princes as late as 200 years ago.

Bhatt in his book 'Ishwarvilasa Kavya' describes the 'Ashvamedha Yajna' performed by his friend and master Raja Ishwari Singh some time after he ascended the Amber gaddi in 1743 on the death of his father Sawai Jai Singh II, who founded Jaipur.

Bhatt himself attended the Yajna. Besides describing the 'Yajna' in detail, he names the persons who witnessed the cermony.

7th November, 1959. TIMES OF INDIA

*

4—Classified List of Manuscripts Pt. II—ed by Shri G.N. Bahura M.A. Dy. Director Rajasthan Oriental Research Inst. Jodhpur.

A. All students in Indology will be glad to consult this excellent catalogue, containing many rare and precious Sanskrit works.

Director Indian Institute, Paris
16th. Feb. 1960

LOUIS RENOU

*

B. It is evident from the list that the Institute possesses a rich collection of Sanskrit Manuscripts on almost all subjects and branches of learning cultivated in ancient India, and also a large number of Prakrit, Rajasthani, Old Gujarati and Hindi manuscripts, and these lists will undoubtedly prove to be important tools of research to scholars doing textual work in Sanskrit and derived languages.

Journal of
The Oriental Institute, Baroda.
December, 1960.

B. J. SANDESARA

C. The catalogue adds to our knowledge of the manuscript material still existing in the Indian libraries.

IsMEO
Via Merulana
248 Rome.

Giuseppe Tucci
East and West,
June-September, 1961

*

D. Die Rajasthan Puratna Graathamala, welche im Auftrag der Regierung von Rajasthan Werke in Sanskrit, Prakrit, Alt-Rajasthani, Gujarati und Hindi herausgibt, ist in Europe bisher wenig bekannat. Sie hat jedoch bereits eine grobe Reihe schoner Veroffentlichungen herousgebracht, darunter manche bisher unbakannte Werke. Der vorliegende Band enthalt ein Handschriftenverzeichnis. Der erate Teil dieses Verzeichnisses behandelte die bis 1956 erworbenen Handschriften. Der vorliegende zweite Teil verzeichnet die Neuerwerbungen von April 1956 bis Marz 1958, zusammen mehr als 4000 Nummern. Angegeben sind in hergebrachter Weise Tital, Verfasser, Datum und Beatterzahl der Handschrift und, wenn notig, sind kurze Bemerkungen beigefugt. Im ersten Anhang sind Anfang und Schlub einer Anzahl wichtigerer Handschriften wiedergeben. Der zweite Anhang enthalt ein alphabetisches Verzeichnis der Verfassernamen. Ein dritter Anhang bringt ein Verzeichnis der chemaligen Palastbiblithek von Indra-gardh, die nunmehr unter die Obhut des Oriental Research Institute in Jodhpur gestellt ist. Druck und Ausstattung des Bandes sind sehr gut. Von einigen besonders wertvollen Handschriften sind einzelne Blatter abgebildet.

Journal of the Institute of Indology,
University of Vienna.

E. FRAUWALLNER

*

"...I appreciate them very much, for their being at rue enrichment to any library specialised in the Orientalistic field."

Prisident IsMEO (Oriental Institute)
Rome (Italy)

Prof. TUCCI

*

"...I am very glad to know that the Institute is so actively engaged in editing the unpublished manuscripts of Rajasthan in Sanskrit and other languages. This is a valuable contribution to Sanskrit studies."

Indian Institute University of Oxford
26 July 1961

Prof. T. BURROW

5—Dasakanthvadham, by M. M. Pandit Durgaprasad Dwivedi, edited by Shri Gangadhar Dwivedi.

"The author of the work under review has depicted the life of Rama from the spiritual point of view in his work called Dasakanthvadham on the lines of Yogavasistha, a well-known extensive philosophical treatise on Advaita Vedanta...The author is a gifted poet of a very high order The treatment of the theme especially in the first chapter is highly elaborate and the descriptions abound in rich poetical imagery of high aesthetic value."

Journal of the Oriental Institute Baroda H. C. METHA
Vol X. No. 3, March 1961

*

६—श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्—पृथ्वीधराचार्यविरचित, कविपद्मनाभकृत भाष्यसहित, सम्पादक श्रीगोपालनारायण बहुरा एम.ए., उपसञ्चालक राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

क. "मूल स्तोत्र की प्रबोधिनी टीका और पाद-टिप्पणियों में जो अनेकानेक पाठान्तर दिये गये हैं, उनसे इस प्रकाशन की उपयोगिता तथा महत्त्व बढ़ गया है।

२६ जून, १९६१ महाराजकुमार डा० रघुवीरसिंह
एम.ए., एल.एल. बी., डी. लिट्. एम पी.
सीतामऊ

ख. "इस स्तोत्र में भुवनेश्वरी के स्वरूप, ध्यान और मंत्रों का सम्यक् रूप से विवेचन है। साथ ही अन्य १२ स्तोत्रों के द्वारा भुवनेश्वरी के माहात्म्य की पर्याप्त सामग्री एकत्र की गई है। यथासंभव उपासनासम्बन्धी कई ज्ञातव्य विषय दिए गए हैं। प्रारंभ में 'प्रास्ताविक परिचय' नाम से श्रीगोपालनारायण बहुरा ने विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखी है। उससे इस स्तोत्र तथा इसके विषय को समझने में बड़ी सहायता मिलती है।

ता० २० अक्टूबर, १९६१ —दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली

७—राजस्थानी साहित्य संग्रह—

भाग १. सम्पादक श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम.ए.

भाग २. सम्पादक श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम.ए., साहित्य-रत्न।

......साहित्य और भाषा की दृष्टि से ही नहीं, इतिहास-सम्बन्धी भी बहुत

अधिक सामग्री उक्त वार्ता-साहित्य में प्राप्य है। तत्कालीन आचार-विचार, रहन-सहन, धार्मिक भावनाओं और अंध विश्वासों आदि की ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त करने के लिये इस प्रकार के गद्य साहित्य का गहरा अध्ययन सर्वथा अनिवार्य हो जाता है।......पाद-टिप्पणियों में दिये गये पाठान्तरों और साथ ही आवश्यक शब्दार्थों से इस संस्करण का विशेष महत्त्व हो गया है। इन दोनों भागों में दी गई भूमिकायें भी उपयोगी और विचार-प्रेरक हैं।

ता० २६ जून, १९६१

८—स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रंथसंग्रह-सूची—सम्पादक श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम.ए. और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित।

स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी स्वयं ही एक सजीव संस्था थे। उन्होंने एकाकी जो काम किया, वह अनेकानेक संस्थाओं के मिल कर काम करने पर भी उतनी पूर्णता और तत्परता से किया जाना कठिन ही होता। अतः उनके निजी पुस्तकालय के राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान को सौंपे जाने से वस्तुतः एक बड़ी सांस्कृतिक निधि की सुरक्षा हो गई है, जिसके लिये राजस्थान ही नहीं भारत का समूचा शिक्षित समाज पुरोहितजी के सुपुत्र श्रीरामगोपालजी का सदैव अनुगृहीत रहेगा। अतः ऐसे महत्त्व के पुस्तक-संग्रह की यह पुस्तक-सूची अवश्य ही विद्वानों, संशोधकों आदि सब ही के लिये बहुत ही उपयोगी होने वाली है। प्रतिष्ठान का यह प्रकाशन संग्रहणीय है।

ता० २६ जून, १९६१

९—सूरजप्रकाश भाग १—कविया करणीदानजीकृत, सम्पादक श्रीसीताराम लालस।

साहित्य-प्रेमियों के साथ ही इतिहासकारों के लिये कविया करणीदानकृत "सूरजप्रकास" का विशेष महत्त्व है। मारवाड़ के इतिहास के प्रमुख आधार-ग्रंथ के रूप में इस ग्रंथ का अध्ययन किया जाता है। अतः उसको प्रकाशित करने का आयोजन कर प्रतिष्ठान ने एक बड़ी कमी को पूरा किया है।

ता० २६ जून, १९६१

महाराजकुमार डॉ० रघुबीरसिंह
एम.ए., एल.एल. बी., डी. लिट्., एम.पी.